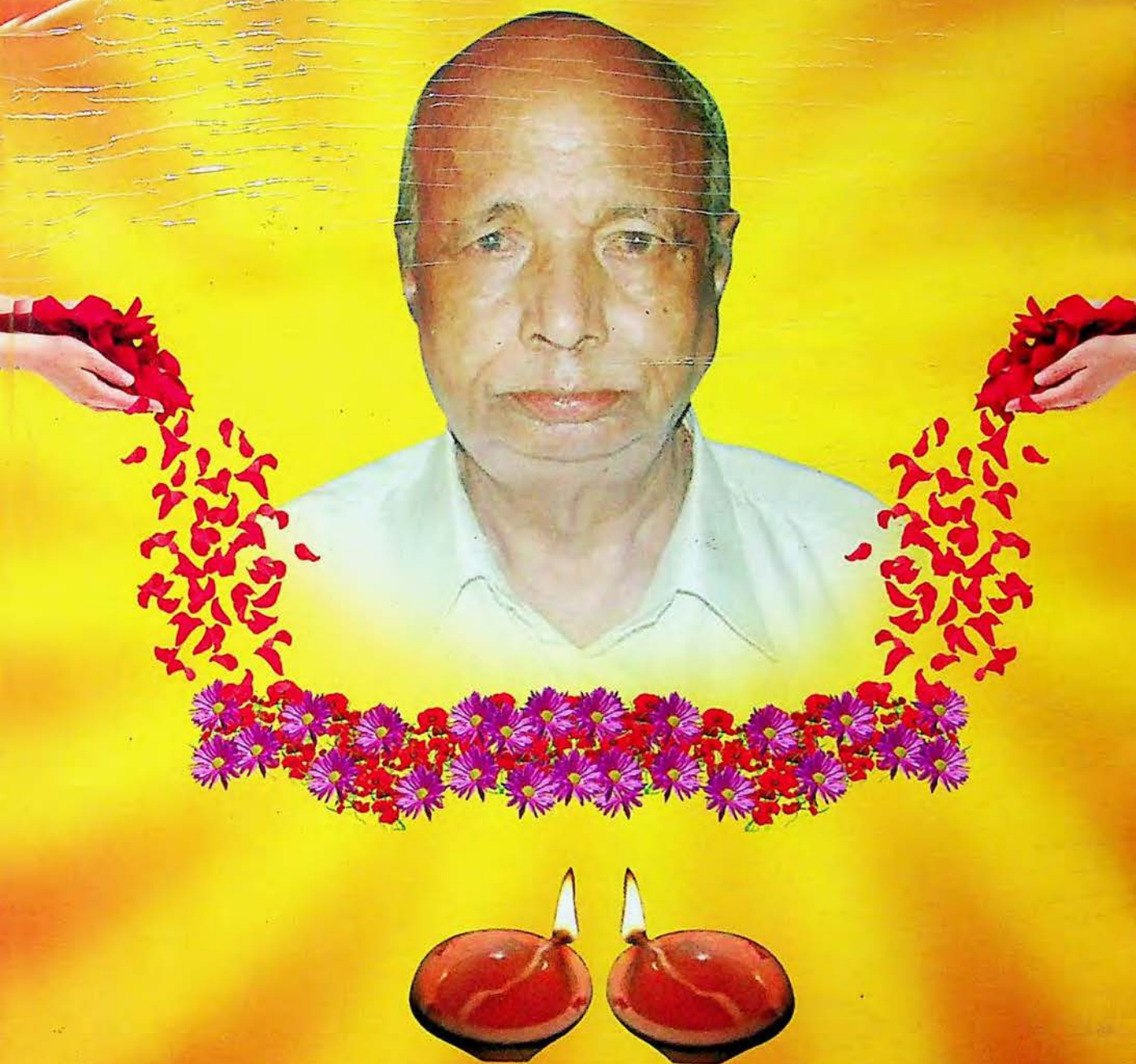


ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସ୍ମୃତିରେ ...

# ଶ୍ରଦ୍ଧା-ବୁସ୍ତମାଞ୍ଜଳି



ଅଗ୍ନିଜ୍ଞ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଡ଼ିଂଗା



# ବୈକୁଣ୍ଠ ସମାଜ ଆଦି ଅଟେ ସେହି ଘର...



ବାମରୁ : ପ୍ରଭାତୀ (ଜ୍ୟେଷ୍ଠା କନ୍ୟା), ବସନ୍ତକୁମାରୀ (ଧର୍ମପତ୍ନୀ), ନଗେନ ବାବୁ, ବିରଞ୍ଚ ନାରାୟଣ (ପୁତ୍ର)



ଆଗ ଧାଡ଼ି ବାମରୁ : ବିକାଶ (ନାତି), କନକ (ପୁତ୍ର ବଧୂ), ବସନ୍ତକୁମାରୀ (ଧର୍ମପତ୍ନୀ), ବିଶ୍ଵଜିତା (ନାତୁଣୀ)

ପଛ ଧାଡ଼ି ବାମରୁ : ନଗେନ ବାବୁ ଓ ବିରଞ୍ଚ ନାରାୟଣ



# ଶ୍ରୀଜୀ-କୁସୁମାଞ୍ଜଳି



## ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ପ୍ରଫେସର ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସ୍ମୃତିରେ

|              |  |
|--------------|--|
| ଜନ୍ମ         | : ଡା. ୧୦.୧୧.୧୯୩୬ରିଖ : କାର୍ତ୍ତିକ କୃଷ୍ଣ ଦ୍ୱାଦଶୀ  |
| ଅଧ୍ୟାପନା     | : ୧୯୬୨-୧୯୯୬ ପ୍ରଥମେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ପରେ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ  |
| ଡି.ଲିଟ୍.     | : ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ “ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା” ବିଷୟ  |
| ବିବାହ        | : ୧୯୫୬   |
| ରାଷ୍ଟ୍ର ସେବା | : ୧୯୬୪-୭୧ : ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା<br>୧୯୬୪-୭୧ : ସମ୍ପାଦକ ଅଭ୍ୟୁଦୟ ସାହିତ୍ୟ ସମାଜ<br>୧୯୭୭-୯୩ : ଭୁବନେଶ୍ୱର ଜିଲ୍ଲା (ମହାନଗର) ସଂଘଚାଳକ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘ<br>୧୯୭୭-୯୪ : ସଭାପତି ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା<br>୧୯୯୩-୯୮ : ବିଦ୍ୱତ ପରିଷଦର ଉପ-ସଭାପତି<br>୨୦୦୪-୦୫ : ବିଦ୍ୟା ଭାରତୀର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଉପ-ସଭାପତି<br>୨୦୦୮-୧୮ : ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ |
| ମୃତ୍ୟୁ       | : ଡା. ୨୬.୦୬.୨୦୧୮ : ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ଶୁକ୍ଳ ତ୍ରୟୋଦଶୀ  |

## ପ୍ରଫେସର ଡଃ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ କୃତି

| କ୍ରମାଙ୍କ | ପୁସ୍ତକର ନାମ                                    | ପୃଷ୍ଠା<br>ସଂଖ୍ୟା | ପ୍ରକାଶକ                               | ପ୍ରକାଶନ<br>ସମୟ |
|----------|--|------------------|---------------------------------------|----------------|
| ୦୧       | ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା                       | ୩୦୦              | ପ୍ରେକ୍ଷସ ପବ୍ଲିଶର୍ସ, କଟକ               | ୧୯୬୪           |
| ୦୨       | ମୀରା ସାହିତ୍ୟ ଭୂମିକା                            | ୩୫୦              | ପ୍ରେକ୍ଷସ ପବ୍ଲିଶର୍ସ, କଟକ               | ୧୯୬୫           |
| ୦୩       | ମଥୁରା ମଙ୍ଗଳ                                    | ...              | ...                                   | ୧୯୬୬           |
| ୦୪       | ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ                          | ୨୫୦              | ପ୍ରେକ୍ଷସ ପବ୍ଲିଶର୍ସ, କଟକ               | ୧୯୬୭           |
| ୦୫       | ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା            | ୯୮୦              | ଧର୍ମଗ୍ରନ୍ଥ ଷୋର, କଟକ                   | ୧୯୮୨           |
| ୦୬       | ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣ                       | ୩୫୦              | ପ୍ରେକ୍ଷସ ପବ୍ଲିଶର୍ସ, କଟକ               | ୧୯୮୨           |
| ୦୭       | ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା                  | ୪୫୦              | ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ<br>ସଂସ୍ଥା, ଓଡ଼ିଶା | ୧୯୮୩           |
| ୦୮       | ଶିଶୁ ଅନନ୍ତଙ୍କ ହେତୁ ଉଦୟ ଭାଗବତ                   | ...              | ...                                   | ...            |
| ୦୯       | ଗଙ୍ଗାଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ (ଭୂମିକା)                    | ୪୫୦              | ଧର୍ମଗ୍ରନ୍ଥ ଷୋର, କଟକ                   | ...            |
| ୧୦       | ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ<br>ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା (ଭାଗ-୧) | ୪୭୧              | ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା            | ୨୦୦୭           |
| ୧୧       | ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ<br>ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା (ଭାଗ-୨) | ୭୧୮              | ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା            | ୨୦୧୨           |
| ୧୨       | ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ<br>ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା (ଭାଗ-୩) | ୭୭୨              | ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା            | ୨୦୧୨           |

ପ୍ରକାଶନ ଅପେକ୍ଷାରେ :-

- ୧) ଗୌତମ ବୁଦ୍ଧ, ୨) ହରିବଂଶ, ୩) ଗୋବିନ୍ଦ ଗୀତା, ୪) ନାମାଚାର୍ଯ୍ୟ ବାୟାବାବାଙ୍କ ଜୀବନୀ,
- ୫) ଓଡ଼ିଶାର ସାଂସ୍କୃତିକ ଇତିହାସ, ୬) ବୈଷ୍ଣବ ଆନ୍ଦୋଳନ ଓ ଓଡ଼ିଶାର ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ସଂସ୍କୃତି,
- ୭) ଓଡ଼ିଆ ମଙ୍ଗଳ ସଂଗୀତ ।

■ ଏତଦ୍‌ବ୍ୟତୀତ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ସାହିତ୍ୟ ପତ୍ରିକାରେ ଡଃ. ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଶତାଧିକ ଗବେଷଣାମୂଳକ ପ୍ରବନ୍ଧ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଅଛି ଓ ଅନେକ ସାହିତ୍ୟ ପତ୍ରିକାର ସମ୍ପାଦନାରେ ତାଙ୍କର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭୂମିକା ରହିଛି ।

फ़ोन : 9425407471



# अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास

कार्यालय : आपटे भवन, केशव कंज, झण्डेवाला, नईदिल्ली 110055

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

समस्त भारतीय भाषाओं एवं साहित्य के कवियों, लेखकों तथा मनीषियों की संख्या

**क्या कहें :**

**दिनांक :**

અમાસપ/2018/17

28/06/2018

**:- शोक सन्देश:-**

आदरणीय नगेन्द्र नाथ जी का निधन भारतीय साहित्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। उन्होंने आजीवन राष्ट्रवादी भारतीय साहित्य परंपरा को अक्षुण्ण रखने का सतत प्रयास किया। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के साथ जुड़कर उन्होंने राष्ट्रवादी साहित्य के प्रचार-प्रसार में अतुलनीय योगदान दिया। उनके द्वारा सृजित साहित्य, भारतीय साहित्य की मूल्यवान धरोहर है। साहित्यकारों की भावी पीढ़ियां उनके राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरणा लेती रहेंगी।

समस्त साहित्य परिषद् परिवार, प्रधान जी को अश्रुपूरित श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए, ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह उन्हें सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार जनों को उनका वियोग सहने की शक्ति प्रदान करें। ॐ शांतिः, शांतिः, शांतिः।

सेवा में,

श्री विरंचि नारायण प्रधान  
प्लाट न. २२ए, आचार्य विहार,  
सचिवालय मार्ग - 751013, ओड़ीसा

श्रद्धावेनत,

(ऋषि कुमार मिश्र)

महामंत्री

कृते अखिल भारतीय साहित्य परिषद

एच-8 'सप्तमणी', सूर्य परिसर, डॉ. रघुनाथराय मुखर्जी नगर,  
सर्वधर्म सौ-सेक्टर, कोलार मार्ग, भोपाल ( 462042 )  
दूरभाष : 0756-2483678 / 4907977 फ़ैक्स-09826218072 • email : binayajaram8@gmail.co

डॉ. / प्रोफे (श्रीमती) विनय षडंगी राजाराम  
संस्थापक निदेशक, सप्तमणी कला साहित्य सृजन बोध पीठ, भोपाल  
उपसदन अलगा 10 साहित्य परिषद न्यास, दिल्ली

28-06-2018

## शोक संवेदना

अखिल भारतीय साहित्य परिषद , ओडिशा राज्य के अध्यक्ष , वरिष्ठ पुरातत्व वेत्ता ,  
इतिहास लेखक तथा साहित्य सम्वर्धक डॉ. नगेन्द्रनाथ प्रधान अब हमारे मध्य नहीं रहे ;  
जान कर एक व्यक्तिगत खालीपन का अनुभव हुआ । नगेन्द्र जी का जाना ओडिशा के  
साहित्य परिषद् के लिए ही नहीं राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य परिषद न्यास के लिए भी यह एक  
अपूरणीय क्षति है ।

जब भी मेरा भुवनेश्वर जाना हुआ, उनसे अत्यंत आत्मीय भेंट होती थी । गुड्डासे वे  
ऐसे मिलते थे जैसे कोई पिता बहुत दिनों के बाद अपनी पुत्री से मिलता हो । उनका यह  
स्नेहपूर्ण सहृदय व्यवहार सदैव मेरे मन - मस्तिष्क में स्थायीभाव के रूप में बना रहेगा ।

सरस्वती नदी के ऊपर उनका वृहत कार्य अद्भुत ही नहीं गीत का पतथर है । उस कार्य  
का संक्षिप्त हिंदी संस्करण अवश्य प्रकाश में आना चाहिए । यह सच्चे अर्थों में श्रद्धेय  
नगेन्द्रनाथ जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

न्यास की उपाध्यक्ष के नाते परिषद् की तरफ से एवं व्यक्तिगत रूप से मेरे परिवार  
सहित मैं स्वर्गीय नगेन्द्रनाथ जी के प्रति हृदय की गहराइयों से श्रद्धांजलि समर्पित करती हूँ  
। शोक की इस घड़ी में उनके समस्त आत्मीय परिवार जनों सहित हम सबको ईश्वर यह  
दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

डॉ. विनय षडंगी राजाराम , भोपाल

- ओडिशा साप्ताहिक युवाभाषा हिंदी यह साप्ताहिक हिंदी - गीत भाषाओं की सीधी साधनकर्ता ।
- भारत सरकार के गीत एवं खान मंत्रालयों की हिंदी सलाहकार ।
- उपग्रह के सन्तानता द्वारा उपग्रह हिंदी संस्थापक तथा साप्ताहिक संगीत की सदस्य मंत्री ।
- पीठ वर्ष दोष की शोधवृत्ति पर गीत-संस्कृत भाषाई बौद्ध ईसाई विषय आधारित गहन शोध । व्यापक गीत संग्रह तथा  
अवैधानिक किंगडमसंग्रह में प्रवीण देश-गोत्री जी का ।
- कविता, कहानी, निबंध, बाज साहित्य, मुख्य गीतिका परसुतिगी आदि की 25 पकाशनी पदार्थों के अभिरिक्त भाषा 36 साप्ताहिक  
संस्कृत एवं साहित्यिक आलेख प्रकाशित । अनेक राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक पुरस्कार , सम्मान व सम्मानित ।
- साधना - संस्कृति मंत्रालय , भारत सरकार प्रवृत्त गीतकार की शक्ति के अंतर्गत भारत की भाषाओं की साप्ताहिक साप्ताहिक  
हिंदी साहित्य विषय पर साधना ।



# इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली (पंजी०)

(सम्बद्ध-अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, न्यास)

सत्यम् शिष्यम् सुन्दरम्

E-mail:- isbd.delhi@gmail.com | Indraprasthasahityabharati.delhi@facebook.com

पत्र क्रमांक.....

दिनांक.....

28/06/2018

शोक सन्देश

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् ओडिसा प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. नगेन्द्र नाथ प्रधान जी निधन 27 जून को हो गया था। इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली सम्बद्ध अखिल भारतीय साहित्य परिषद् पंजी. के सभी कार्यकर्त्ता उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हैं। तथा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं उनकी पुण्यात्मा को अपने घरों में जगह दें। और उनके परिवार को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें। साहित्य परिषद् परिवार के लिए ये बहुत बड़ी क्षति है। ये साहित्य जगत के लिए बहुत ही दुःख का क्षण है। उनकी कमी कभी पूरी नहीं हो पायेगी। वो हमेशा साहित्य परिवार के जेहन में बसे रहेंगे। उनकी प्रेरणा हमें और आगे कार्य करने के लिए प्रेरित करती रहेगी। एक बार पुनः परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। और जन्म जन्म के चक्कर से मुक्ति दिलाये।

ॐ शान्ति

*मनोज कुमार शर्मा*

मनोज कुमार शर्मा

महामंत्री

इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली

सम्बद्ध अखिल भारतीय साहित्य परिषद्

मोब, न. 9871599113

पत्र व्यवहार का पता :-

101, प्रताप खण्ड, विश्वकर्मा नगर, झिलमिल, दिल्ली-110085

मो: 9312431712, 9871599113



ସାବ୍ ଡିଭିଜନ, ଡିଭିଜନ ମେନ୍ସନ  
ସାବ୍ ଡିଭିଜନ, ଡିଭିଜନ ମେନ୍ସନ-୨୫୧୦୧୪  
ସାବ୍ ଡିଭିଜନ, ଡିଭିଜନ ମେନ୍ସନ : ୦୨୨୪-୨୫୫୫୫୫୫୫

(State Academy of Letters)  
Department of Culture, Government of Odisha  
SANSKRUTI BHAVAN BHUBANESWAR-751014

6' .....



प्रवेष्टन गण





ସମସ୍ତେ ଚାହେଁଛନ୍ତି ଯେଉଁଠି ନରାୟଣ ନାଥ ପ୍ରଦୋଶକୁ ଗୋପନୀୟ ରଖିଥାନ୍ତି ।  
 ବାହ୍ୟରେ ଗୋପନୀୟ ଧର୍ମ ଅନୁସାରେ ଯେ ଲାଗିଥାନ୍ତି । ଯେଉଁଠି ସ୍ବ-  
 ଚିନ୍ତା ବା ଚାହିଦା ଗୋପନୀୟ ହେବା ନିୟମ ହୁଏ ।

ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ-ପଦ୍ୟ ।  
 ସୁଧାଂଶୁ ଗୋପନୀୟ ।  
 କାବ୍ୟ ।

ଏ. ନରାୟଣ ନାଥ ପ୍ରଦୋଶକୁ ବିଶେଷ ଗୁପ୍ତ ରଖିଥାନ୍ତି । ସାହିତ୍ୟ ଗୋପନୀୟ  
 ପ୍ରକାର ବିଭାଗରୁ ଏହା ଅନୁସାରେ ଲାଗି । ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ସଂଗ୍ରହର  
 ତାହାକୁ ଚାହିଦା ବିଶେଷ ଦର୍ଶନୀୟ ସଂଗ୍ରହର ପାଠ୍ୟ ମାର୍ଗ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରନ୍ତି ।  
 ପ୍ରାୟ ଓ ପାଠ୍ୟର ସଂଗ୍ରହର ତତ୍ତ୍ୱ ଦେଖି ତାହାକୁ ସାହିତ୍ୟ ରଖିଥାନ୍ତି ।  
 ଯେଉଁଠି ଗୋପନୀୟ ହେଉଛି ତାହାକୁ ଆହୁରି ବିଶେଷ କରନ୍ତି । ତାହା ସୂଚକ  
 ହେଉଛି ମର୍ମାହତ ଓ ଶାନ୍ତ ସ୍ବଭାବର ସମସ୍ତେ ଗୋପନୀୟ ହୋଇଥାନ୍ତି ।

ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ-ପଦ୍ୟ ।  
 ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ, କାବ୍ୟ-  
 ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ, କାବ୍ୟ-  
 ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ, କାବ୍ୟ-  
 ଶ୍ରୀରାମ-କୃଷ୍ଣ, କାବ୍ୟ-

ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ନିଜସ୍ବ ଲେଖନୀରୁ

## ଓଡ଼ିଶାର ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଇଂରେଜୀ ଭାଷାପ୍ରୀତି ଏବଂ ଆଦର୍ଶ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଯୋଜନା

(ଏପ୍ରିଲ-୨୦୧୭)

ଓଡ଼ିଶାର ମାନ୍ୟବର ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ ହିଞ୍ଜିଳିକାରୁରେ ଇଂରେଜୀ ମାଧ୍ୟମ ଆଦର୍ଶ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଉଦଘାଟନ ସମ୍ବାଦରୁ ଜଣାଗଲା ଯେ, ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରତି ବ୍ଲକ୍‌ରେ ଓଡ଼ିଶା ସରକାର ଚଳିତ ଶିକ୍ଷା ବର୍ଷରୁ ଏପରି ଆଦର୍ଶ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିବାକୁ ନୀତିଗତ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେଇଛନ୍ତି । ଇଂରେଜୀ ଭାଷାକୁ ଭାରତରେ ସାମ୍ବିଧାନିକ ମାନ୍ୟତା ମିଳିଅଛି ଏବଂ ଏହା ଅନ୍ୟ ରାଷ୍ଟ୍ରମାନଙ୍କ ସହିତ ସମ୍ପର୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ସହାୟକ ମାଧ୍ୟମ । ତେଣୁ ଏହି ଭାଷାକୁ ଦ୍ଵିତୀୟ ବା ତୃତୀୟ ଭାଷାରେ ପଠନ ପାଇଁ ବିଦ୍ୟାଳୟସ୍ତରରେ ବ୍ୟବସ୍ଥା କରାଯାଇଅଛି; କିନ୍ତୁ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ପରିପୁର୍ଣ୍ଣ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ଵ ବିକାଶ ଏବଂ ଜ୍ଞାନାହରଣରେ ମାତୃଭାଷା ଯେ ଏକମାତ୍ର ଶକ୍ତିଶାଳୀ ମାଧ୍ୟମ ଏହା ସମଗ୍ର ବିଶ୍ଵର ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଓ ମନସ୍ତତ୍ତ୍ଵବିତ୍‌ମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ସମସ୍ତରରେ ସ୍ଵୀକୃତ । ତେଣୁ ଆମ ଦେଶରେ ମାତୃଭାଷା ଶିକ୍ଷାକୁ ପ୍ରଥମ ଭାଷା ହେବାର ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି । ପୁନଶ୍ଚ ସର୍ଜନଶୀଳତାରେ ନିଜସ୍ଵ ମୌଳିକତା ଏବଂ ସ୍ଵକାୟ ସ୍ଵାଭିମାନ ଓ ଅସ୍ଵିତାବୋଧ ସହିତ ନୈତିକ ସଂସ୍କାର ଓ ଆତ୍ମବିଶ୍ଵାସରେ ଅନମନୀୟ ଦୃଢ଼ତା ସୃଷ୍ଟିରେ ମାତୃଭାଷାର ବିକଳ ନାହିଁ ।

ମାତୃଭାଷାର ଦକ୍ଷତା ବଳରେ ତହିଁରେ ପ୍ରଚଳିତ ରୁଦ୍ଧି ଓ ଲୋକୋକ୍ତିମାନଙ୍କରେ ଚିହ୍ନିତ ଭାବପୁଞ୍ଜିର ଅର୍ଥ ଅବବୋଧ ହୁଏ । ମାତୃଭାଷାରେ ଉଚିତ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ପଦର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ଭାବ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଓ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତିର ଶୈଳୀ ବିଚିତ୍ରତା ଉପଭୋଗ କରାଯାଇପାରେ । ସ୍ଵଦେଶବାସୀ ସହିତ ଭାବ ବିନିମୟ ଦ୍ଵାରା ସାମାଜିକ ସଂପ୍ରୀତି, ଐକ୍ୟବୋଧ ଓ ପାରସ୍ପରିକ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ନିବିଡ଼ ଆହ୍ଵାନତା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହୁଏ । ସ୍ଵଦେଶର ଐତିହ୍ୟ ପରମ୍ପରାର ଉପଲବ୍ଧିରୁ ଭବିଷ୍ୟତ ସମାଜର ପ୍ରାରୁପ ସହଜ କଳ୍ପିତ ହୋଇଯାଏ । ବ୍ୟକ୍ତିମାନସରେ ସମ୍ମିଳିତ ସାମାଜିକ ବିକାଶର ଅଗ୍ରଗତି ସାଧନ ପାଇଁ ସଂକଳ୍ପ, ଆତ୍ମବିଶ୍ଵାସ ଓ ଅଙ୍ଗୀକାରବଦ୍ଧତା ସ୍ଵତଃ ଦୃଢ଼ୀଭୂତ ହୋଇଉଠେ । ଏପରି ଚେତନାର ବିକାଶ ପୂରାତନ ଜଗତରେ କେବଳ ଭାରତୀୟ ବ୍ୟକ୍ତି ମନରେ ସଂସ୍କାରବଦ୍ଧ ଓ ପ୍ରବହମାନ ପରମ୍ପରାରେ ଜୀବନ୍ତ ଓ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ରହିଆସିଅଛି । କାରଣ ଭାରତ ଭୂଖଣ୍ଡର ସୁଦୂର ବିସ୍ତାରିତ ପ୍ରାକୃତିକ ଅବସ୍ଥିତି ଓ ସୀମା ବଳୟ ମଧ୍ୟରେ ଏକମାତ୍ର ସୁଗଠିତ ସାମାଜିକ ସଂହତି ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ପରମ୍ପରା ଅଯୁତ ଅଯୁତ ବର୍ଷ ଧରି ଅବୀରିତ ଅଖଣ୍ଡ ଧାରାରେ କ୍ରମବର୍ଦ୍ଧିଷ୍ଠ ରହିଆସିଅଛି । ଏପରି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଜୀବନର ଶକ୍ତିଶାଳୀ ଓ ସମୃଦ୍ଧ ବିକାଶପାଇଁ ଉଦାରଚେତା ମୁନି ମନୀଷୀମାନଙ୍କର ନିରନ୍ତର ସପ୍ରେମ ଆହ୍ଵାନ ରହି ଆସିଥିଲା । ଏହା ଥିଲା ଭାରତରେ ମାତୃଭାଷାର ଅତୁଳନୀୟ ମହା ଶକ୍ତିଶାଳୀ ଭୂମିକା ।



ଓଡ଼ିଶାରେ ଆଞ୍ଚଳିକ କଥନ ଭଙ୍ଗୀରେ ପାର୍ଥକ୍ୟ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ବିପୁଳ ସମୃଦ୍ଧି ହେତୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ହିଁ ସର୍ବତ୍ର କଥନ ଓ ପଠନ ମାଧ୍ୟମଭାବେ ପୁରାତନ କାଳରୁ ରହିଆସିଅଛି । ଓଡ଼ିଶାର ସର୍ବାଞ୍ଚଳରେ କଥିତ ଭାଷା ସହିତ ସଂସ୍କୃତ ଭାଷାର ବ୍ୟାପକ ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ଏହା ଦୀର୍ଘକାଳ ପୂର୍ବରୁ ରାଜକୀୟ ଘୋଷଣାମାନଙ୍କୁ ପ୍ରକାଶ କରିବାରେ ସାମର୍ଥ୍ୟ ଅର୍ଜନ କରିଆସିଅଛି । ଅଶୋକ, ଖାରବେଳଙ୍କ ପରି ସମ୍ରାଟମାନେ ପାଲି ନାମରେ ଅଭିହିତ ଯେଉଁ ଭାଷାରେ ସେମାନଙ୍କର ଶିଳାଲେଖମାନ ଉଦ୍ଘାଟିତ କରିଯାଇଛନ୍ତି ତାହା ଥିଲା ଏହି ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଶା ବା କଳିଙ୍ଗର ପଲ୍ଲୀମାନଙ୍କରେ ପ୍ରଚଳିତ ଥିବା ପୁରାତନ ଭାଷାର ପ୍ରାରୂପ । କ୍ରମେ ଅପଭ୍ରଂଶ ସ୍ତର ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପରେ ଏକାଦଶ, ଦ୍ଵାଦଶ ଶତାବ୍ଦୀ ବେଳକୁ ଏହା ଆଧୁନିକ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଭାବେ ଉଦ୍ଭାବ ହେଲା ଓ ଏଥିରେ ବିଶାଳ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ପଦ ସୃଷ୍ଟି ହେଲା । ଏବେ ଏହାକୁ ଶାସ୍ତ୍ରୀୟ ମାନ୍ୟତା ସରକାରୀ ସ୍ତରରେ ମିଳିଥିଲେ ମଧ୍ୟ ବହୁ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ ବହନ କରୁଥିବା ଏହି ମୌଳିକ ଭାଷାପାଇଁ ଏହି ସ୍ଵୀକୃତି ଔପଚାରିକ ମାତ୍ର । ଯୁଗ ଯୁଗ ଧରି ଏହି ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷା ଲାଭ କରି ଲୋକେ ନିଜ ନିଜର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ଵ ଓ ସର୍ଜନଶୀଳତାରେ ପରାକାଷ୍ଠା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଆସିଛନ୍ତି । ଏପରି ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ମାଧ୍ୟମ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ, ପ୍ରାୟ ପାଞ୍ଚ କୋଟି ଲୋକଙ୍କର ପ୍ରାଥମିକ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପ୍ରଚଳିତ ମାତୃଭାଷା ଓ ପ୍ରାୟ ଆଠ ହଜାର ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଶିକ୍ଷାଦାନର ମାଧ୍ୟମ ହୋଇଥିଲେ ବି ଏହି ଭାଷା ଅପେକ୍ଷା ଇଂରେଜୀ ଭାଷାକୁ ଅଧିକ ଉକ୍ରଷ୍ଟ ଓ ଉପଯୋଗୀ ଭାଷା ବିବେଚନା କରି ଆଦର୍ଶ ଇଂରେଜୀ ମାଧ୍ୟମ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଖୋଦ ଓଡ଼ିଶାର ସରକାର ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିବାର ପ୍ରୟାସ କେତେଦୂର ଯୁକ୍ତିସଙ୍ଗତ ଏବଂ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ପ୍ରତି ଅବିଚାର ଓ ପକ୍ଷପାତିତା କରିବାର ଅଧିକାର ସରକାରଙ୍କର ଅଛି କି ନାହିଁ ତାହା ଏହି ପ୍ରଦେଶବାସୀଙ୍କର ଗମ୍ଭୀର ମନନ କରିବାର ପ୍ରଶ୍ନ । ବୈଷୟିକ ଶିକ୍ଷାରେ କୃତିତ୍ଵ ଅର୍ଜନ ଓ ନିଯୁକ୍ତି ସୁଯୋଗ ପ୍ରକୃତରେ ଇଂରେଜୀ ମାଧ୍ୟମ ବିଦ୍ୟାଳୟମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠାକୁ ଅପରିହାର୍ଯ୍ୟ ମନେକରିବାର ଆଦୌ ଯଥାର୍ଥତା ନାହିଁ । ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ବା ତୃତୀୟ ଭାଷା ଭାବେ ଶିକ୍ଷା କରି ମଧ୍ୟ ମାତୃଭାଷା ମାଧ୍ୟମ ବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ଉଦ୍ଘାଟିତ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନେ ସର୍ବଭାରତୀୟ ବା ପ୍ରାଦେଶିକ ପ୍ରଶାସନିକ ସେବାପାଇଁ ପରୀକ୍ଷାରେ ଯଥେଷ୍ଟ କୃତତ୍ଵ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରୁଛନ୍ତି । ଇଞ୍ଜିନିୟରିଂ, ଡାକ୍ତରୀ, ମେନେଜମେଣ୍ଟ ପ୍ରଭୃତି ଶିକ୍ଷାପାଇଁ ହେଉଥିବା ସର୍ବଭାରତୀୟ ପ୍ରବେଶିକା ପରୀକ୍ଷାମାନଙ୍କରେ ଉଚ୍ଚ ପ୍ରତିଶତ ସଫଳତା ଲାଭ କରିପାରୁଛନ୍ତି । ଏହାର ପ୍ରମାଣସ୍ଵରୂପ ବିଗତ ଦଶବର୍ଷ ମଧ୍ୟରେ ମାତୃଭାଷା ମାଧ୍ୟମ ସରସ୍ଵତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରମାନଙ୍କରେ ଶିକ୍ଷାପ୍ରାପ୍ତ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କର କୃତିତ୍ଵ ବିଚାର କରାଯାଇପାରେ । ତେଣୁ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କର କୃତିତ୍ଵପାଇଁ ସେମାନଙ୍କ ସହଜାତ ପ୍ରତିଭା, ସେମାନଙ୍କର ମାତୃଭାଷାରେ ଅବବୋଧ ସାମର୍ଥ୍ୟ ଓ ସେମାନଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷାଦାନର ବ୍ୟବସ୍ଥିତ ସୁପରିଚାଳନା ହିଁ ପ୍ରଧାନ ହେତୁ । ସ୍ଵଚ୍ଛଳ ଭାବବୋଧ ଓ ଅନୁଶୀଳନ ପାଇଁ ମାତୃଭାଷାର ବିକଳ ନାହିଁ । ଅନ୍ୟ ଯେକୌଣସି ଭାଷା ସ୍ଵଚ୍ଛଳ ଜ୍ଞାନାହରଣରେ ପ୍ରବଳ ପ୍ରତିବନ୍ଧକ ।

ଓଡ଼ିଶାର ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କର କୃତିତ୍ଵ ଓ ଉତ୍କଳ ଭବିଷ୍ୟତ କାମନାରେ ଆନ୍ତରିକତା ଥିଲେ ସମଗ୍ର ପ୍ରାଥମିକ ଓ ମାଧ୍ୟମିକ ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କରେ ପରିଚାଳନା ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ ସୁଦୃଢ଼, ଶୃଙ୍ଖଳିତ କରାଯିବା ଆବଶ୍ୟକ । ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କର ପ୍ରଶିକ୍ଷଣକୁ ଔପଚାରିକ ନ କରି ବାସ୍ତବ ଅର୍ଥପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ କଠୋର ଭାବରେ ଶୃଙ୍ଖଳିତ କରାଯିବା

ଏକାନ୍ତ ଜରୁରୀ । ଶିକ୍ଷକ, ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ଓ ଅଭିଭାବକମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ନିବିଡ଼ ଆହ୍ୱାୟତା ସୃଷ୍ଟି ସହିତ ଶିକ୍ଷା ନିରୀକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷକ ଓ ପରିଚାଳନା ସମିତି ସଦସ୍ୟଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କ ବିକାଶ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଆନ୍ତରିକ ବିଚାର ବିମର୍ଶ କରାଯିବା ଆବଶ୍ୟକ । ଏହିପରି କଠୋର ଶୃଙ୍ଖଳା ଓ ପାରିବାରିକ ଘନିଷ୍ଠ ସମ୍ବନ୍ଧର ବାତାବରଣ ହେଉ ।

ଘରୋଇଭାବେ ପରିଚାଳିତ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ଉଚ୍ଚ ଯୋଗ୍ୟତାସମ୍ପନ୍ନ ପ୍ରତିଭାଶାଳୀ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀଗଣ ନାମକୁ ମାତ୍ର ସାମାନ୍ୟ ଦକ୍ଷିଣା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତରାକୃତ ଭାବେ ସମୟରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରି ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ଓ ସୁଦକ୍ଷଭାବେ ଉତ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ କରାଇପାରୁଛନ୍ତି । ସର୍ବବିଧି ପ୍ରତିଯୋଗିତାମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ସେମାନଙ୍କର କୃତିତ୍ୱ ପ୍ରତିଶତ ହାର ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ତୁଳନାରେ ସର୍ବାଧିକ; କିନ୍ତୁ ପ୍ରଚଳିତ ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଓ ପରିଚାଳନା ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ କଠୋର ଭାବେ ବ୍ୟବସ୍ଥିତ ଓ ଶୃଙ୍ଖଳିତ କରି ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କର ସର୍ବାଙ୍ଗୀନ ବିକାଶ ସାଧନ କରିବା ପରିବର୍ତ୍ତେ ଇଂରେଜୀ ମାଧ୍ୟମ ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କୁ ଆଦର୍ଶ ଓ ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ଘୋଷଣା କରି ସର୍ବବିଧି ସାହାଯ୍ୟ ଓ ସୁବିଧା ସୁଯୋଗ ଦ୍ୱାରା ଏହି ପ୍ରଦେଶର ସୁସ୍ଥ ସାମାଜିକ ବିକାଶ ନଷ୍ଟ ଭ୍ରଷ୍ଟ ହେବ ।

ସ୍ୱଳ୍ପ ସଂଖ୍ୟକ ବୁଦ୍ଧିମାନ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ଏଥିରେ ପ୍ରବେଶ ସୁଯୋଗ ପାଇ ନିଜକୁ ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ମନେକରି ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ନିକୃଷ୍ଟ ବିଚାର କରି ପ୍ରକାରାନ୍ତରେ ଘୃଣା କରିବେ । ହୁଏତ କେତେ ସୁଚ୍ଛଳ ବର୍ଗର ଲୋକଙ୍କ ପିଲାମାନେ ମଧ୍ୟ ଏଥିରେ ପ୍ରବେଶ କରିବେ ଯେଉଁମାନେ ପିଲାଙ୍କ ଶିକ୍ଷାପାଇଁ ଅଧିକ ବ୍ୟୟ କରିବାପାଇଁ ସମର୍ଥ ଥିବେ । ଏକ ସରକାର ଦ୍ୱାରା ପରିଚାଳିତ ଇଂରେଜୀ ମାଧ୍ୟମ ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କ ଅତିରିକ୍ତ ମାତୃଭାଷା ମାଧ୍ୟମ ହଜାର ହଜାର ବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରକାରାନ୍ତରେ ବୈମାତୃକ ବିଚାରରେ ଅବହେଳିତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ସେ ସବୁର ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ହାନିମାନତା ସୃଷ୍ଟି ହେବା ସ୍ୱାଭାବିକ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାଦାନରେ ଉଦାସୀନତା ଓ ଶିଥିଳତା ଦେଖା ଦେବାର ସମ୍ଭାବନା ମଧ୍ୟ ଅଧିକ । ପରିଶାମସ୍ୱରୂପ ଛାତ୍ରମାନେ ଅବହେଳିତ ଭାବେ ଉତ୍ତମ ଶିକ୍ଷା ଲାଭରୁ ବଞ୍ଚିତ ହୋଇ ଅକୃତକାର୍ଯ୍ୟ ହେବେ । ସେମାନଙ୍କର ଛାତ୍ର ଜୀବନ କାଳାବଧି ବ୍ୟର୍ଥ ହୋଇ ଭବିଷ୍ୟତ ଅନ୍ଧକାରମୟ ହେବ । ସମଗ୍ର ଦେଶରେ ସମାନ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ପାଇଁ ଦୀର୍ଘକାଳରୁ ଆନ୍ଦୋଳନ ଓ ଦାବୀ କରାଯାଇ ଆସୁଥିବାବେଳେ ଓଡ଼ିଶା ସରକାର ଜ୍ଞାତସାରରେ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ବିକ୍ଷମତା ଓ ଭେଦ ସୃଷ୍ଟି ଉଦ୍ୟମ କରିବା ଘୋର ପରିତାପର ବିଷୟ ।

ଏହି ବ୍ୟବସ୍ଥା ଦ୍ୱାରା ଏହି ପ୍ରଦେଶର ସମଗ୍ର ଅଧିବାସୀଙ୍କ ପ୍ରାଣସ୍ୱରୂପା ମାତୃଭାଷାକୁ କ୍ରମାଗତ ଉପେକ୍ଷା କରି ଶେଷରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିଲୋପମୁଖୀ କରାଇବାରେ ସହାୟକ ହୋଇପାରେ । ଅତଏବ ମାତୃଭାଷା ପ୍ରତି ଏପରି ପକ୍ଷପାତିତା ଓ ଅବଜ୍ଞା ପ୍ରଦର୍ଶନ ପ୍ରଶ୍ନ ଉପରେ ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାଭାଷୀ ଗମ୍ଭୀରତା ସହିତ ବିଚାର ବିମର୍ଶ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ ।



## ହେ କାଳଜୟୀ !

(ସ୍ବର୍ଗତଃ ଓଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସ୍ବରଣେ ଗଭୀର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି)

କୈଳାଶ ଚନ୍ଦ୍ର ଧଳ

ପ୍ରଧାନାଚାର୍ଯ୍ୟ

ସରସ୍ବତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର, ମୁଜାଗଡ଼

ମୋ: ୮୮ ୯୫୧୧୯୯୪୪

ମରିନାହିଁ ମରିନାହିଁ ତୁମେ ଏ ମାଟିର ନବ ଭଗୀରଥ  
ଶିକ୍ଷା ସଂସ୍କୃତିର ଅଗାଧ ବାରିଧି କର୍ମର ପ୍ରବାଦ ପୁରୁଷ ।

ଦେହ ସିନା ତୁମ ମାଟିରେ ମିଶିଛି ତୁମେ ତ ମୃତୁଞ୍ଜୟୀ  
ଜାତିସ୍ମର ତୁମେ ପ୍ରୀତିର ପୁଲକ ଯାହା ଦେଇଅଛ କହି ।

ଓଡ଼ିଶା ଗଗନେ ଧ୍ରୁବତାରା ସାଜି ଜଳୁଥିଲ ଅହରହ  
ତୁମ ଆଲୋକରେ ସନ୍ଦିତ ଧରା ବାସୁଥିଲା ମହମହ ।

ତୁମରି ହାତରେ ଗଢ଼ିଥିଲ ଯେଉଁ ସଂସ୍କୃତିର ଶିକ୍ଷାକ୍ଷେତ୍ର  
ଆଜି ସେ ହସୁଛି ବିଶ୍ୱ ଦରବାରେ ପ୍ରସାରି ପବିତ୍ର ହସ୍ତ ।

ନଗେନ୍ଦ୍ର ତୁମେ ଖଗେନ୍ଦ୍ର ତୁମେ ଯୋଗେନ୍ଦ୍ର ତୁମେ ଏଠି  
ଅକିଯାଇ ନାହିଁ ହାରିଯାଇ ନାହିଁ ସେବାପାଇଁ ଏଇ ମାଟି ।

ସଂସ୍କୃତି, ସଭ୍ୟତା, ଶିକ୍ଷା, ସାହିତ୍ୟର ତପୋନିଷ୍ଠ ସାଧୁ ପରି  
ଉଡ଼ାଇଛ ତୁମେ ମୈତ୍ରୀ କେତନ ମମତାର ମଧୁ ଭରି ।

ହେ କାଳଜୟୀ ! ଅଲିଭା ଦୀପାଳୀ ଜଳୁଥାଅ କାଳକାଳ  
ତୁମରି ମନ୍ଦିରେ ମନ୍ଦିତ ହୋଇ କଟିଯାଉ ସବୁବେଳ ।





## ଆମ ଏଇ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି

ମହେନ୍ଦ୍ର କୁମାର ଘଡ଼େଇ

କ୍ଷେତ୍ରମୋହନ ବିଦ୍ୟାପୀଠ, କଟକପଡ଼ା

ପିଠାପଡ଼ା, ନିଶିତକୋଇଲି, କଟକ

ଫୋ: ୯୪୩୭୭୪୦୫୭୭

କେତେ ସରଳ ସେ ମଣିଷଟିଏ  
ଦେଖୁଅଛି ଯିଏ ଭୁଲିନି ସିଏ  
ଆଜି ବି ଦିଶୁଛି ମୁହଁ  
ସଦା ହସ ହସ କାମରେ ଚଞ୍ଚଳ  
ଆଉ କିଏ ଅଛି କୁହ ?

ଭିତରେ ନଥିଲା ଛନ୍ଦ କପଟ  
ମୁରବୀ ପଣରେ ଥିଲା ଆକଟ  
ଦୁନିଆ ସାଥୀରେ ଥାଇ  
ପାଣି ବୁଦ୍ଧାପରି କୁଆଡ଼େ ହଜିଲେ  
ନିମିଷ ମାତରେ ଯାଇ ।

ସାରକଥା ଆଉ କହିବ କିଏ  
ଭଲ ବାଟେ ନାବ ବାହିବ ସିଏ  
ସଂସାର ନାଉରୀ ହୋଇ  
ଲୋତକ ବୁଢ଼ାଇ ଅପଲକେ ଆଖି  
ଅଛୁ ତାଙ୍କ ବାଟ ଚାହିଁ ।

ସଂସାର ଭିତରେ ସଂସାରୀଟିଏ  
ଯୋଗୀଙ୍କ ଭିତରେ ତପସ୍ବୀ ସିଏ  
ସାଧନା ତାଙ୍କର ବଡ଼

ଯାହାକୁ ନେଇକି ସଦା ଜିଣିଥିଲେ  
କେତେ ଯେ ବଇରୀ ଗଡ଼ ।

ସାହିତ୍ୟରେ ଥିଲେ ବିରାଟ ରଥୀ  
ପର ପିଢ଼ି ପାଇଁ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ବତୀ  
ଝଟକୁଥିଲେଟି ସଦା  
ତାଙ୍କ ପୁଅ ଝିଅ ହୋଇକି କରିବା  
ତାଙ୍କ ଛଡ଼ା କାମ ଅଧା ।

ବିଦ୍ୟା ଭାରତୀର ମୁରବୀ ହୋଇ  
ଶିକ୍ଷା ସଂସ୍କାରକୁ ଜଗାଇଦେଇ  
ଗଢ଼ିଲ ଆପଣା କୀର୍ତ୍ତି  
କେମିତି ସେ କୀର୍ତ୍ତି ବଜାୟ ରଖୁବୁ  
ଭାବିଲେ ଥରଇ ଛାଡ଼ି ।

ଅଶ୍ରୁଳ ନୟନେ ବିଦାୟ ଦେଉ  
ଫେରି ଆସିବାକୁ ନେହୁରା ହେଉ  
ଆଶିଷ ପାଇଁକି ଅଳି  
ସରଗପୁରରେ ଘେନା କରିବଟି  
ଆମ ଏଇ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।

## ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାଞ୍ଜଳି

ସୁଗ୍ରୀ ସୁଭଦ୍ରା କର  
ଶଙ୍କରାଚାର୍ଯ୍ୟ ସଂସ୍କୃତ କନ୍ୟାଶ୍ରମ  
ଜଳେଶପଟ୍ଟା, ତୁମୁଡ଼ିବନ୍ଧ, କନ୍ଧମାଳ  
ମୋ : ୯୪୩୮୭୧୪୪୯୦

ଅମର ଆହ୍ୱାର                      ଅମରତ୍ୱ ପାଇଁ  
ତୁମ ଯଶ ଗୁଣ ମାନ  
ବିଲୁପ୍ତ ହେବନି                      ଅକ୍ଷୟ କୀର୍ତ୍ତି ତୁମ  
ରହିଥିବ ଚିରଦିନ ।

ଦୀପଶିଖା ପରି                      ଜଳୁଥିଲ ତୁମେ  
ଭରି ଦେଉଥିଲ ଆଲୋକ  
ସମୟ ସ୍ରୋତରେ                      ଦୀପ ଲିଭିଗଲା  
ଯାହା ଅଛି ଖାଲି ଦୁଃଖ ।

ତୁମେ ଦେଇଥିବା                      ମାଧ୍ୟମକୁ ମାନି  
ଆମେ ଯେତେ ଦିନ ଥିବୁ  
ସମାଜ ଯୋଗ୍ୟ                      କର୍ତ୍ତବ୍ୟକୁ କରି  
ଏ ମାଟିକୁ ଧନ୍ୟ କରିବୁ ।

ହୃଦ ଆଞ୍ଜୁଳୀରେ                      ମନୁ ମନ ଫୁଲ  
ତୁମପାଇଁ ଅଛୁ ତୋଳି  
ଅମର ଆହ୍ୱାର                      ସଦ୍‌ଗତି ପାଇଁ  
ଦେଉଅଛୁ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାଞ୍ଜଳି ।



# ଦିବଙ୍ଗତ ଆତ୍ମା ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶ୍ରୁଳ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି

ନିରୂପଣା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ (ଚିନ୍ତୁ)

ଜଗତସିଂହପୁର

ମୋ : ୯୭୭୭୧୭୦୨୪୫

ନୟନ ବରଷା ମାନୁନାହିଁ ଭାଷା  
 ତୁମ୍ଭର ଅବର୍ତ୍ତମାନେ  
 ନଇଁ ପକଟିତେ ମାଳ ଦେବାମାତ୍ରେ  
 ଥରଇ ହୃଦ କମ୍ପନେ ।  
 ଗେହ୍ଲା ପୁଅପରି ସାହିତ୍ୟ ଆବୋରି  
 ହେ ଚିର ଭାସ୍ବର ରବି  
 ଗେରୁଧାରୀ ସାଜି କାହିଁ ଗଲ ହଜି  
 କେଉଁ ଅଭିମାନେ ଦବି ।  
 ଦରହାସ ତୁମ ଦୃଷ୍ଟିପଥେ ଭ୍ରମ  
 ମନ ଚହଲାଇ ଦିଏ,  
 ଦରଶୁଆ କରି କିଏ ବା କିପରି  
 ପଙ୍ଗୁ ଉଠାଇ ଦିଏ ।  
 ପ୍ରଦୋଷ ସାହିତ୍ୟ ଗଗନେ ସତତ  
 ତୁମେ ଥିଲ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଇନ୍ଦୁ  
 ପ୍ରଭାବୀ ଚାନ୍ଦିନୀ ବିଧୁର ନନ୍ଦିନୀ  
 ବରେ ବଳୀୟାନ ବନ୍ଧୁ ।  
 ଧାର ଦେଇକିବା ରହିଗଲ ଅବା  
 ଆକାଶରେ ତାରା ହୋଇ  
 ଧାତ୍ରୀକୁ ଛାଡ଼ି ସ୍ବର୍ଗ ଲୋଭେ ପଡ଼ି  
 କେହି ଲେଉଟନ୍ତି ନାହିଁ ।  
 ନଥାଉ ତୁମ୍ଭର ସେ ମର ଶରୀର  
 ତୁମେତ ଅମର ଆଜି  
 ନବକଳେବରେ ପୁଣି କେବେ ଥରେ  
 ଆସିବ ସରଗ ତେଜି ।





## ମମତାର ମୁଲ

କବି ଶ୍ରୀ ଗଣେଶ ଚନ୍ଦ୍ର ସାମନ୍ତ  
ଏଲ୍-୩୦୧, ହାଉସିଂ ବୋର୍ଡ଼ କଲୋନୀ

ବରମୁଣ୍ଡା, ଭୁବନେଶ୍ୱର-୩, ମୋ: ୭୫୦୪୦୬୨୬୧୭

ମମତା ଯାହାର ଅମୂଲ୍ୟ ମୂଲ୍ୟକ  
ମମତାର ଯିଏ ସାଗର,  
ସ୍ନେହ ପ୍ରେମ ଆଉ ଭଲ ପାଇବାରେ  
ସିଏ ଥିଲେ ଆମ ନିଜର ।  
ନାମ ଅଟେ ତାଙ୍କ ନଗେନ ପ୍ରଧାନ  
କାମରେ ଥିଲେ ସେ ପ୍ରବୀର,  
ହସ ଖୁସି ବାଣ୍ଟି ଛାଡ଼ି ଚାଲିଗଲେ  
କରିଣ ଆମକୁ ଅଧର ।  
ମାନନ୍ତି କେବେ ବରଷା କି ଖରା  
ନ ମାନନ୍ତି ଝଡ଼ ବତାସ,  
ସଂଘ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସେ ହେଲା ନ କରନ୍ତି  
ହୁଅନ୍ତି କେବେ ନିରାଶ ।  
ଉଚ୍ଚ ନୀଚ ଭାବ ନ ରଖି ମନରେ  
ସବିଜ୍ଞ କରନ୍ତି ଆଦର,  
କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କୁ ସେ ହୃଦୟରେ ବାନ୍ଧି  
କରିଥାନ୍ତି ସଦା ନିଜର ।  
ପାତର, ଅନ୍ତର ନ ଥାଏ ତାଙ୍କର  
କାର୍ଯ୍ୟ କରନ୍ତି ସେ ଖୁସିରେ,  
ଭଲ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଗଢ଼ି ତୋଳିବାରେ  
ଆନନ୍ଦ ଲଭନ୍ତି ମନରେ ।  
ଧନ୍ୟ ସେ ଚାଳକ ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ କାର୍ତ୍ତି  
ଅମର ରହିବେ ସଂଘରେ,  
କୋଟି ନମସ୍କାର ଜଣାଉଛି ତାଙ୍କୁ  
ଆତ୍ମା ସଦା ରହୁ ତୃପ୍ତିରେ ।



## ଜଣେ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ସରାଈ ସମ୍ପର୍କରେ

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାଞ୍ଜଳି ସଭା

ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା

ଏଇ ଜୁଲାଇ ମାସ ୧ ତାରିଖ ରବିବାର ଦିନ ଅପରାହ୍ନ ୪ ଘଟିକା ବେଳେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ପକ୍ଷରୁ ଭୁବନେଶ୍ୱରର ୩ ନଂ. ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରଠାରେ ଆମର ପରମ ଆଦରଣୀୟ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ସ୍ୱର୍ଗତ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଯେଉଁ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାଞ୍ଜଳି ସଭା ହେଲା ସେଠାରେ ଉପସ୍ଥିତ ସାହିତ୍ୟିକ ଓ ସାହିତ୍ୟପ୍ରେମୀ ସଜନଗଣ ତାଙ୍କ ସ୍ମୃତିଚାରଣ କରିବା ସହିତ ତାଙ୍କ ମହନୀୟ ପ୍ରାଣ ଆଉ ଉତ୍କଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱରୁ ସାଉଁଟି ଥିବା ଅନୁଭୂତିକୁ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଥିଲେ । କେତେ ଜଣ କହିଥିଲେ — ସେ ଥିଲେ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ସରା । ଏହି ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ଅବସ୍ଥା କଥା ଆମେ ପଢ଼ିଛୁ ପରମ ପୂଜନୀୟ ଶ୍ରୀଗୁରୁଜୀ (ମାଧବ ସଦାଶିବ ଗୋଲ୍‌ଘାଲକର)ଙ୍କ ଜୀବନୀରୁ । ଗୁରୁଜୀ ଯେଉଁ ସମୟରେ ନାଗପୁରରେ ଓକିଲାତି ପଢୁଥିଲେ ସେତେବେଳେ ସେ ତାଙ୍କର ଜଣେ ମିତ୍ରଙ୍କ ସହ ରାମକୃଷ୍ଣ ମିଶନକୁ ଯାଉଥିଲେ । ସେଠାର ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ଅମିତାଭ ମହାରାଜଙ୍କୁ ସେ ଥରେ ପଚାରିଲେ — ଆପଣ ମୋତେ ଜଣେ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ସନ୍ନ୍ୟାସୀଙ୍କ ସହ ଭେଟ କରାଇ ଦେଇ ପାରିବେ । ସେ କହିଲେ — ହଁ ପାରିବି; କିନ୍ତୁ ଏଥିପାଇଁ ତୁମକୁ ସର୍ବସ୍ୱ ତ୍ୟାଗ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଗୁରୁଜୀ କହିଲେ ମୁଁ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଅଛି, ଏବେ ମଧ୍ୟ ମୁଁ ଯାଇପାରିବି । ଅମିତାଭ ମହାରାଜ କିଛି ସମୟ ନେଲେ । ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ଗୁରୁଭାଇ ସ୍ୱାମୀ ଅଖଣ୍ଡାନନ୍ଦ ଥିଲେ ସେହିପରି ଜଣେ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ । ସେ ସେତେବେଳେ ବଙ୍ଗ ପ୍ରଦେଶର ସାରଗାଛିଠାରେ ଆଶ୍ରମ କରି ରହୁଥାନ୍ତି । ତାଙ୍କଠାରୁ ଅନୁମତି ଆଣିବା ପରେ ଏହି ନାଗପୁର ଆଶ୍ରମରେ ଥିବା ଅମିତାଭ ମହାରାଜ ଗୁରୁଜୀଙ୍କୁ ସଙ୍ଗରେ ନେଇ ସାରଗାଛିରେ ଛାଡ଼ି ଆସିଥିଲେ । ୧୯୩୬ ମସିହା କଥା । ପରମ ପୂଜନୀୟ ଶ୍ରୀଗୁରୁଜୀ ସେଠାରେ ଏକ ବର୍ଷରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ସମୟ ରହି ଗୁରୁଙ୍କ ସେବା କଲେ । ସ୍ୱାମୀ ଅଖଣ୍ଡାନନ୍ଦ ମୃତ୍ୟୁ ପୂର୍ବରୁ ଗୁରୁଜୀଙ୍କୁ ୧୯୩୬ ମସିହା ମକର ସଂକ୍ରାନ୍ତି ଦିନ ଦୀକ୍ଷା ଦେଇଥିଲେ । ମୁକ୍ତ ଜୀବନର ଅବସ୍ଥା ଆମପାଇଁ ବୁଝିବାକୁ କଠିନ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଆମେ ଗର୍ବିତ ଯେ, ସ୍ୱାମୀ ଅଖଣ୍ଡାନନ୍ଦଙ୍କ ପରି ଏକ ମହାନ ଜୀବନ୍ମୁକ୍ତ ସରାଙ୍କୁ ନଗେନବାବୁ ରୂପେ ଆମେ ପାଇଥିଲୁ । ଜୀବିତାବସ୍ଥାରେ ଆମେ ଚାହିଁଥିଲୁ ତାଙ୍କପାଇଁ ଅଭିନନ୍ଦନିକାଟିଏ କରିବାପାଇଁ । ତାଙ୍କ ଅଗୋଚରରେ ଆମେ ମଧ୍ୟ କିଛି ଉଦ୍ୟମ କରିଥିଲୁ । ଗତ ଡିସେମ୍ବର ୧୭ ତାରିଖ ଦିନ ତାଙ୍କୁ ଆମେ ପଚାରିଲୁ ଆପଣଙ୍କର ଗୋଟିଏ ଅଭିନନ୍ଦନିକା କଲେ କେମିତି ହୁଅନ୍ତା । ତାଙ୍କର ତ ପ୍ରସିଦ୍ଧିପରାଜ୍‌ମୁଖ ଜୀବନ । ସେ କହିଲେ, ସେଥିରେ କାହିଁକି ଲାଗିଛି ? ଯଦି ମୋ ପ୍ରତି ଶ୍ରଦ୍ଧା ଅଛି ତେବେ ଯେଉଁ କିଛି ପ୍ରାଚୀନ ସାହିତ୍ୟ ବିଲୁପ୍ତ ହୋଇଯାଉଛି ତାକୁ ଉଦ୍ଧାର କର । ଆମେ କହିଲୁ, ସେପରି କିଛି ବହି ମିଳିଛି କି ? ସେ କହିଲେ, ମୁଁ କିଛି ବହି ଡି.ଟି.ପି. ପାଇଁ ଦେଇଛି । ଭାରତ ହରିବଂଶ, ଶାରଳା ଦାସ ବଡ଼ ବହି ହେବ । ଯାହାକୁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ କୁମାର ନାଥଶର୍ମା ଡି.ଟି.ପି. କରୁଛନ୍ତି । ଗୋବିନ୍ଦ ଗୀତା, ଦ୍ୱାରକା ଦାସ, ହେତୁ ଉଦୟ ଭାଗବତ, ଶିଶୁ ଅନନ୍ତ ଏହିଭଳି କିଛି ଛୋଟ ବହିର ଡି.ଟି.ପି. କାର୍ଯ୍ୟ ସରିଛି । ଆହୁରି କିଛି ବହିର ନାମ ସେ କହିଥିଲେ । ଯେମିତିକି-ବାଲିପାଟଣା ତନୟା

ଦାସ ଗୋସ୍ୱାମୀ, ରସକଲ୍ଲୋଳ, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣ, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ, ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା ଓ ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଦର୍ଶନର ଧାରା । ଏ ସବୁ ବହିର ପୁନର୍ମୁଦ୍ରଣ ହେବା ଦରକାର । ଏଇ ଜୁଲାଇ ମାସ ୬ ତାରିଖ ତାଙ୍କ ବିୟୋଗର ଏକାଦଶୀ ତିଥିରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଦେବାକୁ ଆମେ ତାଙ୍କରି ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ଅବଧି ଆନନ୍ଦପୁର ଗାଁକୁ ଯାଇଥିଲୁ । ସେଠାରେ ମା'ଙ୍କଠାରୁ ଶୁଣିଲୁ ଯେ ସେ ତାଙ୍କ ଗୁରୁ ବାୟାବାବାଙ୍କ ଜୀବନୀ ମଧ୍ୟ ଲେଖିସାରିଛନ୍ତି । ଆହୁରି ଅନେକ ବହି ତାଙ୍କ ବହି ଥାକରୁ ଖୋଜିଲେ ମିଳିବ ।

ଆମେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଦସ୍ୟ-ସଦସ୍ୟାଗଣ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ସାୟାଛାୟାକୁ ଦେଖୁଛୁ । କିନ୍ତୁ ଏମିତି ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଭାବେ ସେ ଆମମାନଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂରକୁ ଚାଲିଯିବେ ଏହା ଆମ କଳ୍ପନାର ବାହାରେ ଥିଲା । ତାଙ୍କ ତିରୋଧାନ ଆମକୁ ମିୟମାଣ କରି ଦେଇଛି ଏଥିରେ କୌଣସି ଅନୁଶୋଚନା ନାହିଁ ସତ; କିନ୍ତୁ ସେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବରେ ଆମକୁ ଯାହା ସବୁ ଦେଇଛନ୍ତି ତାହାର କଳନା ନାହିଁ । ତାଙ୍କରି କର୍ମନିଷ୍ଠା ଓ ନିର୍ଭୁଲ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଆଜି ଧନ୍ୟ ମଣୁଛି । ଭଲ ହୋଇଥାଆନ୍ତା ତାଙ୍କ ଛାତ୍ର ଜୀବନ, ଅଧ୍ୟାପକ ଜୀବନ, ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସାଙ୍ଗଠନିକ ଜୀବନ ସମୟର ତଥ୍ୟକୁ ନେଇ ଆଗରୁ ଯଦି କେହି ଅଲଗା ଅଲଗା ପୁସ୍ତକ ପ୍ରକାଶନ କରିବାର ଉଦ୍ୟମ କରିଥାନ୍ତେ । ଏହି ସବୁକୁ ଆଖି ଆଗରେ ରଖି ସେଦିନର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ସଭାରେ ଯେତେ ସଂସ୍କରଣ ଆସିଲା ତାକୁ ନେଇ ଏହି ସ୍ମରଣିକା ଆଡ଼ୁ ପ୍ରକାଶ କରିବାକୁ ଯାଉଛି । ପରେ ପୂଜ୍ୟ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଏକ ଜୀବନୀ ଗ୍ରନ୍ଥ ପ୍ରକାଶନ କରିବାର ଉଦ୍ୟମ କରୁଛୁ । ଆଦରଶାୟ ପ୍ରଫେସର ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡାଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ ଯେଉଁ ଅଭିନନ୍ଦନିକା ସମିତି ଗଠିତ ହୋଇଥିଲା ସେହି ସମିତି ଏବେ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ ପ୍ରସ୍ତୁତି କାର୍ଯ୍ୟରେ ଲାଗିବେ ବୋଲି କହିଛନ୍ତି । ଏଥିପାଇଁ ଆପଣମାନଙ୍କର ସହଯୋଗ କାମନା କରୁଛୁ ।



**Dharmendra Pradhan**

ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ୭୪ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିୟୋଗରେ ମୁଁ  
ମର୍ମାହତ । ଜଣେ ସତ୍ୟନିଷ୍ଠ ଓ ଦେଶପ୍ରେମୀ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ  
ଭାବରେ ସ୍ୱର୍ଗତ ପ୍ରଧାନ ଏକ ଅଲିଭା ଛାପ ଛାଡ଼ି ଯାଇଛନ୍ତି ।  
ଶୋକସନ୍ତପ୍ତ ପରିବାର ବର୍ଗଙ୍କୁ ସମବେଦନା ଜଣାଇବା ସହ  
ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦଗତି ପାଇଁ ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀ  
ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ପ୍ରାର୍ଥନା ।



## ଉତ୍କଳୀୟ ବୌଦ୍ଧିକ ଜଗତରେ ଅର୍ଦ୍ଧଶତକର ନରୋଦୟ

ଶ୍ରୀ ଜଗବନ୍ଧୁ ମିଶ୍ର

ପୂର୍ବତନ ସମ୍ପାଦକ, ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ

ଫୋ: ୯୯୩୮ ୯୬୮୩୫୬

ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କର ହଠାତ୍ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ତାଙ୍କ ସ୍ମୃତିଚାରଣ କରିବସିବା ଏକ ସହଜ ସମ୍ବେଦନଶୀଳ ମାନବୀୟ କୃତଜ୍ଞତା । ତଦ୍ୱାରା ତାଙ୍କ ବିକଶିତ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ବିଚ୍ଛୁରିତ ସୌରଭର ଭୁରୁଭୁରୁ ମହକ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ଉତ୍ତପ୍ରେରିତ କରାଇ ସମାଜକୁ ଏକ ସଠିକ୍ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇଥାଏ ।

ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ପ୍ରିୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଆମମାନଙ୍କୁ ଛାଡ଼ି ଚାଲିଯିବାଟାକୁ ଏତେ ସହଜରେ ଗ୍ରହଣ କରି ହେଉନି । କାରଣ ସମାଜକୁ ତାଙ୍କର ନିତ୍ୟନିରନ୍ତର ଦେଇ ଚାଲିଥିବା ପ୍ରକ୍ରିୟା ଏତେ ସଚଳ ଚଞ୍ଚଳ ପ୍ରାଣବନ୍ତ ଉଚ୍ଛ୍ୱଳିତ ଥିଲା ଯେ ତାହା ହଠାତ୍ ବନ୍ଦ ହେଇଯିବାଟାକୁ ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧାନ ସହଜରେ ମାନି ନେବାକୁ ପ୍ରସ୍ତୁତ ନୁହେଁ । ସମାଜଠାରୁ ସିଏ କେତେ କ'ଣ ଗ୍ରହଣ କରିଛନ୍ତି ତାହା ଜଣାନାହିଁ; କିନ୍ତୁ ସେ ସମାଜକୁ ଏତେ କିଛି ଦେଇଯାଇଛନ୍ତି ଓ ଦେବାପାଇଁ ଚେଷ୍ଟାରତ ଥିଲେ ଯେ, ତାକୁ ଆକଳନ କରି ଉଲ୍ଲେଖ କରିବସିଲେ ହୁଏତ ତାହା ଏକ ଗ୍ରନ୍ଥ ପାଲଟିଯିବ । ଏତେ ଗବେଷଣା ପ୍ରବଣତା ? ସତେ ଯେମିତି ଶରୀରର ପ୍ରତି ରକ୍ତବିନ୍ଦୁର ପ୍ରତିଟି କଣିକା ଭିତରୁ ସଞ୍ଚରି ଉଠୁଥିଲା ଏ ଜାତିର ସାହିତ୍ୟ, ସଂସ୍କୃତି, କଳାକୌଶଳ, ଶିକ୍ଷା ସଂସ୍କାର ଓ ଗୌରବଦୀପ୍ତ ଇତିହାସର ମହନୀୟ ଗବେଷଣା ପ୍ରବଣତାଟା । ଆହୁରି ଅନେକ ଗବେଷଣା ମଣ୍ଡିତ ଆବେଗ ତାଙ୍କର ଛପି ରହିଗଲା ତାଙ୍କ ଧୂମିଳ ଆକାଂକ୍ଷାର ଦୂରଦିଗ୍‌ବଳୟ ଭିତରେ ।

ସେ ଗତ କିଛିମାସ ଧରି ଅସୁସ୍ଥ ଥିଲେ । ହେଲେ ତାଙ୍କ ଅସୁସ୍ଥତା ତାଙ୍କୁ ରୋକି ପାରିନଥିଲା ତାଙ୍କର ନୂଆ ନୂଆ ସୃଷ୍ଟି ସଞ୍ଚରିଯିବାର ତୀବ୍ର ଆବେଗମୟତାଟାକୁ । ସିଏ କ'ଣ ନ ଥିଲେ ? ଗଭୀର ଜ୍ଞାନର ଅଧିକାରୀ, ମୌଳିକ ଗବେଷକ, ପ୍ରଖ୍ୟାତ ସାହିତ୍ୟିକ, ପ୍ରାବନ୍ଧିକ, ଆଲୋଚକ, ଐତିହାସିକ, ଶିକ୍ଷାବିଶାରଦ, ସମାଜ ସଙ୍ଗଠକ, ପରୋପକାରୀ, ଅମାୟିକ, ନିରହଙ୍କାର, ବନ୍ଧୁବନ୍ଧୁଳ, ଆମୋଦ ପ୍ରମୋଦପ୍ରିୟ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ବିରକ୍ତ ଗୃହୀ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ଭଳି ଯାବତୀୟ ଉଚ୍ଚାଙ୍ଗ ମାନବୀୟତାରେ ମହିମୋଜ୍ଜ୍ୱଳମଣ୍ଡିତ ପରିପୂରକ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ସମର୍ଥ ଅଧିକାରୀ । ଅତ୍ୟନ୍ତ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଲବ୍ଧ ତାଙ୍କର ଯାବତୀୟ ସାହିତ୍ୟକୃତି ଉପରେ ପ୍ରଖର ଜାତୀୟତାବାଦରେ ମନସିକ ଛୁଙ୍କ ଚଢ଼ା ମହମହ ବାସ୍ତା ତାଙ୍କ ସୃଜନଶୀଳତାର ସରସ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ ।

ଉତ୍କଳୀୟ ଗ୍ରନ୍ଥ ପରମ୍ପରାରେ ନିର୍ଗୁଣଧାରୀ ଉପରେ ତାଙ୍କ ଡି.ଲିଟ୍ ଉପାଧିଭିତ୍ତିକ ଗବେଷଣା ହେଉ କିମ୍ବା କବି ଜୟଦେବଙ୍କ ଉତ୍କଳୀୟତା ଉପରେ ବ୍ୟାପକ ପ୍ରତିପାଦ ହେଉ, ସବୁଥିରେ ତାଙ୍କର ଆଦିକବି ଶାରଳା ଦାସଙ୍କ ଭଳି ଏକ ସକାରାତ୍ମକ ଉତ୍କଳୀୟ ପ୍ରବଣତା, ଏକ ଆବେଗିକ ଉଚ୍ଛ୍ୱାସ ନେଇ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ମାରେ; ଯାହା ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ତାଙ୍କର ଭାରତୀୟ ଜାତୀୟତାବୋଧର ପରିପ୍ରଚାରର ପରିପୂରକ ହୋଇଉଠିଛି ପଛକେ, କୌଣସିଟି ବି ବିରୋଧାଭାସ ସୃଷ୍ଟି କରିନି । ଭାରତୀୟ ଜାତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ଓ ଇତିହାସ କ୍ଷେତ୍ରକୁ ତାଙ୍କର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଅବଦାନ ହେଉଛି ସରସ୍ୱତୀ



ସଭ୍ୟତା ଉପରେ ବ୍ୟାପକ ଗବେଷଣାପୂର୍ବକ ଏକ ବିଶାଳ ଗ୍ରନ୍ଥରଚନା, ଯାହା ହିନ୍ଦୀ, ଇଂରାଜୀ ଓ କୌଣସି ଭାରତୀୟ ଭାଷାରେ ଏଯାବତ୍ ଏତେ ବିଶାଳ କଲେବର ଯେ କି ଆଦ୍ୟୁଗାଣ କରିନି । ଡ. ବାଳଶଙ୍କରଙ୍କର ଏ ଦିଗରେ କରିଥିବା ପହିଲି ଉଦ୍ୟମକୁ ସେ ଏତେଦୂର ବାହି ନେଇଛନ୍ତି ଯେ ତାଙ୍କୁ ଡ଼ିପିବାକୁ ବହୁ ଗବେଷକଙ୍କୁ ଅନେକ ଦିନ ଲାଗିଯିବ । ତାଙ୍କ ଲିଖନଶୈଳୀ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର । ସେ ତତ୍ତ୍ୱସମ୍ପନ୍ନ ଓ ତତ୍ତ୍ୱବଦ୍ଧ ଶବ୍ଦ ବ୍ୟବହାରରେ ଥିଲେ ଅତି କୁଶଳ ବିଦ୍ୱାଣ । ଗୁରୁ ଓ ଲଘୁ ଶବ୍ଦ ସଂଯୋଜନାପୂର୍ବକ ବିଶାଳ ବିଶାଳ ବ୍ୟକ୍ତିମାନ ତାଙ୍କ ଅନ୍ତର୍ମନର ସ୍ୱତଃସ୍ପୃହ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ପାଇଁ ଯାଆନ୍ତି ଗୋଟିଏ ବାକ୍ୟ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ପୃଷ୍ଠା ବା ଅର୍ଦ୍ଧପୃଷ୍ଠା ଅଥବା ଅର୍ଦ୍ଧାଧିକ ପୃଷ୍ଠାର କଲେବର ଧାରଣ କରିପକାନ୍ତି, ଆଉ ସେଗୁଡ଼ିକ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ତୁଟିଶୂନ୍ୟ ଏ କ'ଣ କମ୍ କଥା ? ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଥିଲେ ଓଡ଼ିଆ ସାପ୍ତାହିକ ପତ୍ରିକା ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ନିୟମିତ ଲେଖକ । ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସମ୍ପାଦକ ମାନନୀୟ ଶ୍ରୀ ହରିହର ନନ୍ଦଙ୍କ ପହିଲି ସଂସ୍କୃତିରୁ ସେ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ଲେଖକ କେବଳ ନୁହଁନ୍ତି, ଏହାର ସମ୍ପାଦନା ବିଭାଗର ଏକ ବଳିଷ୍ଠ ଆଧାରସ୍ତ୍ରମ୍ଭ । ଯେଉଁ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ବଳିଷ୍ଠ ଲେଖନୀ ମୁନରେ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ ରହିମନ୍ତ ପୁଷ୍ପଳ ହୋଇଉଠିଛି, ସେହି ମନାସିମାନଙ୍କ ଭିତରେ ତତ୍କୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ହେଉଛନ୍ତି ଦୀର୍ଘ ଅର୍ଦ୍ଧଶତକ କାଳର ଅତନ୍ତ୍ର ସାଧକ । ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ଏଭଳି ଆପାତତଃ କୌଣସି ବିଶେଷାଙ୍କ ନଥାଏ, ଯେଉଁଥିରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ଏକ ଗବେଷଣାତ୍ମକ ପ୍ରବନ୍ଧ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇନଥାଏ । ଆଜିର ସରସ୍ୱତୀ ସଭ୍ୟତା ଉପରେ ପ୍ରକାଶିତ ତାଙ୍କ ବିଶାଳ ଗ୍ରନ୍ଥ (୧ମ ଓ ୨ୟ ଭାଗ) ପ୍ରଥମେ ପ୍ରଥମେ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପରେ ବୃହତ୍ ପ୍ରବନ୍ଧ ଆକାରରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି । ଏସବୁ ତାଙ୍କ ଅଥକ ପରିଶ୍ରମ ଓ ସାଧନାର କାଳକ୍ରମୀ ଫଳଶ୍ରୁତି ଓ ଏକ ଓଡ଼ିଆ ପୁଅର ଭାରତୀୟ ସମାଜ ସଂସ୍କୃତି, ସଭ୍ୟତା ତଥା ଇତିହାସକୁ ଗର୍ବସ୍ୱନ୍ଦିତ ଅବଦାନ । ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ ସହିତ ତାଙ୍କର ଭାବାତ୍ମକ ତଥା ଭାଷାତ୍ମକ ସମ୍ବନ୍ଧ ଏକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଅବତାରଶାର ବିଷୟ । ସେଥିପାଇଁ ଯେତେବେଳେ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ପ୍ରଥମ ବସନ୍ତ ମିଳନ ଉତ୍ସବରେ ତାଙ୍କୁ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ସାହିତ୍ୟିକର ସମ୍ମାନ ଦେବାକୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ କରାଗଲା, ସେତେବେଳେ ସେ ଏହାକୁ ମୌଳିକ ସଂସ୍ଥାଦ୍ୱାରା ନିଜେ ସମ୍ମାନିତ ହେବାଟା ଆପଣା ପିଠିକୁ ନିଜେ ଥାପୁଡ଼ାଇବା ଭଳି ଘଟଣା ବୋଲି କହି ନମ୍ରତାପୂର୍ବକ ଏଡ଼ାଇ ଦେଇଥିଲେ ।

ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘ ପୋଷଣ କରୁଥିବା ବିଚାରଧାରାର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ପରିଚାଳନାପୁଷ୍ଟ ଏକ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତ ରୂପ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ସଂଘର ସ୍ୱୟଂସେବକ । ଜଣେ ଧ୍ୟେୟନିଷ୍ଠ ସ୍ୱୟଂସେବକ । ସେ କିପରି ସ୍ୱୟଂସେବକ ହେଲେ, କିପରି ମାନନୀୟ ଭୂପେନବାବୁ ଓ ହରିହରଦା ତଥା ପୂଜ୍ୟ ବାବୁରାଓଜୀଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିଲେ ଓ ୧୯୭୫ ମସିହାର ଜରୁରୀକାଳୀନ ପରିସ୍ଥିତିର କଳାକଳଙ୍କିତ ଅଧ୍ୟାୟରେ ସରକାରୀ ଉତ୍ସାହନ ତଥା ରୋଷର ଶିକାର ହେଲେ; ସେସବୁ ସିଏ ଅତି ବିସ୍ମୃତଭାବେ ନିଜେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଯାଇଛନ୍ତି । ତାହା ସଂଘ ଇତିହାସର ଜୀବନ୍ତ ପୃଷ୍ଠା; କିନ୍ତୁ ସିଏ ଏଭଳି ଏକ ସମୟରେ ସଂଘର ସ୍ୱୟଂସେବକରୁ ଜଣେ ସକ୍ରିୟ ଚଳଚଞ୍ଚଳ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାରେ ପରିଣତ ହୋଇଯାଇଥିଲେ, ଯେତେବେଳେ କୌଣସି ଜଣେ ସରକାରୀ ଚାକିରୀଆ ନିଜକୁ ସଂଘର ସ୍ୱୟଂସେବକ ଭାବେ ଅତି ଖୋଲାଖୋଲି ଭାବେ କହିବାକୁ କୁଣ୍ଡା, ଦ୍ୱିଧା, ଭୟ ଓ ସଙ୍କୋଚବୋଧ କରୁଥିଲେ । ଆଜି ଲୋକ ସଂଘର

ସ୍ଵୟଂସେବକ ହେବାକୁ ମାଧ୍ୟମ ଖୋଜି ବୁଲୁଥିବା ଯୁଗରେ ଏ କଥାଟିକୁ ଅନୁଭବ କରିବା ଓ କଳିପାରିବା ଏକ କଷ୍ଟକର ବ୍ୟାପାର । ସମ୍ଭବତଃ ଏକ ସଂସ୍କୃତିନିଷ୍ଠ, ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତ ହୋଇ ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରିବା ତାଙ୍କ ପୂର୍ବାର୍ଜିତ ପ୍ରାରବଧର ତାବ୍ର ତାଡ଼ନା ଥିଲା, ନହେଲେ ଶତ ଅପମାନ, ନିନ୍ଦା, ଲାଞ୍ଚନା, ସମାଲୋଚନା ଓ ବ୍ୟଙ୍ଗବିଦ୍ରୁପକୁ ଭୂକ୍ଷେପ ନ କରି ସେ ସଂଘ ବିଚାରର ପ୍ରତିଟି କ୍ଷେତ୍ରକୁ ଗୋଟିକ ପରେ ଗୋଟିଏ ପୁଷ୍ପଳ କରି ଗଢ଼ି ତୋଳିବାରେ ମନ ପ୍ରାଣ ଢାଳିଦେଇ ଅବିରତ ଉଦ୍ୟମ କରିଚାଲି ନ ଥାନ୍ତେ ।

ବିଚାରଧାରାକୁ ବଳିଷ୍ଠ, ସଶକ୍ତ, ସମ୍ମାନସ୍ପଦ କରି ଗଢ଼ି ତୋଳିବାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ ସହ ତାଙ୍କ ସମ୍ପୃକ୍ତି, ଜାତୀୟତାବାଦୀ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ ବହୁଳ କରି ଚାଲୁଥିବା ଛାତ୍ର ଆନ୍ଦୋଳନ ଅତ୍ୟୁକ୍ତ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ଦାୟିତ୍ଵ ତୁଲାଇବା, ଭାରତର ସଠିକ ପୂର୍ଣ୍ଣାଙ୍ଗ ଇତିହାସ ପୁନର୍ଲେଖନ ପାଇଁ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ଯୋଜନାର ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ସ୍ଵରୂପ, ଓଡ଼ିଶା ଇତିହାସ ସଂକଳନ ସମିତିର ପ୍ରଥମ ପ୍ରାଦେଶିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ଦାୟିତ୍ଵ ନିର୍ବାହ, ଅତ୍ୟୁକ୍ତ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ପ୍ରାଦେଶିକ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ବୈପ୍ଳବିକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଓ ଦିଗ୍‌ବର୍ତ୍ତନ ସୃଷ୍ଟି କରିପାରିଥିବା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରଥମ ପ୍ରାଦେଶିକ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ତାହା ମୂଳ ସଂଗଠନ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀୟ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ, ଭୁବନେଶ୍ଵରରେ ସଂଘର ପ୍ରଥମ ସଂଘଚାଳକ ଆଦି ସବୁ ତାଙ୍କର ଅନୁକରଣୀୟ ଉତ୍କଳ ଆଦର୍ଶ ଚରିତ୍ରବତୀ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ବିଚାରଧାରା ପ୍ରତି ତାବ୍ର ତାଦାତ୍ମ୍ୟଭାବ, ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଧ୍ୟେୟନିଷ୍ଠ ଓ ପ୍ରଖର ସଂଗଠନ କୌଶଲ୍ୟର ପରିଚୟ ଦେଇଥାଏ ।

କିନ୍ତୁ ଏସବୁ ବ୍ୟତିରେକେ ତାଙ୍କ ଭିତରେ ଛପି ରହିଥିଲା ଏକ ଅନବଦ୍ୟ ଅମୃତଭାବ । ତାହା ଥିଲା ତାଙ୍କ ସରଳ, ସହଜ, ନିଷ୍ପପଟ ମଣିଷପଣିଆ, ଦରଦୀ ସ୍ଵଭାବ, ଅତିଥି ପରାୟଣତା ଓ ହାସ୍ୟ ପରିହାସଭରା ମୃଦୁମାଦକତା ବୋଲା ମଧୁର ଶବ୍ଦ ତଥା ବାକ୍ୟ, ଲଭରା ଆଳାପ ବିଶ୍ଵାସ କରି ହୁଏ ନା ଯେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମ୍ବନ୍ଧ ବାକ୍ୟ ରଚନା କରି ପ୍ରବନ୍ଧ ସାହିତ୍ୟର ଉତ୍କଳ ହିମାଦ୍ରୀକୁ ସ୍ପର୍ଶ କରିଥିବା ଆଳାପ ଆଲୋଚନା ବେଳେ ଏଭଳି ଗାଢ଼ିଲା ଶବ୍ଦମାନ ପ୍ରୟୋଗ କରି ବସନ୍ତି ଯେ, ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆସର ହୋଇଉଠେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆହ୍ଲାଦଦାୟକ ଓ ସ୍ମିର୍ୟ ମଧୁରସିକ୍ତ । “ନମ୍ରନ୍ତି ଫଳିନୋ ବୃକ୍ଷାଃ, ନମ୍ରନ୍ତି ଗୁଣିନୋ ଜନାଃ” ବୋଲି ସମସ୍ତେ କହିଥାଆନ୍ତି । ହେଲେ ବ୍ୟକ୍ତି ଜୀବନରେ ଏହା ପ୍ରକଟିତ ହୋଇଉଠିବା ଏତେ ସହଜ କଥା ନୁହେଁ । କିନ୍ତୁ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଯେଉଁମାନେ ଆସିଛନ୍ତି ଯେଉଁମାନେ ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ମିଶିଛନ୍ତି ଓ ଯେଉଁମାନେ ତାଙ୍କ ସହ ଆଳାପ ଆଲୋଚନାରେ ଆନନ୍ଦ ଉପଲବ୍ଧି କରିଛନ୍ତି ସେମାନେ ସ୍ଵୟଂ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ କରିପାରିଛନ୍ତି ଯେ କିଭଳି ଗୁଣାଜନ ନମ୍ର ହୋଇପାରନ୍ତି ଓ କିଭଳି ଫଳଭାରରେ ଗଛଟିଏ ନଇଁ ନଇଁ ଯାଏ ।

ନଗେନବାବୁ ବଡ଼ ପରୋପକାରୀ । କେତେ କେତେ ଗବେଷକଙ୍କୁ ସେ କୌଣସି ପ୍ରତ୍ୟାଶା ନ ରଖି ପି.ଏଚ୍.ଡି. କରାଇଛନ୍ତି । କେତେ କେତେ ଲେଖକ, ବକ୍ତା, ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କୁ ଦିଗ୍‌ବର୍ତ୍ତନ ଦେଇଛନ୍ତି । କେତେ ଗରିବ ମେଧାବୀ ଛାତ୍ରଙ୍କୁ ତାଙ୍କ କ୍ଷମତା ଓ ଶକ୍ତିମନ୍ତେ ସାହାଯ୍ୟ ଯୋଗାଇ ଦେଇଛନ୍ତି । ଅନେକ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀଙ୍କୁ ଶୁଦ୍ଧ ଜାତୀୟତାବୋଧର ଅମୃତତତ୍ତ୍ଵରେ ଅବଗାହିବାରେ ସହାୟକ ସାବ୍ୟସ୍ତ ହୋଇଛନ୍ତି । ସଙ୍ଗଠନରେ ଶହଶହ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା

ତାଙ୍କୁ ଅଭିଭାବକଦ୍ୱରେ ମୁଗ୍ଧବିଭୋର ହୋଇ କାର୍ଯ୍ୟରତ ରହିଛନ୍ତି । ସଙ୍ଗଠନ ଭିତରେ ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ସମପିତ୍ତ ଶୁଖିଲା ମର୍ଯ୍ୟାଦା ସଚେତନ ଅମୃତବିଭୂତି । କେବେ କେବେ ନିଜ ସହଧର୍ମା ଯୁବ ସହକର୍ମୀଟିଏ ଠାରୁ ଉପେକ୍ଷା ଅବଜ୍ଞା ବ୍ୟବହାର ଜର୍ଜରିତ ଶରାହତ ହୋଇ ସୁଦ୍ଧା ସେମିତି ଅତିଶୟ ଆନ୍ତରିକତା ସମ୍ବେଦନଶୀଳତାର ପରଶ ନ ପାଇଲେ ସହଜରେ ପ୍ରକାଶ କରନ୍ତିନି ସେ ଆହତ ମନର ପାତ୍ରକୁ । ଠିକ୍ ଯେପରି କୌଣସି ଘରର ଗୁଣାଞ୍ଜାନୀ ମର୍ଯ୍ୟାଦାବଦ୍ଧ ଶଶୁରଟିଏ ଇନ୍ଦ୍ରିୟ ସୁଖଭୋଗ ପ୍ରମତା ବୋହୂଟିର ଉଦ୍‌ବିଗ୍ନତା ଉତ୍ସୁକତାଟାକୁ କାହାରିକୁ ଜାଣିବାକୁ ନ ଦେଇ ଘୋଡ଼େଇ ପୋଡ଼େଇ ଚାଲିବାଭଳି । କାରଣ ବୋଧହୁଏ ସେ ଜାଣିଥିଲେ ଯେ ଘର ପରିବାର ଭଳି ତାଙ୍କର ପ୍ରିୟ ସଂଗଠନ ଗୁଡ଼ିକ ମଧ୍ୟ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ପରିବାର ।

ଏଭଳି ସର୍ବଗୁଣସମ୍ପନ୍ନ ଜ୍ଞାନୀ, ଗୁଣୀ, ଉତ୍ତର ପୁରୁଷଙ୍କୁ ହିଁ ତ ନରୋତ୍ତମ କୁହାଯାଏ । ସେ ଥିଲେ ଉତ୍କଳୀୟ ବୌଦ୍ଧିକ ଜଗତର ଦୀର୍ଘ ଅର୍ଦ୍ଧଶତକକାଳ ଧରି ସ୍ୱକାୟ ବିଭୂତି-ଉଜ୍ଜ୍ୱଳିତ ନରୋତ୍ତମ । ତାଙ୍କ ମୁଣ୍ଡରେ କ୍ଷମତାର ମୁକୁଟ ନ ଥିଲା; କିନ୍ତୁ ତଥାପି ସେ ଥିଲେ ନରୋତ୍ତମ । ଆଶୀର୍ବାଦର ବୟସରେ ତାଙ୍କ ଇହଲୀଳା ସମ୍ବରଣ ଅତି ସ୍ୱାଭାବିକ ଥିଲେ ସୁଦ୍ଧା ତାଙ୍କ ଅପୂରଣୀୟ ରହିଯାଇଥିବା ଆହୁରି ଉନ୍ନତ ଗବେଷଣାର ବେଗଗାମୀ ଅଭିଳାଷ ଆଜି ଶତଧା ବିଦାର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଉଠୁଛି ତାଙ୍କ ଆବର୍ତ୍ତମାନରେ ।



**Avilash Panda**

"ଓଡ଼ିଶା ଏକିଭିପିର ଗୋଟେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଇତିହାସ  
ଲେଖିବାର ଇଚ୍ଛା ଥିଲା, ଦେହ ଆଉ permit  
କରୁନି।" ଶେଷ ଥର ସାକ୍ଷାତରେ ଆପଣ  
କହିଥିଲେ।  
କଷ୍ଟ ଲାଗୁଛି ଆପଣଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ଅଧୁରା ରହିଗଲା।



## ମୋ ସାର, ମୋ ଗୁରୁ, ମୋ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ

ଦୁର୍ଯ୍ୟୋଧନ କାଠୁଆ

ଆଜ୍ଞାବନ ସଦସ୍ୟ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୪୩୯୧୦୦୧୭୫

ମୋ ସାର, ମୋ ଗୁରୁ, ମୋ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଫେସର ଡଃ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ମୋର ଜୀବନର ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ଥିଲେ । ରାଜନୈତିକ ଘନଘଟା ଓ ସଂସ୍କାରର ଲଢ଼େଇରେ ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ସଂସ୍କାରୀ ବୀର ପୁରୁଷ, ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଥିଲେ ଜଣେ ନିରଳସ, ଜ୍ଞାନ ଗରିଷ୍ଠ ବରିଷ୍ଠ ସାଧକ । ଆଦର୍ଶ ପିତା, ଆଦର୍ଶ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ, ଆଦର୍ଶ ଗୃହୀ, ଆଦର୍ଶ ଶିଷ୍ୟ ଓ ପରମ ବୈଷ୍ଣବ । ସଂସାରର ଜଞ୍ଜାଳ ଭିତରେ ଜ୍ଞାନ ଓ ଭକ୍ତିର ପରାକାଷ୍ଠା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଯାଇଛନ୍ତି । ସାର ସମସ୍ତ କର୍ମ ଓ ଜଞ୍ଜାଳ ମଧ୍ୟରେ ପାଣି ଭିତରେ ପଦ୍ମପତ୍ର ପରି ସ୍ଥିର ଓ ଅଚଞ୍ଚଳ ସ୍ବଚ୍ଛ ଓ ନିର୍ମଳ ଥିଲେ । ଭାବରେ କୁସୁମ କୋମଳ ଅଥଚ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମ୍ପାଦନରେ ବଜ୍ର କଠୋର ।

ସାରଙ୍କ ଜୀବନୀ ଓ କୃତି ଉପରେ ବିଶେଷ କିଛି କହିବି ନାହିଁ । ଓଡ଼ିଶାର କାବ୍ୟରସିକ, ସାହିତ୍ୟପ୍ରେମୀ, ଗବେଷଣା କ୍ଷେତ୍ରର ପ୍ରତିଭା ଓ ଅଧ୍ୟାତ୍ମ ତତ୍ତ୍ବଦର୍ଶୀ ତଥା ସଂଗଠନ ପ୍ରିୟ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କୁ ଆଜି ଏହା ଅବିଦିତ ନାହିଁ । କିଶୋର ଅବସ୍ଥାରେ ମୁଣ୍ଡରେ ସାର ଗୋକେଇ ବୋହି ହାଟକୁ ଯାଉଥିବା ପିଲା । ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ସମଗ୍ର ଜୀବନକୁ ଏକ ଅମୃତ କଳସ କରି ସମ୍ପର୍କରେ ଆସିଥିବା ଲକ୍ଷ ଲକ୍ଷ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ସ୍ବୟଂ ସଶରୀରରେ ଓ ସମ୍ପର୍କରେ ଆସିନଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କୁ ପୁସ୍ତକ ଆକାରରେ ଅମୃତ ବିତରଣ କରି ଚାଲିଛନ୍ତି । କେତେବେଳେ ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ, କେତେବେଳେ ମୁକ୍ତ ଆକାଶ ତଳେ କେତେବେଳେ ଗୁରୁ ଗମ୍ଭୀର ବକ୍ତା ଭାବରେ ମଞ୍ଚ ଉପରେ ରାତି ରାତି ଖୋର୍ଦ୍ଧା ଗାମୁଛାଟିଏ ପିନ୍ଧି ଗବେଷଣାରେ । ସବୁଠି ଅନନ୍ୟ ପ୍ରେରଣାପୁରୁଷ । ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମାକ୍ଷା ଓ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣରେ ତାଙ୍କ ଭିତରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣଙ୍କ ଆତ୍ମା, ମଥୁରାମଙ୍ଗଳ ଶୁଦ୍ଧପାଠ ସମ୍ପାଦନାରେ ଭକ୍ତଚରଣ, ଗଙ୍ଗାଧର ଗୁପ୍ତାବଳୀର ମୁଖବନ୍ଧରେ ସ୍ବୟଂ ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ ଆତ୍ମା ତାଙ୍କ ଭିତରେ ପଶି ଯେମିତି ନିଜକୁ ଉନ୍ମୋଚିତ କରିଛନ୍ତି, ସେହିପରି “ମାରା ସାହିତ୍ୟ ଭୂମିକାରେ ମାରାବାଇ”, “ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣଧାରା”ରେ ପଞ୍ଚସଖା ଓ ସମସ୍ତ ଓଡ଼ିଆ ସଦୁକ୍ତିବିମାନଙ୍କର ଆତ୍ମା ତାଙ୍କ ମାଧ୍ୟମରେ ସ୍ବୟଂ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛନ୍ତି । ହେତୁ ଉଦୟ ଭାଗବତରେ ସେ ସ୍ବୟଂ ଶିଶୁ ଅନନ୍ତ ଓ ସମସ୍ତ ଜଗନ୍ନାଥ ସଂସ୍କୃତି ଓ ବୈଷ୍ଣବୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ଭାରରେ ଉଦାର ଜଗନ୍ନାଥପ୍ରେମୀ ଓଡ଼ିଆ, ଉତ୍କଳୀୟ ବୈଷ୍ଣବଟିଏ । ଅପସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରବଳ ଝାଞ୍ଜିରେ ମୁହଁ ପୋଡ଼ିଯାଉଥିବା ଏକ ଯୁଗରେ ସିଏ ଶୀତଳ ଶ୍ରୀହରିଚନ୍ଦନ । “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ବତୀ” ଭିତରେ ଦେବୀତମା, ନଦୀତମା ସରସ୍ବତୀଙ୍କ କୂଳରେ ଓ କୋଳରେ ବେଦରୁ ଝଙ୍କାର ତୋଳିଥିବା ରକ୍ଷି ସଂପ୍ରଦାୟ । ଏ ସଂସ୍କୃତିର ଅବକ୍ଷୟ ଯୁଗରେ ଆର୍ଷ ସତ୍ୟତାର ମହିମା ମଣ୍ଡନ କରୁଥିବା ରକ୍ଷି ସିନ୍ଧି ବାଣ୍ଟୁଥିବା ଏକ ରକ୍ଷି । ସାରଙ୍କ ବହୁ ଆୟାମୀ ପ୍ରତିଭାର ଆକଳନ କରିବା ଆମମାନଙ୍କ ପାଖରେ ଅସମ୍ଭବ । ମାତା-ପିତା ବା ଗୁରୁବର୍ଗ ବିରୋଗରେ ମୁଁ ତ ସ୍ବଧା କାତର ଏକ ଶିଶୁ ବା ଶିଷ୍ୟ । କହିବି କ’ଣ ? ଲେଖିବି କ’ଣ ?

ସାରଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଆସିବା ଦ୍ବାରା ଏ କାମଦା, ମୋକ୍ଷଦା ଜୀବନରେ କିଛି ଅର୍ଥ ଅନୁଭୂତ ହୋଇଛି । ଜୀବନକୁ ଏକ ଚୈତନ୍ୟପୂର୍ଣ୍ଣ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଦିଶା ମିଳିଛି । ମୋ ଜୀବନରେ ମୋ ହାଇସ୍କୁଲ ସମୟର ଶିକ୍ଷକ



ସ୍ବର୍ଗତ ଭଗବାନ ଦାସ ଯେଉଁ ସଂସ୍କାରର ବୀଜ ବପନ କରିଥିଲେ ତାହା ଫୁଲ ଫଳ ଧରିଥିଲା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ଶିକ୍ଷା ସମୟରେ । ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ, ଭୁବନେଶ୍ବରରେ ସାର୍ବଜ୍ଞ ସମ୍ପର୍କରେ ୧୯୬୮ରୁ ୧୯୭୧ରେ । ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ମୋ ଜୀବନ ମୁଁ ସାର୍ବଜ୍ଞର ଅନୁଗତ ଶିଷ୍ୟ ହୋଇ ରହିଛି । ଆଦେଶ ପାଳନ କରିଛି, ତାଙ୍କର ପ୍ରତିଟି ବାକ୍ୟ ସଂସ୍କାରିତ, ମାର୍ଜିତ । ମୁଁ କୃଷ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ନାୟକଙ୍କ ଭଳି ଏକ ସମର୍ଥ ଶିଷ୍ୟ ନୁହଁ । ପଡ଼ି ଉଠି ଯତକ୍ଷତ୍ ପାଳନ କରିଛି ମାତ୍ର ।

ସାର୍ବଜ୍ଞ ସାଙ୍ଗରେ କଟିଥିବା ପ୍ରତିଟି ମୁହୂର୍ତ୍ତ ଏକ ବିରଳ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ଚିନ୍ତା, ଚିନ୍ତନ । ଥରେ ସାର୍ବଜ୍ଞଙ୍କର ହୋଟେଲର (ଭୁବନେଶ୍ବର ୪ ନମ୍ବର ଯୁନିଟ୍) ବାରଣ୍ଡାରୁ ଅଳ୍ପ ଦୂରରେ ଏକ ପଡ଼ିଆରେ ଠିଆହୋଇଥାନ୍ତି । ସମୟ ସଂଧ୍ୟା ସାଢ଼େ ସାତ ପାଖାପାଖି । ଅମାବାସ୍ୟା କି କ'ଣ, କିଟିକିଟି ଅନ୍ଧାର । ବିଜୁଳି ଆଲୁଅ ନଥାଏ । ମୁଁ ସାର୍ବଜ୍ଞ ପାଖରେ ଅଛି । ସାର୍ବ ସେ ରାତିର ଅନ୍ଧାର ଦେଖୁ ଭାବମଗ୍ନ ହୋଇଗଲେ । କଳାରାତି, କାଳରାତି, କାଳୀ, କାଳ, ମହାକାଳ ସମ୍ବନ୍ଧରେ କାଳିସୀ ଲାଗିଲା ଭଳି ଅନର୍ଗଳ କହି ଚାଲିଲେ । ଏହି କାଳୀ, କାଳର ସ୍ରୋତରେ ସବୁ କେମିତି ଏକ ଅନନ୍ତ ପ୍ରବାହରେ ଭାସିଯାଉଛି । ମଣିଷହିଁ କେବଳ ତାକୁ ଚିହ୍ନି ପାରିବ । ନିଜକୁ ବି ।

ମୋତେ ଲାଗିଲା ସାର୍ବ ଜୀବନ୍ତୁକ୍ତ, ତାଙ୍କର ଚୈତନ୍ୟ ଗ୍ରନ୍ଥି ସଦା ଉନ୍ମୁକ୍ତ । ସ୍ବେଚ୍ଛାକୃତ ଆବରଣଟିଏ ଦେଇ କର୍ମ ସମ୍ପାଦନ କରୁଛନ୍ତି ମାତ୍ର । ସଂଗଠନିକ ପ୍ରୟୋଜନୀୟତା କାରଣରୁ ଦିନ ଦିନ, ରାତି ରାତି ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନକୁ ସାର୍ବଜ୍ଞ ସାଙ୍ଗରେ ରେଳଯାତ୍ରା କରିଛି । ବାଟରେ ମୁଡ଼ି ମିକ୍ଚର୍ କିଛି ନା କିଛି ଚୋବା ହେଉଥିବ । ସରଳ ଶିଶୁ ସୁଲଭ ମୁଖରୁ ବିରଳ ହସଟିଏ ଦିଶୁଥିବ । ସଂଗଠନର ସହଯାତ୍ରୀମାନେ ସାର୍ବଜ୍ଞର ବଡ଼ ଆଦର କରନ୍ତି ।

ଥରେ ଏକ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବୈଠକକୁ ଯିବା ସମୟରେ ଆମେ ଝଣ୍ଡେଡ଼ାଲାର ସଂଘ ମୁଖ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ରାତ୍ରି ଯାପନ କଲୁ । ସକାଳୁ ସକାଳୁ ସ୍ଥାନ ପରେ ଆମକୁ ଖେଚୁଡ଼ି ଖାଇବାକୁ ଦିଆଗଲା । ବାସନା ଅରୁଆ ଚାଉଳ, ଗୋଟା ମୁଗରେ ଝରା ଖେଚୁଡ଼ି । ଆଳୁ ଭଜା, ଆଚାର ପାମଡ଼ । ଗୋଟିଏ କରତୁଲିରେ ଦେଖା ଘିଅରେ ଖେଚୁଡ଼ି ଭିଜିବାଯାଏ ଘିଅ । ସାର୍ବ କହିଲେ — “କ୍ଯାଜ୍ଞାନକୁ ଏ ଖାଦ୍ୟ ମିଳିବନା ! ହାସ୍ୟରସିକ, ଖାଦ୍ୟ ରସିକ, ଭାବ ରସିକ ଥିଲେ ସାର୍ବ ଆମର । ସାହିତ୍ୟରେ ଅଭୂତପୂର୍ବ ରସିକତା । ଚିର ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ । ଆମ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର ପତ୍ରିକାରେ ମୁଁ କବିତାଟିଏ ଦେଇଥାଏ । କବିପତି, ବିଶ୍ବରୂପ, ଯେଉଁଦିନ ପତ୍ରିକା ଛାପାଖାନାରୁ ଆସିଲା ତା’ ପରଦିନ ଶ୍ରେଣୀଗୃହରେ ମତେ ଦେଖୁ ଦେଖୁ ବିଶ୍ବରୂପ କବିତାରୁ ଅଧାରୁ ଅଧିକ ଗାଇଦେଲେ । ମୋ କବିତା ଧାଡ଼ିଟିଏ ବି ମୁଁ ମନେ ରଖିନଥିଲି । ସାର୍ବଜ୍ଞର ପୂରା କବିତାଟା ମନରେ ଥିଲା । ଅପୂର୍ବ ପ୍ରେରଣା ଥିଲେ ଆମପାଇଁ ।

ଥରେ ସାର୍ବଜ୍ଞ ପାଖରେ ବସିଥାଏ । ଆଗରୁ କେତେଦିନ ଧରି ସାର୍ବଙ୍କୁ ଦେଖା କରିନଥିଲି । ଜଣେ ବନ୍ଧୁ କହିଲେ ତମେ ଆଜିକାଲି ସାର୍ବଜ୍ଞ ପାଖରେ ପଶୁନ । ସାର୍ବ କହିଲେ ଶିଷ୍ୟ ଠିକ୍ ଅଛନ୍ତି, ଗୁରୁଙ୍କର କିଛି ଦୋଷ ଆଇପାରେ । ସାର୍ବଜ୍ଞ ଏ ବୈଷ୍ଣବୀୟ ସରଳତା, ନିରାଡ଼ମ୍ବରତା, ସାଧୁତା ସଙ୍ଗକୁ ଆର୍ଷ ଜ୍ଞାନ ଗାୟାର୍ଯ୍ୟ ଥିଲା । ସେ ଭକ୍ତି ଓ ଜ୍ଞାନର ଏକ ଅଂଶାବତାର ଥିଲେ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବନି । ମୋ ସାଙ୍ଗମାନେ ତାକୁ ଶ୍ରଦ୍ଧାରେ ନାଚା ବୋଲି ଡାକୁଥିଲେ । ସେ ଆମର ବାପା ଥିଲେ, ପୁଅ ବି ଉତ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ ବୟସରେ । ତାଙ୍କ ବିଯୋଗରେ କାନ୍ଦିବାର ନାହିଁ, ତାଙ୍କ ଶିଷ୍ୟ ହେବାର ଯୋଗ୍ୟତା ହାସଲର ପ୍ରୟୋଜନ ଅଛି ।

ନି:

## ସ୍ମୃତିରେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର

ପ୍ରଭାକର ମହାପାତ୍ର

ସାରସ୍ୱତ ଆଶ୍ରମ

ଶାସ୍ତ୍ରାନଗର, ଯୁନିଟ୍-୪, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ସର୍ବ ନିୟନ୍ତ୍ରା ସର୍ବବ୍ୟାପକ ଈଶ୍ୱର ଯେପରି ରହସ୍ୟମୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରେରିତ ଐଶ୍ୱରିକ ପୁରୁଷମାନେ ସେହିପରି ଏକ ଏକ ବିସ୍ମୟ । ଜଗତର କଲ୍ୟାଣପାଇଁ ତାଙ୍କର ଜନ୍ମ । ପ୍ରଫେସର ଡଃ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ପୁରୁଷ ନୁହଁନ୍ତି ବରଂ ଭାଷା, ଜାତି, ଦେଶପାଇଁ ସେବାନିଷ୍ଠ, ଉତ୍ସର୍ଗାକୃତ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ, ବଳବାଦର ଐତିହାସିକ ଗୌରବୋଜ୍ଞ ପ୍ରତିଭା । ତାଙ୍କର ଦେହାନ୍ତରେ କେବଳ ଓଡ଼ିଶାବାସୀ ନୁହଁନ୍ତି ସମଗ୍ର ଦେଶରେ ଶୋକର ଛାୟା । ତାଙ୍କ ଆଦର୍ଶରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ଅନୁଗତମାନଙ୍କର କଣ୍ଠରୁ ଭାଷା ସ୍ଫୁରୁନି କେବଳ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ଝରୁଛି ଲୁହ ।

ମୋର ପରମ ସୌଭାଗ୍ୟ ଯେ ମୁଁ ତାଙ୍କର ଛାତ୍ର ଥିଲି । ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ ପ୍ରଥମ ଦେଖାରେ ତାଙ୍କର ଅସମ୍ଭବ ବାହୁଡ଼ା ମୋତେ ମୁଗ୍ଧ କରିଥିଲା । ଛାତ୍ର ଜୀବନରେ ଆମେ କେତେଜଣଙ୍କଠାରେ ସମାଜସେବା ଓ ଦେଶପ୍ରେମର ଝଲକ ଥିଲା । ସାରଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟଧାରା ଓ କଥୋପକଥନରେ ତାଙ୍କର ଗବେଷଣାଧର୍ମୀ ଚିନ୍ତନ ଓ ଦେଶପ୍ରାଣତା ସ୍ପଷ୍ଟ ବାରି ହୋଇପଡୁଥିଲା । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା, ଉତ୍କଳୀୟ ସଂସ୍କୃତି ତଥା ସର୍ବଭାରତୀୟ ଭାବନା, ମା' ଓ ମାଟି ପାଇଁ ଉତ୍ସର୍ଗାକୃତ ସେବା ତାଙ୍କର ଜୀବନର ଶୈଳୀ ଥିଲା । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ପ୍ରାଚୀନତା ଯେଉଁଥିପାଇଁ ଆଜି ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଶାସ୍ତ୍ରୀୟ ଭାଷାର ମାନ୍ୟତା ପାଇଛି ତାହାର ଗବେଷଣା ଓ ଅଧ୍ୟୟନ ସମ୍ପର୍କରେ ତାଙ୍କରି ଉଦ୍ୟମରୁ ଆମେ ସବୁ (ଛାତ୍ରମାନେ) ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇଥିଲୁ । ପାଠ୍ୟକ୍ରମକୁ ଆଶ୍ରୟ କରି ପ୍ରାକ୍ ସାରଳା ସାହିତ୍ୟ ତଥା ପଞ୍ଚସଖା ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରବକ୍ତା ଭାବରେ ସେ ଯେଉଁ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରୁଥିଲେ ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ପାଠକ୍ରମ/କର୍ମଶାଳା ଭଳି ଅନୁଭୂତ ହେଉଥିଲା । ସର୍ବୋପରି ତାଙ୍କର ସ୍ନେହପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ବୋଧନ ଓ ପ୍ରେରଣା ଆମକୁ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆକୃଷ୍ଟ କରିଥିଲା ଏବଂ ଆମେ ତାଙ୍କ ସେବା ଓ ତ୍ୟାଗ ଭାବରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହେଉଥିଲୁ । ଶ୍ରେଣୀ ଗୃହରେ ପଢ଼ାଉଥିଲାବେଳେ ତାଙ୍କୁ କାଳିସ୍ୟ ଲାଗେନା କ'ଣ ଅନର୍ଗଳ ବକ୍ତୃତା, କେତେ କଥା କେତେ ଉଦାହରଣ, ସଭା ସମିତିରେ କେହି ଏପରି ନିଷ୍ଠାର ସହ ସାରଗର୍ଭକ ବକ୍ତୃତା ଦେଉ ନଥିବେ । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟରେ ସେ ଆମର ଆଶ୍ଚ୍ୟ ଖୋଲି ଦେଇଥିଲେ । ତାଙ୍କ କଥା ଓ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଦେଶପ୍ରାଣତା ଓ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତାର ଏକ ବିଚିତ୍ର ସମନ୍ୱୟ ଥିଲା । ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଗବେଷଣାବେଳେ ତାଙ୍କୁ ବହୁ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ତଥା ମହିମା ଧର୍ମୀ ବାବାଙ୍କର ଝୁଲା ଗଣ୍ଡୁଲି ବୋହି ତାଙ୍କ ପଛେ ପଛେ ଚାଲିଥିବାର ନିଷ୍ଠର ଦେଖୁଥିବେ । ସେ ସମୟରେ ତାଙ୍କ ବସା ଘରକୁ ଗଲେ ଚଟାଣରେ ଦୁଇ-ତିନିଟି ସପ୍ତ ବିଛାଇ ସେ ମଝିରେ ବସିଥିବେ, ତାଙ୍କ ଚାରିପଟେ କେତେ ପୋଥି, ପୁରୁଣା ଖାତା, ବହି ଓ ପତ୍ରିକା ବିଛାଡ଼ି ରହିଥିବ, ସେ ଲେଖୁ ଚାଲିଥିବେ । କିପରି ଅଧ୍ୟୟନ କରିବାକୁ ହୁଏ, କିପରି ଗବେଷଣା କରିବାକୁ ହୁଏ, ତାଙ୍କଠାରୁ ପ୍ରଥମେ ଶିଖିବାର କଥା । ବିନା ଗାଇଡ଼ରେ ସାହିତ୍ୟରେ ଡିଲିଟ୍ କରିଥିବା ବ୍ୟକ୍ତି ।

୧୯୭୭ ମସିହାରେ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟରେ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ଶିକ୍ଷା ବାଣୀବିହାରରେ ପଢୁଥିଲି ତ. ବଂଶୀଧର ମହାନ୍ତ ଆମର ବିଭାଗୀୟ ମୁଖ୍ୟ ଥିଲେ । କଥା ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କ ଛାତ୍ର ବୋଲି ଜାଣିବା ପରେ ସେ ମୋତେ ବହୁତ ଆଦର କଲେ । ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କର ଓ ବଂଶୀଧର ସାରଙ୍କର ଗବେଷଣା କ୍ଷେତ୍ରରେ ବହୁ ନିବିଡ଼ ସମ୍ପର୍କ ଥିଲା । ବଂଶୀଧର ସାର ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କର ବହୁ ପ୍ରଶଂସା କରନ୍ତି । ସେମାନଙ୍କ ଭିତରେ ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ବହୁ ବିଷୟରେ ଗବେଷଣାତ୍ମକ ତଥ୍ୟ ଆଲୋଚିତ ହୁଏ ।

ଓଡ଼ିଶା ବାହାରେ ମୋର କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର କାରଣରୁ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କ ସହ ମଝିରେ ୨୦ରୁ ୨୫ ବର୍ଷ ଦେଖା ସାକ୍ଷାତ୍ ହୋଇ ପାରିଲାନି । ମୁଁ କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କର ଖବର ରଖେ ଓ ତାଙ୍କ ରଚିତ ପୁସ୍ତକମାନ ପଢ଼େ । ଥରେ ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଏକ ସଭାରେ ତାଙ୍କୁ ଦେଖି ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆନନ୍ଦିତ ହେଲି । ତାଙ୍କୁ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଭାବେ ଭେଟିବାପାଇଁ ସେଠାରେ ସଭା ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅପେକ୍ଷା କଲି । ମନେ ମନେ ଭାବୁଥାଏ ଏତେବର୍ଷ ପରେ ସାର କ’ଣ ଚିହ୍ନି ପାରିବେ ? କିନ୍ତୁ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟର କଥା ତାଙ୍କୁ ଭେଟିବାପାଇଁ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଉଥିବାବେଳେ ସେ ଦୂରରୁ ଦେଖି ହସି ହସି ମୋ ଆଡ଼କୁ ଆସିଲେ । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଭୂମିଷ୍ଠ ପ୍ରଣାମ କଲାବେଳେ ସେ ଆନନ୍ଦରେ ଗନ୍ଦଗନ୍ଦ୍ ହୋଇ ମୋ ନାଁ ଧରି କହିଲେ — “ପ୍ରଭାକର ! ମୁଁ ତୁମକୁ ମନେ ମନେ ଖୋଜୁଥିଲି । ଏତେବର୍ଷ ପରେ ଦେଖା, ତୁମର ଖବର ସବୁ କୁହ । ଚାକିରିରୁ ସେବା ନିବୃତ୍ତ ହେବା ପରେ ତୁମେ ଯେପରି ପୂର୍ବଭଳି ଆମ ସ୍ରୋତରେ ସାମିଲ ହୁଅ, ସେଦିନ ଆନନ୍ଦ ଓ କୃତଜ୍ଞତାରେ ମୋର ହୃଦୟ ଭରିଗଲା ।” ସେ ପଚାରିଲେ ଏବେ କେଉଁଠି ଅଛ ? ମୁଁ ବାରାଣସୀ ନିକଟରେ ରହୁଥିବା ପ୍ରକାଶ କଲି । କହିଲେ ତେବେ ବାରାଣସୀର ଚଉଖମ୍ବା ପବ୍ଲିକେସନ୍ସ କେତୋଟି ବହି ଦରକାର । ମୁଁ କହିଲି, ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଚଉଖମ୍ବା ପ୍ରକାଶିତ ପ୍ରାୟ ସମସ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ ବହି ଦେଖିଛି । ଆପଣଙ୍କ ପଠନ ଗୃହ ତ ଏକ ବିରାଟ ଗ୍ରନ୍ଥାଗାର । ବହୁ ଦୁର୍ଲଭ ପୁସ୍ତକ ସଂଗ୍ରହ କରିଛନ୍ତି, ତଥାପି ଯାହା କହିବେ ଆଣିଦେବି ।

ଥରେ ସାରଙ୍କୁ ଭେଟି “ଜଗନ୍ନାଥ ଚରିତାମୃତ”ର ନୂତନ ସଂସ୍କରଣ ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି ବୋଲି କହିଲି । ପୁରୀର ବଡ଼ ଓଡ଼ିଆ ମଠକୁ ଯାଇ ଏହି ବହିଟି ଆଣି ଛପାଇବାପାଇଁ ଉଦ୍ୟମ କରିଥିଲି । ମହନ୍ତ ମହାରାଜ ବହି ଦେଲେନାହିଁ । ଗୋଟିଏ କପି ଅଛି, ଆମେ ଛପାଇବୁ । ଏହି ନୂତନ ସଂସ୍କରଣର ବହୁ ଚର୍ଚ୍ଚିତ ପଦଟି ନ ପାଇ ଦୁଃଖିତ ହେଲି । ପଦଟି ହେଉଛି “ଜଗନ୍ନାଥ ଯେ ଷୋଳକଳା, ତହିଁ କଳାଏ ନନ୍ଦବଳା । କଳାକ ଷୋଳ କଳା କରି, ମୋଘେ ବିହରେ ନରହରି ।” ସାର କହିଲେ ମୋ ନଜରକୁ ଆସିଛି । କେହି ଗୌଡ଼ୀୟ ବୈଷ୍ଣବଙ୍କୁ ଖୁସି କରିବାପାଇଁ ଏପରି କରିଛି । ମୋ ପାଖରେ ପୁରୁଣା ସଂସ୍କରଣ ଅଛି । ବହି ନେଇ ଜେରକୁ କରି ରଖିବ । ଏଥିରୁ ସାହିତ୍ୟ ଜଗତରେ ତାଙ୍କର ଜାଗରୁକତା ବିଶେଷକରି ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ମମତା ଓ ଦାୟିତ୍ୱବୋଧ ଅନୁମିତ ହୁଏ ।

ତାଙ୍କ ଦେଶପ୍ରାଣତା, ଉତ୍ସର୍ଗାକୃତ ସେବା, ସାହିତ୍ୟକୃତି, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟକୁ ଅବଦାନ ଐତିହାସିକ ଗବେଷଣା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ମୋ ଭଳି ହାଲକା ମନ୍ତବ୍ୟ ଦେଲେ ତାଙ୍କ ମହାନ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ହାନି ଘଟିବ । ତଥାପି

ପଦେ ନ ଲେଖୁ ରହିପାରୁନି । ତାଙ୍କର ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ପୁସ୍ତକ ଦେଶର ଇତିହାସରେ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ବୈପ୍ଳବିକ ଅଧ୍ୟାୟ । ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାର କବି ନା ବଙ୍ଗଳାର ? ତାଙ୍କର ଗବେଷଣାଧର୍ମୀ ପୁସ୍ତକ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ”ରେ ସେ ଯେଉଁ ଭାଷାତାତ୍ତ୍ୱିକ ବଳିଷ୍ଠ ଅକାଟ୍ୟ ପ୍ରମାଣ ଦେଲେ ତାହା ସବୁ ଦୃଢ଼ ଅନ୍ତ ଘଟାଇ ଜୟଦେବ ହେଲେ ଓଡ଼ିଶାର କବି । ଏପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଜୟଦେବଙ୍କ “ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ” ଉପରେ ମୁଁ ପଢ଼ିଥିବା ୮/୧୦ ଖଣ୍ଡ ବହି ମଧ୍ୟରେ ଏହା ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ । ସେହିପରି ଓଡ଼ିଆ ସବୁ ସାହିତ୍ୟରେ “ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା” ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ପୁସ୍ତକ ଅଟେ । କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ ଯେ, “ବେଦବଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା” ଗ୍ରନ୍ଥ (ଭାଗ ପ୍ରଥମ, ଦ୍ୱିତୀୟ, ତୃତୀୟ) ତାଙ୍କୁ ଏକ ବିଶିଷ୍ଟ ଐତିହାସିକର ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଦେଇଛି । ବେଦ ବର୍ଣ୍ଣିତ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଐତିହ୍ୟ ଓ ସଭ୍ୟତାର ପ୍ରତ୍ନତାତ୍ତ୍ୱିକ ଗବେଷଣା ପୃଥିବୀ ଇତିହାସରେ ଏକ ନୂତନ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇଛି । ତାଙ୍କ ରଚିତ “ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦାନକୃଷ୍ଣ” ଏକ ଏକ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ମୌଳିକ ଗବେଷଣା ଗ୍ରନ୍ଥ ।

ଜାଣିବାକୁ ପାଇଲି ଯେ ଦେହ ରକ୍ଷା ବେଳକୁ ସାରକୁ ୮୨ ବର୍ଷ ହୋଇଥିଲା । ତାଙ୍କଭଳି କର୍ମନିଷ୍ଠ, ବଳିଷ୍ଠ, ଯୁବସ୍ୱଭାବର ବ୍ୟକ୍ତି ଶତାୟୁ ହେବାକଥା; କିନ୍ତୁ ଦୁର୍ଘଟଣାରେ ପଡ଼ି ସୁଦ୍ଧା ସେ ତାଙ୍କର କାର୍ଯ୍ୟଧାରା ଚାଲୁ ରଖିଲେ । ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ନିଘା ନାହିଁ । ଅସୁସ୍ଥତା ପ୍ରତି ଖାତିର ନାହିଁ, ମୃତ୍ୟୁକୁ ଭୟ ନାହିଁ । ଏଭଳି ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ସେ ତେଣୁ ଚିରଜୀବୀ । ତାଙ୍କୁ ଥରେ କହିଲି ସାର ଆପଣଙ୍କର ଗୋଟେ ଫଟୋ ମୋର ଦରକାର । ସେ କହିଲେ କାହିଁକି ? ଆପଣଙ୍କୁ ଦେଖିଲେ ଦେଶପ୍ରେମ ଓ ତ୍ୟାଗ ସେବା ନିଷ୍ଠା ପ୍ରାଣରେ ଜାଗ୍ରତ ହୁଏ । (ପ୍ରକାଶ ଥାଉ କି ସେ ସମୟରେ ମୋବାଇଲ୍ ଉଦ୍ଭାବନ ହୋଇ ନଥିଲା) । ଏଭଳି କାଳଜୟୀ, ଦେଶ ଜାତି ପାଇଁ ଉତ୍ସର୍ଗାକୃତ ପ୍ରତିଭାଙ୍କ ପାଦରେ କୋଟି କୋଟି ପ୍ରଣାମ, ଗୁଣମୁଗ୍ଧ ବିନୀତ ପ୍ରଭାକର ।



**Sudarsan Nayak**

**Great soul Dr Nagendra Pradhan  
has heavenly abode , shocked me ,  
a great scholar, writer and patriotic  
leader . His contribution to Odiya  
literature and education  
unparalleled. Omm shanti**



## ସୁରଶାୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ-ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ

ସଂପାଦିତ୍ରା ମିଶ୍ର

ପୁରୀ-ବି-୩୫, ଶହଦନଗର, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ: ୯୪୩୩୭୦୧୯୧୩୩

ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ମୋ ଭଳି ଅନେକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀର ପ୍ରିୟ ମାନନୀୟ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍, ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆଉ ଇହ ଜଗତରେ ନାହାନ୍ତି । ଫେବୃଆରୀରେ ସକାଳୁ ସକାଳୁ ତାଙ୍କର ଫଟୋଟି ଦେଖି ବହୁତ ପଛକଥା ମନେ ପଡ଼ିଲା । ୧୯୭୫-୭୬ ଶିକ୍ଷାବର୍ଷରେ ମୁଁ ରିଜିଷ୍ଟ୍ରାଲ କଲେଜରେ ବି.ଇଡ଼ି. କରୁଥାଏ । ୧୯୭୫ରେ ମୁଁ ଏମ୍.ଏ. ପାସ କଲି । ଫଳ ବାହାରିଲା ୧୯୭୬ରେ । ସେ ବର୍ଷ ରିଜିଷ୍ଟ୍ରାଲ କଲେଜରେ ମୁଁ ଭେଟିଥିଲି ଦୁଇଜଣ ଅଧ୍ୟାପକଙ୍କୁ ଯେଉଁମାନେ ଓଡ଼ିଆରେ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ପଢ଼ିଥିଲେ ଓ ମେଥୋଡୋଲୋଜି ପଢ଼ାଉଥିଲେ ଆମମାନଙ୍କୁ । ଜଣେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଆଉ ଜଣକ ଅଭିନ୍ନ ସାର୍ (ପ୍ରଫେସର ଅଭିନ୍ନ ସାହୁ) । ଦୁଇଜଣ ପରିସରର ପରିପୂରକ । ଆମେ ୯ ନମ୍ବର ୩ଆର୍ ପୁରୁରେ ରହୁଥାଉ । ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ୩ଆର୍ରେ ରହୁଥିଲେ । ପରେ ସେ କ୍ୟାମ୍ପସକୁ ଗଲେ । ତାଙ୍କର ଦୁଇ ପୁଅ ଝିଅଙ୍କ ବାହାଘରରେ ମୁଁ ଯୋଗ ଦେଇଛି । ଦେଖା ହେଲେ ନିଶ୍ଚୟ ମୋ ସ୍ୱାମୀ ଓ ପିଲାଙ୍କ କଥା ପଚାରନ୍ତି । ବଡ଼ ପାଟିରେ କଥା କହନ୍ତି ଓ ପାନ ଖାଆନ୍ତି । ଆମେ ଇଣ୍ଟରନସିୟ କଲାବେଲେ ସାର୍ ଯାଇ କ୍ଲବ୍ ପଛରେ ବସନ୍ତି ଓ କ୍ଲବ୍ ପରେ ବିଭିନ୍ନ ଚୁଟି ସମ୍ପର୍କରେ ଆଲୋଚନା କରନ୍ତି । ଥରେ ସାର୍ କ'ଣପାଇଁ ଯାଜନଥିଲେ । ଜଂରାଜୀ ସାର୍ (ନା ମନେପଡୁନି) ଆମକୁ ଗାଳି ଦେଲେ । ଆମେ ଯାଇ ସାର୍‌ଙ୍କୁ ଫେରାଦ ହେଲୁ - “ଆପଣ ଆଜି ଥିଲେ କ'ଣ ସିଏ ସାହସ କରି ଆମକୁ ଗାଳିଦେଇ ଥାଆନ୍ତେ ?” ଆମେ ଭାବିଥିଲୁ ସାର୍ ବିରକ୍ତ ହେବେ । ସାର୍ କିନ୍ତୁ ସ୍ୱଭାବ ସୁଲଭ ହସଟିଏ ହସି ପରିସ୍ଥିତିକୁ ହାଲୁକା କରିଦେଲେ ।

ଆମେ ଏମ୍.ଏ. ପଢ଼ିବାବେଳେ ସାର୍‌ଙ୍କର ଜୟଦେବ ଓ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ବିଷୟକ ବହିଟିଏ ପଢ଼ିଥିଲି । ମୁଁ ବାଣାବିହାର ଗଲା ପରେ ସାର୍ ଯଦି ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଥାଆନ୍ତି ଆମେ ସେମିନାରକୁ ଡାକିଲେ ନିହାତି ଯାଆନ୍ତି । ତାଙ୍କର ପ୍ରିୟ ବିଷୟ ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ । ସାର୍ କେତେ ଅବଗାହୀ ଥିଲେ ସେ ବିଷୟରେ କେଜାଣି ସେ ଅନର୍ଗଲ ବକ୍ତୃତା ଦିଅନ୍ତି । ଆମେ ବରଂ କ୍ଲାନ୍ତ ହେଉ, ସାର୍ କ୍ଲାନ୍ତ ହୁଅନ୍ତି ନାହିଁ । କେତେଥର ସାର୍‌ଙ୍କୁ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାର ଘରୁ ନେଇଛୁ ଓ ପୁଣି ଆଣି ଛାଡ଼ିଛୁ । ଥରେ କହିଲେ “ସଂପାଦିତ୍ରା, ତୁମେ ଘରକୁ ଆସିବ ଓ ମୋର ସରସ୍ୱତୀଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ବାହାରିଥିବା ବହିଟି ନେଇଯିବ ।” ମୁଁ ହଁ କହିଲି କିନ୍ତୁ ଯାଇ ପାରିଲିନି । ସାର୍ ସେ ବହିଟି ମୋ ପାଖକୁ ଆଉ କାହା ହାତରେ ପଠାଇ ଦେଇଥିଲେ । ‘ବେଦବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା’ ଶୀର୍ଷକ ସେହି ପୁସ୍ତକ ମୋ ବହି ପାଖରେ ଅଛି ମାତ୍ର ସେ ଗବେଷଣାରୁ କିଛି ବୁଝିବା ହୁଏ ତ ଏ ଜନ୍ମରେ ସମ୍ଭବ ହେବ ନାହିଁ । ତଥାପି ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜା ବେଳେ ନିଶ୍ଚୟ ସେଥିରୁ କିଛି ମୁଁ ପଢ଼େ । ହାୟରେ ମୋ ଚିନ୍ତାର ଅକୁଳାଶପଣ, ମୁଁ କ’ଣ ଏତେ ଉଦାର ହୋଇ ପାରିଥାଆନ୍ତି ? ଭାବିଥାଆନ୍ତି “କହିଲା, ଆସିଲାନି । ଭାରି ଦିନାକ ତାର ।” ନା’ମୋ ସାର୍ ଆମ ସାଧାରଣ ମାପରୁ ଭିନ୍ନ

ମାପର ମଣିଷ ଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ତ ଦକ୍ଷ ସଙ୍ଗଠକ ଭାବରେ ତାଙ୍କର ସୁନାମ ଥିଲା । ବାରମ୍ବାର ସେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ସଙ୍ଗଠନ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଭାରତ ସାରା ବୁଲୁଥିଲେ ।

ମୁଁ ଯେଉଁ ୩-୪ଟି ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଅତିଥି ହୋଇ ଯାଇଛି ସବୁଠି ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କ ଛାତ୍ର କହି ତାଙ୍କ ସାରମାନଙ୍କ ସହିତ ପରିଚିତ ହୋଇଛି । ତାଙ୍କ ନାମ ଶୁଣି ସମସ୍ତେ ହାତଯୋଡ଼ି ମଥାରେ ଲଗାଇଛନ୍ତି । ସେ ମୂଳ ମଣିଷ ଆମ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର । ସେ ଗୌରବରୁ ଚିରୁଳାଏ ମୁଁ ଗ୍ରହଣ କରିଛି ସାରଙ୍କ ଛାତ୍ର ଭାବରେ ।

ସାର ପରିଣତ ବୟସରେ ପରଲୋକକୁ ଗଲେ । ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ପରିବାରର କର୍ତ୍ତା ସିଏ । ହେଲେ ଓଡ଼ିଆ ଅଧ୍ୟାପକ ଭାବରେ ଟିକେ ସ୍ୱାର୍ଥପର ହୋଇ ଭାବିବାକୁ ପଡୁଛି “କ୍ରମେ ପ୍ରାଚୀନ ଓ ମଧ୍ୟକାଳର ଆଲୋଚନା ଉଣା ହେଉଛି । କେଜାଣି ମୋର ଆଶଙ୍କା ମିଥ୍ୟା ହେଉ । ସମୟ କୁକ୍ଷିରେ କେହି ଯୁବ ଗବେଷକ ସେହି ପରମ୍ପରାକୁ ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ରଖିବାକୁ ନିରନ୍ତର ତପସ୍ୟା କରୁଥାଆନ୍ତୁ ।

ସାରଙ୍କୁ ଦେଖିଲେ ନିଜ ପରିବାରର ମାମୁ, ଦାଦା ଅବା ପିଉସାଙ୍କ ଭଳି ମନେ ହୁଅନ୍ତି । ନିରଳସ କର୍ମତତ୍ପର, କ୍ଷମାଶୀଳ ଆଉ ସହିଷ୍ଣୁ । ସେତିକି ନମନୀୟ ହୋଇନଥିଲେ କ’ଣ ଏତେ ସଙ୍ଗଠନ କାମ ତୁଲାଇ ପାରି ଥାଆନ୍ତେ ? ସାରଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ ଜଣାଉଛି । ପରପାରିରେ ରହି ସେ ଆମକୁ ଓ ଆମ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟକୁ ଧନୁତ ଦୃଷ୍ଟିରେ ରାହିଥାଆନ୍ତୁ ।



### Gopal Mohapatra

ସବୁଥିରେ ଆପଣ ଥିଲେ ପ୍ରଥମ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ  
ପରିଷଦର ପ୍ରଥମ ସଭାପତି,  
ଭୁବନେଶ୍ୱରଜିଲ୍ଲାର ପ୍ରଥମ ସଙ୍ଗତାଳକ,  
ଶିକ୍ଷାବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରଥମ ସଭାପତି,  
ଓଡ଼ିଶା ରୁ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର ପ୍ରଥମ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ  
ଇତ୍ୟାଦି ଦାୟିତ୍ୱ ଗୁଡ଼ିକୁ ସୁଚାରୁରୂପେ ତୁଲାଇ  
ଆପଣ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଛନ୍ତି ନିଜର ଦକ୍ଷତାକୁ ।  
ହେ ବାଗ୍ମୀ ବିଦ୍ୱାନ ପଣ୍ଡିତ ପ୍ରବର ଆପଣଙ୍କୁ  
ବାରମ୍ବାର ପ୍ରଣାମ । ଭଗବାନ ଆପଣଙ୍କର  
ଅମର ଆତ୍ମାକୁ ଶାନ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ ।

# ବିଚିତ୍ର-ମାର୍ଗୀ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଂସ୍କୃତି ସମୀକ୍ଷକ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ

ଡକ୍ଟର ବାବାଜୀଚରଣ ପଟ୍ଟନାୟକ  
ଗୁଆଳିପୁର, ରେଭୁଆ, ରଘୁନାଥପୁର, ଜଗତସିଂହପୁର  
ମୋ: ୯୪୩୩୭୩୧୯୯୧୪

ଓଡ଼ିଶା ଓ ଓଡ଼ିଶା ବାହାରେ ଯାହାକୁ ଲୋକେ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ନାମରେ ଜାଣୁଛନ୍ତି ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଅଧ୍ୟାପକ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଭାବରେ ମାଟ୍ରିକ୍ ପାଶ୍ କାଳରୁ (୧୯୬୮-୬୯) ଜାଣିଛି । ସେତେବେଳକୁ ସେ ମୋ ଗାଁ (ଗୁଆଳିପୁର) ପାଖ “ଗୁରୁଦିଆ” ଗାଦି (କପାଳେଶ୍ୱର, କୁର୍ତ୍ତାଙ୍ଗ)କୁ ଯାଇଥାନ୍ତି, ପୋଥି ସଂଗ୍ରହ କରୁଥାନ୍ତି । ପିଲାଦିନେ ଆମର ଧାରଣା ଥାଏ ସେ ଗାଦିରେ ଅତ୍ୟୁତ ଗୋସେଇଙ୍କର ପୋଥି ଅଛି । ଏହି ଅବକାଶରେ ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ନାଆଁ ଶୁଣିଥାଏ; ତାଙ୍କ ସହିତ ମୋର ସାକ୍ଷାତ ପରିଚୟ ବହୁ ବିଳମ୍ବରେ ଘଟିଛି । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ସାହିତ୍ୟର ଅଧ୍ୟାପକ ଭାବେ ମୁଁ ରମାଦେବୀ ମହିଳା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ସକାଳପାଳିରେ ଯୋଗ ଦେବା ପରେ ମୁଁ ତାଙ୍କ ଲିଖିତ ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣଧାରୀ (୧୯୮୬) ବହି ପଢ଼ି ଜାଣିଲି; ଏହି ବହି ହେଉଛି ତାଙ୍କ ଡି.ଲିଟ୍. ନିବନ୍ଧ (ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ୧୯୭୭ରେ ସେ ଡି.ଲିଟ୍. ପାଇଛନ୍ତି)ର ପୁସ୍ତକ ରୂପ । ସେ ବହି ପଢ଼ି ମୁଁ ବିସ୍ମିତ ହେଲି । ବିସ୍ମିତ ହେବାର କାରଣ ଦ୍ୱିବିଧ, ପ୍ରଥମ କଥା ହେଉଛି ଯେଉଁ ସାହିତ୍ୟ ଗାଁରେ ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନି ନଥିବା ଲୋକେ ତୁଣ୍ଡେ ତୁଣ୍ଡେ ଗାଇ ଯା’ନ୍ତି ଅଥଚ ପଢୁଆ ବାବୁମାନେ ତହିଁରୁ କିଛି ବୁଝନ୍ତି ନାହିଁ । କେହି କେହି ଶରୀର ଭେଦ ଭଜନ ଅଥବା ଅସ୍ପଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟ, ତେଣୁ ନିରର୍ଥକ କହି ଆଡ଼େଇଯା’ନ୍ତି । ଗାଁ ପିଲା ଭାବରେ ପିଲାଟି ଦିନରୁ ଖଞ୍ଜଣି ବଜାଇ ଭଜନ ଗାଉଥିବା ଲୋକଙ୍କଠାରୁ ନିର୍ଗୁଣ ଭଜନ କଥା ଶୁଣାଯାଇଥାଏ । ଧର୍ମଗ୍ରନ୍ଥ ଖୋର ଛାପିଥିବା ଏତେ ମୋଟା ବହି ପଢ଼ିବାରେ କ୍ଳାନ୍ତି ଅନୁଭବ କରିନାହିଁ, ବରଂ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ-ସାଧନାରେ ଲିପ୍ତ ରହି ସାଧକମାନେ ଏତେ କଥା ଲେଖିପାରନ୍ତି- ଏ ଘେନି ବିସ୍ମିତ ହୋଇଛି । ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କୁ ଖାଲି ଗବେଷକ ବୋଲି ନ ଭାବି ଜାତିର ସଂସ୍କୃତି ଆଧାରରେ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷାର ନୂତନ ବାଟ ଦେଖାଇଥିବା ସାଧକ ବୋଲି ଭାବିଛି । ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂସ୍କୃତିକୁ ଉପଜୀବ୍ୟ କରି ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା କରିବାର ଧାରା ଓ ସାହିତ୍ୟ ଆଧାରରେ ସଂସ୍କୃତିର ଐତିହ୍ୟ ନିରୂପଣ ବିକଶିତ ହୋଇଛି ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ଲେଖନୀରେ ଅବଶ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଆଲୋଚନାରେ ପଣ୍ଡିତ ନୀଳକଣ୍ଠ ଦାସଙ୍କୁ ଏଭଳି ଦୁରୁହ ପଥର ପ୍ରଥମ ଯାତ୍ରୀ ଓ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର କ୍ରମପରିମାଣ”କୁ ଯାତ୍ରୀର ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ଅନୁଭବର ଫଳପ୍ରସୂ ପରିପୁର୍ଣ୍ଣ ରୂପ କରିହେବ । ବିସ୍ମିତ ହେବାର ଦ୍ୱିତୀୟ କାରଣ ହେଲା; ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ସଂସ୍କୃତି ଗଠନ ପଛରେ ଏତେ ବିରାଟ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପୃଷ୍ଠଭୂମି ରହିଛି; ଯହିଁର ଇତିହାସ ମୁଁ ଇତିପୂର୍ବରୁ ପଢ଼ିନଥିଲି । ଓଡ଼ିଶାରେ ସାଧକ ଓ ସଦ୍‌ବୁଦ୍ଧ ସଂଖ୍ୟା ପ୍ରଚୁର ଓ ସେମାନଙ୍କର ସାଧନା ଏବଂ ଉପଲବ୍ଧର ବାର୍ତ୍ତା ନିର୍ଗୁଣ ଧାରାର ସାହିତ୍ୟ । ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ଧାରାରେ ସବୁ ସାହିତ୍ୟକୁ ଚିହ୍ନି ହୋଇଛି । ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ଭାଷାରେ — “ସବୁ ସାହିତ୍ୟ ବସ୍ତୁତଃ ଇତର ଭାବନାଶୂନ୍ୟ ଏକ ସ୍ୱର ସାହିତ୍ୟ ସାହିତ୍ୟ ଏବଂ ତାହା ସାର୍ବକାଳୀନ ତଥା ସାର୍ବଜନୀନ କଲ୍ୟାଣ ପାଇଁ ସର୍ବତ୍ର ଉତ୍ସର୍ଗୀକୃତ ।”

ଏହି ସାହିତ୍ୟକୁ ବିଶଦଭାବେ ଚର୍ଚ୍ଚା କରିଛନ୍ତି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପ୍ରଧାନ । ଏତିକି କହିଲେ ଯଥେଷ୍ଟ ହେବ ଯେ, ଓଡ଼ିଶାର ସମାଜରେ ପ୍ରବର୍ତ୍ତିତ ଥିବା ଧର୍ମମତମାନଙ୍କୁ ଆଧାର କରି ତହିଁରେ ନିର୍ଗୁଣ ତତ୍ତ୍ୱ କିଭଳି ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ତାହା ବିଶ୍ଳେଷଣ କରାଯାଇଛି ଏହି ପୁସ୍ତକରେ । ପୁଣି ସମାଜ-ସଂସ୍କୃତିର ଐତିହାସିକ ପୃଷ୍ଠଭୂମିରେ ଶୁଷ୍କ, ନୀରସ ଦର୍ଶନତତ୍ତ୍ୱ କିପରି କାବ୍ୟିକ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ଲାଭ କରି ଓଡ଼ିଆ ଜାତିକୁ ସହନଶୀଳ ଉଦାର ଦୃଷ୍ଟିଭଙ୍ଗୀ ପ୍ରଦାନ କରିବାରେ ସହାୟକ ହୋଇଛି, ତାହା ଦର୍ଶାଇ ଦିଆଯାଇଛି ଏହି ପୁସ୍ତକରେ । ସବୁଠୁ ବଡ଼ କଥା ହେଉଛି ବାହାରକୁ ଦୁର୍ବୋଧ ଲାଗୁଥିବା ଜଟିଳ ଓଡ଼ିଆ କବିତାଗୁଡ଼ିକ, ତହିଁରେ ନିର୍ଗୁଣ ତତ୍ତ୍ୱ, ତଥ୍ୟ ଓ ଧାରା ସାଙ୍କେତିକ ତାହାକୁ ପ୍ରାବଳି ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ଦିଆଯାଇଛି ଆଲୋଚନାରେ । ଯେ କେହି ଓଡ଼ିଆ ପାଠକ ଏହି ବହି ଦେଇ ନିଜ ଜାତିର ପରିଚୟ କେବଳ ପାଇବେ ନାହିଁ, ବିନ୍ଦୁ ଦର୍ପଣରେ ଓଡ଼ିଆ ଅସ୍ମିତାର ପ୍ରତିଫଳନକୁ ଉପଲବ୍ଧ କରିପାରିବେ ।

ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଓଡ଼ିଆ ସମ୍ମାନର ସ୍ନାତକ ଛାତ୍ର ଥିବାବେଳେ (୧୯୭୨-୭୪) ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ “ଦାନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା” (୧୯୬୪) ଓ ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା (୧୯୬୫) ପୁସ୍ତକ ଅଧ୍ୟୟନ କରିଥିଲି । କେବଳ ସେହିକାଳ କାହିଁକି ଏବକାଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବି ବହି ଦୁଇଟି ଦୁଇଜଣ କବି ଯଥା- ଦାନକୃଷ୍ଣ ଦାସ ଏବଂ ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେରଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ କୃତିର ମୂଲ୍ୟାୟନରେ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ବିବେଚିତ ହେଉଅଛି । କବି ସୃଷ୍ଟିର ପୃଷ୍ଠଭୂମି ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ ଓ ତୁଳନାତ୍ମକ ରୀତିରେ ସେମାନଙ୍କ ସାହିତ୍ୟାବଳୀ ବିଶ୍ଳେଷଣ - ବହି ଦୁଇଟିର ଗୌରବ ଓ ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ । ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ଏହି “ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” ଧର୍ମଗ୍ରନ୍ଥ ଷୋର ପକ୍ଷରୁ ପ୍ରକାଶିତ “ଗଙ୍ଗାଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ”ରେ ନୂତନ ସଂସ୍କରଣର ଭୂମିକା ଶୀର୍ଷକରେ ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି । ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କୁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ରୀତିରୁ ଆଲୋଚନା କରିବା ପରେ ସେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଥିବା ଶେଷ ବାକ୍ୟଟି ଆଜି କେତେ ଫଳବତୀ ହୋଇଛି ତାହା ବିଚାରଣୀୟ । ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଲେଖିଛନ୍ତି - “ଭବିଷ୍ୟତରେ ଗଙ୍ଗାଧର ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟରେ ଜଣେ ଉଚ୍ଚଦରର କବି ହିସାବରେ ଯେ ସ୍ୱୀକୃତି ପାଇ ସୁପରିଚିତ ହେବେ, ଏଥିରେ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ ।” ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ ସ୍ରଷ୍ଟା ଜୀବନର ପୃଷ୍ଠଭୂମି ନିର୍ଦ୍ଧାରଣର ନଗେନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ସଂସ୍କୃତି ମନସ୍ୱିତା ଯେପରି ବାରି ହୋଇପଡ଼େ ତାଙ୍କ ସାହିତ୍ୟକୁ ତୁଳନାତ୍ମକ ରୀତିରେ ତତ୍ତ୍ୱଲିବାର ପ୍ରବଣତା ସେହିପରି ଯେକୌଣସି ପାଠକକୁ ପ୍ରଭାବିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ।

ଏଠାରେ ଆଉ ଗୋଟିଏ କଥା ଉଲ୍ଲେଖ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ ମନେ ହେଉଛି ଯେ; ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ଓ ପ୍ରକାଶନ ସଂସ୍ଥା ପକ୍ଷରୁ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ଆକାରରେ ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି ୧୯୮୨ରେ ।” ଏହି ପୁସ୍ତକର ପ୍ରାରମ୍ଭାଂଶରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଛନ୍ତି - ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଚେତନାର ସ୍ୱତଃସ୍ପୂର୍ତ୍ତ ପ୍ରକାଶ ହେଉଛି ଉତ୍କଳର ସାଂସ୍କୃତିକ ଇତିହାସରେ ଯୁଗ ଯୁଗ ଧରି ଘଟି ଆସିଥିବା ଧାର୍ମିକ ଆନ୍ଦୋଳନର ଫଳ । ପୁନଶ୍ଚ ଏହି ବହିର ପରିମାର୍ଜିତ, ବୃହତକାୟ ରୂପ ସେହି ପ୍ରକାଶନ ସଂସ୍ଥା ପକ୍ଷରୁ ୨୦୦୯ ମସିହାରେ ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି । ପଞ୍ଚସଖା ଏକ ପ୍ରବଞ୍ଚନା; ଏଭଳି ମତକୁ ଯଥାଯଥ ଭାବେ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଖଣ୍ଡନ କରିଛନ୍ତି ଏହି ବହିରେ ।



ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସଂସ୍କୃତି ମନୀଷାର ବିଚାର ବିବେକ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ” (୧୯୭୧) ପୁସ୍ତକରୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରି ହୁଏ । ଏକଦା ତାରିଣୀ ଚରଣ ରଥ ତାଙ୍କ ଉତ୍କଳ ସାହିତ୍ୟର ଇତିହାସ (୧୯୧୬)ରେ ଉତ୍କଳର ପ୍ରଥମ କବି କିଏ ବୋଲି ପ୍ରଶ୍ନ ଉଠାଇଥିଲେ । ତାଙ୍କ ମତରେ ଏକାଦଶ ଶତାବ୍ଦୀର ବଳଭଦ୍ର ଭଞ୍ଜ ହେଉଛନ୍ତି ପ୍ରଥମ କବି ଓ ତାଙ୍କ ରଚିତ “ଭାବବତୀ” ହେଉଛି ପ୍ରଥମ କାବ୍ୟ, ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅନୁରୂପ ଭାବରେ ତାଙ୍କ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ” (୧୯୭୧) ପୁସ୍ତକରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଛନ୍ତି — “ଉତ୍କଳ ରସ, ମଧୁର ରସ ବା ବ୍ରଜ ରସର (ଜୟଦେବ) ସେ ଥିଲେ ଆଦି କବି । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ତାଙ୍କର ଗୀତିକବିତାର ସଂଖ୍ୟା ଅତି ନଗଣ୍ୟ; କିନ୍ତୁ ଅତି ସାନ ସାନ ରଚନା ମଧ୍ୟ ଇତିହାସର ଗତି ପଥରେ ନୂତନ ଦିଗନ୍ତର ସମ୍ଭାବନା ସୃଷ୍ଟି କରେ । ଏକ ତମିସ୍ଥିତ ଅସ୍ପଷ୍ଟ ଯୁଗର ଦିଗ୍‌ବଳୟଠାରେ ଜୟଦେବଙ୍କର ଏହି ଗୀତିକା ଏକ ଆଲୋକ ସ୍ତମ୍ଭ ପରି ନୂତନ ସମ୍ଭାବନା ସମ୍ଭାର କରେ । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ ମୁଁ ପ୍ରବୃତ୍ତ ହେଲି ଏହି କବିତାର ପୃଷ୍ଠଭୂମି ଅନୁସନ୍ଧାନରେ । ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ଗୀତିକାବ୍ୟ, ମହାକାବ୍ୟ କହିଲେ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ଦୃଷ୍ଟିରୁ କେବଳ ବୈଷ୍ଣବ ସାହିତ୍ୟକୁ ହିଁ ବୁଝାଇଥାଏ । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ କେବଳ ରାଧାକୃଷ୍ଣ ସର୍ବସ୍ୱ ନୁହେଁ; କିନ୍ତୁ ଆମର ମନେହୁଏ ମାର୍କଣ୍ଡ ଦାସ, ଦାନକୃଷ୍ଣ, ଉପେନ୍ଦ୍ର, ସଦାନନ୍ଦ, କବିସୂର୍ଯ୍ୟ, ଗୋପାଳକୃଷ୍ଣ ଏବଂ ବନମାଳୀ ପ୍ରଭୃତିଙ୍କ କାବ୍ୟ ଗୀତିକାବ୍ୟ ଭିତରେ ହିଁ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଉତ୍ତରାଳ ରସପ୍ରବାହ ଅଧିକ ଅଞ୍ଚଳ ଓ ଅଧିକ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱମ୍ବ । ଜୟଦେବଙ୍କ ଗୀତିକା ଓ ଗୀତିଗୋବିନ୍ଦ, ଏହି ପ୍ରବାହର ମୂଳଉତ୍ସ ଗଙ୍ଗୋତ୍ରୀ । କହିବାକୁ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଆସେ ଓ ଉତ୍ସାହ ଲାଗେ, ସତେ ଯେପରି ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଥମ କବି ।’ (ପ୍ରାରଭାଷ) ପୁନଶ୍ଚ ଏହି ବହିର ଦ୍ୱିତୀୟ ଅଧ୍ୟାୟରେ ସେ ଦର୍ଶାଇଛନ୍ତି; ୧୯୭୦ ମସିହା ଅପ୍ରେଲ ମାସରେ ସେ କଟକ ଜିଲ୍ଲାର (ସଂପ୍ରତି ଜଗତସିଂହପୁର) ରାଧାନଗର ଗ୍ରାମ ନିକଟବର୍ତ୍ତୀ ଗୁରୁଦିଆ ଗାଦିରୁ ଦୁଇଖଣ୍ଡ ଅତି ଜୀର୍ଣ୍ଣଶୀର୍ଷ କୀଟଦ୍ରଂଷ ତାଳପତ୍ର ପୋଥି ପାଇଥିଲେ । ତହିଁରେ ପ୍ରାଚୀନ କବିଙ୍କର ଶତାଧିକ ଗୀତିକବିତା ସହିତ ଜୟଦେବଙ୍କ ରଚିତ ତିନୋଟି କବିତା ଥିଲା । ଏହି କବିତାଗୁଡ଼ିକ ଭିତ୍ତିରେ ଗବେଷକ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଜୟଦେବଙ୍କୁ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଥମ କବିର ମାନ୍ୟତା ଦେବାକୁ ବିଚାରିଛନ୍ତି । ତାଙ୍କ ଉକ୍ତ ସେହି କବିତାରୁ ଗୋଟିଏ ଦୁଇଟି ପଦ ଉଦ୍ଧାର କରାଯାଇଛି —

ବସନ୍ତ ରତ୍ନ ଯେହୁ ମଧୁପବନ  
ମଦନ ଶରେ କାନ୍ଦୁ ବସି ଜୀବନ ଗୋ  
ଶୁଣ ସଜନୀ  
ମାଧବେ ମାନ ତୁ ନଳରେ ମାନେନୀ ଗୋ ।  
ଶୁଣ ସଜନୀ, ଲଜଣୀ ଜଳେ କୃଷ୍ଣ ଶୟନ  
ଦେଖୁ ସୁଫଳ କର ବେନି ନୟନ ଗୋ, ଶୁଣ ସଜନୀ ।  
ଦେଖ ହରିଙ୍କ ଶୋଭା ବହୁ ମଧୁର  
କିମ୍ପାଇଁ କରୁ ସଖୀ ମନ ବିଧୁର ଗୋ  
ଶୁଣ ସଜନୀ,  
ଭଣିଲେ ଜୟଦେବ ଅତିନଳିତ

ସୁଜନେ ଶୁଣି ଯେହା ହୋଇବ ମୁକତ ଗୋ

ଶୁଣ ସଜନୀ,

ମାଧବେ ମାନ ତୁ ନକର ମାନେନୀ ।

(ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ-ପୃ-୩୦-୩୧)

ବିବିଧ ପ୍ରମାଣ ସହିତ ସେ ଜୟଦେବଙ୍କୁ ଦ୍ଵାଦଶ ଶତାବ୍ଦୀର ବ୍ୟକ୍ତି ଓ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ମଧ୍ୟ ଖ୍ରୀଷ୍ଟାବ୍ଦ ୧୧୭୦ ବେଳର ରଚନା ବୋଲି ଉଲ୍ଲେଖ କରିଅଛନ୍ତି; କିନ୍ତୁ ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ କୌଣସି ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଇତିହାସ ପ୍ରଣେତା ମୃତ୍ୟୁଞ୍ଜୟ ରଥ ଅଥବା ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଅଭିମତକୁ ପରଖୁଥିବା ଜଣାଯାଏ ନାହିଁ । ମୂଳରୁ ଉଲ୍ଲେଖ କରାଯାଇଛି; ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସାହିତ୍ୟିକ ବିଚାର ସଂସ୍କୃତି ଆଧାରିତ । ତେଣୁ ସର୍ବଥା ତାଙ୍କ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ସଶକ୍ତ ଓ ପ୍ରଭାବୀ ହେବା ସ୍ଵାଭାବିକ । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ ପୁସ୍ତକ ଏହି ମତର ବଳିଷ୍ଠ ପ୍ରମାଣ ।

ଇତିହାସ, ପୁରାଣ, ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ଆଧାରରେ ଜାତୀୟ ସଂସ୍କୃତି ଚର୍ଚ୍ଚା ମଧ୍ୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ପ୍ରତିଭାର ଆଉ ଏକ ବିଶେଷତ୍ଵ । “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ଵତୀ ଓ ସାରସ୍ଵତ ସତ୍ୟତା ପ୍ରଥମ ଖଣ୍ଡ” ପୁସ୍ତକ ସେହି ପ୍ରତିଭାର ସର୍ବୋକୃଷ୍ଟ ଉଦ୍ଘୁଳ ସାକ୍ଷୀ । ଏହି ପୁସ୍ତକରେ ସେ ଦର୍ଶାଇଛନ୍ତି, ମହାଭାରତ ଯୁଗରୁ ବେଦବନ୍ଦିତା ପୁଣ୍ୟତୋୟା ସରସ୍ଵତୀ ନଦୀ ଭୂଗର୍ଭରେ ବିଲୁପ୍ତ ହୋଇଯାଇଛି; କିନ୍ତୁ ସେହି ନଦୀ ତୀରରେ ମାନବ ସଂସ୍କୃତି ଓ ସତ୍ୟତାର ପ୍ରଥମ ଅଭ୍ୟୁଦୟ ହୋଇଥିଲା ବୋଲି ସେ ସପ୍ରମାଣ ଉପସ୍ଥାପନ କରିଅଛନ୍ତି । ଉପଗ୍ରହ ଚିତ୍ର ବିଶ୍ଳେଷଣ, ଭୂତତ୍ତ୍ଵ ଓ ଭୂଗର୍ଭବିଜ୍ଞାନ, ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଜ୍ଞାନ, ଜଳବାୟୁ ବିଜ୍ଞାନ ଆଦି ଭିତ୍ତିରେ ବେଦ ଓ ବେଦୋତ୍ତର ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରକାଶ ତଥା ବିକାଶ କିଭଳି ସରସ୍ଵତୀ ତୀରରେ ହୋଇଥିଲା ତାହା ଏହି ପୁସ୍ତକରେ ଦର୍ଶାଯାଇଛି । ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ବହୁ ଅଧ୍ୟୟନ ଓ ତମକ୍କାର ବିଶ୍ଳେଷଣ କୌଶଳର ପ୍ରମାଣ ଯେ କେହି ଏହି ପୁସ୍ତକ ଅଧ୍ୟୟନରୁ ଉପଲବ୍ଧ କରିପାରିବେ । ଏ ବହିର ଆଉ ଏକ ବିଶେଷତ୍ଵ ହେଉଛି, ଉପନିବେଶବାଦୀ ଗବେଷକମାନଙ୍କର ଭାରତ ଇତିହାସ ଚର୍ଚ୍ଚା ଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ କିଭଳି ଅସାର ତାହା ଦର୍ଶାଇ ଦିଆଯିବା । ଭାରତବର୍ଷର ପୂର୍ଣ୍ଣ ଇତିହାସର ପୁନର୍ଗଠନ ପାଇଁ ଏହି ନଦୀ ପଥର ଆବିଷ୍କାର ହେଉଛି ଗତ ଶତାବ୍ଦୀର ସବୁଠୁ ବଳି ତମକପ୍ରଦ ଆବିଷ୍କାର । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ ଭାରତର ସାମାଜିକ, ସାଂସ୍କୃତିକ ଓ ସାହିତ୍ୟିକ ଇତିହାସ ଅଧ୍ୟୟନ ପ୍ରସଙ୍ଗରେ “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ଵତୀ ଓ ସାରସ୍ଵତ ସତ୍ୟତା (୨୦୦୯)” ପୁସ୍ତକ ମୌଳିକ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ପ୍ରଦାୟକ ହୋଇଛି, ବିଶେଷତଃ ସରସ୍ଵତୀ ନଦୀ ଶୁଖିଯିବା ପରେ ପଶ୍ଚିମ ଭାରତରୁ ସ୍ଥାନାନ୍ତରିତ ହୋଇ ଆସିଥିବା ଅସ୍ଥିର ଓ ଆତଙ୍କିତ ଉଦ୍‌ବାସୀ ଶରଣାର୍ଥୀ ଲୋକ ସମୁଦାୟ ମଧ୍ୟରୁ ଓଡ଼ିଶାରେ କେତେକ ବସବାସ କରି ଏଠାରେ ବୈଦିକ ଶାଶ୍ଵତ ଭକ୍ତି ଧର୍ମର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର କରାଇଥିବା କଥା ଏହି ପୁସ୍ତକରେ ଆଲୋଚିତ । ସାର୍ ଉଇଲିୟମ୍ ଜୋନ୍ସ, ମାକ୍‌ସମୁଲାରଙ୍କ ଭଳି ଉପନିବେଶବାଦୀ ଚିନ୍ତାଧାରାର ବିଦ୍ଵାନମାନଙ୍କ ମତାମତକୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଯେଉଁସବୁ ତଥ୍ୟ ଭିତ୍ତିରେ ଓ ଯୁକ୍ତିମୁକ୍ତି ଭାବେ ଖଣ୍ଡନ କରିଛନ୍ତି ତାହା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ହୋଇପାରିଛି ।

ଏତଦ୍‌ଭିନ୍ନ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଶିଶୁ ଅନନ୍ତ ଦାସଙ୍କ ହେତୁଭଦୟ ଭାଗବତର ସମ୍ପାଦନା କରିଛନ୍ତି । ସେ ପ୍ରଥମେ ଏ ବହିଟି ସମ୍ପର୍କରେ ଓଡ଼ିଶାର ଜନସାଧାରଣଙ୍କୁ ଅବଗତ କରାଇ ନାହାନ୍ତି ତାହାକୁ ଲୋକ ଚକ୍ଷୁରେ

ଚିହ୍ନିତ କରାଇଛନ୍ତି । ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲା ମହୋତ୍ସବ ପକ୍ଷରୁ ପ୍ରକାଶ ପାଉଥିବା କଲ୍ଲେଲ-୨୦୧୨ରେ ତାଙ୍କ ରଚିତ ମହାପୁରୁଷ ମାଧୁରୀ ଦାସ ପ୍ରକାଶ ପାଇ ତାଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି, ଦର୍ଶକ ଓ ମୂଲ୍ୟାୟନ ବିଧିର ଗବେଷକ ମନାଷା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରାଇଛି । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଂସ୍କୃତିକୁ ସମୀକ୍ଷା କରିବାରେ ବିଚିତ୍ର ମାର୍ଗ ଅବଲମ୍ବନ କରିଥିବା ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ୧୦ ନଭେମ୍ବର ୧୯୩୬ରେ ଜଗତସିଂହପୁରର ଅନତି ଦୂରରେ ଅବସ୍ଥିତ ଓଡ଼ିଶୋ ନିକଟବର୍ତ୍ତୀ ଅବିଧ୍ୟୁଆନନ୍ଦପୁର ଗ୍ରାମରେ ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ । ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ବିଭାଗରେ ଅଧ୍ୟାପନା କରି ସେବାନିବୃତ୍ତ ହୋଇ ସାରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ରୀତିରେ ଶିକ୍ଷା ଆନ୍ଦୋଳନର ମୁଖ୍ୟ ନେତୃତ୍ୱ ନିର୍ବାହ କରୁଥିବା ଓଡ଼ିଆ । ତାଙ୍କ ସାଧନା ସମ୍ପର୍କରେ ଯାହା କହିବି ବୋଲି ଭାବିଥିଲି ତାହା ସବୁ ଲେଖି ପାରିଲି ବା କେଉଁଠି । ତେବେ ତାଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ କୃତି ପଢ଼ି ମୋର ଯାହା ଧାରଣା ହୋଇଛି ତାହାକୁ ଏହିପରି ଲେଖିହେବ, ଜାତିର ସଂସ୍କୃତିକୁ ଉପଜୀବ୍ୟ କରି ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଓଡ଼ିଶାର ସମାଜ, ଧର୍ମ ସାହିତ୍ୟ, ଇତିହାସ ଆଦିକୁ ବହୁ ପଠନ-ଆଦୃତ ଜ୍ଞାନ ଏବଂ ଆପଣାକୁ ଆପେ ଚିହ୍ନିବା ପ୍ରବୃତ୍ତିର ମାଟି ମନସ୍କ ବିବେକ ଦ୍ୱାରା ଯେଭଳି ମୂଲ୍ୟାୟନ ତଥା ରଚନା-ଉପଯୋଗୀ କରିପାରିଛନ୍ତି ତାହା ଅଭିନବ । ପଣ୍ଡିତ ନୀଳକଣ୍ଠ ଦାସଙ୍କ ସଂସ୍କୃତିକ ସମାଲୋଚନା ପଦ୍ଧତିର ବଳିଷ୍ଠ ଉତ୍ତର ସାଧକ ହେଉଛନ୍ତି ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ।

ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଦେଇ କ'ଣ କରିଛନ୍ତି ତହିଁର ବିଶେଷ ଚର୍ଚ୍ଚା ଅଥବା ସାହିତ୍ୟ ଇତିହାସ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ମୂଲ୍ୟାୟନ ଅନ୍ତତଃ ଆଜିଯୁକ୍ତା ମୋ ଦୃଷ୍ଟିକୁ ଆସି ନାହିଁ । ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟର ଇତିହାସ ହେଉ କିମ୍ବା କୋଉ କୋଉ ଲେଖାରେ ତାଙ୍କର ବିବରଣୀ ମୂଳକ ପରିଚୟ ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି ଯାହା; କିନ୍ତୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରଙ୍କ ସାହିତ୍ୟିକ କୃତିରାଜିର ଅଧ୍ୟେତା ଭାବେ ଏ ଲେଖକ ଆତ୍ମା ଓ ବିଶ୍ୱାସ ରଖୁଛି; ଉଇଙ୍କ ପାଟିରେ ମାଟି ହେବାକୁ ବସିଥିବା ହଜାରେ ବର୍ଷ ତଳର ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟକୁ ଉଦ୍ଧାର କରି ତହିଁର ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପର୍କରେ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ ଓଡ଼ିଆମାନଙ୍କୁ ସଚେତନ ଓ ଉଦ୍‌ବୋଧିତ କରିଥିବା ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” କାଳାନ୍ତରରେ ବି ଓଡ଼ିଆମାନଙ୍କ ନିକଟରେ ଆଦରଣୀୟ ହୋଇ ରହିବ । ନିଜକୁ ନିଜେ ଜାତୀୟ ଗୌରବ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ଖୋଜୁଥିବା ଶିକ୍ଷିତ ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ଅସ୍ଥିତା ପରିପ୍ରେକ୍ଷାରେ ନିଜକୁ ଆବିଷ୍କାର କରିବ ସେହି ପୁସ୍ତକ ରୂପକ ଦର୍ପଣରୁ । ଏଠି ପ୍ରାସଙ୍ଗିକଭାବେ ଜେମ୍‌ର ରିଭସ୍କର ବାକ୍ୟଟିଏ ମନେପଡୁଛି — Literature helps us to understand life and criticism for help us to understand literature. ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଯେଉଁ କବିତାକୁ ଆଲୋଚକମାନେ ଅସ୍ପଷ୍ଟ-ଦୁର୍ବୋଧ କରି ବିଶେଷ ଆଲୋଚନା କରୁ ନ ଥିଲେ, ଓଡ଼ିଶାର ଚରିତ୍ର-ଦାସ୍ତ ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟର ଐତିହ୍ୟ ଧାରଣ କରିଥିବା ସେହି କବିତାଗୁଡ଼ିକୁ ବୁଝିବାରେ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” ସାହାଯ୍ୟ କରିଚାଲିଥିବ । ଆଶା, ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସଂସ୍କାର ପ୍ରୟାସୀ ସଂସ୍କୃତି ମନାଷା ଆଉ କିଛି ନୂତନ ସୃଷ୍ଟିରେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟକୁ ରକ୍ଷିମନ୍ତ କରିବ ।

ପୁରୁଣା ଲେଖାରୁ ଉଦ୍ଧୃତ ଲେଖକଙ୍କ ଅନୁମତିକ୍ରମେ ।



# ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ : ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଓ ନୈର୍ବ୍ୟକ୍ତିକ

ଡ. ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡା

ଆଜ୍ଞାବନ ସଦସ୍ୟ, ଅ.ଭା.ସା.ପ, ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୯୩୭୩୮ ୭୦୧୭

“ଅବ୍ୟକ୍ତାଦାନିଭୂତାନି ବ୍ୟକ୍ତ ମଧ୍ୟାନି ଭାରତ

ଅବ୍ୟକ୍ତା ନିଧନାନେମ୍ୟବ ତତ୍ରକା ପରିଦେବନା ।”

ଜନ୍ମପୂର୍ବ ଓ ମୃତ୍ୟୁପର ରହସ୍ୟ ଆମର ଅଜ୍ଞାତ । ମଧ୍ୟବର୍ତ୍ତୀ ଜୀବନ ହିଁ ଆମର ଆଲୋଚ୍ୟ । ଜୀବନର କୃତକାର୍ଯ୍ୟକୁ ବିଚାରକରି ବ୍ୟକ୍ତିର ମହତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହୁଏ । ଗୋପବନ୍ଧୁଙ୍କ ଶବ୍ଦରେ, “କର୍ମେ ଜୀବନ୍ ନର କର୍ମ ଏକା ତା’ର ଜୀବନର ମାନଦଣ୍ଡ” । ଏ ଦୃଷ୍ଟିରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ କର୍ମ ଜୀବନର ପରାକାଷ୍ଠା ଆମପାଇଁ ଅନୁକରଣୀୟ ଆଦର୍ଶ । ସେ ଥିଲେ ନୀତିନିଷ୍ଠ ଅଧ୍ୟାପକ, ଗଭୀର ମନନଶୀଳ ଗବେଷକ, ତ୍ୟାଗଶୀଳ ସଙ୍ଗଠକ ଓ ଅସାଧାରଣ ସଂସ୍କୃତି ସମ୍ପନ୍ନ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ । ନିଜର ବୃତ୍ତିଗତ ପରିଚୟ ବ୍ୟତୀତ ସରସ୍ୱତୀ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ପରିଚାଳନା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି, ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଥମ ସଭାପତି, ଇତିହାସ ସଂକଳନ ସମିତିର ଅନ୍ୟତମ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଓ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଥମ ସଭାପତି ଭାବରେ ଆଜ୍ଞାବନ ଯେଉଁସବୁ ରାଷ୍ଟ୍ରଚେତନା ଓ ଭାରତୀୟ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଚିନ୍ତନମୂଳକ ବହୁବିଧ କାର୍ଯ୍ୟ କରିଯାଇଛନ୍ତି, ତାହା ତାଙ୍କୁ ଯଶୋବେଦରେ ଅମର କରି ରଖିବ । ତାଙ୍କର ଆକସ୍ମିକ ପରଲୋକ ଗମନ ଆମକୁ ନିଃସ୍ୱ କରିଦେଇଛି, ତାଙ୍କ ସ୍ଥାନର ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ଆମପାଇଁ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦୁଃସାଧ୍ୟ ମନେ ହେଉଛି ।

ଜୁନ୍ ୨୭ ତାରିଖ ବୁଧବାର ମୁଁ ଦିଲ୍ଲୀରେ ଥାଏ । ମାନବ ସଂସାଧନ ମନ୍ତ୍ରାଳୟର ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କମିଟି ବୈଠକପାଇଁ ଯାଇଥାଏ । ଭୋର ୫ଟା, ଫୋନ୍ କଲ୍ ପାଇଲି ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରକାଶନ ଅଧିକ୍ଷକ ଚିନ୍ମୟଠାରୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଆଉ ନହାନ୍ତି । ଗତ ୨୬ ତାରିଖ ମଧ୍ୟରାତ୍ରିରେ ତାଙ୍କର ଦେହାନ୍ତ ହୋଇଯାଇଛି । ମୋର ମନରେ ଦୁଃଖ ରହିଗଲା ଯେ ଶେଷଦର୍ଶନ କରି ପାରିଲିନାହିଁ । ଦିଲ୍ଲୀରୁ ଫେରିବା ପରେ ଆମେ ଶୋକାଞ୍ଜଳି ସଭା କଲୁ । ଯାହାସବୁ ଔପଚାରିକତା ତ ହେବ; କିନ୍ତୁ ମନରେ ଗଭୀର ଦୁଃଖ ଓ ତାଙ୍କ କର୍ମର ଉତ୍ତରାଧିକାର ଦାୟିତ୍ୱ କିଏ ନେବ ? ତାଙ୍କ କର୍ମପରିସର ଦୁଇଭାଗରେ ବିଭକ୍ତ । ତାଙ୍କ ପ୍ରତିଭା ଥିଲା ଭାରଯିତ୍ରୀ ଓ କାରଯିତ୍ରୀ ଉଭୟର ସମାହାର ।

ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ଭାରଯିତ୍ରୀ ପ୍ରତିଭାର ପରିଚୟ ତାଙ୍କର ସାହିତ୍ୟ ଆଲୋଚନା ଓ ଗବେଷଣାରୁ ଅଭ୍ରାନ୍ତ ଭାବରେ ମିଳିଥାଏ । କବି ଜୟଦେବ ଓ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ସମ୍ପର୍କରେ ହେଉ ବା ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ନିର୍ଯ୍ୟାସ ବିଷୟରେ ହେଉ, ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ ସମ୍ପାଦନାବେଳେ ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ କବିତ୍ୱର ଅନାଲୋଚିତ ଦିଗକୁ ଦୃଷ୍ଟିକୁ ଆଣିବାରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ବିଶେଷତା ସର୍ବତ୍ର ଲକ୍ଷ୍ୟଶୀଳ । ତାଙ୍କ ଗବେଷଣାର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଓ ସର୍ବଶେଷ



ଫଳ ଥିଲା ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ୩ ଖଣ୍ଡରେ ପ୍ରକାଶିତ ବିପୁଳାୟତନ ଗ୍ରନ୍ଥମାଳା । ଏଥିରେ ଇତିହାସ, ପ୍ରତ୍ନତତ୍ତ୍ୱ, ନୃତତ୍ତ୍ୱ, କାଳଗଣନା, କିମ୍ବଦନ୍ତୀ ଓ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରଭୁ ଉପାଦାନର ଆଧାରରେ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ଓ ବୈଦିକ ସଭ୍ୟତାର ପ୍ରାଚୀନତା ପ୍ରମାଣ କରି ସେ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ଐତିହ୍ୟ ଓ ମହତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରତିପାଦନ କରିଛନ୍ତି । ଏହି ଅଧ୍ୟୟନ ଓ ଗବେଷଣାର ପରିସର ଓ ଗଭୀରତାକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟକଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ଅସାଧାରଣ ଅଧ୍ୟବସାୟର ପରିଚୟ ପାଇ ଆମକୁ ବିସ୍ମିତ ହେବାକୁ ପଡ଼େ ।

ମୋ ସହିତ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ପରିଚୟ ଓ ପାରସ୍ପରିକ ସମ୍ପର୍କ ଥିଲା ଆତ୍ମିକ । ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନରୁ ସେ ଅବସର ନେବାପରେ ତାଙ୍କ ପଦରେ ମୁଁ ଯୋଗଦେଲି । ବିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ତାଙ୍କର ସାମ୍ମିଧ୍ୟ ଓ ପରାମର୍ଶ ମତେ ଅନୁଗୃହୀତ କରିଛି । ତାଙ୍କ ଅଧ୍ୟୟନରେ ବିଭିନ୍ନ ସମୟରେ ମୁଁ ମଧ୍ୟ ସହଯୋଗ କରିଛି । ଶିକ୍ଷାବିକାଶ ସମିତି ଓ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସାଙ୍ଗଠନିକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ତାଙ୍କର ଉପସ୍ଥିତି ଓ ଉପଦେଶ ଆମକୁ ଚିର ଉପାଦେୟ କରୁଥିଲା । ବର୍ତ୍ତମାନ ତାଙ୍କ ଜୀବନାଦର୍ଶକୁ ଆମର ପାଥେୟ କରି ସାରସ୍ୱତ କାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଜକୁ ନିଯୋଜିତ କରିପାରିଲେ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆମର ଆନ୍ତରିକ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଅନ୍ତରାକ୍ଷରୁ ଏକ ସମୁଦ୍ଧଳ ନକ୍ଷତ୍ର ହୋଇ ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମା ଆମକୁ ଅଶୀର୍ବାଦ କରୁଥିବ ଓ ଆମର କାର୍ଯ୍ୟପ୍ରବାହକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରୁଥିବ ।



The members of the Alumni Association of RIE, Bhubaneswar deeply mourns the sad demise ~~one~~ of their revered teacher Prof. Nagendra Nath Pradhan, who was an immense source of academic inspiration for the students. His life and activities are the best examples for his students. The members pray the Almighty for peaceful rest of his soul in the heavenly abode and let his ~~beloved~~ members of his family be blessed with the strength to withstand this immense loss.

Pranathish Das,  
President, Alumni Association  
RIE, Bhubaneswar

## ହେ ମହାଜୀବନ ! ତୁମରି ପାଦେ

ଭଃ. ସତ୍ୟେଷ କୁମାର ମହାପାତ୍ର

ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକ

ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୪୩୭୧୯୧୮୯୭

ସାର୍ ! ଅସ୍ପଷ୍ଟ ଥିଲେ ବୋଲି ଗତ ଫେବୃଆରୀରେ ନାରାୟଣ ଭାଇ ଓ ମୁଁ ଯାଇଥିଲୁ ଦେଖା କରିବା ପାଇଁ । ସେଦିନ ମୁଁ ଅନୁଭବ କଲି ତାଙ୍କ ମାନସିକ ସାମର୍ଥ୍ୟକୁ । ସେ ଧୀରେ ଧୀରେ ଚାଲି ଚାଲି ଆସୁଥିଲେ । ତାଙ୍କର ଚିନ୍ତାଧାରାରେ ଥିଲେ ସେ । ଔଷଧ ଓ ପଥ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଥିଲା; କିନ୍ତୁ ଦେଖା ହେବା ମାତ୍ରେ ସେ ତାଙ୍କ ଦେହ ବିଷୟରେ କିଛି କହିଲେ ନାହିଁ । ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ବିଭିନ୍ନ କାମ ସମ୍ମିଳନୀ ବହି ଉପରେ ଆଲୋଚନା କଲେ । ଟିକିନିଶ୍ଟ କରି ପଚାରି ବୁଝିଲେ । ତା'ରି ଭିତରେ ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ପ୍ରବନ୍ଧ, ବିଭିନ୍ନ ବିଷୟ ଉପରେ ଆଲୋଚନା କଲେ । ବୁଦ୍ଧି ଉପରେ ସେ ଲେଖୁଥିବା ତାଙ୍କର ବହି ଉପରେ ବିଭିନ୍ନ ମତ ମଧ୍ୟ ଉପସ୍ଥାପିତ କଲେ । ଜ୍ଞାନର ଅଗାଧ ସମୁଦ୍ର ସେ । ତାଙ୍କ ସହିତ ଆମେ କି ଆଲୋଚନା ବା କରିବୁ । ତାଙ୍କର ଗବେଷଣା ତଥା ନୂତନ ତଥ୍ୟ ପାଇଁ ଉତ୍ସାହ ମନ ଭିତରୁ ତେଜୋଦୀପ୍ତ ବାଣୀ ବାହାରି ଆସୁଥାଏ । ତାଙ୍କ କଥା ଭିତରେ ଭରି ରହିଥିଲା ପରିଷଦ ପ୍ରତି ମମତାବୋଧ ତଥା ଆମ ଭଳି ଅନ୍ତେବାସୀଙ୍କ ପ୍ରତି ଅଗାଧ ସ୍ନେହ । ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସେ ଥିଲେ ପ୍ରାଣସ୍ୱରୂପ । ତାଙ୍କର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଉପଦେଶ ଥିଲା ଆମ ପାଇଁ ନୂଆ ମାର୍ଗର ସନ୍ଧାନ । ତାଙ୍କରି ମହାଜୀବନ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ଓ ଶିକ୍ଷା ଜଗତ ପାଇଁ ସମର୍ପିତ ଥିଲା । ସାର୍ ଚାଲିଗଲେ ବୋଲି ବିଶ୍ୱାସ ହେଉ ନାହିଁ । ସେ ତ ରାଷ୍ଟ୍ରଯଜ୍ଞର ହୋମଶିଖା । ସେ ସବୁବେଳେ ବାଟ କଢ଼ାଉଥିବ ଆମକୁ । ସବୁଦିନ ତାଙ୍କରି ଉପଦେଶ ଆମକୁ ବେଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବ । ସେଦିନ ଫେରି ଆସିଲାବେଳେ ମୋର କବିତା ଧାଡ଼ିଟି ମନେ ପଡୁଥିଲା -

ତରୁଛ କି ଆରେ କବି ବି କଦାପି ମରେ

ତାର କବିତା ସାବିତ୍ରୀ ମହାକାଳ ତାକୁ ଡରେ ।

ତେବେ ମୃତ୍ୟୁ ଆଗରେ ସେ ହାର୍ ମାନିବେ କିପରି ? ତେବେ ମହାଜୀବନ ! ତୁମରି ପାଦରେ କୋଟି ପ୍ରଣାମ । ଆପଣଙ୍କ ଅଲିଭା ଜୀବନର ଜ୍ୟୋତିରେଖା ଆମକୁ ସଦା ଆଶିଷ ଡାକୁଥାଉ ।



## ରାଷ୍ଟ୍ର ଚେତନାର ଜ୍ଵାଳାମୁଖୀ ପ୍ରତିଭା

ଡକ୍ଟର ରମେଶ ପଟ୍ଟୀ

ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ଚରତା, ସୁବର୍ଣ୍ଣପୁର

ମୋ: ୮୮୪୭୮୮ ୬୬୫୩

ଫେସ୍‌ବୁକ୍‌ରେ ପ୍ରସାରିତ ପ୍ରଫେସର ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଲେଖନୀ ସମ୍ବରଣ କରିଥିବା ଖବର ପଢ଼ି ହତବାକ୍ ହୋଇଗଲି । ଏଇ ନିକଟରେ ଗତବର୍ଷ ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ସହିତ ତାଙ୍କ ଭୁବନେଶ୍ୱରସ୍ଥିତ ଘରକୁ ଯାଇଥିଲି । ତାଙ୍କ ଅମାୟିକ ବ୍ୟବହାର ଅତିଥି ସତ୍କାର ଭୁଲି ହେବ ନାହିଁ । ସେ ଅସ୍ପୃଶ୍ୟ ଥିଲେ, ତଥାପି ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କୁ କହିଲେ — “ରମେଶ ଭାଇ, କେବେ ଏଇଠି ଆସି ନଥିଲେ । ଏମିତି ଖାଲି ଖାଲି ତାଙ୍କୁ ବିଦା କରିଦେବି !” ତାଙ୍କ ପୁଅକୁ ଜଳଖିଆ ପରିବେଷଣ କରିବାକୁ ଆଦେଶ ଦେଇ ବହିଷ୍କୃତ ଉପର ଆକରୁ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ସଂକ୍ରାନ୍ତୀୟ ତାଙ୍କରି ବହୁ ଗବେଷଣା ଲକ୍ଷ ଗ୍ରନ୍ଥ ଖଣ୍ଡିକ ମୋତେ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କଠାରୁ ଯେଉଁ ଆଗ୍ରହ, ସ୍ନେହ, ସହୃଦୟତା ଲାଭ କରିଛି ଆଜି ତାଙ୍କ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ମୋ ମନରେ ବହୁ ସ୍ମୃତି ଜାଗରୁକ ହେଉଛି । ସମ୍ଭବତଃ ସେଇଟା ଥିଲା ନଗେନ୍ ଭାଇଙ୍କ ସହିତ ମୋର ଶେଷ ଦେଖା ।

ସ୍ୱଳୀୟ ଗବେଷଣା ଏବଂ ବ୍ୟସ୍ତବହୁଳ ଜୀବନଚର୍ଯ୍ୟା ଭିତରେ ମଞ୍ଜି ଯାଉଥିବା ନଗେନ୍ ଭାଇଙ୍କୁ ଦେଖିଲେ ଅନୁଭବ ହୁଏ ନିଜ ପିତା କିମ୍ବା ପିତାମହଙ୍କୁ ଭେଟିଲାଭଳି, ତେବେ ବୟସର ତାରତମ୍ୟତା ଭୁଲି ସେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଭାଇ ମାନ୍ୟ କରି ଆପଣେଇ ନେଉଥିଲେ । ମୋର ମନେ ଅଛି, ସର୍ବ ପ୍ରଥମେ ଓଡ଼ିଶାରେ ହାଇସ୍କୁଲ ସ୍ତରରେ ଯଦି ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ଗଠନ ହୋଇ କିଛି ରଚନାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ କରାହୋଇଥିଲା ତେବେ ସେଇ ସ୍ଥାନଟି ଥିଲା ତରତା । ଆଉ ସେହି ସମୟରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟସ୍ତରରେ ଏକ ଅଭ୍ୟାସବର୍ଗ ଦିଲ୍ଲୀଠାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା । ଏଠାରୁ ମୁଁ ଏବଂ ମୋର ଜଣେ ବନ୍ଧୁ ସ୍କୁଲ ଡ୍ରେସ୍ ହାଉସ୍ୟାଣ୍ଟ୍ ପିନ୍ସି ଦିଲ୍ଲୀଠାରେ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲୁ । ଫେରିବା ପରେ ଏକଦା କଟକଠାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେଉଥିବା ପରିଷଦର ଏକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କୁ ଭେଟିବାବେଳେ ସେ ଆତମିତ ହୋଇ ଆମକୁ ଦେଖି କାନ୍ଧରେ ହାତ ଥାପି ଯେଉଁ ପ୍ରକାର ଉତ୍ସାହିତ କରିଥିଲେ ସେ ଦିନର ସେ ଅନୁଭବ ଏବେବି ମୋ ପାଇଁ ସ୍ମୃତିସଜଳ ହୋଇ ଉଠୁଛି । ଆଜି ଯଦି ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟ ଓଡ଼ିଶାରେ ବଢ଼ିଛି ଏକ ସୁନିଶ୍ଚିତ ରୂପରେଖ ପାଇଛି ତେବେ ତା’ ପଛରେ ରହିଛି ନଗେନ୍ ଭାଇଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ ଦକ୍ଷତା, ଗଭୀର କର୍ତ୍ତବ୍ୟନିଷ୍ଠା ତଥା ଆନ୍ତରିକ ସେବା ଏବଂ ସରଳ ଅମାୟିକ ବ୍ୟବହାର ।

ଭୋପାଳଠାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଆମର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ ପରେ ଉଜ୍ଜୟିନୀ ଯିବାର ଏକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ

ଆମ ସହିତ ନଗେନ ଭାଇ ବି ସମ୍ମିଳିତ ହୋଇଥିଲେ । ଟ୍ରେନରେ ଟିକେଟ୍ ଆରକ୍ଷଣ ହୋଇ ନ ଥିଲା । ସାଧାରଣ ବଗିରେ ଭୀଷଣ ଭିଡ଼ । ନାରାୟଣ ଭାଇ ଚାହୁଁଥିଲେ ସ୍ବାସ୍ଥ୍ୟ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ଏବେ କଷ୍ଟ କରି ନଗେନ୍ ଭାଇ ଆମ ସଙ୍ଗରେ ନ ଯାଆନ୍ତୁ, ସେ ଭୋପାଳରେ ବିଶ୍ରାମ କରନ୍ତୁ; କିନ୍ତୁ ଦୃଢ଼ମତା ନଗେନ୍ ଭାଇ କଷ୍ଟ ସହି ସାଧାରଣ ବଗିରେ ଆମ ସହିତ ଯାତ୍ରା କରିଥିଲେ । ସମଗ୍ର ଯାତ୍ରାରେ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ପରିବାର, ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଜୀବନର ସୁଖ ଦୁଃଖ ପଚାରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟକୁ ବଢ଼ାଇବାପାଇଁ ସେ ସୁପରାମର୍ଶ ଦେଇଥିଲେ ।

ନଗେନ୍ ଭାଇଙ୍କ ସାହିତ୍ୟିକ ଜୀବନ, ଅଧ୍ୟାପକ ଜୀବନ, ଗବେଷଣା କାର୍ଯ୍ୟ, ସାଂଗଠନିକ ଦକ୍ଷତା ତଥା ଏ ସବୁ ଭିତରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚିନ୍ତନଧାରା ସମ୍ପର୍କରେ ଆଲୋଚନା କଲେ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ସ୍ବତନ୍ତ୍ର ଅଧ୍ୟାୟ ଯୋଡ଼ି ହୋଇଯିବ । ସ୍ବଚ୍ଛରେ କହିଲେ, ସେଥିରେ ରାଷ୍ଟ୍ର ଚେତନାର ଗୋଟିଏ ଜ୍ୱାଳାମୁଖୀ ପ୍ରତିଭା, ଯାହାଙ୍କ ଜୀବନଧାରା ଭିତରେ ଓଡ଼ିଶାର ସାଂସ୍କୃତିକ ଐତିହ୍ୟ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଭାବଧାରା ପ୍ରତିଭାତ ହୋଇ ଆତ୍ମମାନଙ୍କୁ ଅନୁପ୍ରେରିତ କରିଆସୁଥିଲା ଏକ ସାଂସ୍କୃତିକ ସମ୍ପନ୍ନ ଉନ୍ନତ ଭାରତ ଗଠନ ପାଇଁ, ଯାହାକି ଆଜି ତାଙ୍କରି ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ଦ୍ବାବଶାହର ପୁଣ୍ୟ ତିଥିରେ ଆମକୁ ବାରମ୍ବାର ମନେ ପକାଇଦିଏ ତାଙ୍କରି ଅନୁଚିନ୍ତା ଏବଂ ମହନୀୟ କର୍ତ୍ତବ୍ୟବୋଧ, ଯାହାକୁ ପୂରଣ କରିବା ହିଁ ହେବ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆମର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।





## ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପର ନିର୍ବାପନ

ଅରୁଣ କୁମାର ସାହୁ

ଏ.ଜି.ଏମ୍., ନାଲକୋ, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ସଂଗଠନ ସମ୍ପାଦକ, ବିଜ୍ଞାନମଣ୍ଡଳ, ଓଡ଼ିଶା

ଫୋ: ୯୪୩୭୧୫୫୬୧୭

ନାରାୟଣ ଭାଇ ହାର୍‌ସଅପରେ ସୂଚନା ପଠେଇଥିଲେ ଯେ, ମାନନୀୟ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଗୁରୁତର ଅସ୍ତ୍ରାଘାତ ଓ ଡାକ୍ତରଖାନାରେ ଆଇସିୟୁରେ ଚିକିତ୍ସିତ । ତେଣୁ ଟିକେ ସମୟ ପାଇଲେ ତାଙ୍କୁ ଦେଖା କରି ଆସନ୍ତୁ । ଯିବି ବୋଲି ଭାବିଲି, ପୁଣି ଭାବିଲି ଆଉ ଟିକିଏ ଯାଉ । ସମୟକୁ ବ୍ୟବସ୍ଥିତ କରି ଦେଖା କରିବାକୁ ଯିବି । ତାଙ୍କର କ'ଣ ହେଇଯିବ ଯେ, ମୃତ୍ୟୁ ତ ବାରମ୍ବାର ଆସି ତାଙ୍କ ଦୁଆରୁ ଫେରିଯାଇଛି । କିନ୍ତୁ ଏଥର ଯେ ମୃତ୍ୟୁ ଏକୁଟିଆ ଫେରିବ ନାହିଁ ବୋଲି ସଂକଳ୍ପ କରି ଆସିଥିଲା ତାହା ମତେ ଜଣା ନଥିଲା । ତାଙ୍କର ଶେଷ ଦର୍ଶନ ଓ ହୁଏତ ଶେଷ କେଇପଦ କଥା ମୋ ପାଇଁ ଅପୂରଣୀୟ ରହିଗଲା ।

ଭାରତର ପ୍ରତ୍ୟେକ ମଣିଷ ଭିତରେ ଦେଶପ୍ରେମର ଦୀପଟିଏ ତ ଥାଏ; କିନ୍ତୁ ସେ ସବୁ ଦୀପ ଶିଖା ପ୍ରଜ୍ୱଳିତ ହୋଇନଥାଏ । ଯେଉଁ କିଛି ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କର ହୃଦୟରେ ଦେଶପ୍ରେମର ଦୀପଶିଖା ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପ ହୋଇ ଢଳୁଥିଲା ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅଗ୍ରେସର ଥିଲେ । ଆତ୍ମମାନଙ୍କ ହୃଦୟରେ ଥିବା ସେଇ ଦୀପରେ ଯେଉଁ ଅଗ୍ନି ସଂଯୋଗ ହୋଇଥିଲା ତାହା ମଧ୍ୟ ଶ୍ରୀ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଧାଡ଼ିରେ ଛିଡ଼ା ହୋଇଥିବା ଅନେକ ଅଗ୍ରେସରଙ୍କ ଦୀପରୁ ହିଁ ଆସିଥିଲା । ତାଙ୍କର ସେ ଅଖଣ୍ଡ ଦୀପ ତ ଝଡ଼ ବତାସ ଭିତରେ ବି ଲିଭିଯାଇନାହିଁ । ସେ ଦୀପଶିଖାରେ ଯେତେବେଳେ ଡେଇଁଲେ ଆବଶ୍ୟକତା ପଡ଼ିଛି ତା'ର ଆବଶ୍ୟକତାକୁ ଦେଶ ପାଇଁ ଟକ୍ ଟକ୍ ହୋଇ ଫୁଟୁଥିବା ତାଙ୍କ ଶରୀରର ରକ୍ତ ଭରଣା କରିଛି । ଆତ୍ମମାନେ ଯେତେବେଳେ ବି ସୁଯୋଗ ପାଇଛୁ ତାଙ୍କ ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ଅନୁଭୂତିର କଥା ଶୁଣିବାପାଇଁ ତାଙ୍କ ଚାରି ପାଖରେ ଛୋଟ ପିଲା ହୋଇ ବସି ଯାଇଛୁ । ସେ ବୋଧହୁଏ ଓଡ଼ିଶାର ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଅନ୍ୟତମ । ସେଇ ଶିକ୍ଷକର ଗୌରବ ଓ ଶ୍ରଦ୍ଧାରେ ସେ ଆତ୍ମମାନଙ୍କୁ ଦେଖୁଥା'ନ୍ତି । ତାଙ୍କର ସାରା ଜୀବନ ଜଣେ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଭାବରେ ସେ କଟେଇ ଦେଇଛନ୍ତି । ରିଜିଓନାଲ୍ ବି.ଇଡ଼ି. କଲେଜର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ହିସାବରେ ସେ ଗଢ଼ିଥିବା ହଜାର ହଜାର ଶିକ୍ଷକ ସାରା ଓଡ଼ିଶାରେ ତାଙ୍କର ସ୍ମରଣ ମାତ୍ରେ ହାତଯୋଡ଼ି ପ୍ରଣାମ କରନ୍ତି ।

ଓଡ଼ିଶାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଚିନ୍ତାଧାରାର ପ୍ରତ୍ୟେକ କାର୍ଯ୍ୟର ମୂଳଦୁଆ ଯେଉଁଠି ପଡ଼ିଛି ସବୁ ସ୍ଥାନରେ ଇଟା, ସିମେଣ୍ଟ, ଗୋଡ଼ି, ବାଲି, କରଣି ଓ ତାଙ୍କ ଦେହରୁ ଯେଉଁ ନିଗୁଡୁଥିବା ଗମ୍ ଗମ୍ ଝାଳରେ ସେଇ ମୂଳଦୁଆ ସ୍ଥାପନ କରିଛନ୍ତି । ସେଇସବୁ ମୂଳଦୁଆ ପଡ଼ିଥିବା କାଳ୍ପମାନେ ଆଜି ବିରାଟ ବିରାଟ ବଡ଼ ମହଲ ହୋଇ ଛିଡ଼ା ହୋଇଛନ୍ତି । ସେସବୁ ମହଲକୁ ଯଦି ଆମେ ପଚାରିବା ସେମାନେ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଗୁଣ କାର୍ତ୍ତବ୍ୟରେ ରାତି ରାତି ବିତେଇ ଦେବେ । ସେସବୁ ଇତିହାସ ସେମିତି ତଟସ୍ଥ ହୋଇ ରହିଥାଉ ଏବଂ

ଆଗାମୀ ପିଢ଼ି ପାଇଁ ଜ୍ଞାନ ମଣ୍ଡଳ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁ ।

ସାହିତ୍ୟର ଅନେକ ମାଷ୍ଟର ପିସ୍ ଯେ କେବଳ ସେ ରଚନା କରିଛନ୍ତି ତାହା ନୁହଁ, ଇତିହାସ ସଂକଳନ ସମିତିର ଅନେକ ତଥାକଥିତ ଐତିହାସିକ ଭୁଲକୁ ତାଙ୍କ କଲମ ମୂଳରେ ସୁଧାରିବାର ପ୍ରଚେଷ୍ଟା କରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାରେ ଦେଶପ୍ରେମ ମୂଳକ ସାହିତ୍ୟ ରଚନା କରୁଥିବା ଏବଂ ଅସଂରକ୍ଷିତ ଅନେକ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କୁ ବୃହତ୍ତର ପରିଧି ଭିତରକୁ ଆଣି ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦକୁ ଏକ ବିରାଟ ସ୍ୱରୂପ ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାର ଅନ୍ୟତମ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ପାଲଟିଥିବା ବିଦ୍ୟାସଂସ୍ଥାନ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ସହିତ ସେ ବର୍ଷ ବର୍ଷ ଧରି ଜଡ଼ିତ । ତାଙ୍କରି ମାର୍ଗ ଦର୍ଶନରେ ଓଡ଼ିଶାର ଲକ୍ଷ ଲକ୍ଷ ଗରିବ ପିଲା ମେଧାବୀ ଛାତ୍ରରେ ରୂପାନ୍ତରିତ ହୋଇ ସାରା ଓଡ଼ିଶାକୁ ଆଲୋକ ପ୍ରଦାନ କରୁଛନ୍ତି । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଓ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନା ଆଜି ଓଡ଼ିଶାରେ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସବୁଠାରୁ ବଡ଼ ଆନ୍ଦୋଳନ । ଡ. ପ୍ରଧାନ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକର ସମସ୍ତ ପ୍ରତିଭାକୁ ପ୍ରଦାନ କରି ହଜାର ହଜାର ଆତାର୍ଯ୍ୟ ଓ ଆତାର୍ଯ୍ୟା ସେ ନିର୍ମାଣ କରିଛନ୍ତି ।

ଅନେକ ଛୋଟ ବଡ଼ ସ୍ମୃତି ତାଙ୍କ ସହିତ ତ ମୋର ଅଛି ସେଥିରୁ ଗୋଟିଏ ସ୍ମୃତିର ଅବତାରଣା ଏଠାରେ କରୁଛି । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଭାବରେ ସେ ନାଲକୋ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର, ଅନୁଗୁଳକୁ ଆସିଥାନ୍ତି । ସେଠାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁଥିବା ତାଙ୍କର ପ୍ରିୟ ଛାତ୍ର ଡ. ଭାଗବତ ଶୁକ୍ଳଙ୍କର ଦାମନଯୋଡ଼ି ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରକୁ ବଦଳି ହୋଇଯାଇଥାଏ । ଏହା ଏକ ପ୍ରଶାସନିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ଥିଲା । ଅନୁଗୁଳ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପରିଚାଳନା ସମିତିର ଏକ ସଦସ୍ୟ ଭାବରେ ଏ ବଦଳିରେ ମଧ୍ୟ ମୋର ସହମତି ଥିଲା । ଡ. ଶୁକ୍ଳ ଦାମନଯୋଡ଼ି ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଥିଲେ; କିନ୍ତୁ ଅନେକ ପାରିବାରିକ ସମସ୍ୟା କାରଣରୁ ସେ ଅନୁଗୁଳ ଫେରିବାପାଇଁ ଚାହୁଁଥିଲେ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ତ ରାଜି ଥିଲା; କିନ୍ତୁ କଥା ଅଟକିଥିଲା ପରିଚାଳନା ସମିତି ଉପରେ । ଡ. ପ୍ରଧାନ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ଦୁଇ-ତିନିଜଣଙ୍କୁ ଧରି ଆମେମାନେ ବସିଲୁ ସେତେବେଳେ ତାଙ୍କ ହୃଦୟରେ ନିଜ ଛାତ୍ର ପ୍ରତି ଥିବା ବାସ୍ତବ୍ୟକୁ ମୁଁ ଅନୁଭବ କରିଛି । ଡ. ଶୁକ୍ଳ ତାଙ୍କର ଅନ୍ୟତମ ଆଦର୍ଶ ଓ ଆଜ୍ଞାଧୀନ ଛାତ୍ର । ସେଇ ଛାତ୍ରପାଇଁ ତାଙ୍କଭଳି ବିରାଟ ଉତ୍ସାହ ପୁରୁଷ ମତେ ଅନୁରୋଧ କରୁଥାନ୍ତି, “ଅରୁଣ ତୁ ପ୍ରଥମେ ମାନି ଯା, ତା’ପରେ ମୁଁ ପରିଚାଳନା ସମିତିକୁ ବାଧ୍ୟ କରିବି ଡ. ଶୁକ୍ଳଙ୍କୁ ଗ୍ରାନ୍ତସଫର କରି ଅନୁଗୁଳ ଫେରେଇ ଆଣିବାପାଇଁ ।” ସେଥି ସହିତ ତାଙ୍କ ଛାତ୍ରର ଅନେକ ସୁଗୁଣ ବର୍ଣ୍ଣନା ସହିତ ମତେ ଅନୁରୋଧ କରିବା ସମୟରେ ତାଙ୍କ ଆଶ୍ୱରୁ ଧାର ଧାର ହୋଇ ଲୁହ ବୋହି ଯାଉଥାଏ । ଛାତ୍ରଟିଏ ପାଇଁ ଶିକ୍ଷକଟିଏ କେତେ ଯେ ପିତୃପ୍ରତୀମ ସେଦିନ ମୁଁ ସ୍ମୃତକ୍ଷୁରେ ଦେଖୁଲି; କିନ୍ତୁ ପ୍ରଶାସନର ଅହଙ୍କାରରେ ଏବଂ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କିଛି ସ୍ଥାନୀୟ ସାଂଗଠନିକ କାରଣରୁ ସେଦିନ ଏ ପିତାମହ ଭାଷ୍ଟ୍ରଙ୍କର ଅନୁରୋଧକୁ ମୁଁ ପ୍ରତ୍ୟାଖ୍ୟାନ କରିଦେଇଥିଲି । ଆଜି ବୋଧେ ପ୍ରକୃଷ୍ଟ ସମୟ ଡ. ପ୍ରଧାନ ଏବଂ ଡ. ଭାଗବତ ଶୁକ୍ଳଙ୍କ ଠାରୁ ମୁଁ କ୍ଷମା ମାଗି ନେବାର । ସେହି ସଦା ସ୍ନେହୀ, ଅନୁପମ ଜ୍ଞାନୀ, ବିଚକ୍ଷଣ ସଂଗଠକ ପ୍ରବୃଦ୍ଧ ସାହିତ୍ୟିକ, କ୍ରାନ୍ତିକାରୀ, ଐତିହାସିକ ଓ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଆଜି ଆମ ଗହଣରେ ନାହାନ୍ତି । ତାଙ୍କ ବିନା ଓଡ଼ିଶାର

ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟତାର ଆକାଶରେ ଏକ ବିରାଟ ଶୂନ୍ୟସ୍ଥାନ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇ ଯାଇଛି । ଶେଷରେ କବିତାର ଦୁଇଧାଡ଼ିରେ ତାଙ୍କୁ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣାଞ୍ଜଳି ଜଣାଇ ମୁଁ ମୋର ଲେଖାକୁ ସମାପ୍ତ କରୁଛି ।

“ମୁଁ ତୁମକୁ ଭୁଲି ପାରୁନଥିବି କି ପାଇ ପାରୁନଥିବି,  
ଆଶୁରୁ ଆଶୁ ପାଣି ମରିଯାଇଥିବ  
ତମେ ମୁଁ ଏକାଠି ହେବା ଦିନ ଆଉ ନ ଥିବ କେବଳ  
ତମେ ମୁଁ ଅଲଗା ହୋଇ ରହିଥିବା ଦିନ ରହିଥିବ ।  
ଚନ୍ଦ୍ର ତାରା ବୃକ୍ଷ ଲତା ନଦୀ ଆଗ ପରି  
ଜଡ଼ ହୋଇ ରହିଥିବେ, ଯଦି  
ହଠାତ୍ ଉତ୍ତାପ ଆସେ କଦାପି ରକ୍ତରେ  
ଆପେ ଆପେ ଥଣ୍ଡା ହେବ, ତରଳ ପାଉଁଶ  
ବୋହି ହେଇଯାଉଥିବ ମୋର ଶିରା ପ୍ରଶିରାରେ ।” (ଶ୍ରୀରାଧା)



## Anil Mishra

I express my heartfelt condolences on the sad demise of Dr. Nagendranath Pradhan, an eminent academician and social activist who had remained the source of inspiration for a great number of coworkers within and outside the school of thought he conformed to. Pray for his grand afterlife. May his family overcome this pang with profundity.

## ଅନ୍ୟ ଲଗ୍ନର ଭକ୍ତି

ପ୍ରସନ୍ନ କୁମାର ବିଶ୍ୱାଳ

ପ୍ରାନ୍ତ ନିରାକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୪୩୭୮୭୫୧୨୩

୧୯୯୩ ମସିହା ପାଖାପାଖି ଘଟଣା । ନାଲକୋର ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରକୁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଓଡ଼ିଶା ହାତକୁ ନେଇଥାଏ । ମୁଁ ଅନୁଗୁଳ ସହରରେ ଥିବା ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଥାଏ । ଆମ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ତତ୍କାଳୀନ ସମ୍ପାଦକ ଶ୍ରୀ ବିଜୟ କୁମାର ମୋଦୀ ତାଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟରେ ମୋ ଭଳି ଆଉ ତିନିଜଣ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ ସାଥରେ ନେଇ ନାଲକୋ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରରେ ପହଞ୍ଚିଲେ । ସେଦିନ ତାଙ୍କର ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବ ଥାଏ । ସଭାକାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ମଞ୍ଚାସୀନ ଅତିଥିମାନଙ୍କ ପରିଚୟ ହେଲା । ମୁଖ୍ୟବକ୍ତା ଥିଲେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ସେ ଆଲୋଚକାଣ୍ଡରୁ ଭାରତ ବିଜୟ ଘଟଣାକୁ ବିଦ୍ରାଢ଼ିକର ଏବଂ ଭୁଲ୍ ବୋଲି ପ୍ରମାଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ଭାରତରେ ଥିବା ଶିଳାଲିପି, ଗ୍ରାସ୍ ଐତିହାସିକଙ୍କ ମତ ଇତ୍ୟାଦିକୁ ନେଇ ଏକ ପାଣ୍ଡିତ୍ୟପୂର୍ଣ୍ଣ ସାରଗର୍ଭକ ଭାଷଣ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ ଯାହା ସାଧାରଣ ଲୋକଙ୍କ ପାଇଁ ଦୁର୍ବୋଧ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଉପସ୍ଥିତ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀମାନେ ଚକିତ ହୋଇଥିଲେ । ସେଇଦିନଠୁ ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଜଣେ ଜ୍ଞାନୀଗୁଣୀ ଲୋକ ବୋଲି ଜାଣିଲି । ଅବଶ୍ୟ ତାଙ୍କ ଜ୍ଞାନ ଭାତହାଣ୍ଡିରୁ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ସଂସ୍ଥା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରକାଶିତ “ଓଡ଼ିଶାରେ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ” ଓ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରକାଶିତ “ବେଦବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ”କୁ ପରୀକ୍ଷା କଲେ ତାଙ୍କ ଜ୍ଞାନର ଗଭୀରତାକୁ ଜାଣିହେବ ।

୧୯୯୮ ମସିହା ବେଳକୁ ମୁଁ ପୁରୀ ବିଭାଗ ନିରାକ୍ଷକ ଥାଏ । ସେଦିନ ଆଷାଢ଼ ଶୁକ୍ଳ ଏକାଦଶୀ, ସୁନାବେଶ ଠାକୁରଙ୍କର । ଆମ ପ୍ରାନ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ନୂଆସାହି ରସୁଲଗଡ଼ଠାରେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରାନ୍ତ ପ୍ରବନ୍ଧ ସମିତି ବୈଠକ ଥାଏ । ବୈଠକ ପରେ ମୁଁ ଓ ସେତେବେଳର ପ୍ରାନ୍ତ ନିରାକ୍ଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଭିକାରିଚରଣ ସାହୁ ପୁରୀ ଯିବାକୁ ବାହାରିଲୁ । ତା’ ପରଦିନ ସକ୍ଳୁ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଥାଏ ହରଚଣ୍ଡୀ ସାହି ପୁରୀରେ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କହିଲେ, “ମୁଁ ଟିକେ ଯାଆନ୍ତି ତୁମ ସାଙ୍ଗରେ ?” ମୁଁ କହିଲି, “ଆପଣ କ’ଣ ବସ୍ରେ ଏତେ ଭିଡ଼ରେ ଯାଇପାରିବେ ?” ସେ କହିଲେ, “ହଁ, ଛିଡ଼ା ହେଇ ପଳେଇବା ।” ରସୁଲଗଡ଼ରେ କଣ୍ଠକୂରକୁ ଖୋସାମତ କରି ଦୁଇଟି ସିର୍ ଯୋଗାଡ଼ କରି ଭିକାରିବାବୁ ଓ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ବସାଇଲି । ଆମେ ତାଳବଣିଆରେ ଓହ୍ଲାଇଲୁ । ଚାଲି ଚାଲି ବଡ଼ଦାଣ୍ଡକୁ ଆସିଲୁ । ଅଟୋ ମିଳୁ ନଥାଏ । ବଡ଼ଦାଣ୍ଡରେ ଆଉ ଚାଲିବାକୁ ପଡ଼ିଲା ନାହିଁ । ଲୋକଙ୍କ ଠେଲରେ ଆମେ ଯନ୍ତ୍ରବତ୍ ଅଗ୍ରସର ହେଲୁ । ବାଟରୁ ଭିକାରି ବାବୁ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଗଲେ । ଆମେ ଦି’ଜଣ ଆଗକୁ ବଢ଼ିଯାଇ ରଥ ପାଖାପାଖି ପହଞ୍ଚିଲୁ । ଏକ ପାଖୁଆ ରାସ୍ତା ହୋଇଥାଏ । ଗୋଟିଏ ପଟରେ ପଶି ଅନ୍ୟ ପଟେ ବାହାରି ଆମେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ରଥ ସାମନାରେ ପହଞ୍ଚିଲାମାତ୍ରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଦଉଡ଼ିର କର୍ତ୍ତନକୁ ଟେକି ବାହାରକୁ ଚାଲିଗଲେ, ଯେଉଁଠି



ପୋଲିସ୍‌ବାବୁମାନେ ଛିଡ଼ା ହୋଇଥିଲେ । ଦୁଇ ହାତ ଟେକି ତନ୍ମୟ ହୋଇ ଠାକୁରଙ୍କୁ ଡାକିଲେ । ଜଣେ ପୋଲିସ୍ ଆସି ତାଙ୍କୁ ଧକ୍କା ମାରି ବାହାରକୁ ଠେଲିଲାବେଳକୁ ବାଳକସ୍ଥଳର ଢଙ୍ଗରେ ସେ ଅନୁନୟ ହୋଇ ଟିକେ ଦେଖୁଦିଏ କହି ସେଠାରୁ ଚାଲି ଆସିଲେ ଓ ଆମେ ଆଗକୁ ବଢ଼ି ହରଚଣ୍ଡୀ ସାହି ଅଭିମୁଖେ ଯାତ୍ରା କଲୁ । ସେତିକିରେ ତାଙ୍କର ଅପାର ଆନନ୍ଦ ।

୧୯୯୯ କି ୨୦୦୦ ବେଳକୁ ନହରକଣ୍ଠା ପୋଲ ପାଖରେ ତାଙ୍କର କାର୍ ଦୁର୍ଘଟଣାଗ୍ରସ୍ତ ହେଲା । ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ତାଙ୍କର ହାର୍ଟ ଅପରେସନ୍ ହେଲା । ବର୍ଷେ ଦୁଇ ବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାଙ୍କୁ ବାହାରକୁ ଛାଡ଼ୁ ନଥିଲେ । ଠିକ୍ ସୁନାବେଶ ଦିନ ଫୋନ୍ କଲେ — ପ୍ରସନ୍ନ ଭାଇ, ମୋତେ ଟିକେ ଠାକୁରଙ୍କୁ ଦେଖେଇ ଆଣନ୍ତି ? ମୋତେ ଭାରି ଡର ମାଡୁଥାଏ । ତାଙ୍କର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଖରାପ କେତେବେଳେ କ’ଣ ହେବ । ତଥାପି ସାହସ ବାନ୍ଧି ତାଙ୍କୁ ଧରି ପୁରୀ ଗଲୁ । ତାଙ୍କର ସେଦିନ ଆନନ୍ଦକୁ ଭାଷାରେ ବ୍ୟକ୍ତ କରିହେବ ନାହିଁ । ବଡ଼ଦାଣ୍ଡରେ ଆମକୁ ଥଣ୍ଡା ପିଇବାକୁ ଦେଲେ, ଆଇସ୍‌କ୍ରିମ୍ ଖାଇବାକୁ ଦେଲେ । ଦର୍ଶନ କରି ସାରିବା ପରେ ଜଳଖିଆ ଖୁଆଇଲେ । ଗଲାବେଳେ ଯେତିକି ଆନନ୍ଦ ଫେରିଲାବେଳେ ତତୋଧିକ ଆନନ୍ଦରେ ଭରିଯାଇଥିଲା ତାଙ୍କ ହୃଦୟ । କୋଣାର୍କ ଦେଇ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଫେରିଲାବେଳକୁ ରାତି ୧୧ଟା ।

ଆଉ ଥରେ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ନିମନ୍ତ୍ରଣକ୍ରମେ ତାଙ୍କ ଗାଁରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଅଷ୍ଟପ୍ରହରାକୁ ଯାଇଥିଲୁ । ବିଭିନ୍ନ ଗ୍ରାମରୁ ନିମନ୍ତ୍ରିତ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ ଦଳ ଆସୁଥାନ୍ତି । ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ଦଳରେ ଦଶ-ବାର ବର୍ଷର ବାଳକଠାରୁ ପଚାଶ ବର୍ଷର ଯୁବକ ଥାଆନ୍ତି । ନଗେନବାବୁ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଦ ଧୋଇଦେଇ ସାରିବା ପରେ ଲମ୍ବ ହୋଇ ଭୂଇଁରେ ପଡ଼ିଯାଉଥିଲେ । ଉଠି ସାଦର ସମ୍ମାନ୍ନ ସହ ଭିତରକୁ ପାଛୋଟି ଆଣୁଥିଲେ । ତାଙ୍କର ଏ ଅନନ୍ୟ ଭକ୍ତିଭାବ ମୋତେ ଖୁବ୍ ପ୍ରଭାବିତ କରିଥିଲା ।

ବାସ୍ତବରେ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ହୃଦୟ ଅନନ୍ୟ ଈଶ୍ୱର ଭକ୍ତିରେ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ଥିଲା । ମୁଁ ସଂଧ୍ୟା ସମୟରେ କେତେ ଥର ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଯାଇଛି । ବୋହୂ, ନାତି, ନାତୁଣୀଙ୍କୁ ଧରି ବିଗଳିତ ହୃଦୟରେ ସେ ଯେପରି ସଂଧ୍ୟା ପ୍ରାର୍ଥନା କରନ୍ତି ଶୁଣିବା ଲୋକ ଭାବବିହ୍ୱଳ ନ ହୋଇ ରହିପାରିବ ନାହିଁ । ନିୟମିତ ଯେଉଁ ଈଶ୍ୱରଙ୍କୁ ପ୍ରାର୍ଥନା କରୁଥିଲେ ସେ ତାଙ୍କୁ ତାଙ୍କ ନିକଟକୁ ନେଇଗଲେ । ତାଙ୍କର ଭକ୍ତିଭାବ ମୁଁ ବଞ୍ଚୁଥିବାଯାଏ କେବେ ବି ଭୁଲି ପାରିବି ନାହିଁ । ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମା ପ୍ରତି ଗଭୀର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଜ୍ଞାପନ କରୁଛି ।



**Niranjana Parhi**

**Dr Pradhan was a renowned educationist, a good human being. I pray God for his heavenly abode.**

## ଦାଦାଗୁରୁଙ୍କ ସ୍ମରଣେ

ଭୁବନେଶ୍ୱର ସାହୁ

ଦକ୍ଷିଣାଞ୍ଚଳ ସମ୍ପାଦକ

ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ବ୍ରହ୍ମପୁର ଶାଖା ।

ମୋ: ୮୯୪୯୫୫୭୫୦୭

ସ୍ୱର୍ଗତ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ମୋର ଅଧ୍ୟାପକ ସ୍ୱର୍ଗତଃ ଦଇତ୍ୟାରି ପଣ୍ଡାଙ୍କର ଅଧ୍ୟାପକ । ସେହି କାରଣରୁ ମୁଁ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଦାଦାଗୁରୁ ହିସାବରେ ମାନ୍ୟତା ଦେଇଛି । ମୁଁ ଯେତେବେଳେ କୋରାପୁଟ ଡି.ଏ.ଭି. କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରୁଥିଲି ସେହି ୧୯୭୦-୭୪ ମସିହାରେ କୋରାପୁଟଠାରେ ମହିମା ଧର୍ମ ଏବଂ ଜଗନ୍ନାଥ ଚେତନା ଉପରେ ଦୁଇଟି ସେମିନାର ହୋଇଥିଲା । ସେଥିରେ ସ୍ୱର୍ଗତ ପ୍ରଧାନ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ । ସେହି ସମୟରେ ମୋର ତାଙ୍କ ସହ ଘନିଷ୍ଠତା ବଢ଼ି ଯାଇଥିଲା । ମୁଁ ସଂଘ ସ୍ଥାନରେ ଶାଖା ପରିଚାଳନା କରୁଥିବାବେଳେ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପ୍ରଧାନ ସେଠାରେ ଯୋଗ ଦେଇ ଆମକୁ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରାଉଥିଲେ ।

ପରେ ମୋର ଚାକରି ହେବା ପରେ ତାଙ୍କୁ ମୁଁ ଜୟପୁର, ବଲାଙ୍ଗିରରେ ମିଶିଥିଲି । ସେ ମୋର କାର୍ଯ୍ୟରେ ସହୃଦ୍ଧ ଥିଲେ ଏବଂ ମୋତେ ଭଲ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ହେବା ପାଇଁ କହୁଥିଲେ । ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ପରିଚାଳନାର ଓଡ଼ିଶାରେ ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ସେ ସଭାପତି ରୂପେ ଅବସ୍ଥାପିତ ଥିଲେ । ଏଣୁ ରାଜ୍ୟର ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନରେ ତାଙ୍କର ଉପସ୍ଥିତି ରହୁଥିଲା ।

ପରେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଉତ୍କଳ ପ୍ରାନ୍ତର ସଭାପତି ରୂପେ କାର୍ଯ୍ୟଭାର ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ । ମଝିରେ ମୁଁ ବ୍ରହ୍ମପୁରରେ ଚାକରି କରୁଥିବା ସମୟରେ ବାଲିପଦରରେ ଏକ ସଭାର ଆୟୋଜନ ହୋଇଥିଲା । ଏଥିରେ ମୁଁ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲି । ପରେ ସେ ବ୍ରହ୍ମପୁର ଗସ୍ତରେ ଆସିଥିଲେ ଏବଂ ବିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କ ସହ ମିଶିଥିଲେ । ସେଥିରେ ସେ ମୋତେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଦକ୍ଷିଣାଞ୍ଚଳର ସମ୍ପାଦକ ହିସାବରେ ଦାୟିତ୍ୱ ଦେଲେ । ମୁଁ ମୋର କ୍ଷମତା ଅନୁସାରେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ତୁଲାଇଥିଲି । ଫୁଲବାଣୀ, ବ୍ରହ୍ମପୁରଠାରେ ବିଭିନ୍ନ ସଭାସମିତିରେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଆଦର୍ଶ ଏବଂ କାର୍ଯ୍ୟ ବିଷୟରେ ପ୍ରଚାର ଓ ପ୍ରସାର କାର୍ଯ୍ୟ କରିଥିଲି ।

ସ୍ୱର୍ଗତ ପ୍ରଧାନ ଜଣେ ସୁ-ସାହିତ୍ୟିକ ଏବଂ ସମାଲୋଚକ । ସେ ଅନେକ ମୂଲ୍ୟବାନ ପୁସ୍ତକ ରଚନା କରିଛନ୍ତି । ଏହା ଓଡ଼ିଶାରେ ନାମ କରିଛି । ଆଜି ଶ୍ରୀ ପ୍ରଧାନ ନାହାନ୍ତି, ତେଣୁ ମୋର ହୃଦୟରେ ଏକ ଶୂନ୍ୟସ୍ଥାନ ଦେଖା ଦେଇଛି । ମୁଁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କଠାରେ ପ୍ରାର୍ଥନା କରେ ଯେ, ସେ ସ୍ୱର୍ଗତ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଆତ୍ମାର କଲ୍ୟାଣ କରନ୍ତୁ ଏବଂ ସ୍ୱର୍ଗରେ ସ୍ଥାନ ପାଇବାରେ ଆଶିଷ ଦିଅନ୍ତୁ ।



## ପରମ୍ପରା ତ ସବୁବେଳେ ପରମ୍ପରା

ଡ. ସୁଧାକର ଦାସ  
ସେବା ନିବୃତ୍ତ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଓ ସଭାପତି  
ପ୍ରଜାଶିରୋମଣି ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ,  
ବିଦ୍ୟାଧରପୁର, ଜଗତସିଂହପୁର  
ମୋ: ୯୪୩୮୪୮୦୩୦୮

ବାଣୀଭଣ୍ଡାରକୁ ସମ୍ବନ୍ଧ କରିବାରେ, ବୌଦ୍ଧିକ ମୌଳିକ ଦିଗ୍‌ବର୍ଣ୍ଣନ ଦେବା ପ୍ରାଚୀନ କଳିଙ୍ଗୋକ୍ତଳ ସାମ୍ରାଜ୍ୟର ପୂର୍ବ ଉପକୂଳରେ ଅବସ୍ଥିତ ଆୟତନରେ କ୍ଷୁଦ୍ର ସାଂପ୍ରତିକ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲା କେବେ ବି ପଛୁଆ ନଥିଲା । ପଞ୍ଚଦଶ ଶତାବ୍ଦୀର କଳିଙ୍ଗୋକ୍ତଳ ସାମ୍ରାଜ୍ୟର ସୁବର୍ଣ୍ଣଯୁଗରେ ବିକାଶଶୀଳ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାକୁ ବିକଶିତ କରିଥିବା ଶୁଦ୍ରକବି ସାରଳା ଦାସ ଥିଲେ ଏଇ ମାଟିର । ଷୋଡ଼ଶ ଶତାବ୍ଦୀର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଓ ଜ୍ୟେଷ୍ଠ କବି ଯଶୋବନ୍ତ ଏଇ ଜଗତସିଂହପୁର ମାଟି ଅଙ୍ଗରେ ଜନ୍ମ ହୋଇଥିଲେ । ପ୍ରାୟ ତିନିଶହ ବର୍ଷଧରି ଓଡ଼ିଆ ଜାତି ପରାଧୀନତା ହେତୁ (୧୫୬୮-୧୮୦୪) ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାର ଅନ୍ତେବାସୀ ମୋଗଲ, ମରହଟ୍ଟା, ବର୍ମା, ଜମିଦାରମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ନାନା ବାଗରେ ଅତ୍ୟାଚାରିତ ହେଲେ ମାତ୍ର ଗୋପବନ୍ଧୁ, ମଧୁବାବୁଙ୍କ ନେତୃତ୍ଵରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସ୍ଵତନ୍ତ୍ର ଭୂଖଣ୍ଡ ପାଇଁ ଯେଉଁ ଲଢ଼େଇ ହେଲା ସେଇ ଲଢ଼େଇ ଭିତରେ ଡ. ପ୍ରାଣକୃଷ୍ଣ ପରିଜାଙ୍କ ପରି ଜଣେ ମୌଳିକ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲା ସମଗ୍ର ବିଶ୍ଵକୁ ଦେଇଥିଲା । କୃତ୍ରିମ୍ ସମ୍ପନ୍ନ ରାଜନୀତି ବିଜ୍ଞାନ ପ୍ରଫେସର ଡ. ଶ୍ରୀରାମଚନ୍ଦ୍ର ଦାସ, ପ୍ରଖ୍ୟାତ ଔପନ୍ୟାସିକ କାହ୍ନୁ ମହାନ୍ତି ଓ ଗୋପୀ ମହାନ୍ତି ସ୍ଵାଧୀନତାର ପୂର୍ବଭାଗରେ ଜନ୍ମ ହୋଇ ଜଗତସିଂହପୁର ମାଟିକୁ ସୁନାମଧନ୍ୟ କରି ଅଛନ୍ତି । ଅବଧି ଆନନ୍ଦପୁର (ଓଡ଼ିଶା) ଗାଁରେ ୧୦-୧୧-୧୯୩୬ ପ୍ରଖ୍ୟାତ ଗବେଷକ, ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଯୋଗଜନ୍ମା ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜନ୍ମ ଏଇ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାରେ ।

ମୁଁ ନବମ ଶ୍ରେଣୀରେ ପଢୁଥିବାବେଳେ (୧୯୬୨) ଡ. ପ୍ରଧାନ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗରେ ଅଧ୍ୟାପକ ହୋଇସାରିଥାନ୍ତି । ମୁଁ ୧୯୬୭ ମସିହାରେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟକୁ ପଢ଼ିବାପାଇଁ ଆସିବାବେଳକୁ ସେ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ ଭୁବନେଶ୍ଵରକୁ ଚାଲିଗଲେ । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ସେତେବେଳେ ଦେଖିବାକୁ ପାଇନଥିଲି, ମାତ୍ର ଅଧ୍ୟାପକ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପାଠ ପଢ଼େଇବା ଶୈଳୀ, ଛାତ୍ରବସ୍ତ୍ରକତା, ପାଣ୍ଡିତ୍ୟ ଆଦି ତାଙ୍କ ଗଲା ପରେ ବି ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର କୋଣେ ଅନୁକୋଣେ ଅନୁରଣିତ ହେଉଥିଲା ।

ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଡ. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜଣେ ସମ୍ପର୍କୀୟ ଭାଇ (ନିରଞ୍ଜନ ପ୍ରଧାନ) ରେଭେନ୍ସାରେ ଏମ୍.ଏ. (ଓଡ଼ିଆ) ମୁଁ ପଢୁଥିବା ବେଳେ ମୋର ସହାଧ୍ୟୟୀ ଥିଲେ । ଘଟଣାକ୍ରମେ ନିରଞ୍ଜନବାବୁ ମୋର ଖୁବ୍ ନିକଟବର୍ତ୍ତୀ ହୋଇଯିବାରୁ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ୧୯୬୫ ପ୍ରକାଶିତ ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟର ସମୀକ୍ଷା ବହିଟି ମୋତେ ପଢ଼ିବାକୁ ଦେଇଥିଲେ । ସେଇ ବହିଟି ପଢ଼ି ମୁଁ ନିରଞ୍ଜନବାବୁଙ୍କୁ କହିଲି - ଦୀନକୃଷ୍ଣଙ୍କ

ସମ୍ପର୍କରେ ଆଉ କିଛି ଅଛିଣ୍ଡା ପ୍ରଶ୍ନ ଓ. ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ କରି ବୁଝିବି । ବନ୍ଧୁ ନିରଞ୍ଜନ ମୋ ସହ ଏକମତ ହେଲେ ଏବଂ ଦିନ ଧାର୍ଯ୍ୟ କରି ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ, ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ତାଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କଲୁ ।

ଧଳା ଧୋତି ଓ ଫତେଇ ପରିହିତ ଓ. ପ୍ରଧାନ ମୋତେ ନ ଚିହ୍ନି ବି ଆମ ଦି'ଜଣଙ୍କୁ ଦେଖିବା ପରେ କୋଳେଇ ନେଲେ । କ'ଣ ଖାଇଛ କି ନାହିଁ ପଚାରୁ ପଚାରୁ ଘର ଭିତରୁ ଦୁଇଟି ବେଲାରେ ଚୁଡ଼ା, ଗୁଡ଼, ନଡ଼ିଆ ମିଶା ଜଳଖିଆ ଆମକୁ ଧରେଇଦେଲେ । ଜଳଖିଆ ଖାଇ ସାରିବା ପରେ ନାନାଦି ପ୍ରଶ୍ନ ପଚାରି ଆମ ପ୍ରଶ୍ନକୁ ମଧ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦୟରେ ସମାଧାନ କରିଥିଲେ । ନିରଞ୍ଜନବାବୁ ଓ ମୁଁ ଅନେକ ଥର (ଆପାତତଃ ୧୯୭୩ଯାଏ) ତାଙ୍କ ସହ ସାକ୍ଷାତ କରିଛୁ । ମାତ୍ର ଏଭଳି ଜଣେ ନିର୍ବିବାଦୀୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ, ଜ୍ଞାନୀ ଗବେଷକ, ରାଷ୍ଟ୍ରପ୍ରେମୀ ମଣିଷ ଦେଖି ସବୁବେଳେ ଅବାକ୍ ହୋଇଛି । ତାଙ୍କ ପରି ହୋଇପାରିନି, ମାତ୍ର ତାଙ୍କର ଅପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରେରଣା ଆମକୁ ଏ ସମାଜର ତୁଚ୍ଛାତିତୁଚ୍ଛ ବୃତ୍ତିଜୀବୀଙ୍କ ନିର୍ମୋକରୁ ଉଦ୍ଧାର କରିଛି ।

ଅନେକ ଦିନର ବ୍ୟବଧାନ ପରେ ଅଧିକ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ନନ୍ଦନକାନନ ଅଧିବେଶନରେ ତାଙ୍କ ସହ ୨୦୧୫ରେ ଦେଖା । ୨୦୧୬ରେ ନାଉଗାଁର ସାହିତ୍ୟ ସଭାରୁ ଫେରିବା ବାଟରେ ଓ. ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ତାଙ୍କ ଗାଁ ଓଡ଼ିଶାରେ ଭେଟିବାର ସୁଯୋଗ ନେଇଥିଲି । ଭୁବନେଶ୍ୱର ଘରେ ତାଙ୍କୁ ଭେଟି କିଛି ପରାମର୍ଶ ନେବାର ଇଚ୍ଛା ଥିଲେ ବି ନାନା କାରଣରୁ ଯାଇପାରିଲି ନାହିଁ । (ସ୍ୱର୍ଗବାସ ୨୬.୬.୨୦୧୮) ମୋର ଇଚ୍ଛା ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିଗଲା ।

ଭାରତବର୍ଷର ଧନଧାନ୍ୟ ବିଦେଶୀମାନଙ୍କୁ ପ୍ରଲୁପ୍ତ କରିବା ଫଳରେ ଯେନତେନ ବାଟରେ ସେମାନେ ଏଇ ଦେଶକୁ କରାୟତକୁ ନେଇ ଆମର ଶାସକ ସାଜି ଆମ ସଂସ୍କୃତିକୁ ନଷ୍ଟ କରିବାରେ, ଇତିହାସକୁ ବଦଳାଇବାରେ ଅନେକ ହିନ୍ଦୁ ଜାତି ବିରୋଧୀ କାର୍ଯ୍ୟମାନ କରିଆସିଅଛନ୍ତି । ସେମାନେ ପୁଣ୍ୟତୋୟା ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ କୂଳରେ ପ୍ରାତଃକାଳୀନ ଆର୍ଯ୍ୟ ରକ୍ଷିର ପ୍ରାଣରେ ଦେବାବତରଣ ଦେଖି ନାହାନ୍ତି । ମାତ୍ର ଓ. ପ୍ରଧାନ ତାହା ଦେଖୁଛନ୍ତି । ବୈଦିକ ଭାବୋଚ୍ଛାସର ପୁନରୁଦ୍ଧାର ହେଉ, ହିନ୍ଦୁ ସମ୍ମାନେ ନିଜ ଦେଶରେ ବଞ୍ଚୁ, ଭାରତୀୟମାନେ ନିଜସ୍ୱ ସଂସ୍କୃତି ଓ ପରମ୍ପରାକୁ ବୁଝନ୍ତୁ ଓ ଜାଣନ୍ତୁ । ନିଜ ଚିନ୍ତନକୁ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କରିବାପାଇଁ ହୁଏତ ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଥମ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର, ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଆରମ୍ଭ କରିଥିଲେ । ଯଶସ୍ୱୀ ତ ସବୁବେଳେ ଯଶସ୍ୱୀ, ଆଉ କ'ଣ ବା ଅଧିକ କହିବି ?







## ଗୁରୁଜୀଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ

ଡଃ ଶ୍ରୀଚରଣ ମହାନ୍ତି  
ଆଜ୍ଞାବନ ସଦସ୍ୟ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା  
ପ୍ଲଟ ନଂ-୮୮୭, ଚଣ୍ଡୀମାତା କଲୋନୀ,  
ରସୁଲଗଡ଼, ଭୁବନେଶ୍ୱର  
ମୋ: ୯୪୩୭୩୫୧୯୪୨

ଗୁରୁଜୀ ମର୍ତ୍ତ୍ୟମଣ୍ଡଳ ତ୍ୟାଗ କରି ସ୍ୱର୍ଗାରୋହଣ କରିଛନ୍ତି “ମର୍ତ୍ତ୍ୟମଣ୍ଡଳେ ଦେହ ବହି, ଦେବତା ହେଲେ ହେଁ...” କିନ୍ତୁ ସ୍ନେହ ଶ୍ରଦ୍ଧା, ଯଶ କାର୍ତ୍ତି କେବେ ଲିଭିଯାଏ ନାହିଁ । ସାରଙ୍କର ହସ ହସ ମୁହଁ, ଶ୍ରଦ୍ଧା ବୋଲୁଥିବା କଥା କେବେ ବି ମନରୁ ଲିଭିବନି । ଶିକ୍ଷାଦାତା ଭାବରେ ଯେପରି, ସଙ୍ଗଠକ ଓ ଗୁଣଦାତା ଭାବରେ ମଧ୍ୟ କୌଣସି ଦିଗରୁ କମ୍ ନୁହନ୍ତି ।

ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର ସଂଗଠନ ସମ୍ପର୍କରେ ସେ ଯେପରି ନିଷ୍ଠାରେ ପଦକ୍ଷେପ ନିଅନ୍ତି, ଆମର ସଭାମାନଙ୍କରେ ସେହିପରି ଆନ୍ତରିକତା ଦେଖାଇଥାନ୍ତି ।

କଲେଜରେ ପଢ଼ିଲାବେଳେ ସାରଙ୍କର ବହି “ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା”, “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ” ଓ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣ” ବହି ପଢ଼ିବାର ସୁଯୋଗ ମିଳିଥିଲା । ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ସାରଙ୍କର ଦୁଇଟି ମୂଲ୍ୟବାନ ପୁସ୍ତକ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” ଓ “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା (ପ୍ରଥମ ଖଣ୍ଡ)” ପଢ଼ିବାର ସୁଯୋଗ ମିଳିଲା । ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଯେ କିପରି ଗୁଣବନ୍ତ ଓ ବିଦ୍ୱାନ୍ ତାଙ୍କ ପୁସ୍ତକ ପାଠକଲେ ଜଣାଯିବ । ମଣିଷ ଚାଲିଯାଆନ୍ତି, କିନ୍ତୁ ମାନବିକତା ବଞ୍ଚି ରହେ । କର୍ମ ଓ ଧର୍ମ ଯୁଗ ଯୁଗ ଧରି ସୃତିପଦରେ ଲାଖି ରହେ ।



**Rahas Chandra Nayak**

ସାର୍ କି ସ୍ନେହ ଭୁଲି ହେବନି...ଅରୁଟିଏ ସୁଦୂର  
ଫୁଲବାଣୀରେ ଦେଖା ହୋଇଥିଲା...ବାସ୍  
ତାହାହିଁ ମୋର ଆଜ ଯାଏ ପ୍ରେରଣାର ସମ୍ବଳ  
ହୋଇ ରହିଛି...ସାର୍ କୁ ଯେତେ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳୀ  
ଦେଲେ ବି କମ୍ ହେବ...ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ  
ନିକଟରେ ପ୍ରାର୍ଥନା ତାଙ୍କ ଆତ୍ମା କୁ ଶାନ୍ତି ମିଳୁ....

## ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଅନ୍ୟପାଠ

ଜଗଦୀଶ୍ଵ ପଟ୍ଟନାୟକ

୧୫୪, କେ-୬୪, କଳିଙ୍ଗ ବିହାର, ଭୁବନେଶ୍ଵର

ମୋ: ୯୯୩୭୦୬୮୦୦୨

ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ (ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ) ଗୁଣୀ, ଜ୍ଞାନୀ, ପ୍ରତିଭାବାନ୍ । ତାଙ୍କ ଜ୍ଞାନର ଗଭୀରତା ମଧ୍ୟକୁ ଯେ ପ୍ରବେଶ ନ କରିଛି ତାଙ୍କୁ ଠିକ୍ ରୂପେ ବୁଝିପାରିବ ନାହିଁ । ତାଙ୍କର ବିରାଟତା ସତ୍ତ୍ୱେ ତାଙ୍କ ଆଚରଣରେ କେତେଗୁଡ଼ିଏ କୌତୂହଳପ୍ରଦ ପ୍ରସଙ୍ଗ ଦୃଷ୍ଟିଗୋଚର ହୋଇଥାଏ ।

ସେ ଥିଲେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଓଡ଼ିଶାରେ ଚାଲୁଥିବା ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରଗୁଡ଼ିକର ପରିଚାଳନା ଦାୟିତ୍ୱ ରହିଥାଏ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଭିତରେ ମୁଁ ଥାଏ ତା'ର ସମ୍ପାଦକ ଏବଂ ଅଧ୍ୟାପକ ନୃସିଂହ ଚରଣ ସାମଲ ତା'ର ଯୁଗ୍ମ ସମ୍ପାଦକ । ଆମେ ତିନିଜଣ ଥରେ ଯାଉଥାଉ ଦାମନଯୋଡ଼ି ସରସ୍ୱତୀ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର ପରିଦର୍ଶନରେ । ରାସ୍ତାରେ ଭାର ଭାର ଅଦା ନେଇ ହାଟକୁ ବିକ୍ରି କରିବାକୁ ଯାଉଥିଲେ ଅଦା ଚାଷୀ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ହଠାତ୍ ଚିତ୍କାର କଲେ, ଗାଡ଼ି ରଖ, ଗାଡ଼ି ରଖ । ଗାଡ଼ି ରହିଲା । ଏକା ସାଙ୍ଗରେ ଭାରେ ଅଦା ମୂଲାଇ ତାକୁ କିଣି ନେବାପାଇଁ କହିଲେ । ନୃସିଂହବାବୁ ମତେ ଦେଖୁଥାନ୍ତି ଆଉ ମୁଁ ତାଙ୍କୁ । ଏତେ ପରିମାଣ ଅଦା କ'ଣ ହେବ ? ଗୋଟିଏ କୁଇଣ୍ଟାଲ୍ ଅଦା ହେବ ପ୍ରାୟ । ହୁଣ୍ଡା ମୂଲରେ କିଣାଯାଇ ଗାଡ଼ି ଡିକିରେ ରଖାଗଲା । ଗାଡ଼ି ଚାଲିଲା ଆଗକୁ । ଭୁବନେଶ୍ଵର ଫେରିବା ପରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କହିବାନୁସାରେ ଅଦାଗୁଡ଼ିକୁ ସମାନ ୩ ଭାଗ କରାଗଲା । ତାଙ୍କ ଘରେ ଗୋଟିଏ ଭାଗ, ଆମ ଘରେ ଗୋଟିଏ ଭାଗ ଆଉ ଅବଶିଷ୍ଟ ଭାଗଟି ନେଲେ ନୃସିଂହବାବୁ ।

ଆଉ ଦିନକର କଥା । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ନେଇ ମୁଁ ଯାଉଥିଲି ଅନୁଗୁଳ । ସେଠାରେ ଗୋଟିଏ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଶିବିର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବାର ଥାଏ । ସେଠାରେ ଟ୍ରେନିଂ ସ୍କୁଲରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର କିଛି ଛାତ୍ର ଅଧ୍ୟାପକ ଥାଆନ୍ତି । ତେଣୁ ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟତ୍ରୀଙ୍କୁ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଦେବାପାଇଁ ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ କେତେକଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରିବାର ଥାଏ । ଏହା ୧୯୮୨ ମସିହାର କଥା ହେବ ବୋଧହୁଏ । ଆମେ ଜେଜ୍ଜାନାଳରେ ବସରୁ ଓହ୍ଲେଇ ସେଠି ଆମ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କ ସହିତ ଶିବିରର ସଫଳତା ସମ୍ପର୍କରେ ଆଲୋଚନା କରି ପୁଣି ବସ୍ ଧରି ଅନୁଗୁଳ ଯିବାକୁ ବାହାରିଲୁ । ଏତିକିବେଳକୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଭୁବନେଶ୍ଵର ଫେରି ଆସିବାକୁ କହିଲେ । ହଠାତ୍ ଆମ ଯୋଜନା ପଣ୍ଡ ହୋଇଯାଉଥିବାର ଦେଖି ତାଙ୍କୁ ବହୁତ ବୁଝାଇଲୁ । କାରଣ ତାଙ୍କ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରିବାର ଅଛି, ସେ ନ ଗଲେ ଏସବୁ ସମ୍ଭବ ହେବ କେମିତି ? ଯାହାହେଉ ସେ ରାଜି ହେଲେ । ସେ ଗସ୍ତ ଆମର ସଫଳ ହେଲା । ଶିବିର ମଧ୍ୟ ଏକ ସୁରଣୀୟ ଶିବିର ହୋଇ ରହିଲା ।

ଚୋବେଇବା ଅଭ୍ୟାସ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ଏକ ଉତ୍କଟ ଅଭ୍ୟାସ । କୌଣସି ସ୍ଥାନକୁ ଗସ୍ତରେ ଗଲେ ସେ ପ୍ରାୟ ତାଙ୍କ ଘରୁ ମିକ୍ସଚର, ଚିନାବାଦାମ, ଚଣାଭଜା ଏମିତି କିଛି ନେଇଥାନ୍ତି । ଟିକିଏ ଟିକିଏ

ପାଟିରେ ପଡୁଥିଲା । ସେ ବେଶ୍ ଖୁସି । ନ ହେଲେ ଷ୍ଟେସନରୁ ତାଙ୍କପାଇଁ କିଛି ଲୁଣି ଜିନିଷ ନେଇ ଯିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ । ଦିଲ୍ଲୀରେ ଥରେ ବିଦ୍ୟା ଭାରତୀ ବୈଠକ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥାଏ । ଆମେ ଯାଇଥାଉ । ଏମିତି ସେଇଠି ବୁଲୁ ବୁଲୁ ଏକ ନିଛାଟିଆ ସ୍ଥାନରେ ରାଧାକୃଷ୍ଣ ମନ୍ଦିରଟିଏ ଦେଖିବାକୁ ମିଳିଲା । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ହଠାତ୍ ଆମ ଗହଣରୁ ଚାଲିଯାଇ ସେଇ ମନ୍ଦିରରେ ଗୋଡ଼ ହାତ ନନ୍ଦି ଦର୍ଶନ କଲେ ଓ ତଳେ ଲମ୍ବ ହୋଇ ପଡ଼ିଯାଇ ସାଷ୍ଟାଙ୍ଗ ପ୍ରଣାମ କଲେ । ତା'ପରେ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ କୌତୂହଳୀ ଦେଖି କହିଲେ, ମୁଁ ବୈଷ୍ଣବ ଧର୍ମାବଲମ୍ବୀ । ବାୟାବାବାଙ୍କ ଠାରୁ ଦୀକ୍ଷା ନେଇଛି । ତା'ପରେ ସେ କହିଲେ କେମିତି ହଠାତ୍ ବାୟାବାବାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଇ ଦୀକ୍ଷା ନେଇ ଥିଲେ । ଦୀକ୍ଷା ନେବା ସମୟରେ ବାୟାବାବାଙ୍କ ଆଶ୍ରମରେ ଲୁଗା ଖଣ୍ଡେ ନଥିଲା । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ଦୀକ୍ଷା ଗ୍ରହଣ ସମୟରେ ପିନ୍ଧିବାପାଇଁ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଏ ଘଟଣାକୁ ଅଲୌକିକ ଘଟଣା ବୋଲି କହନ୍ତି, ହଠାତ୍ ଜଣେ ଆଶ୍ରମବାସୀ ଲୁଗା ଖଣ୍ଡେ ଆଣି ବାୟାବାବାଙ୍କୁ ଦେଇ କହିଲେ, ଲୁଗା ଖଣ୍ଡିକ ତାଙ୍କ ଲୁଗା ରଖିବା ସ୍ଥାନରୁ ମିଳିଛି । ବାୟାବାବା ଲୁଗା ଖଣ୍ଡିକ ଧରି କେତେ କାନ୍ଦିଛନ୍ତି । କହିଛନ୍ତି, ତାଙ୍କର ଆବଶ୍ୟକତା ସମୟରେ ଭଗବାନ ଏହି ଲୁଗା ଖଣ୍ଡିକ ଦେଇଛନ୍ତି । ତା'ପରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ବାୟାବାବାଙ୍କ ଜୀବନୀ କାର୍ଯ୍ୟ ଇତ୍ୟାଦି ସମ୍ପର୍କରେ ଟିକିନିଖି ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଛନ୍ତି । ତାଙ୍କର ଅତିମ କାଳ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯେତେଥର ଆମର ସାକ୍ଷାତ ଅଲୋଚନା ହୋଇଛି ସେ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଛନ୍ତି, ଆପଣ ନିଜର ନିକଟରେ ଯେଉଁ ସାଧୁ ସନ୍ନ୍ୟାସୀ ପାଉଛନ୍ତି ଜଣଙ୍କୁ ଗୁରୁ କରି ନିଅନ୍ତୁ । ଏହା ଜୀବନର ଏକ ଆବଶ୍ୟକତା ।

ଥରେ ଏମିତି ଗୋଟିଏ ବୈଠକରେ ଯୋଗ ଦେବାକୁ ବାହାରିଲୁ । ସେ ସୁଦାମଭାଇ ଓ ମୁଁ । ସୁଦାମଭାଇ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସଙ୍ଗଠନ ସମ୍ପାଦକ । ସେତେବେଳେ ବସ୍ତାଣ୍ଡ ଥାଏ ପୁରୁଣା ବସ୍ତାଣ୍ଡରେ । ତାଙ୍କ ଘରୁ ବାହାରି ବସ୍ ଧରିବାକୁ ଆମେ ପହଞ୍ଚିଲୁ ବସ୍ତାଣ୍ଡରେ । ହଠାତ୍ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କହିଲେ, ଆପଣ କାମ କରାଇ ନେବେ, ମୁଁ ଘରକୁ ଫେରିଯିବି । ଆମେ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଲୁ, କଥା କ'ଣ ? ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କହିଲେ, ମୁଁ ଗାଈଟାକୁ ଘରେ ବାନ୍ଧିନାହିଁ । ବାହାରେ ଅଛି । ହୁଏତ ସେତେବେଳେ ମୋବାଇଲ୍ ଥିଲେ ଘରକୁ ଫୋନ୍ କରିଦେଇ ହୁଅନ୍ତା; କିନ୍ତୁ ସେତେବେଳେ ମୋବାଇଲ୍ ପ୍ରଚଳନ ହୋଇନଥାଏ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ସତ୍ୟପତି, ସେ ନଗଲେ ବୈଠକ ଖାଲି ଖାଲି ଜଣାପଡ଼ିବ । ଦିତୀୟତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଉପସ୍ଥିତି ବି ବୈଠକକୁ ତାତ୍ତ୍ୱିକ ଆଲୋଚନାରେ ଜମାଇ ଦେଇଥାଏ । ବହୁତ ବୁଝାବୁଝି କରିବା ପରେ ଆମେ ଗାଡ଼ିରେ ବସିଲୁ । ବସ୍ ଚାଲିଲା ।

ଗାଡ଼ିରେ ବସି ଯାଉଥିଲା ସମୟରେ କିମ୍ବା କୌଣସି ଜରୁରୀ କାମ ନଥିବା ସମୟରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ତାଙ୍କର ଗବେଷଣାର ତତ୍ତ୍ୱଗୁଡ଼ିକୁ ସହଜ ବୋଧଗମ୍ୟ ରୂପେ ପ୍ରକାଶ କରି ମନୋରଞ୍ଜନ କରିଥାନ୍ତି । କନ୍ୟାକୁମାରୀ କିଏ, ଶିବ ବିବାହ ଉପାଖ୍ୟାନ, ଶିବ ବିବାହ ପାଇଁ କନ୍ୟା ଯାଉଥିବା ସମୟରେ ସେ ବିବାହ ଶୋଭାଯାତ୍ରାର ବର୍ଣ୍ଣନା ଚିତ୍ରାକର୍ଷକ ଭଙ୍ଗରେ କରିଥାନ୍ତି । ଯାଜପୁର ରୋଡ଼ରେ କଥା ଆରମ୍ଭ କରି

ଭୁବନେଶ୍ୱର ବିଜେପି ଅଫିସଠାରେ କଥା ଶେଷ ହେବାର ନଜାର ରହିଛି । ସେଥିପାଇଁ ରବୀନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରତିହାରୀ ତାଙ୍କ ଉପରେ ବିରକ୍ତ ହୁଅନ୍ତି । ସେ ତାଙ୍କ କହିବା ବିଷୟ ଏହି ସମୟ ମଧ୍ୟରେ ଉତ୍ଥାପନ କରି ପାରିଲେ ନାହିଁ ବୋଲି ।

ଖୁସ୍ ମିଜାଜ୍ ଥିବା ସମୟରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ହୋଇଉଠନ୍ତି ପ୍ରଗଳ୍ଭ । ସେ ଦିନ କଥା ଉଠିଲା, ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର କାମ କରିବା ସମୟରେ ଆଜି ସଭା, କାଲି ବୈଠକ ତା’ ପରଦିନ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଏମିତି ଚାଲିଥାଏ । ସେଭଳି ପରିସ୍ଥିତିରେ କିଏ କେମିତି ଘରେ ଗାଳି ଖାଇଥାନ୍ତି ସମସ୍ତେ ପ୍ରାୟ ନିଜ ନିଜ ପରିସ୍ଥିତି ବଖାଣିଲେ । କେହି ଜଣେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରି ପଚାରିଲେ, ଆପଣଙ୍କର ମଧ୍ୟ କ’ଣ ଏମିତି ପରିସ୍ଥିତି ହୋଇଛି । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କହିଲେ, ହଁ-ହଁ, ମୋର ଗାଳିଟା ହେଉଛି, “ଇଏ କ’ଣ ବୃଦ୍ଧ କାଳେ ବାଲ୍ୟ ଲୀଳା ଲଗେଇଛ ?” ସମସ୍ତେ ହସି ଉଠିଲେ ହୋ-ହୋ ହୋଇ ।



୨୦୧୦ ମସିହା ଜାନୁୟାରୀ ମାସ ବାଲିପଦର ସନ୍ମିଳନରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଉପସ୍ଥିତିରେ କବି ଦିଲ୍ଲୀପ ଦାସଙ୍କ ବକ୍ତବ୍ୟ : ଯେଉଁ ମହାଶୟ ସଭାପତି ହୋଇ ବସିଛନ୍ତି ତକ୍କର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ, ମୁଁ ତାଙ୍କୁ କେବେ ଦେଖୁନଥିଲି । ଆଜି ଏଇ ସଭାକୁ ଯଦି ମୁଁ ଆସିନଥାନ୍ତି ତାଙ୍କୁ ମୁଁ ଦେଖିବାର କେବେ ବି ସୁଯୋଗ ପାଇନଥାନ୍ତି । ସେ ମହାଶୟ ମୋତେ ପାଠ ନ ପଢ଼ାଇଥିଲେ ବି ସେ ମଧ୍ୟ ମୋର ଶିକ୍ଷକ । ମୋ ବୟସର ବହୁ ଅଧ୍ୟାପକମାନଙ୍କର ସେ ଶିକ୍ଷକ । କାରଣ ଆମେ ଯେଉଁ ସମୟରେ ପଢ଼ିଥିଲୁ ସେତେବେଳେ କାଁ-ଭାଁ ବହି ଥାଏ । ଆମେ କେବଳ ପୁରୁଣା ମେଗାଜିନ୍ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରି, ପୁରୁଣା ପତ୍ରପତ୍ରିକା ଉପରେ ନିର୍ଭର କରି ପାଠ ପଢୁଥିଲୁ । ଆଜି ତ ଆଲୋଚନା, ସମାଲୋଚନା ଗ୍ରନ୍ଥ ବହୁତ ବାହାରିଲାଣି । ମୁଁ ସାରଙ୍କୁ କହୁଥିଲି ଯେ, ଆସ୍କା ବିଜ୍ଞାନ କଲେଜରେ ମୁଁ ପ୍ରାୟ ୨୦ ବର୍ଷ ଧରି କେବଳ ରସକଲ୍ଲେଳ ପଢ଼ାଇ ଆସିଛି, ଅନର୍ସ କ୍ଲବ୍‌ରେ । କାରଣ ରସକଲ୍ଲେଳ ଆଉ କେହି ପଢ଼ାନ୍ତି ନାହିଁ । ମୁଁ ରସକଲ୍ଲେଳର ଜଣେ ବିଦ୍ୱତ୍ ପଣ୍ଡିତ ବୋଲି କହୁନାହିଁ । ଏଇ ରସକଲ୍ଲେଳ ସମ୍ପର୍କରେ ଯେତେବେଳେ ପରୀକ୍ଷାରେ ପ୍ରଶ୍ନ ଆସୁଥିଲା, ଆମେ ଉତ୍ତରପାଇଁ ପାଠ ପଢୁଥିଲୁ, ସେତେବେଳେ ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶାରେ ବୋଧହୁଏ ଏକମାତ୍ର ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଏକ ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା ବହିଥିଲା । କେବଳ ଏକମାତ୍ର ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା । ଆମ ସାରମାନେ ତାକୁ ପଢ଼ିକରି ଆମକୁ ପଢ଼ାଉଥିଲେ । ଆମେ ତାକୁ ପଢ଼ିକରି ପରୀକ୍ଷା ଦେଉଥିଲୁ । ସେଇଭଳି ଏକ ମହାନ ବ୍ୟକ୍ତି ଆଜି ଏଠି ଉପବେଶନ କରିଛନ୍ତି । ସାର, ମୁଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଆଜି ମୋର ହୃଦୟର ପ୍ରଣାମ ଜଣାଉଛି । ନମସ୍କାର କରୁଛି ।



## ଅପାସୋରା ସ୍ମୃତି

ଡ. ଗୌତମ ମହାରଣା

କଟକ ଜିଲ୍ଲା ସଂଘଟାଳକ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘ

ମୋ: ୯୪୩୭୩୧୦୯୯୭

ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ଦିଗ୍‌ଗଜ ପଣ୍ଡିତ ଅପ୍ରତିମ ବିଦ୍ୱାନ୍ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆମମାନଙ୍କ ଗହଣରେ ନାହାନ୍ତି ବୋଲି ବିଶ୍ୱାସ ହେଉ ନାହିଁ । ଆଜି ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ସେହି ସୌମ୍ୟ ଶରୀର ଅଲକ୍ଷ୍ୟରେ ଆଶ୍ଚ ଆଗରେ ନାଚି ଯାଉଛି । ତାଙ୍କ ପରି ନିରଳସ, ଶାନ୍ତ, ସରଳ, ନିରହଂକାର ଓ ଅଧ୍ୟାପସନ୍ନ ମଣିଷଟିଏ ମିଳିବା ଅତି ଦୁର୍ଲଭ । ସ୍ୱଭାବ ସୁଲଭ ନମ୍ର ବ୍ୟବହାର, ଜଣେ ଆଦର୍ଶ ଅଧ୍ୟାପକ ଭାବେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିଥିବା ଡଃ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ଜଣେ ଅମାୟିକ, ଭଦ୍ର, ଉଦାରଚେତା, ଧୈର୍ଯ୍ୟଶୀଳ, ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଓ ଛାତ୍ରବସ୍ତ୍ର ମହାନ୍ କର୍ମଯୋଗୀ । “କଥା କମ୍ କାମ ବେଶୀ” ଏହି ନୀତିକୁ ସେ ଜୀବନସାରା ପାଳନ କରୁଥିଲେ । ସଂସ୍କୃତ କହେ —

ଦହତ୍ୟଗ୍ନିରବାକ୍ୟସ୍ତୁ ତୁଷ୍ଟୀଂ ଭାତି ଦିବାକରଃ

ତୁଷ୍ଟୀଂ ଧାରୟତେ ଲୋକାନ୍ ବସୁଧା ସଚରାଚରାନ୍ ।

ବିନା ଶବ୍ଦରେ ଅଗ୍ନି ଦହନ କରେ, ସୂର୍ଯ୍ୟ କିରଣ ବିକୀରଣ କରନ୍ତି ଓ ପୃଥିବୀ ସଚରାଚର ସକଳ ଲୋକକୁ ଧାରଣ କରିଥାଏ । ଡଃ ପ୍ରଧାନ କହୁଥିଲେ — “ସର୍ବଦା କର୍ମ କରିତାଳ । ପରିଶ୍ରମ କେବେ ବ୍ୟର୍ଥ ଯାଏନାହିଁ । ଫଳାଶା ନ ରଖି ନିଷ୍ଠାର ସହ କର୍ମ କର । ଲକ୍ଷ୍ୟସ୍ଥଳରେ ନିଷ୍ଠା ପହଞ୍ଚିବ ।” ତାଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଯିଏ ଆସିଛି ସେ ଜାଣେ ତାଙ୍କର ମହାନତା ଓ ତାଙ୍କର ଗଭୀରତା । ଶତାବ୍ଦୀ ବ୍ୟାପୀ ପ୍ରଚାରିତ ମିଥ୍ୟା ଜାତିତତ୍ତ୍ୱ ଆଧାରିତ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତି ଐତିହ୍ୟର ଅବମୂଲ୍ୟାୟନ ସିଦ୍ଧାନ୍ତମାନଙ୍କୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିଧୂସ୍ତ କରିବାରେ ଉପଗ୍ରହ ପ୍ରେରିତ ଚିତ୍ର ସାହାଯ୍ୟରେ ଲୁପ୍ତ ସରସ୍ୱତୀ ପଥର ଆବିଷ୍କାର ହେଉଛି ପ୍ରତ୍ୟକ୍ ପ୍ରତିପାତ । ପ୍ରତ୍ନତତ୍ତ୍ୱ ଭୂବିଜ୍ଞାନ ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଜ୍ଞାନ ସହିତ ବିଜ୍ଞାନ ସାହିତ୍ୟ ବର୍ଣ୍ଣିତ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଐତିହ୍ୟ ଅନୁଶୀଳନ ଦ୍ୱାରା ଉପନିବେଶବାଦୀ ଶାସକ ଓ ସେମାନଙ୍କ ଅନୁଗତମାନଙ୍କ ସିଦ୍ଧାନ୍ତମାନଙ୍କୁ ଦୃଢ଼ ଭାବରେ ଖଣ୍ଡନ କରି ପ୍ରାଚୀନ ବୈଦିକ ପରମ୍ପରାର ଐତିହ୍ୟକୁ ଅନାବୃତ ଭାବେ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଥିଲେ ତୀକ୍ଷ୍ଣଚର୍ଚ୍ଚ ଦୃଷ୍ଟିରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ବରିଷ୍ଠ ଗବେଷକ ସାହିତ୍ୟିକ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ । ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ରଚନାବଳୀ ପ୍ରାଚୀନ ଭାରତ ଇତିହାସ ସମ୍ବନ୍ଧୀୟ ଭ୍ରାନ୍ତିମାନଙ୍କୁ ଦୂରୀଭୂତ କରି ନୂତନ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେବାକୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମର୍ଥ । ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଗବେଷକ ସାହିତ୍ୟିକ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସଂସ୍କୃତି ମୂଲ୍ୟବୋଧର ବିଶିଷ୍ଟ ପୁରୋଗାମୀ ପ୍ରବର୍ତ୍ତକ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ।



ମୁଁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରାନ୍ତ ସଂସ୍କୃତ ପ୍ରମୁଖ ଥିବାବେଳେ ତଥା ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହିତ ମୋର ଭେଟ ହୁଏ । ସେ ସମୟରେ ତଥା ପ୍ରଧାନ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁଥିଲେ । ସେଥିସହିତ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ମୁଖ୍ୟ ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ଥିଲେ ।

ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ଜିଲ୍ଲାରେ ବହୁ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ତାଙ୍କ ସହଯୋଗୀ ଭାବେ କାମ କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଛି । ବିଦ୍ୟୁତ୍ ପରିଷଦ ପକ୍ଷରୁ ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନରେ ଶିକ୍ଷାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟତ୍ୱ ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ତାତ୍ତ୍ୱିକ ଆଲୋଚନାଚକ୍ର କରାଯାଇଛି । ସମସ୍ତ ମାକଲେ ପୁତ୍ରଙ୍କ ଯୁକ୍ତିକୁ ଖଣ୍ଡନ କରି ମହର୍ଷି ପୁତ୍ର ପ୍ରଫେସର ପ୍ରଧାନ ସଫଳତା ଆଣିଥିଲେ । ଭାରତ ଓ ଓଡ଼ିଶାର ସାହିତ୍ୟ, ଧର୍ମ, ସଂସ୍କୃତି ଓ ଇତିହାସ ତାଙ୍କ ଗବେଷଣାର ମୁଖ୍ୟ ବିଷୟବିନ୍ଦୁ ଥିଲା ।

ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀୟ କ୍ଷେତ୍ରୀୟ ସଂସ୍କୃତ ପ୍ରମୁଖ ଭାବେ ମୁଁ ତଥା ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହ ଅନେକ ରାଜ୍ୟରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିବା ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ବାର୍ଷିକ ଅଧିବେଶନରେ ଯୋଗ ଦେବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଛି । ଆନ୍ଧ୍ର ପ୍ରଦେଶର ବିଶାଖାପାଟଣା, ଗୁଜୁରାଟର ଗାନ୍ଧୀନଗର, ଉତ୍ତରାଖଣ୍ଡର ହରିଦ୍ୱାର, ରଷିକେଶ, ରାଜସ୍ଥାନର କୋଟା, ପଞ୍ଜାବର ଅମୃତସର ଓ ହରିୟାଣାର ଭିତାନି ପ୍ରଭୃତି ସ୍ଥାନରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଅଧିବେଶନରେ ତାଙ୍କର ନିଜ୍ଜକ ଓଡ଼ିଆ ପ୍ରାତିକ୍ ମୁଁ ଅନୁଭବ କରିଛି । ରେଳଗାଡ଼ିରେ ଯାତ୍ରା କଲାବେଳେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ପାଇଁ ବାର୍ଷିକ ଯୋଜନା ବୈଠକ କରାଯାଇଥିଲା । ମଝିରେ ମଝିରେ ସେ କୁହନ୍ତି କ’ଣ ଖାଲି ବୈଠକ କରିବା ନା କିଛି ଚୋବାଚୋବି ବ୍ୟବସ୍ଥା ଅଛି । କ’ଣ ଟିକେ ପାଟିରେ ପଡ଼ିଲେ ସେ ଖୁସି ହୁଅନ୍ତି । ରେଳଗାଡ଼ିରେ ଖାଦ୍ୟ ବରାଦ କଲାବେଳେ ସେ କୁହନ୍ତି, “ହେ ଚୋକା, ବାଇଗଣ ପୋଡ଼ା ହେଁ ? ତୁଣ କ’ଣ କରିଛ ? ସବୁବେଳେ ନିପଟ ମଫସଲି ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ପ୍ରୟୋଗ ତାଙ୍କର ସ୍ୱଭାବ । ଟ୍ରେନରେ ପିଲା କିଛି ବୁଝେନାହିଁ । ସେ କୁହନ୍ତି ଇଏ ଶାଲା କିଛି ବୁଝୁନି । ଏମିତି ଥରେ ଅମୃତସର ବୈଠକରେ ତାଙ୍କର ଦେହ ଖରାପ ହେଲା । ଆମେ ସମସ୍ତେ ବ୍ୟସ୍ତ ହୋଇପଡ଼ିଲୁ । ଯାହାହେଉ ପ୍ରଭୁଙ୍କ ଦୟାରୁ ଗୋଟିଏ ଦିନରେ ସବୁ ଠିକ୍ ହୋଇଗଲା । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ଅଧ୍ୟକ୍ଷରୁ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷା ସଂସ୍ଥାନରେ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ ଦାୟିତ୍ୱ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାଙ୍କ ଉପରେ ନ୍ୟସ୍ତ ଥିଲା ।

ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘର ଜଣେ ନିଷ୍ଠାପର ସ୍ୱୟଂସେବକ ତଥା ପ୍ରବାସୀ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଭାବେ ସେ ସଂଘର ଭୁବନେଶ୍ୱର ମହାନଗର ସଂଘଚାଳକ, ବିଶ୍ୱ ହିନ୍ଦୁ ପରିଷଦ, ଭାରତୀୟ ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ଯୋଜନା, ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷଣ ମଣ୍ଡଳ, ଭାରତ ବିକାଶ ପରିଷଦ ଓ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ପ୍ରଭୃତି ସବୁ ଅନୁଷ୍ଠାନରେ ସେ ନିଃସ୍ୱାର୍ଥ ସେବା ପ୍ରଦାନ କରି ସ୍ମରଣୀୟ ହୋଇଛନ୍ତି ।

ମଣିଷ ମରିବ ଦିନେ

ଜନ୍ମ ହେଲେ ଦେବତା ବି ମରେ ।

ସାର୍ଥକ ଜୀବନ ତା’ର

ଯା’ର ଲାଗି ଗୋଡ଼ି ମାଟି ଝୁରେ । ।

ଆଜି ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପଞ୍ଚଭୂତର ଶରୀର ପଞ୍ଚଭୂତରେ ବିଲୀନ ହୋଇଛି । ତାଙ୍କର ଆତ୍ମାୟତ୍ନଜନ ତୁହାଇ ତୁହାଇ କାନ୍ଦୁଛନ୍ତି; କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କର ଅମର କାର୍ତ୍ତି ତାଙ୍କୁ ସଦା ଜୀବିତ ରଖିବ । କଥାରେ ଅଛି — କାର୍ତ୍ତିର୍ଯ୍ୟ ସଃ ଜୀବତି ।

ମନେପଡ଼େ ଥରେ ଦୂର ସ୍ଥାନକୁ ପ୍ରବାସରେ ଯାଇଥିବାବେଳେ ତଃ ପ୍ରଧାନ ରାତିରେ ବସ୍ତ୍ରରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଫେରୁଥିଲେ । ଡ୍ରାଇଭରକୁ କହିଥିଲେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ପହଞ୍ଚିଲେ ମୋତେ ଡାକିଦେବେ । ଗାଡ଼ିରେ ବସି ସେ ଶୋଇପଡ଼ିଛନ୍ତି । ଗାଡ଼ି ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ପହଞ୍ଚିଲା । ଧୀରେ ଧୀରେ ଲୋକ ଓହ୍ଲାଇଗଲେ । ବରମୁଣ୍ଡାରେ ଗାଡ଼ି ଖାଲି ହେବାରୁ ଗାଡ଼ିର ଷ୍ଟାର୍ କବାଟ ବନ୍ଦ କରି ବିଶ୍ରାମ କରିବାକୁ ଚାଲିଗଲେ । ତଃ ପ୍ରଧାନ ଗାଡ଼ି ଭିତରେ ଶୋଇଥାନ୍ତି । ରାତି ପାହିଲା, ସକାଳ ହେଲା, ଗାଡ଼ି ଧୋଇବାକୁ ଆସିଥିବା ପିଲା ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଗାଡ଼ି ଭିତରେ ଦେଖି ଗାଲି କରିବାକୁ ଆରମ୍ଭ କଲା । ସେ ଭାବିଲା ଗାଡ଼ି ଭିତରେ ସାଧାରଣ ଜଣେ କେହି ପଶି ଯାଇଛି । ଗାଲି ଶୁଣିଲା ପରେ ତଃ ପ୍ରଧାନ କହିଲେ — ବାବୁରେ, ସେମିତି କହନା । ମୁଁ ଜଣେ ପ୍ରଫେସର । ମୋତେ ଏମିତି କହୁଛୁ । ରାତିର ସକଳ ଘଟଣା ପିଲାଟିକୁ କହିଲେ । ପୁଣି ସେଠାରୁ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାର ଆସି ଘରକୁ ଗଲେ । ଏଥିରୁ ସେ କେତେ କର୍ତ୍ତବ୍ୟନିଷ୍ଠ ଓ ଶାନ୍ତ ସ୍ୱଭାବ ସ୍ୱତଃ ଜଣାପଡ଼େ ।

ସେହି ଅମର ଆତ୍ମା ସଦଗତି ଲାଭକରୁ । ତାଙ୍କର ପରିବାର ବର୍ଗଙ୍କୁ ମହାପ୍ରଭୁ ଅଟଳ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ । ସଂଘର ସ୍ୱୟଂସେବକମାନେ ତାଙ୍କ ଆଦର୍ଶ ରକ୍ଷା କରି ରାଷ୍ଟ୍ର ସେବାରେ ବ୍ରତୀ ହୁଅନ୍ତୁ । ପରିଶେଷରେ ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିଷୟରେ ଏତିକି କହିବି —

ପଦ୍ମପତେତଃ ରମ୍ୟପୁରେ ଚରନ୍ ଚରନ୍,  
ତସ୍ୟ ସ୍ୱରୂପଂ ମନସା ସ୍ମରନ୍ ସ୍ମରନ୍,  
ତସ୍ୟ ପ୍ରଶସ୍ତଂ ଚରିତ୍ରଂ ଗିରନ୍ ଗିରନ୍,  
ତିଷ୍ଠେତ୍ ତିରଂ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତିଂ କିରନ୍ କିରନ୍ ।  
ସଦା ଶୁଭାଶୀଃ ସଲିଳାନି ବର୍ଷୟନ୍,  
ସ୍ୱାକ୍ଷୟପ୍ରକରଂ ପ୍ରପୋଷୟନ୍,  
ଅଶେଷବିଦ୍ୟାକୁସୁମଂ ବିକାଶୟନ୍,  
ସଃ ବର୍ତ୍ତତାଂ ବିଷ୍ଣୁପଦାଦ୍ଭ୍ୟାମ୍ ।



# ଆଦର୍ଶ ପୁରୁଷ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ

ଡଃ ସମ୍ଭାରନ ପ୍ରଧାନ

ରାଉରକେଲା

ମୋ: ୯୪୩୭୨୪୫୬୦୦

ଚିର ନମସ୍ୟ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଦେହାବସାନରେ ମୁଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ମର୍ମାହତ ହୋଇପଡ଼ିଛି । ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ଆଦର୍ଶ ପ୍ରତିଷ୍ଠାବାନ୍ ବ୍ୟକ୍ତି । ସେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ବିମୁଖ କର୍ମଯୋଗୀ ଥିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଜ୍ଞାନଯୋଗୀ, ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ସାହିତ୍ୟିକ, ଗବେଷକ, ଦାର୍ଶନିକ, ସମାଜ ସଙ୍ଗଠକ ଥିଲେ । ତାଙ୍କର ଜୀବନ ଶିକ୍ଷା, ସଂସ୍କୃତି, ସମାଜ, ଧର୍ମ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରପାଇଁ ସମର୍ପିତ ଥିଲା ।

ସମାଜରେ ପ୍ରଜ୍ଞାବାନ୍ ବ୍ୟକ୍ତି ନିର୍ମାଣ ହୁଅନ୍ତୁ, ରାଷ୍ଟ୍ର, ସମାଜ, ସଂସ୍କୃତି ଓ ଧର୍ମ ପ୍ରତି ଜନସାଧାରଣଙ୍କର ଅନୁରାଗ ବଢ଼ୁ । ସେଥିପାଇଁ ସଦାସର୍ବଦା ସେ କାର୍ଯ୍ୟମନୋବାକ୍ୟରେ ଚେଷ୍ଟିତ ଥିଲେ । ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁମନ୍ଦିରର କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ସେ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ ଥିଲେ । ଆଚାର୍ଯ୍ୟ-ଆଚାର୍ଯ୍ୟା, ସେବକ-ସେବିକାମାନଙ୍କୁ ଅତି ଆଦର କରୁଥିଲେ । ସେମାନଙ୍କର ପାରିବାରିକ, ଆର୍ଥିକ ଓ ସାମାଜିକ ସ୍ଥିତି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବ୍ୟକ୍ତିଗତଭାବେ ବୁଝି ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ସମଭାଗୀ ହେଉଥିଲେ । ତାଙ୍କ ହୃଦୟ ସର୍ବଦା ସ୍ନେହ, ଶ୍ରଦ୍ଧା, ପ୍ରେମ ଓ କରୁଣାସିନ୍ଧୁ ଥିଲା ।

ସେ ଜଣେ ଉଚ୍ଚକୋଟିର ସାହିତ୍ୟ ସାଧକ । ତାଙ୍କଦ୍ୱାରା ସଙ୍କଳିତ ଗଙ୍ଗାଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀରେ “ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ଭୂମିକା” ସାହିତ୍ୟ ଜଗତକୁ ଏକ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅବଦାନ ଅଟେ । ସାହିତ୍ୟ ସାଧନା ସହିତ ଐତିହାସିକ ବିଷୟ ଯଥା — ଗୌତମବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ନିରୂପଣ, ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଅବସ୍ଥିତି ଆଦି ଗବେଷଣାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉପାଦେୟ ଅଟେ ।

ଡଃ ପ୍ରଧାନ ଜଣେ କର୍ତ୍ତବ୍ୟନିଷ୍ଠ କୁଶଳୀ ସଙ୍ଗଠକ ଥିଲେ । ଓଡ଼ିଶାରେ ଅନେକ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ସଙ୍ଗଠନର ସେ ଥିଲେ ପୁରୋଧା । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ବିଶ୍ୱହିନ୍ଦୁ ପରିଷଦ, ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଓ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଆଦି ସଙ୍ଗଠନର ସେ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି ଥିଲେ । ବାସ୍ତବରେ ସେ ଓଡ଼ିଶାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ଓ ସଙ୍ଗଠନର ଭଗୀରଥ ଥିଲେ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ ।

ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହିତ ମୋର ଦୀର୍ଘ ଅଣତରିଖ ବର୍ଷର ସୌହାର୍ଦ୍ଦ୍ୟପୂର୍ଣ୍ଣ ଆଦିକ ସମ୍ପର୍କ ଥିଲା । ୧୯୮୯ରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର, ସେକ୍ଟର-୬ର ସମ୍ପାଦକ ଦାୟିତ୍ୱରେ ମୁଁ ଥିବା ସମୟରେ ତାଙ୍କ ସହ ମୋ ପ୍ରଥମ ସାକ୍ଷାତରେ ସମ୍ପର୍କ ଦୃଢ଼ୀଭୂତ ହେବାକୁ ଲାଗେ । ସେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ମୁଖ୍ୟ ଥିଲେ । ପରେ ମୁଁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ଯୁଗ୍ମ ସମ୍ପାଦକ ପଦବୀରେ ଥିବାବେଳେ ଛଅ ବର୍ଷକାଳ ସମ୍ପର୍କରେ ଘନିଷ୍ଠତା ଆହୁରି ବୃଦ୍ଧି ପାଇଥିଲା । ରାଉରକେଲାକୁ ତାଙ୍କର ପ୍ରବାସ ବହୁବାର ହୋଇଛି । ସେ ସମୟରେ ତାଙ୍କ ପ୍ରୟାସରେ

ଇସ୍ଵାତ କାରଖାନା କର୍ତ୍ତୃପକ୍ଷଙ୍କଠାରୁ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ପାଇଁ ତଥା ଭବନ ନିର୍ମାଣ ନିମିତ୍ତ ଜମି ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥିଲା ।

ଗୋଟିଏ ବର୍ଷ ପୂର୍ବେ ରାଉରକେଲା ପ୍ରବାସରେ ଆସି ସେକ୍ଟର-୧ ସ୍ଥିତ ତାଙ୍କ ଝିଅଙ୍କ ବାସଭବନରେ ଥାଆନ୍ତି; ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ୍ କରିବାକୁ ଯାଇଥିଲି । ସେତେବେଳେ ମୋ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ତାଙ୍କର ଏକ ବୌଦ୍ଧିକ ବର୍ଗ ରଖାଗଲା । ସେଥିରେ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ, ସଂସ୍କୃତି, ବୁଦ୍ଧିଜ୍ଞ ଜନ୍ମସ୍ଥାନ, ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଅବସ୍ଥିତି ଆଦି ବିଷୟରେ ଦୀର୍ଘ ସମୟ ଧରି ଆଲୋଚନାଚକ୍ର ସମାହିତ ହୋଇଥିଲା । ତାଙ୍କର ବହୁମୂଲ୍ୟ ବକ୍ତବ୍ୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ତଥା ଅଧ୍ୟାପକ, ଅଧ୍ୟାପିକାମାନଙ୍କୁ ବହୁ ମାତ୍ରାରେ ଅନୁପ୍ରାଣୀତ କରିଥିଲା ।

ବହୁବର୍ଷ ତଳେ ଥରେ ରାଉରକେଲା ପ୍ରବାସ ସମୟରେ ଆମ ଘରୁ ମୋଟର ସାଇକେଲରେ ଫର୍ଟିଲାଇଜର୍ ଗାଡନରେ ଥିବା ତାଙ୍କ ଝିଅଙ୍କ ନିବାସକୁ ଯାଇଥିଲୁ । ଏଇଟା ସଂଧ୍ୟା ସମୟ ଥିଲା । ଫେରିବାବେଳେ ରାସ୍ତାରେ ଦୁର୍ଘଟଣା ଘଟିଲା । ତାଙ୍କ ଗୋଡ଼ ଉପରେ ମୋଟର ସାଇକେଲଟା ପଡ଼ିଗଲା । ଗଭୀର ଆଘାତ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ଦୀର୍ଘ ଦିନ ଡାକ୍ତରଖାନାରେ ରହିଥିଲେ । ବହୁତ କଷ୍ଟ ପାଇଲେ । ଏଥିପାଇଁ ମୁଁ ଅନେକ ଆଦୁଗ୍ଲାନି ଅନୁଭବ କରିଛି । ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ସେ ବହୁବାର ରାଉରକେଲା ଆସିଛନ୍ତି । ସେ ମୋତେ କହନ୍ତି — ସନାତନ ଭାଇ, ଆଉ ଆକୃତେଷ୍ଟ ହେବ ନାହିଁ ତ ? ମୁଁ କହେ — ନାହିଁ ଆଜ୍ଞା, ଆପଣଙ୍କୁ ଆରାମରେ ତଥା ନିରାପଦରେ ମୋର କାର୍ ନେଇଯିବ ।

ବାସ୍ତବରେ ଜଣେ ଯୁଗଜନ୍ମା, ସାହିତ୍ୟ ସାଧକ, ଗବେଷକ, ସଙ୍ଗଠକ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ର ଭକ୍ତ । ତାଙ୍କ ହୃଦୟ ଥିଲା ଉଦାର ଓ ବିଶାଳ । ତାଙ୍କ ପରି ଜଣେ ପ୍ରଜ୍ଞା ପୁରୁଷଙ୍କ ସାନ୍ନିଧ୍ୟ ଲାଭ କରି ମୁଁ ଗର୍ବ ଅନୁଭବ କରେ ।

ତାଙ୍କର ଅମୃତ ଆତ୍ମା ପ୍ରତି ଶତଶତ ପ୍ରଣାମ ।



**Arun Panda**

ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା, ସାହିତ୍ୟ ଓ ଗବେଷଣା  
ଆକାଶର ଏକ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ନକ୍ଷତ୍ର ବିଶିଷ୍ଟ  
ଶିକ୍ଷାବିତ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନରେନ୍ଦ୍ର  
ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆଉ ନାହାଁତି । ତାଙ୍କର  
ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦୃଶ କାମନା କରୁଛି

## ଯୋଗୀ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ

ସୁଦର୍ଶନ ପ୍ରକାଶୀ

ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ

ଗୋବିନ୍ଦତୋଳା, ଧନୁପାଲି, ସମ୍ବଲପୁର

ମୋ: ୯୪୩୭୦୫୯୯୫୫

ବ୍ୟକ୍ତିର ମର କଳେବର କାଳ କବଳରେ ଗ୍ରାସିତ ହୋଇପାରେ; କିନ୍ତୁ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ ରହେ ଅମ୍ଳାନ । ବଳିଷ୍ଠ ଓ ପୁଣ୍ୟପ୍ରାଣ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ ବ୍ୟକ୍ତିକୁ “ଯଶୋଦେହେ ଆୟୁଷ୍ମାନ” ରଖେ । ପୁଣ୍ୟଶ୍ଳୋକ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ମାଟି ଦେହକୁ ଶୁଶ୍କାନ ଗ୍ରାସିଛି ସିନା, କୃତକର୍ମ ଯୋଗୁ ସେ ରହିବେ ଅବିନଶ୍ବର ଯୁଗ-ଯୁଗାନ୍ତରକୁ, କାଳ କାଳାନ୍ତରକୁ ।

“ଜାତସ୍ୟ ହି ଧୂବୋମୃତ୍ୟୁ” ସହିତ “ପୁନରପି ଜନମଂ, ପୁନରପି ମରଣମ୍” ବି ଜଡ଼ିତ; କିନ୍ତୁ ଏହି ଜନ୍ମ-ମରଣ-ଚକ୍ରରୁ ନିବର୍ତ୍ତବାର ପଥ “ମୁମୁକ୍ଷା” ଗାତା ଉନ୍ମୋଚିତ କରିଛି – ଭକ୍ତି, ଜ୍ଞାନ ଓ କର୍ମଯୋଗ ପ୍ରଖ୍ୟାପନ କରି । ଏଥିରୁ ଯେକୌଣସି ମାର୍ଗ ଅବଲମ୍ବନ କରି ଯେ କେହି ମୁକ୍ତିସାଗର ପାଖରେ ଶୁଦ୍ଧସରିତ ହୋଇ ପ୍ରବେଶି ପାରିବ; କିନ୍ତୁ କେହି କେହି ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପରି କ୍ଷଣକଳ୍ପ, ଏହି ତ୍ରିଧାରାକୁ ସଫଳତାର ସହିତ ସମାବିଷ୍ଟ କରି ଗୁଣଗ୍ରାହୀ ଭାବୀ ବଂଶଧରଙ୍କ ଅନୁକରଣୀୟ ହୋଇପାରନ୍ତି ।

୧. ଭକ୍ତି ତ ଅନ୍ତର୍ଗତ ବ୍ୟାପାର, କେହି କେହି ଭକ୍ତିରେ ପ୍ରଗଳ୍ଭ ହୋଇପଡ଼ୁଥିବାବେଳେ ଆଉ ଅନେକଙ୍କ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଏହା ପ୍ରବାହିତ ହୁଏ ଅନ୍ତଃସ୍ରୋତ ହୋଇ । ତେବେ ଏମାନଙ୍କ ଭକ୍ତିର ସାକ୍ଷ୍ୟତା ଜଣାପଡ଼େ କର୍ମରୁ, ଜ୍ଞାନରୁ । ସରସ୍ବତୀ ପରି ଭକ୍ତି ଗୁପ୍ତ ରହି, କର୍ମ-ଜ୍ଞାନର ଗଙ୍ଗା-ଯମୁନା ତୀରବର୍ତ୍ତୀ ପୁରବାସୀ ସକଳଙ୍କୁ ତୋୟଦାନ କରି ଚାଲିଥାନ୍ତି । ସତତ ପରହିତାର୍ଥରେ ଥିବା ଜ୍ଞାନାଭିସିକ୍ତ ଭକ୍ତଙ୍କୁ ଭକ୍ତି ପ୍ରଦର୍ଶନ ସକାଶେ ବେଳ କାହିଁ !!

୨. ଜ୍ଞାନଯୋଗୀ ପଠନମାତ୍ରରେ (ଜ୍ଞାନାର୍ଜନ/ଆହରଣରେ) ଅଟକି ଯାଏ ନାହିଁ ମନନ କରେ, ନିଧିଧାସନ ସ୍ତରକୁ ପ୍ରବେଶ କରେ । ବିଷୟ ଚୟନ କରେ, କର୍ଷଣ କରେ ଓ ନିଷ୍କର୍ଷ ପ୍ରକାଶ କରେ ଅନ୍ୟର ସୁବିଚାର ପାଇଁ, ଆସ୍ବାଦନ ପାଇଁ ।

ବିବେକାନନ୍ଦଙ୍କ ଭାଷାରେ ଭାରତର ଅତୀତ ଏକ ମୂଲ୍ୟବାନ ସୁନାଖଣି । ଏହି ଖଣିରୁ ଧାତୁ ଖନନପୂର୍ବକ ପରିଷ୍କରଣ ଉପରାନ୍ତ ସମାଜକୁ ପ୍ରତ୍ୟାର୍ପଣ ମହତ୍ କର୍ମ । ଏ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅନ୍ଧାନୁକରଣ ମଧ୍ୟ ଅମାର୍ଜନୀୟ । ସଂସ୍କୃତିପ୍ରେମୀ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ, ଡେଣୁକରି ବିଚକ୍ଷଣତାର ସହିତ ବେଦୋପନିଷଦ, ସଂହିତା-ପୁରାଣ, କିମ୍ବଦନ୍ତୀ-ଲୋକକଥାନିକାର ବିପୁଳ ସାହିତ୍ୟ ଅଥକ ମଦ୍ଧନ କରିଛନ୍ତି । ମହୁମାଛି ପରି ଫୁଲରୁ ଫୁଲକୁ ଗମି ମଧୁ ସଂଗ୍ରହ କରିଛନ୍ତି; ଅର୍ପଣ କରିଛନ୍ତି ଯୋଗ୍ୟ ଦାୟାଦଙ୍କ ସୁବିନିଯୋଗ ସକାଶେ ।

ସର୍ବପଲ୍ଲୀ ରାଧାକୃଷ୍ଣନ୍ କହିଲେ (ବେଦରେ), “We find a freshness and simplicity and an inexplicable charm as of the breath of the spring or the flower of the morning



about these first efforts of the human mind to comprehend and express the supremacy of the world." (Indian Philosophy, Vol-I, P-66); କିନ୍ତୁ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେବାର ନାହିଁ ଯେ, ସହସ୍ର ସହସ୍ର ବର୍ଷ ପୂର୍ବରୁ ଦିବ୍ୟ ଦ୍ରଷ୍ଟା ରକ୍ଷିମାନେ ଯେଉଁ ଭାଷାରେ ଆଦର୍ଶ, ସତ୍ୟ, ରତର ଅବତାରଣା କରିଥିଲେ ତାହା ମନୁଷ୍ୟର ଚରିତ୍ର, ରୁଚି ଓ ବୋଧଗମ୍ୟତାର ପରିବର୍ତ୍ତନ ସହିତ ଭିନ୍ନ ପ୍ରତିଭାତ ହେଲା । କାରଣ ନିର୍ଦ୍ଧାରଣ କରିବାକୁ ଯାଇ ଶ୍ରୀ ଅରବିନ୍ଦ କହିଲେ — ...language changed its character rejected its earlier pliability, shed off old familiar senses, the word contracted and shrank into its outer and concrete significance. x x x The letter lived on when the spirit was forgotten; the symbol, the body of the doctrine, remained, but the soul of knowledge had fled from its coverings." (The secret of the Ved, P-53). ବେଦୋପନିଷଦରେ ବ୍ୟାଖ୍ୟାୟିତ ତାତ୍ତ୍ୱିକ ଆତ୍ମାକୁ ପରିହାର କରି ବାହ୍ୟ ଆଜ୍ଞିକତାକୁ ଆବୋରି ନେବା ଯୋଗ ଇଚ୍ଛୁକର ରସ ପରିବର୍ତ୍ତେ ଛେଦାକୁ ସର୍ବସ୍ୱ ମନେ କରିବାର ସ୍ଥିତି ଆସିଗଲା ଆଧୁନିକ ଯୁଗରେ । ତେଣୁ ସେହି ଶାସ୍ତ୍ର ସମୂହକୁ ପୁନଶ୍ଚ ଅଧ୍ୟୟନ କରି ଆଧୁନିକ ଯୁଗର ବିଜ୍ଞାନମୁଖୀ ପାଠକ ପାଖରେ ସାବଲୀଳ ଢଙ୍ଗରେ ଉପସ୍ଥାପନର ଆବଶ୍ୟକତା ଅନୁଭୂତ ହେଲା । ଏହି ଗୁରୁ ଦାୟିତ୍ୱ ହାତକୁ ନେଲେ ଐତିହ୍ୟପ୍ରେମୀ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ । ବେଦୋପନିଷଦ ଶାସ୍ତ୍ରମାନଙ୍କର, ଯୁଗୋପଯୋଗିତା ପ୍ରମାଣପୂର୍ବକ ତତ୍ତ୍ୱନିହିତ ଧର୍ମ, ଦର୍ଶନ, ସାହିତ୍ୟ, ଆୟୁର୍ବିଜ୍ଞାନ, ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଜ୍ଞାନ, ଭୂ-ବିଜ୍ଞାନର ବିଶ୍ଳେଷଣ, ସଂଶ୍ଳେଷଣରେ ମନୋନିବେଶ କଲେ ।

ଜୟଦେବଙ୍କ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ଥିଲା ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ସନ୍ଦର୍ଭ । ସଂସ୍କୃତ ରଚନା ଗୀତ ଗୋବିନ୍ଦର ଭକ୍ତିଭାବ, ଶୃଙ୍ଗାର ରସ ଓ ସାହିତ୍ୟ ତତ୍ତ୍ୱ ଯେମିତି ବୌଦ୍ଧିକ ଚେତନାର ବିଷୟ, ଜୟଦେବଙ୍କ ଉତ୍କଳୀୟତା ସେମିତି ଭୂମି-ପ୍ରାଣର ନିଦର୍ଶନ । ଯଦିଓ କୌଣସି ସାହିତ୍ୟ ରସିକଙ୍କ ପାଇଁ କବିର ଆଞ୍ଚଳିକତା ପ୍ରାଥମିକତା ରଖେ ନାହିଁ, ତଥାପି ଅବହେଳନୀୟ ବି ତ ନୁହେଁ । ଏବେ ବିବାଦ ଉଠିଛି ଗୌତମ ବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଜନ୍ମସ୍ଥଳୀକୁ ନେଇ । ଏ ସମ୍ପର୍କରେ ପରମ ପୂଜନୀୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ରୁଚି ରଖୁଥିଲେ, ସେ ସମ୍ପର୍କିତ ତାଙ୍କ ମତ ଯନ୍ତ୍ରସ୍ଥ ।

ବିନା ଗୁରୁରେ ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ଅମି ନାହିଁ । ସେହି ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ଡି.ଲିଟ୍. ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଛନ୍ତି “ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା” ସନ୍ଦର୍ଭ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି । ଆଲୋଚନା କରିଛନ୍ତି ନିର୍ଗୁଣ-ବ୍ରହ୍ମ ଉପାସକ ସନ୍ଥ ଭୀମଭୋଇଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ ଓ ଦର୍ଶନ, ଭଞ୍ଜୀୟ ସାହିତ୍ୟ, ଦାନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ, ମେହେର ସାହିତ୍ୟ, ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ଭାରକୁ ନେଇ । ସମ୍ପାଦନା କରିଛନ୍ତି ଶିଶୁ ଅନନ୍ତଙ୍କର ହେତୁ ଉଦୟ ଭାଗବତ ।

ତେବେ ତାଙ୍କ ସାରସ୍ୱତ ମୁକୁଟର ଜାକୂଲ୍ୟ ମଣିଟି ହେଉଛି, “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା” । ତିନୋଟି ଖଣ୍ଡରେ ପ୍ରକାଶିତ ଏହି ଅମୂଲ୍ୟ ଗବେଷଣା ଗ୍ରନ୍ଥ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ମାନ୍ୟତା ଦାବି କରେ ।

ପ୍ରାଚୀନ ସଭ୍ୟତା ସମ୍ପର୍କିତ ଆୟାସ ଆଲୋଚନା, ବିବଦମାନ ବିଷୟର ନିରପେକ୍ଷ ତଥା ଯୁକ୍ତିସଙ୍ଗତ ବିଶ୍ଳେଷଣ ତଥା ଅବଲୁପ୍ତମୁଖୀ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ପଦର ପାଠୋଦ୍ଧାରର ଶ୍ରେୟ ଯାଏ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥଙ୍କ ପାଖକୁ । ଏତଦ୍ଭିନ୍ନ ସାହିତ୍ୟ ଆଲୋଚନା ଭିତରେ ସଙ୍ଗୀତପ୍ରାଣତା ତାଙ୍କୁ ଘେନିଯାଏ ସାରସ୍ୱତ ଉତ୍କଳଜାତୀକୁ । ସଙ୍ଗୀତ ସମ୍ପର୍କିତ ନିମ୍ନୋକ୍ତ ମନ୍ତବ୍ୟଟି ଏହି ପରିପ୍ରେକ୍ଷାରେ ବେଶ୍ ପ୍ରଶିଧାନଯୋଗ୍ୟ । ସଙ୍ଗୀତମୟ ସ୍ୱର ସଂଯୋଜନା

ଓ ଆବୃତ୍ତି ଭିତରେ ଯୌଗିକ ଶୃଙ୍ଖଳାଦ୍ୱାରା ଶ୍ୱାସ ପ୍ରଶ୍ୱାସର ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ଓ ମାନସିକ ଏକାଗ୍ରତା ସମ୍ପାଦନ ଭାରତୀୟ ସଙ୍ଗୀତକୁ ଏକ ମହତ୍ତର କୋଟାକୁ ଉତ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ କରି ପାରିଛି । ଏହି ସଙ୍ଗୀତର ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ମୂଲ୍ୟବୋଧ ଅତୁଳନୀୟ । ସଙ୍ଗୀତର ନିରବଚ୍ଛିନ୍ନ ଝଙ୍କାରମୟ ଆବୃତ୍ତି ଭିତରେ କୌଣସି ବାହ୍ୟ ଶବ୍ଦ ବିଭବର ସହାୟତା ନ ଥାଇ କଳାର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଆଜିକର ବହିଷ୍କୃତ ଘଟିଥାଏ । ଏହି ଐକତାନିକ ଶୁଦ୍ଧ ସଙ୍ଗୀତର ଆବୃତ୍ତିରେ ଶିଳ୍ପୀ ଓ ଶ୍ରୋତା ଉଭୟେ ତନ୍ମୟ ହୋଇ ଆତ୍ମ ନିମଜ୍ଜିତ ହୋଇଉଠନ୍ତି ଏବଂ ଏହି ସଙ୍ଗୀତ ସେମାନଙ୍କୁ ଏପରି ଏକ ରାଜ୍ୟକୁ ଚାଣିନିଏ, ଯେଉଁଠାରେ କି ସାଂସରିକ ସକଳ ସୂଚିର ବିସ୍ମରଣ ଘଟେ; ଚିତ୍ତ ଓ ଚୈତନ୍ୟର ସାମୟିକ ଅବସାନ ଭିତରେ ଶୁଦ୍ଧ ସାତ୍ତ୍ୱିକ କଲ୍ୟାଣମୟ ଶାନ୍ତି ଓ ସୁସୁପ୍ତିରେ ମାନବାତ୍ତ୍ୱା ବିମୁଗ୍ଧ ହୁଏ । ଏହା ହିଁ ସଙ୍ଗୀତକଳାର ଚରମ ଆଭିମୁଖ୍ୟ । ଭାରତୀୟ କାବ୍ୟ ସାହିତ୍ୟରେ ସଙ୍ଗୀତର ଅଙ୍ଗାଙ୍ଗୀ ସମ୍ପର୍କ କବିତାକୁ ଅମୂଲ୍ୟ ଭାବାବେଗ ଓ ପ୍ରାଣ ପ୍ରଦାନ କରିଅଛି । (ଭୂମିକା, ଗଙ୍ଗାଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ, ନୂତନ ମୁଦ୍ରଣ, ଧର୍ମଗ୍ରନ୍ଥ ଷୋର, ୧୯୮୪, ପୃ-୨୪୯) । ସାହିତ୍ୟରେ ସଙ୍ଗୀତର ଏତାଦୃଶ ଅବିଚ୍ଛେଦ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧ ସ୍ଥାପନ ସହିତ ଆଧୁନିକ କବିତା ହୃଦୟଗ୍ରାହୀ ହୋଇ ପାରୁନଥିବା କାରଣମାନଙ୍କୁ ସେ ଆମ ସହିତ ପରିଚୟ କରାଇ ଦିଅନ୍ତି ।

ସମୁଦ୍ରରେ ଭାସମାନ ବରଫସ୍ତୁପର ଦୃଶ୍ୟମାନ କିୟଦଂଶ ପରି ଏହା ଜ୍ଞାନଗର୍ଭା ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ଜ୍ଞାନଯୋଗର ସମ୍ୟକ୍ ଚିତ୍ର ମାତ୍ର ।

୩. ପ୍ରୟୋଗ ବିନା ଜ୍ଞାନ କି କାମକୁ ? ଜ୍ଞାନର ସାର୍ଥକତା ମାନବ ହିତରେ ବ୍ୟବହାରରେ । ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ କେବଳ ଜ୍ଞାନଯୋଗୀ ନ ଥିଲେ, ଥିଲେ କର୍ମଯୋଗୀ । ଆଦର୍ଶକୁ, ନିଷ୍ପର୍ଶକୁ, ଉଚ୍ଚାରଣକୁ ଆତରଣରେ ପରିଣତ କରିବାର ସ୍ୱହା ରଖୁଥିଲେ, ଶକ୍ତି ରଖୁଥିଲେ । ସ୍ୱାଧୀନୋତ୍ତର ଭାରତର ଅନେକ ଚିନ୍ତାନାୟକଙ୍କ ପରି ସେ ହୃଦୟଙ୍ଗମ କରି ପାରିଥିଲେ ଯେ ଦେଶର ଖ୍ୟାତି ଓ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ସୁଶିକ୍ଷାରେ ହିଁ ନିହିତ ।

ସ୍ୱାଧୀନତା ପ୍ରାପ୍ତି ବେଳକୁ ଆମେ କେତେ ଦିଗରେ ଦୁର୍ବଳ ଓ ଅଭାବୀ ଥିଲେହେଁ ଶିକ୍ଷା-ଦର୍ଶନର (ଫିଲୋସୋଫି ଅଫ୍ ଏଜୁକେସନ) ପ୍ରାରୁର୍ଯ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ଥିଲେ । ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ, ରବୀନ୍ଦ୍ରନାଥ ଠାକୁର, ମହାତ୍ମାଗାନ୍ଧୀ, ଶ୍ରୀ ଅରବିନ୍ଦ, ଗୋପବନ୍ଧୁ ଆଦି ଶିକ୍ଷା ସମ୍ପର୍କିତ ନୂତନ ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ କେବଳ ରଖି ନଥିଲେ, ପ୍ରୟୋଗ ମଧ୍ୟ କରିସାରିଥିଲେ; କିନ୍ତୁ ତତ୍କାଳୀନ ସରକାର ଏମାନଙ୍କୁ ଗୁରୁତ୍ୱ ନ ଦେଇ ପ୍ରଚଳିତ ମେକଲେ ପଦ୍ଧତି (ଯାହାକୁ କି ଗାନ୍ଧୀ କହିଥିଲେ ଫାକ୍ଟି)କୁ ବୈଜ୍ଞାନିକ ସମାଜବାଦର ସୁପରିବାହୀ ଭାବି ଅବ୍ୟାହତ ରଖିଲେ । ଏହି ଦୃଷ୍ଟିଭିତ୍ତିର ପ୍ରତିକାର ସ୍ୱରୂପ ଜନ୍ମ ନେଲା “ସ୍ୱାଧୀନ ଭାରତ ପାଇଁ ହିତକର” ଶିକ୍ଷା ପଦ୍ଧତି । ଗୋରଖପୁରର ପକ୍ଷିବାର୍ ହେଲା ପ୍ରଥମ ପ୍ରୟୋଗଶାଳା । କାଳକ୍ରମେ ସମାଦୃତ ହୋଇ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନା ସଂପ୍ରସାରିତ ହେଲା ସ୍ଥାନ ସ୍ଥାନକୁ । ଓଡ଼ିଶାରେ ଛିଡ଼ା ହେଲା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି । ନେତୃତ୍ୱ ନେଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ୧୯୭୭ରୁ ୯୪ ବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସତରବର୍ଷ । ଏହାର ସଭାପତି ରହି ଯୋଜନାର ସଫଳ ରୂପାୟନରେ ବ୍ରତୀ ହେଲେ । ଆଜି ମାତ୍ର ଦଶନ୍ଧିରେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ସଂଖ୍ୟା ଚାରି ଅଙ୍କକୁ ଛୁଇଁ ପାରୁଛି । ରିଲେ ରେସର୍ ଦୌଡ଼ାଳି ବେଟନ୍ ଧରାଇଦେଲେ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରି ରଖୁଥିବା ଅନ୍ୟ ଯୋଗ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କୁ; କିନ୍ତୁ ବିଶ୍ରାମୀ ଗଲେ ନାହିଁ, ଓଡ଼ିଶା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିରୁ କ୍ଷେପିଗଲେ ବୃହତ୍ତର ଦିଗ୍‌ବଳୟକୁ । ସଭାପତିତ୍ୱ

ଗ୍ରହଣ କଲେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ, ଦକ୍ଷିଣ-ପୂର୍ବ କ୍ଷେତ୍ରର (୧୯୯୪-୨୦୦୪) ଓ ପରେ ପରେ ଉପସଭାପତି, ବିଦ୍ୟା ଭାରତୀ, ଉଦ୍‌ଯୋଗୀ ପୁରୁଷ ସିଂହ ।

୧୯୬୨ରୁ ୯୬ ଚଉତିଶ ବର୍ଷର ନିରବଚ୍ଛିନ୍ନ ଅକ୍ଳାନ୍ତ ଅଧ୍ୟାପନା ସହିତ ଉଚ୍ଚତର ଗବେଷଣାରେ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ (୧୬ଜଣ ପି.ଏଚ୍.ଡି. ପ୍ରାପ୍ତ) ଓ ସଂସ୍କୃତି ସୁରକ୍ଷାପାଇଁ ସମର୍ପିତ ଜୀବନ ନିଶ୍ଚୟ ଏକ ମହାନ କର୍ମଯୋଗୀର ପରିଚୟ । ହିନ୍ଦୁତ୍ବ ଆଧାରିତ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ପରିପୁଷ୍ଟତା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ କର୍ମଯୌଗିକ ନିଷ୍ଠା ନେଇ ସେ ଥିଲେ ସାଧନାରତ ।

ଏକଦା ବିବେକାନନ୍ଦ କହିଥିଲେ ଯେ, ଯେତେ ଦିନଯାଏ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଦେଶମାନେ ବସ୍ତୁବାଦର ନିଗଡ଼ରୁ ମୁକୁଳି ନାହାନ୍ତି ତାଙ୍କର ନିସ୍ତାର ନାହିଁ ଏବଂ ଯେ ଯାଏ ପ୍ରାଚ୍ୟ ଦେଶୀୟମାନେ ଆପଣା ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତା, ଅସ୍ଥିତାକୁ ଅଣଦେଖା କରି ପାଶ୍ଚାତ୍ୟମୁଖୀ ହେବାର ମୁର୍ଖତାରୁ ନିବୃତ୍ତି ନାହାନ୍ତି ତାଙ୍କର ଉନ୍ନତି ନାହିଁ । ଏହି ବକ୍ତବ୍ୟକୁ ଆଦର୍ଶ କରି ଆମ ଲୋକଙ୍କୁ ଉଚିତ ମାର୍ଗକୁ ଫେରାଇ ଆଣିବାପାଇଁ ବିଭିନ୍ନ ଯୋଜନା, ସଙ୍ଗଠନ ସହିତ ନିଜକୁ ଜଡ଼ିତ କଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ । ବିଶେଷରେ ଛାତ୍ର ସମାଜକୁ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେବାପାଇଁ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା ଶାଖାର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି ପଦ ମଣ୍ଡନ କଲେ ୧୯୬୪ରୁ ୭୧ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ।

ନିର୍ବିବାଦୀୟ ଯେ ଭାରତ ଇତିହାସ ଶାସକ ଇଂରେଜ ସରକାରଙ୍କୁ ସୁହାଇଲା ତଙ୍ଗରେ ହିଁ ଲିଖିତ, ତେଣୁ ବିକୃତ, ଅପଳାପ । ଆବଶ୍ୟକୀୟ ସଂଶୋଧନ ଆଣି ନିର୍ଭୁଲ ଇତିହାସ ପ୍ରଣୟନ ପାଇଁ ଗଠିତ ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ସମିତିର ସେ ହେଲେ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି (୧୯୮୩) । ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷଣ ମଣ୍ଡଳ, ଭାରତ ବିକାଶ ପରିଷଦ ପରି ସଂସ୍କାର ଓ ସେବାମୂଳକ ଅନୁଷ୍ଠାନର କର୍ତ୍ତାଧାର ହୋଇ ରହିଲେ କର୍ମଯୋଗୀ ।

ଯଥାର୍ଥ କର୍ମଯୋଗୀ ସିଏ, ଯିଏ ଉଚ୍ଚାରଣକୁ ଆଚରଣରେ ପରିଣତ କରିପାରେ । ଜ୍ଞାନଯୋଗୀ ଭାବରେ ଯେଉଁ ନିଷ୍କର୍ଷରେ ଉପନୀତ ହୋଇଛନ୍ତି ତାକୁ ବାସ୍ତବ ରୂପ ଦେବାକୁ ସତତ ଚେଷ୍ଟିତ ହୋଇ ସେ ହୋଇଛନ୍ତି କର୍ମଯୋଗୀ ।

କର୍ମଯୋଗୀ କୌଣସି ଗୋଟିଏ ସ୍ଥାନରେ ଠାକିଯାଏ ନାହିଁ । ସେ ଜାଣିଥାଏ, ମନୁଷ୍ୟର ସ୍ଥିତି ଅସ୍ଥାୟୀ, ତେଣୁ ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳପାଇଁ ସୁଯୋଗ୍ୟ ଦାୟାଦ ସୃଷ୍ଟି କରି ଯଥା ସମୟରେ ଦାୟିତ୍ବ ହସ୍ତାନ୍ତର କରି ପୁଣି ଏକ ଅପେକ୍ଷିତ କର୍ମରେ ଲାଖିଯାଏ । ଠିକ୍ ସେଇଯା କରୁଛନ୍ତି ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ । ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘର ସ୍ୱୟଂସେବକ ଭାବେ ସଂଘ ଦାୟିତ୍ବ ସହିତ ଆନୁଷ୍ଠାନିକ କ୍ଷେତ୍ର ସଜାଡ଼ିବାପାଇଁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ସମୟରେ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ପଦବୀର ଗୁରୁ ଦାୟିତ୍ବ ବହନ କରିଛନ୍ତି, କହିଛନ୍ତି “ଚରୈବତି. . . ଚରୈବତି ।”

ମନେପଡ଼େ ଜର୍ଜ ବାର୍ଣ୍ଡର୍ ସଙ୍କ ବକ୍ତବ୍ୟଟିଏ — “We are made to wise not for the recollection of the past but for the reconstruction of the future.” ଏହି ନ୍ୟାୟରେ ଆମେ ବି ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍‌ଙ୍କୁ ସ୍ମରଣ କରୁଛି ଯେ, ତାଙ୍କ ଅନୁସୂତ ପଥ ଆଗାମୀ ସୁସ୍ଥ, ସମୁନ୍ନତ ଭାରତ ଗଠନରେ ଆମର ଚଳା ପଥରେ ପରିଣତ ହେଉ ।

# ଏକ ସଫଳ ସଙ୍ଗଠକ ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ

ଧର୍ମବ୍ରତ ରଥ

ସମ୍ପାଦକ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୪୩୯୦୮୭୭୦୫

ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆଉ ଆମ ଗହଣରେ ନାହାନ୍ତି । କବିଙ୍କ ଭାଷାରେ “କିନ୍ତୁ ଯଶୋଦେହେ ସିଏ ଆୟୁଷ୍ମାନ”, ରେଭେନ୍ସା କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଥିବା ସମୟରେ ସେ ସମଗ୍ର ପଶ୍ଚିମାଞ୍ଚଳର ସବୁ କଲେଜ, ସ୍କୁଲ ସ୍ତରରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦକୁ ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ସଙ୍ଗଠନ ଭାବରେ ଗଢ଼ି ତୋଳିଥିଲେ । ୧୯୬୯ରେ ମୁଁ ରାଜେନ୍ଦ୍ର କଲେଜରେ ସ୍ନାତକ ଛାତ୍ର ଥିବାବେଳେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିଥିଲି । ସେତେବେଳେ ଅଧ୍ୟାପକ ପ୍ରଧାନ ପରିଷଦର ସଭାପତି । କୃଷ୍ଣ କୁମାର ମହାନ୍ତି ବୁର୍ଲା ମେଡ଼ିକାଲ କଲେଜର ସଭାପତି ଥିବା ସମୟରେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ଆଜ୍ଞାଙ୍କ ପ୍ରସ୍ତାବରେ ଉପକୂଳ ଓଡ଼ିଶାର ଅନେକ କଲେଜରେ ଏ.ବି.ଭି.ପି.ର ଶାଖା ଖୋଲିଥିଲେ । ଅଧ୍ୟାପକ ତାରା ଭୂଷଣ ନନ୍ଦ, ଅଧ୍ୟାପକ ଅଦ୍ୱୈତ ମହାନ୍ତି ଇତ୍ୟାଦି ଅନେକ କର୍ମକର୍ତ୍ତା ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦକୁ ଏ ଅଞ୍ଚଳରେ ସୁଦୃଢ଼ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କ ସମୟରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ବମ୍ବେ କନ୍ଫରେନ୍ସନ୍ ବେଶ୍ ସଫଳ ହୋଇଥିଲା । ବଡ଼ଚଣା ଏମ୍.ଏଲ୍.ଏ. ଅଫର ଶତପଥୀ ସେ ସମୟରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଜଣେ ତୁଙ୍ଗ ନେତା ଥିଲେ । ଡଃ. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସମୟରେ ସମ୍ବଲପୁର ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର କନ୍ଫରେନ୍ସକୁ ଡ. ସୁବ୍ରତନାଥ ସ୍ୱାମୀ ଆସିଥିଲେ ଏବଂ ପ୍ରସ୍ତାବ ଦେଇଥିଲେ ଯେ ଭାରତ ନିଜର ବଜେଟ୍‌ରେ ଆଣବିକ ଅସ୍ତ୍ର ତିଆରି କରିବା କ୍ଷମତା ଅଛି ଏବଂ ଭାରତ ତା’ର ବିନିଯୋଗ କରୁ । ତତ୍କାଳୀନ ଚିଫ୍ ଜଷ୍ଟିସ୍ ଅଫ୍ ଇଣ୍ଡିଆ କୋକା ସୁବା ରାଓ ଗୋଟିଏ ଏ.ବି.ଭି.ପି. କନ୍ଫରେନ୍ସରେ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ । ଉକ୍ତ କନ୍ଫରେନ୍ସରେ ଓଡ଼ିଶାରୁ ବହୁତ ସଭ୍ୟ ଯୋଗଦାନ କରିଥିଲେ । ଓଡ଼ିଶା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି ତାଙ୍କ ସମୟରେ ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶାରେ ଅନେକ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଗଢ଼ି ଉଠିଥିଲା । ଏକଦା ଦଲାଙ୍ଗିର ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ଏକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ସେ ଯୋଗଦାନ କରିଥିବାବେଳେ ଡା. ପ୍ରିୟବ୍ରତ ରଥ ତାଙ୍କୁ ମୋବାଇଲରେ ଫୋନ୍ କଲେ । ସେ କୌଣସି ଅଞ୍ଚଳରୁ ଚୁରୁ ଫେରୁଥିଲେ । ଡଃ. ପ୍ରଧାନ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରକୁ ଆସିଛନ୍ତି ଜାଣି ସେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଭିତରକୁ ଯାଇ ତାଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କଲେ । ସେ ସମୟରେ ଏ.ବି.ଭି.ପି.ର ଦୁଇ ପୂର୍ବତନ ତୁଙ୍ଗ ନେତୃତ୍ୱକ ମଧ୍ୟରେ ଅନେକ ପୁରାତନ ସ୍ମୃତି ଚାରଣ ହୋଇଥିଲା ।

ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭାପତି ଭାବରେ ତାଙ୍କର ଉତ୍ସାହପ୍ରଦ ବାଣୀ ଭୁଲି ହେବ ନାହିଁ । ତାଙ୍କୁ ସେତେବେଳେ ମୁଁ ଫୁଲବାଣୀ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ସାକ୍ଷାତ କରିଥିଲି । ତାଙ୍କ ଉତ୍ସାହ ତଥା ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ସଂଯୋଜନାରେ ବଲାଙ୍ଗିରେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟ ବେଶ୍ ଆଗେଇ ଚାଲିଥିଲା । ଗତବର୍ଷ ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବ ସମୟରେ ସେ ଆସିବାପାଇଁ ପ୍ରତିଶ୍ରୁତି ଦେଇଥିଲେ; କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟବଶତଃ ଆସିପାରି ନଥିଲେ । ପୁନଶ୍ଚ ସାହିତ୍ୟ ପରିକ୍ରମାରେ ସେ ନିଶ୍ଚିତ ଆସିବେ ବୋଲି ଆମର ଆଶା ଥିଲା; କିନ୍ତୁ ଦୁର୍ବଳ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ତାଙ୍କୁ ସେଥିରୁ ନିବୃତ୍ତ ରଖିଥିଲା । ତାଙ୍କପାଇଁ ଆମର ଅପେକ୍ଷା ଅପେକ୍ଷାରେ ରହିଗଲା । ତଥାପି ଆଜ୍ଞାଙ୍କର ଉତ୍ସାହଭରା ବାଣୀ ଆମକୁ ଆଗକୁ ଆଗକୁ ଯିବାପାଇଁ ଉତ୍ସାହିତ କରୁଥିବ ।



## ନଗେନ୍ଦ୍ରବାରୁ ଚାଲିଗଲେ. . .

ଡାଃ ପ୍ରିୟବ୍ରତ ରଥ, ବଲାଙ୍ଗିର  
ପ୍ରଥମ ରାଜ୍ୟ ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକ  
ବି.ଜେ.ପି.

ଅଧ୍ୟାପକ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଇହଧାମ ତ୍ୟାଗ କଲେ ଏଇ ସମ୍ବାଦଟି ପାଇଲା ପରେ ମନରେ ବହୁତ ଦୁଃଖ ଲାଗିଲା । ସେ ଏକା ଧାରାରେ ଜଣେ ଆମାୟିକ, ଛାତ୍ରବସ୍ତ୍ରଳ, ଶିକ୍ଷକ, ସଂଗଠକ ଥିଲେ । ୧୯୬୮ ମସିହାରେ ସେତେବେଳେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶର ସଭାପତି ଥିଲେ । ସେଇ ସମୟରେ ତାଙ୍କ ସହିତ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାର ଅବସର ମିଳିଥିଲା । ମୋତେ ସେ ଉପ ସଭାପତି ଏବଂ ଡା. କୃଷ୍ଣ କୁମାର ମହାନ୍ତିଙ୍କୁ ସମ୍ପାଦକ ଦାୟିତ୍ୱ ଦେଇଥିଲେ । ଆମେ ତିନିଜଣ ଅକ୍ଳାନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ କରି ଉପକୂଳ ଅଞ୍ଚଳ ରେଭେନ୍ସା, କ୍ରାଏଷ୍ଟ ଇତ୍ୟାଦି କଲେଜମାନଙ୍କୁ ଏବଂ ସମଗ୍ର ପଶ୍ଚିମ ଓଡ଼ିଶା ଭ୍ରମଣ କରି ଏ.ବି.ଭି.ପି. ସପକ୍ଷରେ ଏକ ହାତ୍ତା ସୃଷ୍ଟି କରିଥିଲୁ । ଏଇ ସମୟରେ ସମ୍ବଲପୁରରେ ସୁରେନଲାଠି, ବରଗଡ଼ରେ ବିମ୍ବାଧର କୁଅଁର, ପ୍ରସନ୍ନ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଇତ୍ୟାଦି ଛାତ୍ର ନେତୃମାନେ ଏ.ବି.ଭି.ପି.ରେ ଯୋଗଦାନ କରିଥିଲେ । ପରେ ଏମାନେ ଏମ୍.ପି., ଏମ୍.ଏଲ୍.ଏ., ମନ୍ତ୍ରୀ ହୋଇଥିଲେ । ପରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାରୁ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନେତୃତ୍ୱ ନେଇ କାର୍ଯ୍ୟ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କର ବିରୋଗ ଓଡ଼ିଶାପାଇଁ ଏକ ଅପୂରଣୀୟ କ୍ଷତି ।



**Purna Mallick**

22 hrs ·

...

ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଚାଲିଗଲେ, ଯୋଉ ରାଜ୍ୟକୁ ଗଲେ ଆଉ କେହି  
ଫେରିନି । ଜ୍ଞାନର ସେ ଥିଲେ ଅସରନ୍ତି ଭଣ୍ଡାର । ଓଡ଼ିଆ  
ସମାଲୋଚନା ସାହିତ୍ୟ, ବିଶେଷଭାବେ ବୌଦ୍ଧ ସାହିତ୍ୟ ଓ ଇତିହାସ  
ଉପରେ ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ଅନନ୍ୟ ଅସାଧାରଣ ପ୍ରତିଭା ।  
ସୌଭାଗ୍ୟକ୍ରମେ ଏହି ମହାନ ଓ ଯସ୍ତଶୀ ପଣ୍ଡିତଙ୍କ ସହିତ ଜଣେ  
ଅନ୍ୟତମ ଅତିଥି ବା ମୁଖ୍ୟବକ୍ତାରୂପେ ବହୁ ସଭା ସମିତିରେ  
ଯୋଗଦେଇଛି । ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ମତେ ସବୁବେଳେ ପ୍ରଭୁତ୍ୱ କରିଛି । ସେ  
ଆଜି ସ୍ୱର୍ଗରେ ! ସେଇ ସ୍ୱର୍ଗରୁ ଆମକୁ ଆଶୀର୍ବାଦ କରନ୍ତୁ ସାର୍,  
ଆପଣ ଆମକୁ ଯେଉଁ ବାଟ ଦେଖାଇ ଯାଇଛନ୍ତି ଆମେ ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ  
ଯେପରି ସେଇ ବାଟରେ ଚାଲୁ ସ୍ୱର୍ଗରେ ଆପଣଙ୍କ ସହ ପୁଣି  
ଦେଖାହେବାଯାଏ !



## ନଗେନ୍ଦ୍ରବାହୁଙ୍କ ବିୟୋଗରେ

ଡଃ. ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି (ହାରିବସ)

ବୟାଳୀ, ବ୍ରହ୍ମପୁର, ଗଞ୍ଜାମ

ମୋ: ୯୩୩୭୯୬୦୬୮୮

ବିଶ୍ୱବିଖ୍ୟାତ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଇଲେକ୍ଟ୍ରିକାଲ୍‌ସର ଆବିଷ୍କାରକ ଅମାୟ ଏଡିସନ୍‌ଙ୍କ ମତ ହେଲା — ଶରୀରରୁ ପୃଥକ ହେଲା ପରେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାଣ ସତ୍ତା ଏକ ଉଚ୍ଚସ୍ତରୀୟ ବିଦ୍ୟୁତ୍ କଣିକା ପୁଞ୍ଜ ଭାବରେ ରହିବ । ଏହି ଅନୁଭବକୁ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର ସାଧକ ପଣ୍ଡିତ ଶ୍ରୀରାମଶର୍ମା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ୱୀକାର କରି କହନ୍ତି, “ମୃତ୍ୟୁ ପରେ ମଧ୍ୟ ଚେତନସତ୍ତା (ଆତ୍ମା)ର ଅସ୍ତିତ୍ୱ ରହିଛି । ଶ୍ରୀମଦ୍ ଭଗବଦ୍ ଗୀତାରେ ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ବହୁ ପୂରାତନ କାଳରୁ ଅର୍ଜୁନଙ୍କୁ ଉପଦେଶ ଛଳରେ ଏହି କଥାକୁ “ଆତ୍ମ ସତ୍ୟ ଜଗତ ମିଥ୍ୟା”କୁ ଉଚ୍ଚାରିତ କରି କହିଥିଲେ —

ନୈନଂ ଛିନ୍ନନ୍ତି ଶସ୍ତ୍ରାଣି ନୈନଂ ଦହତି ପାବକଃ

ନ ଚୈନଂ କ୍ଲେଦୟନ୍ତ୍ୟାଂସୋ ନ ଶୋଷୟତି ମାରୁତଃ ।

୨୩ (ସାଂଖ୍ୟଯୋଗ) ଶ୍ରୀମଦ୍ ଭଗବତ୍ ଗୀତା ।

ଶରୀର ମରଣଶୀଳ ହେଲେହେଁ ଆତ୍ମା ଅବିନଶ୍ୱର । ଆତ୍ମା ଏଭଳି ଏକ ଐଶ୍ୱରୀୟ ସତ୍ତା ଯାହାକୁ ଶସ୍ତ୍ର କାଟିପାରେ ନାହିଁ, ଜଳ ବୁଡ଼ାଇ ପାରେ ନାହିଁ, ପବନ ଯେତେ ବଳବାନ୍ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ତାକୁ ଉଡ଼ାଇ ପାରେନାହିଁ କିମ୍ବା ଅଗ୍ନି ଯେତେ ଜ୍ୱଳନଶୀଳ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଦହନ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହୋଇନଥାଏ । ଏ ହେଉଛି ଆତ୍ମାର ସ୍ୱରୂପ ଓ ପରମାତ୍ମାଙ୍କ ଅଂଶବିଶେଷ । ଯୁଗସ୍ରଷ୍ଟା ରାଧାନାଥ ରାୟ ତାଙ୍କ ପାର୍ବତୀ କାବ୍ୟରେ ଏହି ଆତ୍ମା ଶରୀର ଭାବକୁ ପରିପ୍ରକାଶ କରି କହିଛନ୍ତି —

କେହି ରହିନାହିଁ ରହିବେ ନାହିଁଟି ଭବରଙ୍ଗ ଭୂମି ତଳେ,

ସର୍ବେ ନିଜ ନିଜ ଅଭିନୟ ସାରି ବାହୁଡିବେ କାଳବଳେ ।

ଏଥିରୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ପ୍ରତିପାଦିତ ହେଉଛି ଯେ, ସମୟ ତଥା କାଳ, କାଳଚକ୍ର ହିଁ ସବୁକିଛି । ଏ ବାସ୍ତବ ଦୁନିଆଁର ସର୍ବୋଚ୍ଚ କର୍ତ୍ତା ଓ ନିୟାମକ । ଏହାକୁ ଦୃଷ୍ଟିରେ ରଖି ଭକ୍ତ କବି ଜଗନ୍ନାଥ ଦାସ ଭାଗବତ କଥାରେ କହିଛନ୍ତି —

କାଳର ବଶ ଏ ଜଗତ, ପ୍ରାଣୀଏ କାଳର ଆୟତ

ସେ କାଳ ବଶେ ସର୍ବେ ଚଳି, ପବନ ଯେହ୍ନେ ଘନାବଳୀ (ଭାଗବତ୍ ମୁକ୍ତିରତ୍ନମାଳା)

ଏ ଜୀବନ, ଏ ଧରିତ୍ରୀ ସବୁ କ୍ଷୟଶୀଳ ହୋଇଥିବାବେଳେ ଆତ୍ମା ଅକ୍ଷୟ, ଅବଧ । ତେଣୁ ଜୀବନକୁ ସ୍ୱାର୍ଥ ସୁଖ ଭୋଗରେ ନ ଲଗାଇ ଜଗତ୍ ହିତକର୍ମରେ ବ୍ୟୟ କରିବା ବୁଦ୍ଧିମାନ ବ୍ୟକ୍ତିବିଶେଷଙ୍କର କାମ୍ୟ ହୋଇଥାଏ । ଏହି ଉକ୍ତିକୁ ହୃଦୟଙ୍ଗମ କରି ଉତ୍କଳମଣି ଗୋପବନ୍ଧୁ ଦାସ କହନ୍ତି —

ମାନବ ଜୀବନ ନୁହଁଇ କେବଳ ବର୍ଷ ମାସ ଦିନ ଦଣ୍ଡ  
କର୍ମେ ଜିଏଁ ନର କର୍ମ ଏକା ତାର ଜୀବନର ମାନଦଣ୍ଡ ।

ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଶତକୋଟି ଲୋକଙ୍କ ନାମ ଭଳି ଗୋଟିଏ ନାମ । ପ୍ରତିଦିନ ଶତସହସ୍ର ଜୀବନର ଜନ୍ମ ହୁଏ ଏ ସଂସାରରେ ପୁଣି ମୃତ୍ୟୁ ବି ହୁଏ । ଭଗବତ୍ ଗୀତା-୨-୨୭ରେ ପୁଣି ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ମର୍ତ୍ତ୍ୟଜନଙ୍କୁ ଚେତେଇ ଦେବାପାଇଁ କହିଛନ୍ତି - ଜାତସ୍ୟ ହି ଧୂବୋ ମୃତ୍ୟୁଧୂବୋ ଜନ୍ମମୃତସ୍ୟଚ” ଅର୍ଥାତ୍ ଜନ୍ମ ହୋଇଥିବା ଜୀବର ମୃତ୍ୟୁ ନିଶ୍ଚିତ ଏବଂ ମରିଥିବା ପ୍ରାଣୀର ଜନ୍ମ ମଧ୍ୟ ନିଶ୍ଚିତ । ଅନ୍ୟ ଏକ ଶ୍ଳୋକରେ ଉଲ୍ଲେଖ ରହିଛି - ବାସାଂସି ଜୀର୍ଣ୍ଣାନି ଯଥା ବିହାୟ ନବାନି ଗୃହ୍ମାତି ନରୋଽପରାଣି, ତଥା ଶରୀରାଣି ବିହାୟ ଜୀର୍ଣ୍ଣା ନ୍ୟନ୍ୟାନି ସଂଯାତି ନବାନି ଦେହା (ଭଗବତ୍ ଗୀତା-୨-୨୨) । ଆମେ ବ୍ୟବହାର କରୁଥିବା ଲୁଗାଟି ପୁରୁଣା ହୋଇଗଲେ ବା ଚିରିଗଲେ ଯେଭଳି ପିନ୍ଧିବା ଯୋଗ୍ୟ ହୋଇନଥାଏ ଓ ଆମେ ତାକୁ ପରିତ୍ୟାଗ କରି ନୂତନ ବସ୍ତ୍ରଟିଏକୁ ପରିଧାନ କରିଥାଉ ଠିକ୍ ସେଭଳି ଶରୀର ଜରାଗ୍ରସ୍ତ ଜୀର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଗଲେ ଅବିନଶ୍ୱର ଆତ୍ମା ତାକୁ ପରିତ୍ୟାଗ କରି ଅନ୍ୟ ଏକ ନୂତନ ଶରୀରରେ ଅବସ୍ଥାନ କରେ । ଏହା ହିଁ ଆମ ଦେହ ବିଦେହ, ଜନ୍ମ ମୃତ୍ୟୁ ଇହଲୋକ ପରଲୋକର ତାତ୍ତ୍ୱିକ ବିଚାର । ଏଣୁ କୌଣସି ହିଁ ବ୍ୟକ୍ତିର ମୃତ୍ୟୁରେ ଦୁଃଖ କରିବା ଅନୁଚିତ, ବରଂ ଜୀବିତାବସ୍ଥାରେ ପରମାର୍ଥ ବିଚାର ନେଇ ପରହତରେ ସାମାଜିକ ଦାୟିତ୍ୱ ନିର୍ବାହ କରିବା ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ କଲ୍ୟାଣପ୍ରଦ । “ତୁମ୍ଭ ମାଟି ଦେହ ଗ୍ରାସିଛି ଶୁଶ୍କାନ ମାତ୍ର ଯଶୋଦେହେ ତୁମ୍ଭେ ଆୟୁଷ୍ମାନ” (ଚିଲିକା ରାଧାନାଥରାୟ) ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଥିଲେ ଜ୍ଞାନୀ, ସମାଜସେବୀ, ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ସଦାକର୍ମତତ୍ପର, ନିରଳଶ, ଶୁଦ୍ଧ ସାହିତ୍ୟିକ ଓ ଜଣେ ଅପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱୀ ନିଜ୍ଜଳ, ନିରାଡ଼ମ୍ବର ଜୀବନାବୃତ୍ତର ଜଣେ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଐତିହାସିକ ମଧ୍ୟ । ତାଙ୍କରି ବିଯୋଗ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଦୁଃଖ ଦେଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସେ ପୁନଃ ଜନ୍ମ ନେଇ ଏକ କଲୁଷିତ ସମାଜକୁ ଅଧିକା ମାର୍ଜିତ କରାନ୍ତୁ ଏହା ହିଁ ପରମେଶ୍ୱରଙ୍କଠାରେ ଆମ ପ୍ରାର୍ଥନା ।



**Pradyumna Das**  
Nagendra babu was a rare scholar and also a rare personality with straitforwardness. As his junior colleague I had the privilege of getting his affection and support as and when required during my service period. Always I hold him with high esteem. May his soul RIP.  
PK DAS, Retd. Prof. In Geography, RIE, Bhubaneswar

# ସ୍ମୃତି ତ କଦାପି ନୁହେଁ ଫିଙ୍ଗିବାର

ଶ୍ରୀ ଶଙ୍କର୍ଷଣ ମଙ୍ଗରାଜ

ନୀଳଚକ୍ର ଉଦ୍ଭାତ

ମଙ୍ଗଳାଘାଟ ରୋଡ଼, ବାସେଳାସାହି, ପୁରୀ

ମୋ: ୯୩୩୭୮୯୦୦୯୩

ଏଇ କିଛିଦିନ ତଳେ ପୁରୀଠାରେ ଏକ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ ସମ୍ମିଳନୀ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେଉଥିଲା । ମୋର ପ୍ରିୟ ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ପୂଜ୍ୟପୁଜା ସଂସଦର ରାଜ୍ୟ ସଭାପତି ଟେଲିଫୋନ୍ ଯୋଗେ ମୋତେ ଖବର ଦେଲେ ସେ ସମ୍ମେଳନରେ ଯୋଗ ଦେବାପାଇଁ । ମୋର କାହିଁକି ମନେହେଲା ସେ ସମ୍ମିଳନୀରେ ବହୁ ବୁଦ୍ଧିଜୀବୀ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଯୋଗ ଦେଉଥିବେ । ମୁଁ ନିଶ୍ଚୟ ଯିବି । ସେତିକିବେଳେ ମନ ଭିତରେ ଗୁଞ୍ଜରି ଉଠିଲା ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କ ନାଁ । କଟକ ଆକାଶବାଣୀରେ କାମ କଲାବେଳେ ମୁଁ ସେଠାକାର ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ସହିତ ସମ୍ପୃକ୍ତ ଥିଲି । ଦୀର୍ଘଦିନ ଧରି ତୁଳସୀପୁର ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ପରିଚାଳନା କମିଟିର ସଭାପତି ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାଇଥିଲି । ସେତିକିବେଳେ କଟକ ରାଣୀହାଟ ହିନ୍ଦି ସିନେମା ହଲଠାରେ ଏକ ବିଦ୍ରୁତ ସମ୍ମିଳନୀ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା । ନିମନ୍ତ୍ରିତ ଅତିଥିଭାବେ ମୁଁ ସେ ସମ୍ମିଳନୀରେ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲି । ଯୋଗକୁ ସେହି ସମ୍ମିଳନୀର ଆବାହକ ଥିଲେ ଆତ୍ମମାନଙ୍କର ପୂଜ୍ୟ ଶିକ୍ଷାଗୁରୁ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ଏଇ ଦି'ଚାରି ବର୍ଷ ତଳେ ପୁରୀ ବଗଲା ଧର୍ମଶାଳାରେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଏକ ଅଧିବେଶନ ଡକାଯାଇଥିଲା । ସେଥିରେ ଯୋଗ ଦେବାର ସୁଯୋଗ ମୋତେ ମିଳିଥିଲା । ସେହି ସମ୍ମେଳନର ମୁଖ୍ୟ ଥିଲେ ପୂଜ୍ୟ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର । ଆଜି ହଠାତ୍ ଖବର ମିଳିଲା ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର ଚାଲିଗଲେ । ମୁଁ ଅବାକ୍ ହୋଇଗଲି । ସାର ଜଣେ ଲଜୁଆ ବୀର ଥିଲେ । କୌଣସି ପରିସ୍ଥିତିରେ ହାର ମାନିବା ତାଙ୍କ ଜାତକରେ ନଥିଲା । ଦେଶ ସେବା କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସେ ଜୀବନର ବ୍ରତ ରୂପେ ଗ୍ରହଣ କରି ନେଇଥିଲେ । ସେହି କାର୍ଯ୍ୟରେ ଦିନରାତି ବ୍ୟସ୍ତ ରହୁଥିଲେ । ଭାରତବର୍ଷର ପ୍ରାଚୀନ ସାହିତ୍ୟ, ପ୍ରାଚୀନ ଐତିହ୍ୟ, କଳା ସଂସ୍କୃତିର ସୁରକ୍ଷାପାଇଁ ସେ ଜୀବନକୁ ବାଜି ଲଗାଇ ଦେଇଥିଲେ । ସେହି କାର୍ଯ୍ୟରେ ବ୍ୟସ୍ତ ଥାଇ ସେ ଭୀଷଣ ଦୁର୍ଘଟଣାର ସନ୍ଧୁଖାନ ହେଲେ । ତଥାପି ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତାକୁ ଭୂକ୍ଷେପ ନ କରି ସେ ଦେଶସେବା କାର୍ଯ୍ୟରେ ମନୋନିବେଶ କଲେ ।

ସାରଙ୍କ ସହିତ ଆତ୍ମମାନଙ୍କର ସମ୍ପର୍କ ବହୁ ପୁରାତନ । ୧୯୬୪ ମସିହାରେ ମୁଁ ଭାରତ ସେବକ ସମାଜର ଜଣେ କର୍ମୀ ଭାବେ ଗାଁ ଗହଳିର ସେବା କାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଯୁକ୍ତ ଥାଏ । ଆତ୍ମମାନଙ୍କର ମୁଖ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଥାଏ କଟକ ସହରର ଉପର ତେଲଙ୍ଗା ବଜାରରେ । ମୁଁ ସେହି ମୁଖ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ଅବସ୍ଥାପିତ ହୋଇ ପାଠ ପଢ଼ିବାପାଇଁ ମନ ବଳାଇଲି । ନୂଆ କରି ଖୋଲିଥିବା ରେଭେନ୍ସା ସାଂଧ୍ୟ କଲେଜରେ ନାମ ଲେଖାଇଲି । ଦିନବେଳା ଅଫିସ୍ କାମ ସାରି ବହୁ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟର କର୍ମୀ ସଂଧ୍ୟାରେ ଏହି କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରୁଥିଲେ । ଛୁଟି ଦିନମାନଙ୍କରେ ମୁଁ ଗାଁ ଗହଳିକୁ ଯାଇ ଭାରତ ସେବକ ସମାଜର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ସେବା କାର୍ଯ୍ୟରେ

ଅଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିଥାଏ । ବି.ଏ., ବି.ଇଡ଼ି. ଏପରିକି ଏମ୍.ଏ. ପଢ଼ିବାଯାଏ ମୁଁ ଭାରତ ସେବକ ସମାଜର କର୍ମୀ ଥିଲି । ସେତେବେଳେ ବନ୍ୟାବାତ୍ୟା ପ୍ରପାତିତ ଅଞ୍ଚଳ, ବୀରମିତ୍ରପୁରର ଦଙ୍ଗା ଅଞ୍ଚଳ ଏବଂ ବିଭିନ୍ନ ମରୁଡ଼ି ପ୍ରପାତିତ ଗାଁ ଗହଳକୁ ଯାଇ କାମ କରିବାର ସୁଯୋଗ ଲାଭ କରିଛି । ସେବା କାର୍ଯ୍ୟପାଇଁ ଦିଲ୍ଲୀ ଅଶୋକ ବିହାରଠାରେ ଭାରତ ସେବକ ସମାଜ ଆନୁକୁଲ୍ୟରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଶିବିରରେ ଯୋଗ ଦେଇ ତାଲିମ୍ ଗ୍ରହଣ କରିଛି । ରାଜ ଆଠଗଡ଼ ଅଞ୍ଚଳର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର କଣ୍ଟରେଇ ଆଦି ଗାଁରେ ଲୋକଙ୍କ ସହିତ ମିଶି କାମ କରିଛି । ଏସବୁ ଭିତରେ ପାଠପଢ଼ା ପାଇଁ ଆସି ଶ୍ରେଣୀ କାମରେ ବସିଗଲେ ଦୁଇଜଣ ଯୁବ ଅଧ୍ୟାପକଙ୍କ ପାଠପଢ଼ା ଶୈଳୀ ମନକୁ ଗଭୀରଭାବେ ସ୍ପର୍ଶ କରେ । ଜଣେ ସତ୍ୟବାଦୀର ପଞ୍ଚସଖା ଭକ୍ତ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ଶତପଥୀ ଆଉ ଜଣେ ଜୟଦେବ ଗୁଣଗ୍ରାହୀ ଅଧ୍ୟାପକ ନରେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ନରେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ପ୍ରଥମରୁ ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗରେ ନଥିଲେ । ଅନ୍ୟ ବିଭାଗରୁ ଆସି ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗରେ ଯୋଗ ଦେଇଥାନ୍ତି । ସାହିତ୍ୟ, ବିଶେଷକରି ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ କଥା କହିଲେ ସେ ଭାବବିହ୍ୱଳ ହୋଇଯାଆନ୍ତି । ପଢ଼ ପିଲାମାନେ । ସଦାସର୍ବଦା ପଢୁଥାଅ । ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା, ପତ୍ରପତ୍ରିକା ସବୁବେଳେ ପଢୁଥାଅ । ପ୍ରାଚୀନ ସାହିତ୍ୟରେ ଆମ ଐତିହ୍ୟ, ଆମ ସଂସ୍କୃତି ଭରପୁର ହୋଇ ରହିଛି । ପ୍ରାଚୀନ କବିମାନେ ଆମ ଜୀବନର ପଥ ପ୍ରଦର୍ଶକ । ଆମର ପୂଜ୍ୟ । ଆମର ନମସ୍ୟ । ସେମାନଙ୍କୁ ସ୍ମରଣ କରି ସାଧନା ପଥରେ ଆଗେଇ ଚାଲ । ନରେନ୍ଦ୍ର ସାରଙ୍କ ସେଦିନର ସେଇ ପାଠପଢ଼ାର ଜଙ୍ଗ ଏବଂ ସାହିତ୍ୟପାଇଁ ସଂସ୍କୃତିପାଇଁ ଆବେଗ ଆଜି ବି ମନରେ ଜାଗରଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ । ସେ କଥାର ମଣିଷ ନଥିଲେ । ତାଙ୍କ ଉଚ୍ଚାରଣ ଏବଂ ଆଚରଣ ଗୋଟିଏ ଥିଲା । ଆଜି ତାଙ୍କ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ମନଟା ଗୋଲେଇ ଘାଣ୍ଟି ହେଉଛି । ସାରଙ୍କ ବଜ୍ରଗମ୍ଭୀର ବାଣୀ କର୍ଣ୍ଣଗହ୍ୱରରେ ଅନୁରଣିତ ହେଉଛି । ସାର, ଆପଣ ତ ପିତୃଲୋକରେ । ସେଇଠି ଥାଇ ଆତ୍ମମାନଙ୍କୁ ଅମୃତ ଦୃଷ୍ଟିରେ ଚାହିଁ ଆସନ୍ତୁ । ଆପଣଙ୍କ ଅଧୁରା କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବାପାଇଁ ଆତ୍ମମାନଙ୍କୁ ଶକ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ । ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ମହାପ୍ରଭୁ ଆପଣଙ୍କ ଆତ୍ମାକୁ ଶାନ୍ତି ଓ ସଦ୍ଗତି ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ, ଏତିକି ମାତ୍ର ପ୍ରାର୍ଥନା ।



୧୯୬୪ ମସିହାରେ ମୁଁ ରହୁଥିବା ବସା ଘରଟିରେ ଗାନ୍ଧିଜୀ ତା. ଜେନାମଣି ନରେନ୍ଦ୍ର କୁମାର, ଶିଳ୍ପୀ ଉଦୟ ନାରାୟଣ ଜେନା, ଦିଗନ୍ତ ପତ୍ରିକାର ସହ-ସମ୍ପାଦକ କବି ରାହାସ ରାୟ, ପ୍ରତ୍ୟେକ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ କୋଠାରେ ରହୁଥିଲେ । ବିଖ୍ୟାତ ସଙ୍ଗୀତ ଶିଳ୍ପୀ ଅତିଶୟ କୁମାର ମଜୁମଦାର ଅନ୍ୟତ୍ର ଯିବା ପରେ ଘରଭଡ଼ା ଭରଣା କରିବାକୁ ତାଙ୍କ ପ୍ଲାନରେ କବି ମାନସିଂହଙ୍କର ସହକାରୀ ଥିବା ଯଶସ୍ୱୀ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ରମେଶ ଚନ୍ଦ୍ର ଭଞ୍ଜ ଆସି ରହିଥିଲେ । ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ଭିତରେ କଳା, ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଂସ୍କୃତି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ପ୍ରତ୍ୟହ ଆଲୋଚନା ହେଉଥିବାବେଳେ ବିଖ୍ୟାତ ଦିଗନ୍ତ ପତ୍ରିକାର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସମ୍ପାଦକ ବିଖ୍ୟାତ କଥାଶିଳ୍ପୀ ମନୋଜ ଦାସ ମଧ୍ୟ ଅଧିକାଂଶ ଦିନ ଆମ ବସାକୁ ଆସି ଆଲୋଚନାକୁ ଅଧିକ ଉତ୍ସାହ ଉଦ୍ଧାପିତ କରାଇ ଦେଉଥିଲେ । ଏତଦ୍‌ବ୍ୟତୀତ ତତ୍କାଳୀନ କେତେକ ତରୁଣ ରାଜନେତା ଓ ମୋର ବନ୍ଧୁ ପ୍ରଦ୍ୟୁମ୍ନ ବଳ ମଧ୍ୟ ଆମ ଗହଣରେ ବିଭିନ୍ନ ଆସରରେ ମଜଲିସ୍ କରୁଥିଲେ ।

## ଚିର ନମସ୍ୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ

ଡ. ବିଜୟ କୁମାର ମହାନ୍ତି

ସେବା ନିବୃତ୍ତ ହିନ୍ଦୀ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ

ଚାନ୍ଦମାରି ପଡ଼ିଆ, ସହଦେବଖୁଣ୍ଟା, ବାଲେଶ୍ଵର

ମୋ: ୯୭୭୮୩୧୨୦୧୦

୨୬ ଜୁନ୍ ଉତ୍ତ ୧୨.୩୦ ମିନିଟ୍ରେ ଆକ୍ଷମାନଙ୍କର ଅତି ପ୍ରିୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ସଂସାର ଛାଡ଼ି ଚାଲିଗଲେ । ଭୁବନେଶ୍ୱରରୁ ବନ୍ଧୁ ନାରାୟଣବାବୁଙ୍କ ନିକଟରୁ ଟେଲିଫୋନରେ ଏ ସମ୍ବାଦ ପାଇବା ମାତ୍ରେ ମୁଁ କିଛି ସମୟ ସ୍ତବ୍ଧ ହୋଇଗଲି । ମୋ ଭିତରେ ବ୍ୟଥାର ହାହାକାରଟିଏ ସୃଷ୍ଟି ହେଲା । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କିଛିଦିନ ଧରି ଅସୁସ୍ଥ ଥିଲେ । ହେଲେ ଏତେ ଶୀଘ୍ର ଏହି ପ୍ରବାଦ ପୁରୁଷ ଆମଠୁ ବିଦାୟ ନେବେ ବୋଲି ମୁଁ କେବେ ହେଲେ ଭାବି ନ ଥିଲି । ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଏକ ଅସାଧାରଣ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ । ତାଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ କିଛି ଲେଖିବା ଧୃଷ୍ଟତା ମାତ୍ର । ୧୯୯୫ ମସିହା ଜୁନ୍ ମାସ କୌଣସି ଏକ ଅବସର ଅପରାହ୍ନରେ ତାଙ୍କ ସହିତ ମୋର ପ୍ରଥମ ସାକ୍ଷାତ । ସେତେବେଳେ ମୁଁ କଟକର ଶୈଳବାଳା ମହିଳା କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଥାଏ । ଏହି ପ୍ରଥମ ସାକ୍ଷାତରେ ତାଙ୍କର ଆତିଥ୍ୟ, ଅମାୟିକ ବ୍ୟବହାର ଓ ପ୍ରଚଣ୍ଡୋଦ୍ଦୀପ୍ତ ପ୍ରତିଭା ମୋତେ ବିସ୍ମିତ କରିଥିଲା । ପରେ ପରେ ମୁଁ ତାଙ୍କ ସହିତ ଯୋଡ଼ି ହୋଇଯାଇଥିଲି ।

ଡ. ପ୍ରଧାନ ଏକାଧାରରେ ଜଣେ ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଗବେଷକ ଓ ଲକ୍ଷ ପ୍ରତିଷ୍ଠ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ । ତାଙ୍କର ଅନୁସନ୍ଧିଷ୍ଟ ପ୍ରବୃତ୍ତି, ଏକାଗ୍ରତା ଓ ଅସାମାନ୍ୟ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ହିଁ ତାଙ୍କୁ ପ୍ରତିଟି କ୍ଷେତ୍ରରେ ସଫଳତା ପ୍ରଦାନ କରିଛି କହିଲେ ଭୁଲ୍ ହେବ ନାହିଁ । ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତି, ପରମ୍ପରା ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟତା ଉପରେ ଆଧାରିତ ତିନୋଟି ଖଣ୍ଡରେ ବିଭାଜିତ ତାଙ୍କ ଲିଖିତ ବିରାଟକାୟ ଆଲୋଚନା ଗ୍ରନ୍ଥ ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସତ୍ୟତା ଏହାର ନିଦର୍ଶନ । ଏହା ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟରେ ଏକ ଅମୂଲ୍ୟ ନିଧି । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରାଚୀନ କାବ୍ୟ-କବିତା ଉପରେ ସେ ବହୁ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଗବେଷଣାଧର୍ମୀ ରଚନା ଲେଖିଛନ୍ତି । ତାଙ୍କର ଡି.ଲିଟ୍. ଥେସିସ୍ ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା ପୁସ୍ତକ ରୂପେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇ ବିଶେଷ ଆଦୃତି ଲାଭ କରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଗବେଷକମାନଙ୍କୁ ଏ ଦିଗରେ ନୂତନ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ପ୍ରଦାନ କରିଛି । ପରେ ପରେ ତାଙ୍କ ଲିଖିତ ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା, ପଞ୍ଚ ସଖା ଭାମତୋଇ ଆଉ ଏକ ଉପାଦେୟ ପୁସ୍ତକ ରୂପେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଏକ ନବଦିଗ୍‌ ସୃଷ୍ଟି କରି ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟକୁ ସମୃଦ୍ଧ କରିଛି କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବନାହିଁ । କବି ଦୀନକୃଷ୍ଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଉପଯୁକ୍ତ ତଥ୍ୟ ପ୍ରଦାନପୂର୍ବକ ଗବେଷଣା ଧର୍ମୀ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିବାରେ ସେ ହେଉଛନ୍ତି ଅଦ୍ୱିତୀୟ ବ୍ୟକ୍ତି । ସେହିପରି ସ୍ମୃତାବ କବି ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ରଚନା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦୀନକୃଷ୍ଣ ଓ ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା ପୁସ୍ତକଦ୍ୱୟ ଓଡ଼ିଆ ସ୍ନାତକ ଓ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଏବଂ ଅଧ୍ୟାପକ ବର୍ଗଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉପାଦେୟ । ବିଶେଷକରି ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗର ଅଧ୍ୟାପକମାନେ କବି ଦୀନକୃଷ୍ଣଙ୍କ “ରସକଲ୍ଲୋଳ”ର ସମୀକ୍ଷା ଓ ଅଧ୍ୟାପନା ନିମନ୍ତେ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଦୀନକୃଷ୍ଣ” ପୁସ୍ତକଟିକୁ ବହୁ ପରିମାଣରେ ଲୋଡ଼ିଥାନ୍ତି । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଜଣେ ସଫଳ ଲେଖକ ସାଙ୍ଗକୁ ବହୁ ପୁସ୍ତକର ସମ୍ପାଦନା ମଧ୍ୟ କରିଛନ୍ତି । ସେ ଅଭ୍ୟୁଦୟ ସାହିତ୍ୟ ସମାଜର



ସୁଗ୍ଧ ସମ୍ପାଦକ ଥିବାବେଳେ “ଓଡ଼ିଆ ଉପନ୍ୟାସ ସାହିତ୍ୟର ପରିଚୟ” ଗ୍ରନ୍ଥଟି ପ୍ରକାଶ ପାଇଥିଲା । ସେଥିରେ ସେ ଗୋଦାବରୀଶ ମିଶ୍ରଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଏକ ସୁନ୍ଦର ଲେଖା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ବହୁ ସାହିତ୍ୟିକ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ଲେଖାକୁ ନେଇ ଏକ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ସମ୍ପାଦନା ଗ୍ରନ୍ଥ ନିର୍ମାଣ କରିଥିଲେ । ଏବେ ବି ଏହା ପାଠକ ମହଲରେ ଆଦୃତ ଓ ସଂଗ୍ରହଣୀୟ । ବସ୍ତୁତଃ ଡଃ. ପ୍ରଧାନଙ୍କ କୃତିରାଜି ବହୁ ତଥ୍ୟ ସମ୍ବଳିତ ଗବେଷଣାଧର୍ମୀ ହୋଇଥିବାରୁ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଏକ ଆରେକକୁ ବଳି ଏବଂ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ମାଇଲଖୁଣ୍ଟ । ଏହି କୃତିରାଜି ତାଙ୍କୁ ଚିରକାଳ ଅଜର ଅମର କରି ରଖୁବ, ଏହା ନିଃସନ୍ଦେହ ।

କେବଳ ଲେଖନୀ ଚାଳନାରେ କାହିଁକି, ବକ୍ତୃତା ପ୍ରଦାନରେ ମଧ୍ୟ ସେ ଥିଲେ ଧୂରୀଣ । ତାଙ୍କର ସୁଚିନ୍ତିତ ନିଜସ୍ବଶୈଳୀରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ଭାଷଣ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ମୋହିତ କରୁଥିଲା । ସେ ‘ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା’ ର ସଭାପତି ରୂପେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନରେ ଦେଇଥିବା ବକ୍ତୃତାରୁ ତାଙ୍କର ବାଗ୍ମାତାର ପରିଚୟ ମିଳିଥାଏ । ସେ ଥିଲେ ଅଜସ୍ର ଜ୍ଞାନର ଅଧିକାରୀ । ଶିକ୍ଷା ଜଗତର ଜଣେ ବିଶିଷ୍ଟ ହସ୍ତୀ । ଜଣେ ସଫଳ ଅଧ୍ୟାପକ । ତାଙ୍କର ନିରଳସ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ ଓ ଅଧ୍ୟାପନାଶୈଳୀ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଆକୃଷ୍ଟ କରୁଥିଲା । ଏହା ତାଙ୍କର ଭୁବନେଶ୍ବରର ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ସାହିତ୍ୟ ବିଭାଗର ଦୀର୍ଘବର୍ଷର ଅଧ୍ୟାପନା କାର୍ଯ୍ୟରୁ ହିଁ ସୁସ୍ପଷ୍ଟ । ଜଣେ ସୁସଙ୍ଗଠକ ହିସାବରେ ସେ ନିଜକୁ ବହୁ ଅନୁଷ୍ଠାନ ନିର୍ମାଣ ଓ ପରିଚାଳନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାମିଲ କରିଥିଲେ । ସେ ଥିଲେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବୟଂସେବକ ସଂଘର ଜଣେ ଆଦର୍ଶ ସ୍ବୟଂସେବକ । ଶିକ୍ଷାରେ ନୈତିକ ମୂଲ୍ୟବୋଧ ଓ ଚରିତ୍ର ନିର୍ମାଣ ପ୍ରଭୃତି ଦିଗରେ ପ୍ରୟାସଶୀଳ ଥିଲେ । ସରସ୍ବତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରଗୁଡ଼ିକରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ଶିକ୍ଷାରେ ଗୁଣାତ୍ମକମାନ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ଦିଗରେ ତାଙ୍କର ଭୂମିକା ଅନସ୍ବାକାର୍ଯ୍ୟ । ସେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଭାବେ ବହୁ ବିକାଶମୂଳକ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ସମସ୍ତଙ୍କର ପ୍ରିୟଭାଜନ ହୋଇଥିଲେ ।

ପ୍ରକୃତରେ ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ପ୍ରବାଦ ପୁରୁଷ । ଏହି ପ୍ରବାଦ ପୁରୁଷଙ୍କ ଯଶ, ଗୌରବ, ସୃଷ୍ଟି ସମ୍ଭାର ଓ ଲୋକପ୍ରିୟତାକୁ ମହାକାଳ କେବେହେଲେ ପରାହତ କରିପାରିବ ନାହିଁ । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ସାହିତ୍ୟର ଏଭଳି ଜଣେ ସ୍ରଷ୍ଟା, ଗବେଷକ ଓ ପ୍ରଜ୍ଞାପୁରୁଷଙ୍କ ନିକଟରେ ଓଡ଼ିଆ ଜାତି ଚିର ରଣୀ । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଆମକୁ ଛାଡ଼ି ଚାଲିଯାଇଛନ୍ତି ବୋଲି ମୋର ମନେ ହୁଏନା । ପ୍ରକୃତରେ ଦେହର ଅବର୍ତ୍ତମାନ କାରଣ ନୁହେଁ । ସ୍ବତିରୁ ଚିରଦିନ ପାଇଁ ଉଡ଼ିଯିବା ହିଁ ମୃତ୍ୟୁ । ଏ ସମ୍ପର୍କରେ ଆମରି ମାଟିର ପ୍ରଥିତଯଶା କବି ବ୍ରଜନାଥ ରଥ ମରଣ କବିତାରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରି ଲେଖିଛନ୍ତି —

“ମଣିଷ ମିଶେନା ମଶାଣି ମାଟିରେ

ଜଳିଲେ ମରଣ ଜୁଇ

ମିଶେ ସେହିଦିନ ସ୍ବତିରୁ ସେଦିନ

ହଜେ ଚିରକାଳ ପାଇଁ ।”

ବାସ୍ତବରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଅଜର, ଅମର । ତାଙ୍କର ସୃଷ୍ଟି ସମ୍ଭାର ଓ ମହନୀୟ କର୍ମ ତାଙ୍କୁ ସବୁଦିନପାଇଁ ବଞ୍ଚାଇ ରଖୁବ । ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦ୍ଗତି ହେଉ, ଏହାହିଁ ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ନିକଟରେ ପ୍ରାର୍ଥନା ।



## ସବୁ ଛକରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ

ମୋହିନୀ ମୋହନ ମିଶ୍ର

ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସମ୍ପାଦକ, ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ କିସାନ ସଂଘ

ନୂଆ ଦିଲ୍ଲୀ, ମୋ: ୯୪୩୭୦୭୨୦୩୦

ପ୍ରାୟ ନବମ କି ଦଶମ ଶ୍ରେଣୀରେ ପଢୁଥାଏ । ମନରେ ଭାରି କଷ୍ଟ ଓ ଉତ୍ସୁକତା । କଷ୍ଟ ଏଇଥିପାଇଁ ଯେ ଆମ ସ୍କୁଲରୁ ସାଙ୍ଗମାନେ ଟ୍ରେନ୍ ଦେଖିବାପାଇଁ ଯାକପୁର ରୋଡ଼ ଯାଉଥିଲେ, ମାତ୍ର ମୁଁ ଯାଇପାରୁ ନ ଥିଲି । ସେଥିପାଇଁ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଚାନ୍ଦା ମାଆ ମାର୍ଯ୍ୟତରେ ବାପାଙ୍କୁ ମାଗିବାରୁ ସିଏ ମନା କରି କହିଲେ, “କ’ଣ ଟ୍ରେନ୍ ଦେଖିବାକୁ ଯିବ ?”

ଆଉ ଉତ୍ସୁକତା ଥିଲା ଏକାଦଶ ଶ୍ରେଣୀ ପାଶ୍ କଲେ ଟ୍ରେନ୍ ଚାଲୁଥିବା ସହରରେ ଯାଇଁ ପାଠ ପଢ଼ିବାର ଝୁଙ୍କ ।

ଏମିତି ଏକ ବେଳେ ମୋ ବଡ଼ଭାଇ ରତି ରଞ୍ଜନ ମିଶ୍ରଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ଭୁବନେଶ୍ୱରରୁ ତାଙ୍କର ଜଣେ ପ୍ରଫେସରଙ୍କ ଆମ ଘରକୁ ଆଗମନ ହୁଏ ।

ପରଦିନ ସକାଳୁ ସକାଳୁ ସେମାନେ ଦୁଇଜଣ ୨ଟି ସାଇକେଲ ଧରି କୁଆଡ଼େ ଗଲେ । ଫେରିଲାବେଳକୁ ଦି’ପ୍ରହର । ମନରେ ନିରାଶ ଭାବ । ପଚାରିଲାବେଳକୁ ବଡ଼ଭାଇ କହିଲେ, “ଶ. . ., କହୁଛି କ’ଣ ନା ଦେବିନି, ଯେମିତି ବୋପା ସମ୍ପତ୍ତି ।

କଥାଟା ଏମିତି । ଆମ ଗାଁ ପାଖରେ ଜଣେ ଚାଷୀ ଚାଷ କରୁ କରୁ ଗୋଟେ ତମ୍ବା ପଟା ପାଇଛି । ସେ ଖବର ଭୁବନେଶ୍ୱର ଚାଲିଗଲା . . . ଆମ କାନରେ ବାଜି ନଥିଲା । ଗୁଣ ଚିହ୍ନେ ଗୁଣିଆ ଭଳି ସେ ପ୍ରଫେସର ଜଣଙ୍କ ଆସିଥିଲେ ସେଇଟା ତା’ଠାରୁ ନେଇ କ’ଣ ଗବେଷଣା କରିବେ ବୋଲି । ବହୁତ ବୁଝାସୁଝା କଲାପରେ ଚାଷୀଟି କହିଲା, “ବାରୁ, ଆମ ପାଖରେ କ’ଣ ଅଛି । ଆମେ ସବୁ ମଳିମୁଣ୍ଡିଆ ବୋଲି ଆପଣମାନେ ଆମକୁ ଘୃଣା କରନ୍ତି । ହେଲେ ଦେଖ, ଏଇ ତମ୍ବା ପଟା ଖଣ୍ଡକ ଅଛି ବୋଲି ଆପଣଙ୍କ ଭଳିଆ ବଡ଼ ପ୍ରଫେସର ମୋ ପାଖକୁ ଧାଇଁ ଆସିଛନ୍ତି । ଏଇଟା ଚାଲିଗଲେ ଆପଣ ଆଉ ଆମକୁ ପଚାରିବେ ? ଏ କଥା ଆମ ଆଗରେ ବଖାଣିଥିଲେ ସେଇ ପ୍ରଫେସର ଜଣକ । ନାଁ ତାଙ୍କର ଥିଲା ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ।

ତାଙ୍କ କଥାରେ ମୋ ମନ ନଥିଲା । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଖାଲି ପଚାରୁଥିଲି, ଭୁବନେଶ୍ୱରକୁ ରେଳଗାଡ଼ି ଚାଲୁଛି ନା ? ସେ ସେତେବେଳେ କହିଥିଲେ — ଆରେ ବାରୁ, ଭୁବନେଶ୍ୱରକୁ ରେଳ ବି ଚାଲୁଛି, ବିମାନ ବି । ମନେ ମନେ ନିଶ୍ଚିତ କଲି, ତା’ହେଲେ ମେଟ୍ରିକ୍ ପାଶ୍ କଲେ ସେଇଠି ପଢ଼ିବି । ଆଉ ଯୋଉଦିନ ମେଟ୍ରିକ୍ ପାଶ୍ ପରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଗଲି ଆଉ ଦେଇଥିବା ଟିଣ ବାକ୍ସରେ ଜିନିଷପତ୍ର ପୁରେଇ ପୁଣି ବସ୍ ଯାତ୍ରା ।

ଭୁବନେଶ୍ୱର ଗଲି । କଲେଜ ଆଉ ଶାଖା । ପାଠପଢ଼ା ଆଉ ସଂଘ ଶାଖାର ନିଶା । ପୁଣି ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ସହିତ ଦେଖା ସାକ୍ଷାତ୍ । ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଗଲେ ମାଆଙ୍କ ହାତରୁ ଗରମ ଗରମ ବଡ଼ ଗ୍ଲାସରେ ଗିଲାସେ ଦୁଧ ମିଳେ । ଆଉ ମାଆଙ୍କ ଆଗରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ମୋର ପରିଚୟ କରେଇ ଦିଅନ୍ତି, ମନେ ପଡ଼ୁଛିନା, ଇଏ ମୋହିନୀ ଆମ ରତିର ସାନଭାଇ ।

ପାଠପଢ଼ା ସରିଲା । ସଂଘ ପ୍ରଚାରକ ଭାବେ ପୁରୀ ପୁଣି ସେଠୁ ଭୁବନେଶ୍ୱର । ନୂଆ ନୂଆ ଭୁବନେଶ୍ୱର ନଗର ଜିଲ୍ଲା । ସେଠି ମୁଁ ଜିଲ୍ଲା ପ୍ରଚାରକକୁ ନଗେନବାବୁ ସଂଘଟାଳକ । ପୁଣି ଦେଖା । ପୁଣି ସମ୍ପର୍କ, ପୁଣି ବିଚାର ଆଲୋଚନା । ଧୀରେ ଧୀରେ ଦୂରତା ବଢ଼ିଲା । ମୋର ପ୍ରଚାରକର ଯାତ୍ରା ଭୁବନେଶ୍ୱରରୁ ଗଞ୍ଜାମ, ପୁରୀ ଜିଲ୍ଲା ପୁଣି ଭାରତୀୟ କିସାନ ସଂଘ । ନଗେନବାବୁଙ୍କ ସହିତ ବାରମ୍ବାର ଦେଖା ସାକ୍ଷାତ ହୁଏ । ସବୁବେଳେ ଅତି ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ଆଳାପରେ ମୋର ସୁଖ ଦୁଃଖ ପଚାରନ୍ତି । ଏତେ ସକାରାତ୍ମକ ମଣିଷ ମିଳିବା ଦୁର୍ଲଭ ।

ଦୂରରୁ ଦୂରକୁ ଚାଲିଗଲି । ତଥାପି ଯେବେ କଲିକତା ବା ଦିଲ୍ଲୀରୁ ଫେରେ ନାରାୟଣ ନାୟକଙ୍କ ସହିତ ଯାଇ ଦେଖାକରେ । ପୁଣି ରିଟାର୍ଡ ହେଇଯାଏ ଯେମିତି ।

ହଠାତ୍ ଦିନେ ନାରାୟଣ ନାୟକ ଖବର ଦେଲେ ନଗେନବାବୁ ଅସୁସ୍ଥ, କୋମାରେ । ତଟସ୍ଥ ହେଇଗଲି । ତାଙ୍କ ପୁଅ ବିରଞ୍ଚ ସହିତ କଥା ହେଲି । କିଛିଦିନ ପରେ ସୁସ୍ଥ ହୋଇ ସେ ମୋତେ ଫୋନ୍ ଲଗେଇଲେ ? କୋମାରୁ ବାହାରି ବଞ୍ଚିବାର ଆଶାକୁ ଦୃଢ଼ଭୂତ କରୁଥିବା ନଗେନବାବୁଙ୍କ ଫୋନ୍ । ମୁଁ ନମସ୍କାର କଲି । ମୋତେ ପଚାରିଲେ — “ମୋହିନୀ”

— ଆଜ୍ଞା !

— ଆରେ ରତି ଦେହ କେମିତି ଅଛି । ତା’ ପିଲାମାନେ ଭଲରେ ଅଛନ୍ତି ନା ।

ସେତେବେଳକୁ ମୋ ବଡ଼ ଭାଇ ରତି ରଞ୍ଜନ ମିଶ୍ରଙ୍କୁ କ୍ୟାନସର । ମାସେ ଦୁଇମାସରେ ସାଙ୍ଗରେ ମୁଁ ହିଁ ଯାଏ ଦିଲ୍ଲୀ ଏମ୍.ସି. ବଞ୍ଚିବାପାଇଁ ଲଢ଼େଇ କରିବାପାଇଁ । କଟକ ଏବଂ କଲିକତାର ଡାକ୍ତରମାନେ କହିଦେଇଥିଲେ “କାଉଣ୍ଟରୋଭୁଲ୍ ଡେଜ୍” । ମୁଁ ପଚାରିଲାରୁ କହିଲେ ୨୦-୨୫ ଦିନ ।

ପିଲା କେତେ ?

ଦୁଇ ଝିଅ ।

ବାହାଘର କରିଦିଅ ।

ଏମିତି ଏକ ମାନସିକତାରେ କାହା ସହିତ କ’ଣ ବା ଚର୍ଚ୍ଚା କରାଯାଇପାରେ । ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ଫାଇଲ୍ ପକେଇ ଦେଇ ଧାଇଁଲି ଦିଲ୍ଲୀ ଏକାକୀ ।

ବଡ଼ ଭାଇ ଓ ମୁଁ ।

ସେ ଅନେକ କଥା । ସେ ଅନେକ ଲୁହ । ସେ ଅନେକ ପ୍ରଶ୍ନ । ମୁଁ ଘର ସଂସାର କରିନି । ସଂଘ ପ୍ରଚାରକ । ତଥାପି ଏ ସଂସାରକୁ ନେଇ ମନରେ ଅନେକ ପ୍ରଶ୍ନ । ବଡ଼ଭାଇଙ୍କ ଏ ଅବସ୍ଥାରେ ତାଙ୍କ ଅତି ଆପଣାର ଲୋକମାନେ କେମିତି କୁଆଡ଼େ ହଜିଗଲେ ଆଉ କାହିଁକି ? ଏଇ ପ୍ରଶ୍ନ ନେଇ ମୁଁ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ପାଖରୁ ଉତ୍ତର ପାଇବା ଆଶାରେ ଯାଇଛି । ସେ ତ ନୀରବ ରହନ୍ତି । ପଚାରନ୍ତି — ଟ୍ରେନ୍ ଦେଖିଲୁ । ମୁଁ ଉତ୍ତର ଦିଏ “ନା— ଟ୍ରେନ୍ରେ ଘର କରି ଦେଇଛି ।”

ସେ ଆଜି କୋମାରୁ ବାହାରି ଫୋନ୍ କରି ପଚାରୁଛନ୍ତି — ମୋହିନୀ, ରତି କେମିତି ଅଛି ? ତାଙ୍କ ସହିତ ଏତିକି ସମ୍ପର୍କ । ଆଜି ନାହାନ୍ତି ସିଏ । ସତରେ କ’ଣ ସିଏ ଆଜି ନାହାନ୍ତି ? ଆପଣଙ୍କୁ ଭକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରଣାମ ନଗେନବାବୁ ।

ଆଗାମୀ ଦିନର ଛକମାନଙ୍କରେ ଆପଣ ଥିବେ ନା, ରାସ୍ତା ବଡ଼େଇବାପାଇଁ ???



# ନିର୍ମଳ ହୃଦୟର ଖାଣ୍ଟି ମଣିଷଟିଏ

ବିପିନ ବିହାରୀ ରାଉତ

ମୋ: ୭୩୨୫୯୨୩୪୭୭

ସେଦିନ ହୋଇଥାଏ ଜୁନ୍ ୨୭ ରୁଧବାର । ସକାଳଟାରୁ ଅନବରତ ବର୍ଷା ଝରୁଥାଏ । ପ୍ଲାର୍ଟ ଫୋନ୍‌ରେ ଫେସ୍‌ବୁକ୍ ଖୋଲି ଦେଖୁ ଦେଖୁ ଆଖିରେ ପଡ଼ିଲା ଏକ ବିଚିତ୍ର ଦୃଶ୍ୟ । ଫୁଲମାଳରେ ଭର୍ତ୍ତି କାହାର ମୃତ ଦେହ ଆୟୁଲାନୁରେ ଲଦା ହେଉଛି । କେହି ଜଣେ ରେକର୍ଡ଼ କରି ଘଟଣାଟିକୁ ସିଧାସଳଖ ପ୍ରସାରଣ କରୁଛି । ବୋଧହୁଏ କେହି ଜଣେ ଇହଲୀଳା ସମ୍ବରଣ କରିଛି ନିଷ୍ଠୁର; କିନ୍ତୁ କିଏ ? କଥାବାର୍ତ୍ତାରୁ କିଛି ବାରି ହେଲାନି । ତେବେ ଆୟୁଲାନୁ ଛିଡ଼ା ହୋଇଥିବା ସ୍ଥାନରେ ପଶ୍ଚାତ୍ ଭାଗରେ ଦୃଶ୍ୟମାନ ହେଲା — ସରସ୍ୱତୀ ଡି.ଟି.ପି. ସେଣ୍ଟର । ଏଇଥିରୁ ଅନୁମାନ ଲଗେଇଲି ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ-ମନ୍ଦିରର କୌଣସି ଗୁରୁଜୀ/ଗୁରୁମା ଅଥବା କେହି କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କର ବୋଧହୁଏ ଦେହାନ୍ତ ହୋଇଗଲା । ଏଇଭଳି ଅନୁମାନ ଭିତରେ ଥିବାବେଳେ ଖବର ଆସିଲା ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଚାଲିଗଲେ ।

ପ୍ଲାର୍ଟଫୋନ୍‌ରୁ ଏଭଳି ପୋଷ୍ଟ ଦେଖି ମନେହେଲା ସତେ ଯେପରି ଶିକ୍ଷା ଓ ସଂସ୍କୃତିର ବଡ଼ ଦେଉଳରୁ ନେତଟି ଖସିପଡ଼ିଲା । ମନ ମନ୍ଦିରକୁ ଆଲୋକିତ କରି ଅନେକ ଦିନରୁ ଜଳୁଥିବା ଦୀପଟି ଲିଭିଗଲା ଅବା । କେମିତି ଗୋଟାଏ ବିଷାଦ ଭରା ଅନ୍ଧକାର ଆବୋରି ବସିଲା ମୋର ମନ ମଞ୍ଚିଷକୁ ଶୂନ୍ୟ ଶୂନ୍ୟ ଲାଗିଲା ଦିଗ୍‌ବିଦିଗ ।

ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସ୍ମୃତିରେ ଅନେକ ଜ୍ଞାନୀ, ଗୁଣୀ, ବିଦ୍ୱାନ, ସାହିତ୍ୟିକ, ସଂଗଠକ ଅନେକ କଥା କହିବେ । ବିଭିନ୍ନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ତାଙ୍କର କୃତି ଓ କାର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବଖାଣି ବସିବେ । କିଏ କହିବ ସେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ଆଦ୍ୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ଥିଲେ । କିଏ କହିବ ସେ ଓଡ଼ିଶାରେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ତଥା ଇତିହାସ ସଂକଳନ ସମିତିର ପ୍ରାଣ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ଥିଲେ । କେତେକ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଓ ଗବେଷକ ଭାବେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ପାରଦର୍ଶିତା ଓ ପରାକାଷ୍ଠାର ବିଶଦ ଆଲୋଚନା କରିବେ, ଏହା ସ୍ୱାଭାବିକ । କାରଣ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଏହିଭଳି ଅନେକ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ସଂସ୍ଥା ଓ ସଂଗଠନର କର୍ଷଧାର ଥିଲେ, ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ଥିଲେ । ସରସ୍ୱତୀ ସଭ୍ୟତା ସନ୍ଦର୍ଭରେ ତାଙ୍କର ଗଭୀର ତଥା ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଅନୁସନ୍ଧାନ ତାଙ୍କୁ ଏକ ଭିନ୍ନ ଐତିହାସିକ ଗବେଷକ ଭାବେ ଚିହ୍ନିଦେଇଛି; କିନ୍ତୁ ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ଏକ ଖାଣ୍ଟି ମଣିଷ ହିସାବରେ ଜାଣେ । ଜଣେ ସରଳ, ନିଷ୍ପପତ୍ତ, ସ୍ନେହୀ ମଣିଷ । ଜ୍ଞାନର ଗଭୀରତା, ପଦପଦବାର ଅହଂକାର, କାର୍ଯ୍ୟର ଚାପ ଓ ଦାୟିତ୍ୱର ବୋହରୁ ମୁକ୍ତ ଜଣେ ସାଧାସିଧା ମଣିଷ । ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପରେ ପ୍ରକାଶିତ ତାଙ୍କର ଅନେକ ବିଦ୍ୱତ୍‌ପୂର୍ଣ୍ଣ ଲେଖାକୁ ପ୍ରଥମେ ପଢ଼ିବା, ଆବଶ୍ୟକସ୍ଥଳେ ପୁନଃ ଲେଖନ କରିବା ଓ ସମ୍ପାଦନା କରିବାର ସୌଭାଗ୍ୟ ମୋତେ ମିଳିଛି । ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ବିଶେଷାଙ୍କପାଇଁ ଫୋନ୍ ମାଧ୍ୟମରେ ଲେଖାଟିଏ ମାଗିଲେ ସେ ଆନନ୍ଦର ସହ ସମ୍ମତି ପ୍ରକାଶ କରନ୍ତି । କେବେ କେବେ

କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଦ୍ଵାରା ପଠେଇ ଦିଅନ୍ତି; ନଚେତ୍ ଆମେ ତାଙ୍କ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାର ସ୍ଥିତ ଘରକୁ ଯାଇ ଲେଖାଟିକୁ ସଂଗ୍ରହ କରୁ । ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷଭାବେ ତାଙ୍କ ହାତରୁ ଲେଖା ଆଣିବାର ଅନୁଭୂତି ବଡ଼ ନିଆରା । ସେତେବେଳର ଆତ୍ମୀୟତାପୂର୍ଣ୍ଣ କଥୋପକଥନ, ଶିଶୁସ୍ଫୁଲଭ ସରଳ ନିଷ୍ଠପଟ ବ୍ୟବହାର ବର୍ଣ୍ଣିବାକୁ ମୋର ଭାଷା ନାହିଁ ।

ଏବେ ଆଉ ସେଭଳି ଖାଣ୍ଟି ମଣିଷଙ୍କୁ ଆଉ ସଶରୀରରେ ଦେଖିବାକୁ ମିଳିବନି କି ତାଙ୍କ ତୁଣ୍ଡରୁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ଖାଣ୍ଟି ଉଚ୍ଚାରଣ ଶୁଣିବାକୁ ମିଳିବନି । କାରଣ ସେ ଏବେ ଦିବଂଗତ, ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କଠାରୁ ଦୂରରେ, ବହୁ ଦୂରରେ । କୁହାଯାଏ, କାର୍ତ୍ତିୟସ୍ୟ ସ ଜୀବନ୍ତି, ତାଙ୍କ ମର ଶରୀର ପଞ୍ଚତତ୍ତ୍ଵରେ ବିଲୀନ ହୋଇଯାଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସେ କାର୍ତ୍ତି ଓ ସ୍ମୃତି ମାଧ୍ୟମରେ ଚିରଦିନ ଆମ ଗହଣରେ ଜୀବନ୍ତ ହୋଇ ରହିଥିବେ । ଶେଷରେ ଏ କବି ପ୍ରାଣରୁ ନିଃସୃତ କେତୋଟି ଭାବଭକ୍ତିର ଶବ୍ଦ ସେହି ଦରଦୀ ମଣିଷଙ୍କ ପାଇଁ —

“ଜ୍ଞାନ ସରସ୍ଵତୀ ସ୍ଵିରୂପ ପୁଲିନେ

ମଗ୍ନ ସାଧକ ତୁମେ

ତୁମ ସ୍ମୃତିସିନ୍ଧୁ ସ୍ନେହ ସମୀରଣ

କୋଟି ହୃଦ ଆଜି ତୁମେ

ନାହିଁ ସିନା ମର୍ତ୍ତ୍ୟ ତୁମେ,

ଅମର୍ତ୍ତ୍ୟ ଭୁବନ୍ତୁ ଝରି କାର୍ତ୍ତିଗାଥା ଶ୍ରଦ୍ଧାର କାନନେ ଭ୍ରମେ ।”



**DrDharanidhar Nath**

Om Shanti.He was a genius a prolific writer.His book on Jayadev in Odia has great impact on me.to prepare my synopsis fr my 2nd Ph D.I met him in a meeting held in Conference hall of OUAT to felicitate the best students of SSVMS placed under100.I was a guest with Mr PratapJena FMR Minister as the President of the Board.



## ସ୍ମୃତିରୁ ଗୁଣ

ବିମଳା ସିଂହ

ସମ୍ପାଦିକା “ଗୋଧୂଳି”

ଉତ୍କଳପୁର ନଗର, ଗଣପୁଷ୍ପା, ଖଣ୍ଡଗିରି, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ: ୯୪୩୮୦୧୩୧୯୩

“କେହି ରହି ନାହିଁ ରହିବେ ନାହିଁଟି ଭବରଙ୍ଗ ଭୂମି ତଳେ,  
ସର୍ବେ ନିଜ ନିଜ ଅଭିନୟ ସାରି, ବାହୁଡ଼ିବେ କାଳବଳେ ।”

ନିଜ କର୍ମ ବଳରେ ଏ ଜନ୍ମରେ ମାନବ ରୂପରେ ଜନ୍ମ ହେଉଥିବା ଜୀବଟି ଦୁଇଟି ଧ୍ରୁବସତ୍ୟକୁ ସାଙ୍ଗରେ ଧରି ଆସିଥାଏ ଏ ଧରାପୃଷ୍ଠକୁ । ତାହା ହେଲା ଜନ୍ମ ଓ ମୃତ୍ୟୁ । ତେଣୁ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଜୀବ ମରଣଶୀଳ; କିନ୍ତୁ ଜନ୍ମ ଆଉ ମୃତ୍ୟୁର ପରିଧି ଭିତରେ ଗତି କରୁଥିବା ତା’ ଜୀବନରେଖା ଅନେକ ଭଙ୍ଗର ପଥକୁ ଅତିକ୍ରମ କରିଥାଏ ସତ; ମାତ୍ର ତା’ର କର୍ତ୍ତବ୍ୟନିଷ୍ଠା, ଧୈର୍ଯ୍ୟ, ଭଲ ପାଇବା ପଣ, ଆଚାର-ବିଚାର ପାଇଁ ସେ ମୃତ୍ୟୁର ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ପାଇସାରିଥିଲେ ମଧ୍ୟ ତା’ର ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ବଞ୍ଚୁ ରହେ ଅନେକ ହୃଦୟରେ । ତା’ର ସମସ୍ତ କର୍ମାବଳୀ ଭାଗବତରେ ଥିବା ଏହି ଉକ୍ତି — “ପ୍ରାଣୀର ଭଲମନ୍ଦ ବାଣୀ, ମରଣକାଳେ ତାହା ଜାଣି” ଭଳି ଜଣାଯାଏ । ତେଣୁ ଏହି ସାମାଜିକ ଜୀବଟି ସବୁବେଳେ ଭଲ କ୍ଷେତ୍ରକୁ ଆବୋରି ବସିଥାଏ । ଏହି ବିଶ୍ୱର ସୃଷ୍ଟି ହେବାଦିନଠାରୁ ଏହି କ୍ରମରେ ଅନେକ ଆସିଛନ୍ତି, ଯାଇଛନ୍ତି । କିନ୍ତୁ କତିପୟ ଲୋକ ବଞ୍ଚୁ ରହିଛନ୍ତି ଅନେକ ହୃଦୟରେ ନିଜର ସୁଗୁଣ ଦ୍ୱାରା । ଏହି କ୍ରମରେ ବିଚାର କଲେ ମୋର ଶିକ୍ଷକ ଜୀବନ ଏବଂ ସାହିତ୍ୟିକ ଜୀବନ ପରିସରରେ ମୋର ସାକ୍ଷାତ ହୋଇଥିଲା ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହ ଏକ ସାହିତ୍ୟ ସଭାରେ ୨୦୧୩ ମସିହାରେ ନନ୍ଦନକାନନଠାରେ “ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ” ଦ୍ୱାରା । ସେହି ସଭାରେ ମୁଁ “ମୋ ଗାଁ, ସ୍ମୃତି ସୌଦାଗର ଏହି ଦୁଇଟି କବିତା ପାଠ କଲାପରେ ତକ୍କର ପ୍ରଧାନ ଏତେ ପରିମାଣରେ ଖୁସି ହୋଇଗଲେ ଯେ ମୋତେ ଆଉ ଗୋଟିଏ କବିତା ପାଠ କରିବାକୁ କହିଲେ । ମୋର ତୃତୀୟ କବିତା ଥିଲା “ଦୁଃଖ ପିଞ୍ଜରାରେ ବସି” । ଏହି କବିତାଟି ଶୁଣିବା ପରେ ମୋତେ ତକ୍କର ପ୍ରଧାନ ମୋର ପରିଚୟ ଚାହିଁଲେ । ତା’ ପରଠାରୁ ସେ ମୋର ଲେଖାଗୁଡ଼ିକ ପାଠ କରନ୍ତି ବିଭିନ୍ନ ପତ୍ରପତ୍ରିକାରେ ଏବଂ ପଢ଼ି ସାରିବା ପରେ ଫୋନ୍ କରିଥାନ୍ତି, ଯାହା ମୋତେ ଅନେକ ପ୍ରେରଣା ଯୋଗାଇଥିଲା । ଏହି ଅନୁଷ୍ଠାନଦ୍ୱାରା ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନରେ ଆୟୋଜିତ ବିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ମୋର ଯୋଗଦାନକୁ ସେ ମନେ ପକାଇଥାନ୍ତି । ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଂଯୋଜକ ନାରାୟଣ ନାୟକଙ୍କ ମାଧ୍ୟମରେ ଜଣେ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ସାହିତ୍ୟିକ, ଗବେଷକଙ୍କର ଏହା ଥିଲା ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରୀତି ଆଉ କନିଷ୍ଠ ଲେଖକ ଲେଖକାମାନଙ୍କୁ ଉତ୍ସାହ ଦେବାର ଧାରା, ପ୍ରେରଣା ଦେବାର, ଭଲପାଇବାର, ଆଗକୁ ଯିବାର ପ୍ରତିଶ୍ରୁତି ବହନ କରିବାର ଚିନ୍ତନ । ଖବରକାଗଜର ତାଙ୍କର ଦେହାନ୍ତ ଖବର ପଢ଼ି ଦୁଇ ଠୋପା ଲୁହ ଗଡ଼ିଯାଇଥିଲା

ମୋ ଅଜାଣତରେ ଏବଂ ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ ଏଭଳି ଏକ ପବିତ୍ର ଆତ୍ମାର ସଦଗତି ନିମନ୍ତେ ପ୍ରାର୍ଥନା କରିବା ସହ ତାଙ୍କର ପରିବାର ବର୍ଗଙ୍କୁ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସମସ୍ତ କର୍ମକର୍ତ୍ତାଙ୍କୁ ତାଙ୍କ ଭଳି ସାହାସ ଓ ବଳ ଦେବାପାଇଁ ପ୍ରାର୍ଥନା କରିଥିଲି । କାରଣ ତାଙ୍କର ଭଲ ପାଇବା ଥିଲା ମୋ ପାଇଁ ସ୍ୱର୍ଗ । ମୋ କଲମ ମୁନକୁ ତଳତଞ୍ଚଳ କରି ରଖିବାର ଏକ ବିରାଟ ମନୋବଳ ଯାହା ଆଜିର ଖୁବ୍ ହାତଗଣତା କିଛି ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କଠାରୁ ମିଳିଥାଏ ।

ଆଜି ଜୀବନର ଧୃବସତ୍ୟ ଦୁଇଟି ଜନ୍ମ ଆଉ ମୃତ୍ୟୁର ସୀମାରେଖାକୁ ସ୍ପର୍ଶ କରି ଚାଲିଯାଇଥିବା ଏହି ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟରଥୀ ତାଙ୍କର ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ମଧ୍ୟ ଆଶୀର୍ବାଦ ଆମକୁ ଜାଲୁଥାନ୍ତୁ, ଏହାହିଁ କାମନା ଏବଂ ସେ ଈଶ୍ୱରପ୍ରାପ୍ତି ହୁଅନ୍ତୁ ।



" ନୈନଂ ଛିନ୍ନନ୍ତି ଶସ୍ତ୍ରାଣି ନୈନଂ ଦହତି ପାବକଃ  
ନଚୈନଂ କ୍ଳେଦୟୋନ୍ମ୍ୟପ ନ ଶୋଷୟତି ମାରୁତଃ ॥"  
ହେ ଅମର ଆତ୍ମା ! ଉତ୍କଳ ମାଟିରେ ବହୁବିଧ  
ରାଷ୍ଟ୍ରପ୍ରେମୀ ସଂଗଠନର ବିଶୁ ମହାରଣା ତୁମକୁ ଏ  
ଅଧମ ଜଣାଏ ଶେଷ ବିଦାୟ । ତୁମ ଦେହାନ୍ତରେ  
ଉତ୍କଳ ସାହିତ୍ୟକୁଳ ହତୋତ୍ସାହ କିନ୍ତୁ ତୁମର ମହାନ  
ଜୀବନାଦର୍ଶ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସାଧନା ଆମ ସଭିଙ୍କ ହୃଦୟ  
ପଟଳେ ଚିର ଅମଳିନ ହୋଇ ରହିବ । ରାଷ୍ଟ୍ରୋଦୟ  
ର ମହାନ ପର୍ବରେ ଆଜି ହୁଏତ ତୁମର ନଗ୍ନର  
ଶରୀରର ଅସ୍ତ୍ର ଘଟିଛି , ହେଲେ ମୋ ମନ କହୁଛି  
ତୁମେ ପୁଣି ଥରେ ରାଷ୍ଟ୍ର ଜନନୀର ପୂଜା ପାଇଁ ଏ  
ପବିତ୍ର କାନନରେ ଫୁଲ ହୋଇ ଫୁଟି ଉଠିବ ।  
ଶେଷରେ ସନ୍ତୁଭୁମି ସାହିତ୍ୟ ଶାଖା ଶୋକସନ୍ତପ୍ତ  
ପରିବାର ବର୍ଗଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ସମବେଦନା ଜ୍ଞାପନ  
କରିବା ସଂଗେସଂଗେ ନଗେନ୍ ସାର୍ କ୍ଷ ପବିତ୍ର  
ଆତ୍ମାର ସଦଗତି ନିମନ୍ତେ କଳା ଗୋସେଇଁ କ୍ଷ  
ପାଖରେ ପ୍ରାର୍ଥନା କରୁଛି ।

ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ

## ଭକ୍ତିପୁତ୍ର ଶ୍ରୀରାଜା

ପ୍ରଦୀପ କୁମାର ଦାସ

ପୁରୀ, ମୋ: ୯୦୨ ୯୦୧୪୦୧୧

ଗତ ୨୭ ଜୁନ୍ ସକାଳେ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଇହଧାମ ପରିତ୍ୟାଗର ଖବର ପାଇ ବହୁତ ଦୁଃଖିତ ହେଲି । ସେଇଭଳି ବସିଥାଏ, ମନେପଡ଼ି ଯାଉଥାଏ ଠିକ୍ ଏକ ବର୍ଷ ତଳେ ଏମିତି ବର୍ଷା ଦିନରେ ମୁଁ ଏହି ଅମର ଆତ୍ମାକୁ ଭେଟିବାକୁ ସୁଯୋଗ ପାଇଥିଲି । ଖାଲି ଯେ ଭେଟିବାକୁ ସୁଯୋଗ ପାଇଥିଲି ତାହା ନୁହେଁ, ପାଇଥିଲି ତାଙ୍କର ଆଶୀର୍ବାଦ ଯାହାକି ତାଙ୍କ ନିଜ ହାତରେ ଲିଖିତ ଏକ ଲେଖାକୁ ଓଡ଼ିଆ ଡି.ଟି.ପି. କରିବାର ଅମୂଲ୍ୟ ସୁଯୋଗ ।

ମୁଁ ଓ ସାହିତ୍ୟ ଦୁହେଁ ଦୁଇଟି ସମାନ୍ତରାଳ ରେଖା କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ । ପେଶାରେ କମ୍ପ୍ୟୁଟରରେ କାମ କରୁଥିବା ଲୋକ କାହିଁକି ବୁଝିବ ଯେ ସାହିତ୍ୟର ମାହାତ୍ମ୍ୟ । ତଥାପି ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ସଦିକ୍ଷାରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହୋଇ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦରେ ସଦସ୍ୟତା ଗ୍ରହଣ କରିଛି । ସେଦିନ ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ସହିତ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ଦେଖା କରିବାର ସୌଭାଗ୍ୟ ପାଇଥିଲି । ସେତେବେଳକୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ଦେହର ଅବସ୍ଥା ଭଲ ନଥାଏ । ତାଙ୍କୁ ବିଶ୍ରାମ କରିବାପାଇଁ ଡାକ୍ତର ଉପଦେଶ ଦେଇଥାନ୍ତି । ଏଭଳି ଅସୁସ୍ଥ ଥାଇ ମଧ୍ୟ ସେ ଆମକୁ ତାଙ୍କର ସେହି ସ୍ନେହଭରା ବ୍ୟବହାରରେ ଦେଖା କରିଥିଲେ । ମୋ ଘର ପୁରୀ ବୋଲି ଜାଣିବା ପରେ ସେ ତାଙ୍କର ପୁରୀରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ସମୟର ଅନୁଭୂତି ସବୁ କହିଲେ ।

“ଜ୍ଞାନର ଗନ୍ତାଘର” ବୋଲି ଶବ୍ଦ ସବୁବେଳେ ମୁଁ ଶୁଣିଛି, ପଢ଼ିଛି, ବିଭିନ୍ନ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କଠାରୁ ବା ବିଭିନ୍ନ ଲେଖାରେ; କିନ୍ତୁ ନିଜ ଆଖିରେ ସେଇଭଳି ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱକୁ ଦେଖିବା ସେଇଦିନ ସାର୍ଥକ ହୋଇଥିଲା । ବହୁତ ଅଳ୍ପ ସମୟ ବିତାଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ମତେ ଲାଗିଲା ଯେପରି ବହୁତ କିଛି ଶିଖିଲି ସେହି ସ୍ୱଳ୍ପ ସମୟ ଭିତରେ । ଶେଷରେ ଆଶୀର୍ବାଦସ୍ୱରୂପ ତାଙ୍କର ସେହି ଲେଖାଟିକୁ ଯାହାକି “କଳିଙ୍ଗ ଯୁଦ୍ଧର ସତ୍ୟତା ଓ ସେଥିରେ ସମ୍ରାଟ ଅଶୋକଙ୍କର ଭୂମିକା” ସମ୍ପର୍କରେ ଲିଖିତ ଥିଲା, ତାକୁ କମ୍ପ୍ୟୁଟରରେ ଡି.ଟି.ପି. କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଲି ।

ସେହିଦିନଠାରୁ ମୁଁ ମୋର କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରିଦେଲି । ମୁଁ ଯେତିକି ଯେତିକି ସେ ଲେଖାଟିକୁ ଡି.ଟି.ପି. କରୁଥାଏ, ମତେ ଲାଗୁଥାଏ ଯେ, ଯେପରି ମୁଁ ଅଶୋକଙ୍କର ସମୟରେ ପହଞ୍ଚି ଯାଇଛି ଓ ଯେମିତି ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ସେହି ସମୟର ପୁରୀ ଘଟଣାବଳୀକୁ ନିଜେ ମତେ କହି ଚାଲିଛନ୍ତି । ଜୀବନରେ ପ୍ରଥମ ଥର ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟର ଜୀବନ୍ତ ରୂପ ଅନୁଭବ କରିବାକୁ ମିଳିଲା । ଖାଲି ସେତିକି ନୁହେଁ, ବରଂ ଏମିତି ବହୁତ କିଛି ତଥ୍ୟ ଜାଣିବାକୁ ପାଇଲି, ଯାହାକି କେବେ ମୁଁ କେଉଁ ଇତିହାସ ବହି ବା କେଉଁ ଶ୍ରେଣୀ କକ୍ଷରେ ପଢ଼ିନି । ମୁଁ ଆଜି ବି ସେହି ଲେଖାରୁଡ଼ିକୁ ଅତି ଯତ୍ନରେ ସାଇତି ରଖୁଛି ଓ ସାରା ଜୀବନ ଏହା ଆଶୀର୍ବାଦ ଭଳି ମୋ ପାଖରେ ରହିବ ।

ହଁ, ଏହା ସତକଥା ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଆଉ ଆମ ଗହଣରେ ନାହାନ୍ତି; କିନ୍ତୁ ମୋ ପାଇଁ ଆଜି ସେ ସେଇ ଅମୃତର ସନ୍ତାନ ବା ଧୂବତାରା ଭାବେ ଅଛନ୍ତି, ଯିଏକି ସାହିତ୍ୟ ତଥା ସମାଜ ସଂସ୍କାର କାର୍ଯ୍ୟରେ ଥିବା ପଥଚାରୀଙ୍କୁ ସବୁବେଳେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ କରିବେ । ସେହି କାଳଜୟୀ ଅମର ଆତ୍ମାଙ୍କର ପାଦପଦ୍ମରେ ମୋର ଏହି ଭକ୍ତିପୁତ୍ର ଶ୍ରୀରାଜା ।

## ଗୁରୁମାନଙ୍କର ଗୁରୁ

ଡ. ବିଜୟ କୁମାର ସାହୁ

ପୂର୍ବତନ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ମହର୍ଷି କଲେଜ, ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ: ୯୪୩୭୦୫୫୦୫୮

୨୦୧୩ ମସିହା କଥା । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିରେ ଯୋଗ ଦେଇଥାଏ । ଦାୟିତ୍ୱ ଥାଏ ସମିତି ଦ୍ୱାରା ସମସ୍ତ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରକାଶନ ତଥା ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ । ମୋ ଯୋଗଦେବା ପୂର୍ବରୁ ପୁସ୍ତକ ଗୁଡ଼ିକ ସଠିକ ସମୟରେ ପହଞ୍ଚି ପାରୁ ନଥିଲା, ନା ବିଦ୍ୟାଳୟ, ନା ସମିତିରେ । ଯୋଗଦେବା ପରେ ପ୍ରଥମ ବୈଠକ ଥିଲା ବ୍ରହ୍ମପୁରସ୍ଥ ନୀଳକଣ୍ଠ ନଗର ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରରେ । ବହି ଗୁଡ଼ିକ ଯୋଜନାବଦ୍ଧ ଭାବରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାରୁ ସଠିକ ସମୟରେ ପହଞ୍ଚିଲା ସମସ୍ତ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରରେ । ଆୟମାନଙ୍କର ଯୋଜନା ଓ ପ୍ରୟୋଗ ସଫଳ ହେଲା ଓ ସବୁ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରାୟ ଜାନୁଆରୀ ଶେଷ ସୁଦ୍ଧା ବିଦ୍ୟାଳୟମାନଙ୍କରେ ଖରା ଛୁଟି ପୂର୍ବରୁ ପହଞ୍ଚି ଯାଇଥିଲା କିନ୍ତୁ ପୂର୍ବରୁ ପ୍ରାୟ ଅର୍ଦ୍ଧ ବାର୍ଷିକ ପରୀକ୍ଷା ପୂର୍ବରୁ ଅର୍ଥାତ୍ ନଭେମ୍ବର ମାସ ପୂର୍ବରୁ ପହଞ୍ଚୁ ନଥିଲା ।

ଏହା ଜାଣିବା ପରେ ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ ମୋତେ ଡାକି ଏହା କିପରି ସମ୍ଭବ ହେଲା ପଚାରି ଥିଲେ । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ସମସ୍ତ ଯୋଜନା ଓ ପ୍ରୟୋଗ ବିଷୟରେ ଆମ୍ଭକୁ କହିଥିଲି । ପରେ ସେ ଲୁପ୍ତ ପ୍ରାୟ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ସଭ୍ୟତା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଏକ ପୁସ୍ତକ “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସରସ୍ୱତୀ ସଭ୍ୟତା” ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଏକ ଗବେଷଣା ମୂଳକ ପୁସ୍ତକ ରଚନା କରୁଛନ୍ତି ବୋଲି କହିଥିଲେ ଓ ଏହା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଦ୍ୱାରା ଛପାଯାଇ ପାରିଲେ ସବୁ ବିଦ୍ୟାଳୟ ମାନଙ୍କୁ ବିନା ମୂଲ୍ୟରେ କିମ୍ବା ଅଳ୍ପ ମୂଲ୍ୟରେ ଯୋଗାଇ ଦିଆଯାଇ ପାରେ ବୋଲି କହିଥିଲେ ଓ ଏହା ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ଏକ ବାର୍ତ୍ତାବହ ଭାବରେ କାମ କରିବ ଓ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିରେ ନଦୀ ସଭ୍ୟତା ତଥା ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଉତ୍ପତ୍ତି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବହୁ ତଥ୍ୟ ଲୋକ ଲୋଚନକୁ ଆସିବ ବୋଲି କହିଥିଲେ । ମୁଁ ଏଥିରେ ସହମତି ପ୍ରକାଶ କଲି ଓ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀତା ସମିତିରେ ଏହାକୁ ଉପସ୍ଥାପନା କରିବାରୁ ସମସ୍ତେ ରାଜି ହେଲେ ଓ ଏହା ଛପାହେବା ଦାୟିତ୍ୱ ମୋ ଉପରେ ନ୍ୟସ୍ତ କରାଗଲା । ହେଲେ ବହି ଛପା ହେବା ପାଇଁ ପାଣ୍ଡୁଲିପି ଆସିବା ପରେ ଅନେକ ଥର ଫେର ବଦଳ କରିବାକୁ ହୋଇଥିଲା । ଡିଡିଏ ଅପରେଟର କାର୍ଯ୍ୟବ୍ୟସ୍ତ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ବୁଝାଇ କାମ ଚାଲୁ ରଖୁଥାଏ । ପ୍ରଥମ ଭାଗ ଛପା ହେଲା ବେଳକୁ ପ୍ରାୟ ୨୦୦୭ ମସିହା ହେଲା । ତେରି ହେବା କାରଣରୁ ମଝିରେ ମଝିରେ ଡ. ପ୍ରଧାନ ପଚାରିଲେ- ଛପାକାମ କେତେ ବାଟ ହେଲା ? ଏହାର ଅନ୍ୟ ଦୁଇଖଣ୍ଡ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇ ପ୍ରାୟ ଦୁଇହଜାର ପୃଷ୍ଠାର ଏକ ଗବେଷଣା ମୂଳକ ସରସ୍ୱତୀ ସଭ୍ୟତା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ପ୍ରକାଶ । ମୋର ଶ୍ୱଶୁର ଡଃ ନଟବର ସାମନ୍ତରାୟ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଉଭୟ ଅଧ୍ୟାପକ ଥିବା ସମୟରେ ସାହିତ୍ୟରେ ସମାଲୋଚନା ମୂଳକ ଲେଖା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଅନେକ ସମୟରେ ଆଲୋଚନା କରିଛନ୍ତି । ଅନେକ ଦୁଷ୍ପ୍ରାପ୍ୟ ପୋଥି ସଂଗ୍ରହ କରି ତାର ନିଷ୍ପତ୍ତି ବିଭିନ୍ନ ପତ୍ର ପତ୍ରିକାରେ ପ୍ରକାଶନ କରିଛନ୍ତି । “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ଭୂମିକା” ନିଜସ୍ୱ ଗବେଷଣା ଲାଗି ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ତାଙ୍କୁ ଡି.ଲିଟ୍ ଉପାଧିରେ ଭୂଷିତ କରିଥିଲା । ରାଜନୈତିକ ମତବାଦର ସଂଘର୍ଷ, ଧର୍ମଗତ ବିଦେଷରୁ ଉଦ୍ଧୃତ

ଭାବୀବଂଶଧରମାନଙ୍କୁ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତି ସମ୍ବନ୍ଧରେ ପରିଚୟ କରାଇ ପାରିଥିଲେ ବିଦ୍ୟା ଭାରତୀ ତଥା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ମାଧ୍ୟମରେ ।

ସମିତିରେ ମୋର କାର୍ଯ୍ୟକାଳ ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରାୟ ଦୁଇଥର ସର୍ବଭାରତୀୟ ବୈଠକରେ ଯୋଗ ଦେବା ପାଇଁ ସାଥୁହୋଇ ଡ. ପ୍ରଧାନ ତଥା ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ସହିତ ଯିବାର ସୁଯୋଗ ମିଳିଥିଲା । ଯାତ୍ରା ପୂର୍ବରୁ ଟ୍ରେନରେ ଶୁଖିଲା ଖାଦ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ନେବା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ବାରମ୍ବାର ମନେ ପକାଇଥାନ୍ତି । ପୁଣି ପ୍ରତି ସ୍ପେସନରେ କଣ ଖାଦ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ମିଳିଥାଏ ତାହା ସେ ଆଗରୁ ଜାଣିଥିବା କାରଣରୁ ଆମ ସାଥରେ ଥିବା ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କୁ ଆଣିବା ପାଇଁ କହିଥାନ୍ତି । ଆମର ବନ୍ଧୁମାନେ ତତ୍କାଳ ଏହା କାର୍ଯ୍ୟରେ ପରିଣତ କରିଥାନ୍ତି । ଖାଇବାରେ ଯେତିକି ଆଗ୍ରହ ନ ଥିଲା, ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ଖୁଆଇବାରେ ଓ ଦେବାରେ ଆଗ୍ରହ ଅନେକ । ଭୁବନେଶ୍ୱର ସ୍ଥିତ ଘରକୁ ସମିତି କାମରେ ବିଜିନ୍ନ ସମୟରେ ଯାଇଛି ଓ ଖାଇଛି ମଧ୍ୟ ।

ଥରେ ହଠାତ୍ ଦେହ ଖରାପ ଓ ମସ୍ତିଷ୍କ ପ୍ରଦାହ ଯୋଗୁଁ ଡାକ୍ତରଖାନାରେ ରହିଥିଲେ । କୁହନ୍ତି ଯେ, ଆଉ ବଞ୍ଚିବାର ନ ଥିଲା । ଭଗବାନଙ୍କ ଦୟାରୁ ବଞ୍ଚିଗଲି । ଡାକ୍ତର ଜଣଙ୍କ ଖୁବ ଭଲ । ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ନିଜେ କରନ୍ତି । ଅନ୍ୟ କାହାକୁ କରିବା ପାଇଁ ପଡ଼େନାହିଁ । ହଠାତ ୨୭ ତାରିଖ ଦିନ ସକାଳ ୪ଟାବେଳେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ଚିନ୍ମୟ ଶତପଥୀ କହିଲେ ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ବାବୁ ଚାଲିଗଲେ । ଭାବିଲି ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ତା'ର ଭୀଷ୍ମ ପିତାମହକୁ ହରାଇଲା ।

ପ୍ରଥମ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ୩ ନମ୍ବର ୟୁନିଟ୍‌ରେ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା ମାତ୍ର ୩ / ୪ ଶିଶୁଙ୍କୁ ନେଇ । କିନ୍ତୁ ପ୍ରଥମ ଅବସ୍ଥାରେ ଶିଶୁମାନଙ୍କର ପିତାମାତାମାନେ ଭରସା କରି ପାରୁ ନ ଥିଲେ ଯେ, ସେମାନଙ୍କ ଶିଶୁର ଭବିଷ୍ୟତ କିପରି ହେବ ଓ ପାଠପଢ଼ା କିପରି ହେବ ଏହା ସନ୍ଦେହଜନକ ଥିଲା । ଆଧୁନିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରାପ୍ତ ଶିକ୍ଷକ ନଥିବାରୁ । ତଥାପି କିଛି ଲୋକ ଭରସା କରି ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ନାମ ଲେଖାଇଲେ । ସେତେବେଳେ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ ଓ ଜଗଦୀଶ ପଟ୍ଟନାୟକ ଯେଉଁ ଚାରାଗଛ ରୋପଣ କରିଥିଲେ ତାହା ଆଜି ଦୁମରେ ପରିଣତ ହୋଇ ପ୍ରାୟ ଏକ ହଜାର ସଂଖ୍ୟାରେ ପରିଣତ ହୋଇଛି । ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ତଥା ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ପ୍ରୟୋଗର ସୁଫଳ ମିଳିବାକୁ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଛି । ସରକାରୀ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ସଠିକ ଢଙ୍ଗରେ ପାଠ ପଢ଼ା ହେଉ ନ ଥିବା କାରଣରୁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଦ୍ୱାରା ପରିଚାଳିତ ସମସ୍ତ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର ମାନଙ୍କରେ ଛାତ୍ର ଉପସ୍ଥାନ ଓ ନାମ ଲେଖା ପାଇଁ ପ୍ରବଳ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ଓ ଆଗ୍ରହ ଲୋକମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଯାଇଛି । ପ୍ରତି ବର୍ଷ ମ୍ୟାଟ୍ରିକ ପରୀକ୍ଷା ତଥା ଯୁକ୍ତ ୨ ପରୀକ୍ଷାର ଅଗ୍ରଭାଗରେ ସମସ୍ତ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରର ଛାତ୍ର ଛାତ୍ରୀମାନେ ନିଜକୁ ସ୍ଥାନିତ କରି ପାରୁଛନ୍ତି ଯାହା ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର ପରିକଳ୍ପନା, ଯୋଜନା ଓ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କର ପ୍ରୟୋଗର ଫଳ । ଆରମ୍ଭ ସମୟରେ ଅନେକ ବିଦ୍ୟାଳୟ ମାନଙ୍କୁ ପରିଦର୍ଶନରେ ସେ ଯାଇଛନ୍ତି ଓ ପରିଚାଳନା ସମିତି ଗଠନରେ ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରିଛନ୍ତି । ପୂର୍ବରୁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଅନେକ ଅଭାବ ଅସୁବିଧା ମଧ୍ୟରେ ଗତି କରୁଥିଲା ବେଳେ



ନାଲକୋ ଅନୁଗୋଳ ଓ ଦାମନଯୋଡ଼ି ଦୁଇ ବିଦ୍ୟାଳୟକୁ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ପରିଚାଳନା ଅଧୀନକୁ ନେଇ ସମିତିର ଖର୍ଚ୍ଚ ଭରଣା କରିବା ପାଇଁ ସେ ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ନିଭାଇଥିଲେ । ରିଜର୍ଭନାଲ କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଥିବା ସମୟରେ ଅନେକ ଛାତ୍ର ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି ଯେଉଁମାନେ ନିଜ ନିଜ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ମଧ୍ୟ । ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ତଥା ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ତା'ର ଜଣେ ସୁସଙ୍ଗଠକ ହୋଇଲା ଓ ବିଭିନ୍ନ ସମୟରେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ସହିତ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଭାପତି ଓ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଭାପତି ଭାବେ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାଇ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଉତ୍ତମ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇଛନ୍ତି ।

ସଂଘର ସୁସଙ୍ଗଠକ ଓ ନିଜର ପ୍ରଜ୍ଞା ତଥା ମେଧା ପାଇଁ ସେ ବେଶ୍ ପରିଚିତ । ଅନେକ ଗବେଷଣାମୂଳକ ପ୍ରବନ୍ଧ ଲେଖି ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନିଜକୁ ଜଣେ ଉତ୍ତମ ସମାଲୋଚକ ଭାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରି ପାରିଛନ୍ତି । ଅନେକ ଭଲ ଛାତ୍ର ସୃଷ୍ଟି କରି ପାରିଛନ୍ତି ।

ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ନିବେଦନ ଯେ, ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମା ସଦ୍‌ଗତି ଲାଭ କରୁ ଓ ତାଙ୍କର ପରିବାର ଏହି ଦୁଃଖଦ ଘଟଣାକୁ ସହ୍ୟ କରିବାପାଇଁ ସମର୍ଥ ହୁଅନ୍ତୁ ।



## ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିୟୋଗରେ ଶୋକ

ଛତିଆ, ୨୭।୬(ନି.ପ୍ର): ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ରାଜ୍ୟ ସଭାପତି ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିୟୋଗରେ ଯାଜପୁର ଜିଲା ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ପକ୍ଷରୁ ଏକ ଶୋକସଭା ରାଜ୍ୟ ସଂପାଦକ ଡଃ ସତ୍ୟୋଷ କୁମାର ମହାପାତ୍ରଙ୍କ ସଭାପତିତ୍ୱରେ ବଡ଼ଚଣାଠାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଯାଇଛି । ଏହି ସଭାରେ ଜିଲା ସଭାପତି ଡଃ ପ୍ରଶାନ୍ତ କୁମାର ସାହୁ, ସଂପାଦକ ଡଃ ବିଜୟ କୁମାର ନାୟକ, ସଂଯୋଜକ ରମେଶ କୁମାର ନାୟକ, ଅଧ୍ୟାପକ ତୁହିନାଶୁ ରଥ, ଡଃ ଅରୁଣ ନାୟକ, କବି ଅକ୍ଷୟ କୁମାର ଦାଶ ପ୍ରମୁଖ ଅତିଥି ଭାବେ ଯୋଗଦେଇ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଫଟୋଟିଡ଼ରେ ପୁଷ୍ପମାଲ୍ୟ ଅର୍ପଣ କରିବା ପରେ ସଭାକାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରାଯାଇଥିଲା । ସେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଓଡ଼ିଶାର କର୍ମଧାରୀ ଥିଲେ ବୋଲି

ଅତିଥିମାନେ ମତବ୍ୟକ୍ତ କରିଥିଲେ । ସେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଭାପତି ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟ ତୁଲାଇ ବିଭିନ୍ନ ଲେଖକ, କବି ଓ ଗବେଷକଙ୍କୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରୁଥିଲେ । ତାଙ୍କ ବିୟୋଗ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଜଗତ ପ୍ରତି ଏକ ଅପୂରଣୀୟ କ୍ଷତି ଘଟିଛି ବୋଲି ବକ୍ତାମାନେ ମତବ୍ୟକ୍ତ କରିଥିଲେ । ସେ ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ଓ ବୈଦିକ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ଉପରେ ବିଶେଷ ସନ୍ଧର୍ଭ ପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ ଯାହା ଓଡ଼ିଶାର ପାଠକଙ୍କ ନିକଟରେ ବେଶ୍ ଆଦରଣୀୟ ହୋଇଯାଉଥିଲା । ତାଙ୍କର ମୃତ୍ୟୁ ଖବର ପ୍ରଚାରିତ ହେବାପରେ ସମସ୍ତ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଓ ଅଭିଭାବକଙ୍କ ମହଲରେ ଗଭୀର ଶୋକପ୍ରକାଶ ପାଇଛି । ସେ ବିଭିନ୍ନ କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟାପନା କରିବା ପରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ସ୍ଥିତ ଆର.ଆଇ.ଇ.ଟିରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟକରି ଆବସର ନେଇଥିଲେ ।

## ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବାହା ଇଦଂ ନ ମମ

ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଚିନ୍ମୟ ରଞ୍ଜନ ଶତପଥୀ

ପ୍ରକାଶନ ବିଭାଗ

ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୯୪୩୮୮୩୭୬୪୧୧

ଜୁନ୍ ମାସ ୨୭ ତାରିଖ ଭୋର ପ୍ରାୟ ୩.୩୦ରେ ମୋତେ ଏକ ଦୁଃଖଦ ଖବର ମିଳିଲା ଯେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର ପୂର୍ବତନ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ, ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶାର ପୂର୍ବତନ ସଭାପତି, ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ପୂର୍ବତନ ସଭାପତି, ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଭାପତି ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ, ଗବେଷକ, ସଂଗଠକ, ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ପ୍ରଫେସର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ତଥା ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ପ୍ରିୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଦେହାନ୍ତ ହୋଇଗଲା । ଚିର ନିଦ୍ରାରେ ଶୋଇଗଲେ ଭାରତମାତାର ଜଣେ ସୁଯୋଗ୍ୟ ଜ୍ଞାନଦୀପ୍ତ ସାଧକ । ସତେ ଯେମିତି ପୂର୍ଣ୍ଣାହୁତି ହୋଇଗଲା ଏକ ଜୀବନ ଯଜ୍ଞର, ଯେଉଁଠି ପ୍ରତ୍ୟେକ ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଉଚ୍ଚାରିତ ହେଉଥିଲା ଏକ ଦିବ୍ୟ ମନ୍ତ୍ର “ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବାହା ଇଦଂ ନ ମମ” । ତାଙ୍କଭଳି ଜଣେ ମହାପୁରୁଷଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବର ବିଭିନ୍ନ ଦିଗ ବିଷୟରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ମୋ ଭଳି ଅଜ୍ଞାନ ଅଧମ ପକ୍ଷରେ ଧୃଷ୍ଟତା ହେବ । କାରଣ ସାଗରର ତୁଳନା ସାଗର ସହ, ଆକାଶର ତୁଳନା ଆକାଶ ସହ ହିଁ କରାଯାଇ ପାରେ । ସେହିପରି ମାନନୀୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଜୀବନର ତୁଳନା କେବଳ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଜୀବନ ସହ ହିଁ କରାଯାଇପାରେ, ଅନ୍ୟ କାହା ସହିତ ନୁହେଁ । ସେ ଏକାଧାରରେ ଥିଲେ ଜଣେ ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ସାହିତ୍ୟିକ, ସଙ୍ଗଠକ, ଗବେଷକ ଏମିତି ଅନେକ କିଛି; କିନ୍ତୁ ମୋ ଜାଣିବାରେ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ସବୁଠାରୁ ଗୁରୁତ୍ବପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିଗଟି ହେଲା ଅନେକ ପ୍ରତିଭାରେ ଧନୀ ଏହି ପ୍ରତିଭାଦୀପ୍ତ ମଣିଷଟି ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ନିଜ ଜୀବନର ସମସ୍ତ ପ୍ରତିଭାକୁ କେବଳ ଚିନ୍ମୟୀ ଜଗଦମ୍ଭା ଭାରତମାତାର ଉଦ୍ଧାନ ପାଇଁ ହିଁ ବିନିଯୋଗ କରିଛନ୍ତି, ଏଥିପାଇଁ ସେ ଜୀବନରେ ଅନେକ କିଛି ହରାଇଛନ୍ତି, ଅନେକ ଦୁଃଖ ଯାତନା ପାଇଛନ୍ତି; ମାତ୍ର ଏହା ବଦଳାଇ ପାରିନାହିଁ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ଗତିପଥକୁ ।

ଜଣେ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ହିସାବରେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଥିଲା ତାଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର, ଆଉ ଏହି ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ରରେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କୁ ଅଧ୍ୟାପନା ସହିତ ଜଣେ ପ୍ରକୃତ ଗୁରୁର କର୍ତ୍ତବ୍ୟସ୍ବରୂପ ସେମାନଙ୍କୁ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବୟଂସେବକ ସଂଘ, ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ପରି ବ୍ୟକ୍ତି ନିର୍ମାଣକାରୀ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତ ସଂଗଠନ ସହିତ ଯୋଡ଼ି ସେମାନଙ୍କୁ ସମାଜ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ର କାର୍ଯ୍ୟରେ ବ୍ରତୀ କରିପାରିଛନ୍ତି । ସେମିତି ଆଜିର ସମୟରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ମାତୃଭାଷା ମାଧ୍ୟମ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସର୍ବକୃତ୍ତ ବେସରକାରୀ ଯୋଜନା ସରସ୍ବତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନାର ଭଗୀରଥ ହିସାବରେ ଏହାକୁ ଓଡ଼ିଶାର କୋଣ ଅନୁକୋଣରେ ପହଞ୍ଚାଇବାପାଇଁ ନିଃସ୍ୱାର୍ଥପର ଭାବରେ ଯେଉଁ ଅକ୍ଳାନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ କରିଛନ୍ତି ତାହା

ଉଦାହରଣଯୋଗ୍ୟ । ନିଜର ଚନ୍ଦ୍ର, ମନ, ଧନ ଅର୍ପଣ ପୂର୍ବକ ଏହି ମହାନ ରାଷ୍ଟ୍ର କାର୍ଯ୍ୟରେ ସେ ଦୀର୍ଘ ସମୟ ଧରି ଯୋଡ଼ିହୋଇଥିଲେ; କାରଣ ସେ ଅନୁଭବ କରିଥିଲେ ଯେ ଏ ଦେଶର ପରବର୍ତ୍ତୀ ପିଢ଼ିକୁ ନିଜର ସମାଜ, ସଂସ୍କୃତି ସହିତ ଯୋଡ଼ିବା ହିଁ ପ୍ରକୃତ ଶିକ୍ଷାର ଲକ୍ଷ୍ୟ, ଯାହା ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ମାଧ୍ୟମରେ ହିଁ ସମ୍ଭବ ହୋଇପାରିବ ।

ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନାର ପ୍ରାଥମ୍ୟ ସଙ୍ଗଠନର ସଭାପତି ରୂପେ ହେଉ ବା ଏହାର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସଙ୍ଗଠନର ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ ହିସାବରେ ହେଉ ସବୁ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରାଇ ସମାଜ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ରକୁ ଭଲ ପାଉଥିବା ଜଣେ ପ୍ରକୃତ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଭାବରେ ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ କରିପାରିଛନ୍ତି ।

ସଂଗଠକ ହିସାବରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘର ଭୁବନେଶ୍ୱର ମହାନଗର ସଂଘଚାଳକ, ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଭାପତି, ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଭାପତି ଆଦି ଦାୟିତ୍ୱ ମାଧ୍ୟମରେ ନିଜକୁ ରାଷ୍ଟ୍ର କାର୍ଯ୍ୟରେ ସମର୍ପିତ କରିଛନ୍ତି ।

ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟରେ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରର ଅବସ୍ଥା କ’ଣ ତାହା ଆମେ ସମସ୍ତେ ଜାଣିଛେ; ମାତ୍ର ଏହି ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଆତ୍ମପ୍ରଚାର, ପୁରସ୍କାର ପ୍ରାପ୍ତି, ଦୌଡ଼ରୁ ବିରତ ରହି ରାଷ୍ଟ୍ର ତଥା ସମାଜପାଇଁ ଯେ ସାରସ୍ୱତ ସାଧନା କରାଯାଇ ପାରିବ ସେ ଏହା ପ୍ରମାଣିତ କରିଦେଇ ଗଲେ, ଯାହାକି ସାରସ୍ୱତ କ୍ଷେତ୍ରରେ ରୁଚି ରଖୁଥିବା ଯୁବପିଢ଼ିଙ୍କୁ ଆଗାମୀ ଦିନରେ ସଠିକ୍ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରାଇ ପାରିବ, ଆଉ ପୁଣି ଥରେ ସାହିତ୍ୟ ରାଷ୍ଟ୍ର, ସମାଜ ତଥା ସଂସ୍କୃତିର କଥା କହିବ ।

ଧୀରେ ଧୀରେ ଗବେଷଣା ଉପାୟ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠାପ୍ରାପ୍ତିର ଏକ ମାଧ୍ୟମ ହୋଇଯାଉ ଥିବାବେଳେ ଗବେଷକ ହିସାବରେ ନଗେନ୍ଦ୍ରାବୁ ଏ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟର ଏକ ବ୍ୟତିକ୍ରମ । ନିଜର ସଂସ୍କୃତି, ରାଷ୍ଟ୍ରପାଇଁ ଗବେଷକଟିଏ କିପରି ଯଶ, ମାନ, ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଆଦି ପାଇବା ଲୋଭରୁ ଦୂରେଇ ରହି ନିଜର ମୌଳିକ ଗବେଷଣାର ସାଧନାରେ ମଗ୍ନ ରହିପାରିବ ସେ ଥିଲେ ଏହାର ଉଦାହରଣ । ନିଜର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଗବେଷଣା କାର୍ଯ୍ୟକୁ ନଗେନ୍ଦ୍ରାବୁ ଏହି ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ମାଧ୍ୟମରେ ଆଗେଇ ନେଇଛନ୍ତି । ସେ ଜୟଦେବଙ୍କ ବିଷୟ ହେଉ କି ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟ ବିଷୟ ହେଉ ସବୁଠି ଛାଡ଼ି ଯାଇଛନ୍ତି ତାଙ୍କ ମୌଳିକ ଗବେଷଣାର ଛାପ, ତାଙ୍କ ଜୀବନର ସର୍ବବୃହତ ଗବେଷଣା ଗ୍ରନ୍ଥ । “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା” କେବଳ ଓଡ଼ିଶା କାହିଁକି ମୋ ମତରେ ସମଗ୍ର ଭାରତବର୍ଷରେ ଏଭଳି ମୌଳିକ ଗବେଷଣା ଗ୍ରନ୍ଥ ବିରଳ ।

ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶାଙ୍କ ପ୍ରକାଶନ ବିଭାଗ ଦାୟିତ୍ୱରେ ଥିବା କାରଣରୁ ମୋର ବଡ଼ ସୌଭାଗ୍ୟ ଯେ ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା ଭାଗ-୧, ୨, ୩ ଏହି ତିନୋଟି ଗ୍ରନ୍ଥ ପ୍ରକାଶନରେ ମୁଁ ନଗେନ୍ଦ୍ରାବୁଙ୍କ ଭଳି ମା’ ଭାରତୀଙ୍କ କୃପାପାତ୍ର ଭାରତୀୟ ସାଂସ୍କୃତିକ ଇତିହାସର ଜଣେ ଅନନ୍ୟ ଭାଷ୍ୟକାରଙ୍କ ମାର୍ଗଦର୍ଶନରେ ଅଳ୍ପ କିଛି କାର୍ଯ୍ୟ କରିପାରିଛି । ଏହି ବିଲକ୍ଷଣ ଗବେଷଣା ଗ୍ରନ୍ଥ ତିନୋଟିରେ ମୋନନୀୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରାବୁ ସାହିତ୍ୟ ଭାଷାତତ୍ତ୍ୱ, ଇତିହାସ, ନୃତ୍ୟ ଆଦି ଅନେକ ବିଷୟକୁ ବିଜ୍ଞାନ ସମ୍ମତଭାବେ

ସମସ୍ତ ଦିଗରୁ ପରୀକ୍ଷଣ ନିରୀକ୍ଷଣ କରିଛନ୍ତି, ଏହି ଗ୍ରନ୍ଥ ପ୍ରକାଶନ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ସମୟରୁ ହିଁ କେଉଁ ଜନ୍ମର ପୁଣ୍ୟ ପ୍ରଭାବରୁ ହେଉ ବା ଏ ଜନ୍ମରେ ଈଶ୍ବରଙ୍କ ବିଶେଷ କୃପା କାରଣରୁ ହେଉ ମାନନୀୟ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ସହିତ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ସାକ୍ଷାତ ଆଲୋଚନା କରିବାର ସୌଭାଗ୍ୟ ପାଇ ଆସିଛି, ଆଉ ଖୁବ୍ ପାଖରୁ ଅନୁଭବ କରିଛି ତାଙ୍କ ଅନନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବକୁ । ସମୟ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ମାପିଲେ ଖୁବ୍ କମ ସମୟର ସେହି ସମ୍ପର୍କ ମୋ ଜୀବନରେ ଆଣିଦେଇଛି ଏକ ଦୁର୍ଲଭ ସତ୍ସଙ୍ଗର ଦିବ୍ୟ ଅନୁଭବ । ମୁଁ ଅନୁଭବ କରିଛି ତାଙ୍କଭଳି ସବୁ ଦିଗରୁ ସମାଜର ଜଣେ ଉଚ୍ଚ ସ୍ତରର ବ୍ୟକ୍ତି ମଧ୍ୟ ମୋ ଭଳି ଅତ୍ୟନ୍ତ ସାଧାରଣ ସ୍ତରର କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ପ୍ରତି କିପରି ଆତ୍ମୀୟ ଭାବ ରଖି ପାରନ୍ତି । ଯାହା ବୋଧହୁଏ ଆଜିର ସମୟରେ ଦୁର୍ଲଭ । ଫୋନ୍ ମାଧ୍ୟମରେ ହେଉ ବା ସମୀପରେ ହେଉ ମୋର “ଆଜ୍ଞା ନମସ୍କାର”ର ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ତରରେ ତାଙ୍କ ଗୁରୁ ଗମ୍ଭୀର ସ୍ବରରେ ଶୁଣିଛି “ଆୟୁଷ୍ମାନ ଭବ”, ଆଉ ତାହାରି ମାଧ୍ୟମରେ ସତେ ଯେମିତି ଜାଣି ଦେଇଥାନ୍ତି ତାଙ୍କ ଦିବ୍ୟ ଆଶୀର୍ବାଦ । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଥର ସାକ୍ଷାତ ସମୟରେ ପ୍ରଥମେ ମୋର ବ୍ୟକ୍ତିଗତ, ପାରିବାରିକ ଭଲମନ୍ଦ ପଚାରି ବୁଝନ୍ତି । ୨୦୧୩ ମସିହାରେ ମୋର ବିବାହ ସମୟରେ ତାଙ୍କଠାରୁ ପାଇଛି ଆଶୀର୍ବାଦ ପୁଣି ୨୦୧୪ ମସିହାରେ ମୋର ଆକସ୍ମିକ ପିତୃ ବିରୋଗକାଳୀନ ଦୁଃଖରେ ତାଙ୍କଠାରୁ ପାଇଛି ସମବେଦନା ଓ ସାହ୍ଯନା । ଏମିତି ଅନେକ ଅନୁଭବ କାରଣରୁ କାହିଁକି କେଜାଣି ତାଙ୍କର ସେହି ଅନନ୍ୟ ଆତ୍ମୀୟତା ଭାବରେ ମୁଁ ବାନ୍ଧି ହୋଇ ଯାଇଛି । ବେଳେବେଳେ ଜୀବନ ଜଞ୍ଜାଳରେ ଭାରାକ୍ରାନ୍ତ ମନ ନେଇ ମୁଁ ଛୁଟିଯାଏ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ସେଠି ପାଏ ମାନନୀୟ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ପ୍ରେଣାଦାୟକ ଅନୁଭୂତି, ଉପଦେଶ ଆଉ ତାଙ୍କ ପୁତ୍ରବଧୂ (ଭାଉଜ)ଙ୍କର ସସ୍ନେହ ଆତିଥ୍ୟ ଚର୍ଚ୍ଚା ଆଉ ପୁଣି ମନରେ ଭରିଥାଏ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାର ଉତ୍ସାହ । ଏମିତି ଲେଖି ଚାଲିଲେ ବି ସରିବ ନାହିଁ ମାନନୀୟ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ଭଳି ମହାପୁରୁଷଙ୍କ ସ୍ବଳ୍ପ ସମୟର ସାନ୍ନିଧ୍ୟରୁ ପ୍ରାପ୍ତ ମୋର ଦିବ୍ୟ ଅନୁଭୂତି; କିନ୍ତୁ ଲେଖାଟିକୁ ତ ସାରିବାକୁ ପଡ଼ିବ, ତେଣୁ ଶେଷରେ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଥର ପରି ମୁଁ ସାଧକ ଶ୍ରେଷ୍ଠ, ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଶ୍ରେଷ୍ଠ, ପ୍ରଣାମ୍ୟ ନଗେନବାବୁଙ୍କୁ “ଆଜ୍ଞା ନମସ୍କାର” କହି ପ୍ରଣାମ ଜଣାଉଛି, ଆଉ ଆଶା କରୁଛି ସେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଥର ଭଳି ଏଥର ସେହି ଅଫେରା ରାଇଜରୁ “ଆୟୁଷ୍ମାନ ଭବ” କହି ଜାଣିଦେବେ ତାଙ୍କ ଦିବ୍ୟ ଆଶିଷର ଧାରା । ତାଙ୍କ ଦିବ୍ୟ ଆଶୀର୍ବାଦରେ ରାଷ୍ଟ୍ର କାର୍ଯ୍ୟରେ ମଗ୍ନ ଆଗାମୀ ପିଢ଼ିର ସାଧକମାନଙ୍କ ଜୀବନଯଜ୍ଞରେ ଝଙ୍କୃତ ହେବ ସେହି ଦିବ୍ୟ ମନ୍ତ୍ର “ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବାହା ଇଦଂ ନ ମମ” ।



Ashok Moharana

ଆମର ରହୁ ତାଙ୍କର କୀର୍ତ୍ତି

ହୃଦୟରେ ରହୁ କୀର୍ତ୍ତି

ତାଙ୍କ ଆଶିଷରେ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବା

ମନେ ଥୁବ ନୀତି ନିତି

# ପ୍ରଜ୍ଞା ଓ ପରାକ୍ରମର କର୍ମଯୋଗୀ : ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ

ଅଧ୍ୟାପକ ପ୍ରଶାନ୍ତ ରାଉତ

ପୂର୍ବତନ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ

ଅତ୍ୟୁଚ୍ଚ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ

ଯେଉଁ ବର୍ଷ ସ୍ବତନ୍ତ୍ର ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶ ଗଠନ ହେଲା, ସେହି ବର୍ଷ ୧୯୩୬ ମସିହାରେ ପ୍ରଜ୍ଞା ପୁରୁଷ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜନ୍ମ । ଉତ୍କଳ ଜନନୀର ଏହି ବରପୁତ୍ର ସମ୍ଭବତଃ ଓଡ଼ିଶା ଓ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ଅନନ୍ୟ ପରିଚୟ ପାଇଁ ଜନ୍ମ ନେଇଥିଲେ । ୧୦ ନଭେମ୍ବରରେ ଜଗତସିଂହପୁରରେ ଜନ୍ମିତ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ ପ୍ରଖର ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଚିନ୍ତାଧାରାରେ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବୟଂସେବକ ସଂଘର ସ୍ବୟଂସେବକ ଅଧ୍ୟାପନା ସମୟରେ ହୋଇଥିଲେ । ନିମ୍ନ ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ଚାଷୀ ପରିବାରରୁ ଆସି ନିଜର ଅସାଧାରଣ ଧାର୍ମିକ ଯୋଗୁ ଶିଖରରେ ପହଞ୍ଚି ପାରି ଥିଲେ ।

ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବୟଂସେବକ ସଂଘର ବିଚାର ନେଇ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ସଂଗଠନ ଅତ୍ୟୁଚ୍ଚ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ବା ଏ.ବି.ଭି.ପି. ୧୯୬୭ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବାକୁ ଥାଏ । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଭାପତି ଜଣେ ଅଧ୍ୟାପକ ହିଁ ହୋଇଥାନ୍ତି । ବିଶ୍ବରେ କୌଣସି ଛାତ୍ର ସଙ୍ଗଠନର ଏହିପରି ଅନନ୍ୟ ପଦ୍ଧତି ନାହିଁ । ରାଜନୈତିକ ଆକ୍ରୋଶ ଓ କାର୍ଯ୍ୟାନୁଷ୍ଠାନ ଭୟରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ରାଜ୍ୟ ସଭାପତି ହେବାପାଇଁ କୌଣସି ଅଧ୍ୟାପକ ରାଜି ହେଉନଥିଲେ । କିନ୍ତୁ ନିର୍ଭୀକ, ସଜୋଟ ଓ ସାହସୀ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ ସମ୍ମତି ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ ଓଡ଼ିଶା ଏ.ବି.ଭି.ପି.ର ସଭାପତି ହେବାପାଇଁ । ତତ୍କାଳୀନ ପ୍ରାନ୍ତ ସଂଘଟାଳକ ଭୂପେନ୍ ବୋଷଙ୍କ ସହ ମାତ୍ର ୫ ମିନିଟ୍ ବାର୍ତ୍ତାଳାପରେ ଏହି ଗୁରୁ ଦାୟିତ୍ବକୁ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ । ଅନୁମାନ କରନ୍ତୁ, ଓଡ଼ିଶାର ସର୍ବବୃହତ୍ ଓ ସର୍ବପ୍ରଥମ ଐତିହାସିକରେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର ଅଧ୍ୟାପକ ଥିଲେ, ସରକାରୀ ଚାକିରିର ତତ୍କାଳୀନ ହଜାରେ କଟକଣାକୁ ଖାତିର ନ କରି ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଛାତ୍ର ସଙ୍ଗଠନ ଏ.ବି.ଭି.ପି.ର ସଭାପତି ହୋଇଥିଲେ । ବର୍ତ୍ତମାନ ତ ବହୁ ସକାରାତ୍ମକ ବାତାବରଣ ଥାଇ ମଧ୍ୟ ବେସରକାରୀ କିମ୍ବା ଘରୋଇ କଲେଜର ଅଧ୍ୟାପକ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଦାୟିତ୍ବ ନେବାପାଇଁ କୁଣ୍ଠିତ ଭୟଭୀତ ବା ଶଙ୍କିତ ହେଉଛନ୍ତି ।

ନବେ ଦଶକରୁ ତାଙ୍କ ସହ ପରିଚୟ ହୁଏ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଜଣେ ସାଧାରଣ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ରୂପେ । ଭୁବନେଶ୍ବରସ୍ଥ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନରୁ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଜୀବନରୁ ଅବସର ନେଇସାରି ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ, ସଂସ୍କୃତି ଓ ଇତିହାସ ଗବେଷଣାରେ ନିମଗ୍ନ ଥାଇ ମଧ୍ୟ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିର ସକ୍ରିୟ ସଙ୍ଗଠକ ଓ ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ରୂପେ କାମ କରୁଥାନ୍ତି । ପ୍ରଥମ ସାକ୍ଷାତରେ ମନ କିଣିନେଇଥିଲେ ସାର୍ । ତାଙ୍କର ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଂଘର୍ଷ କାହାଣୀ କହି ଚାଲିଥିଲେ । ୧୯୭୫ ମସିହାରେ ଦେଶରେ ଜରୁରୀ ପରିସ୍ଥିତି ଲାଗୁ ହେଲା ପରେ, କିପରି ତତ୍କାଳୀନ କଂଗ୍ରେସ ସରକାର, ପୋଲିସ୍ ତାଙ୍କୁ ଗୃହବନ୍ଦୀ ପରି ରଖିଥିଲେ । ରାତି ଅଧରେ ବହୁବାର ପୋଲିସ୍ ତାଙ୍କ ପରିବାରକୁ ଲାଞ୍ଜନା ମଧ୍ୟ ଦେଇଛି । ତାଙ୍କ ଅଧ୍ୟାପନା ଚାକିରିରେ ବହୁବାର ସରକାର ପ୍ରୋସିଡିଙ୍ଗ୍ ବା କାର୍ଯ୍ୟାନୁଷ୍ଠାନ ଧମକ ଦିଆଯାଇଛି; କିନ୍ତୁ କାହାକୁ ବି ଡରି ନାହାନ୍ତି କି ନିଜ ଆଦର୍ଶ ଆଗରେ ମୁଣ୍ଡ



ନୁଆଁଇ ନାହାନ୍ତି । ସେଥିପାଇଁ ସାର୍ ଥିଲେ ପରାକ୍ରମୀ ପୁରୁଷ । ରୋକ୍‌ଠୋକ୍ ଭାବେ ନିଜ ପକ୍ଷ ରଖୁଥିଲେ । ଏପରି ନିର୍ଭୀକ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ମୁଁ ବହୁତ କମ୍ ଦେଖୁଛି ।

୧୯୬୮ରେ ସାର୍ ଓଡ଼ିଶା ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ପ୍ରଥମ ସଭାପତି ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ୧୯୭୪ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରିଥିଲେ । ତା'ପରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଆନ୍ଦୋଳନର ବିଶ୍ୱକର୍ମା ଥିଲେ ସାର୍ । ଆଜି ଯେଉଁ ସୁନାମ ମିଳିଛି ଆମ ବିଚାରକୁ ଏହି ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ସଫଳତା ମାଧ୍ୟମରେ, ତା'ର ଶ୍ରେୟ ସାର୍‌ଙ୍କୁ ଯାଏ । ଏହି ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ଗବେଷକ, ସଙ୍ଗଠକ, ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚକ ତଥା ଜଣେ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଭଲ ମଣିଷଙ୍କୁ ଆଜି ଆମେ ଅଶ୍ରୁଳ ବିଦାୟ ଦେଉଛୁ । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ଜୀବନରେ ସାର୍‌ଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ପ୍ରଭାବ ଯାହା ଯାହା ଉପରେ ପଡ଼ିଛି, ସେମାନେ ସମସ୍ତେ ଆଜି ସମାଜରେ ସୁପ୍ରତିଷ୍ଠିତ । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଆଜିର ପିଢ଼ି ତାଙ୍କ ଜୀବନୀର ପ୍ରେରଣାଦାୟୀ ଘଟଣାକୁ ସର୍ବଦା ସ୍ମରଣ କରିବା ଉଚିତ । କାରଣ ନିଜର ଅସାଧାରଣ ପ୍ରତିଭା ସତ୍ତ୍ୱେ ସେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସରଳ, ପରିଶ୍ରମୀ ଥିଲେ । ଅନାମିକତା ଓ ସାମୁହିକତା ଥିଲା ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଆକର୍ଷଣ । ସେ କେବେ ମୁଁ ବୋଲି କହୁନଥିଲେ କିମ୍ବା ସାନ ବଡ଼ କାହାକୁ ତୁ ବୋଲି ସମ୍ବୋଧନ କରୁନଥିଲେ । ସବୁବେଳେ ଆମେରେ ବିଶ୍ୱାସ କରୁଥିଲେ । ଗତ ଦେଢ଼ବର୍ଷ ଧରି ତାଙ୍କ ରୋଗଗ୍ରସ୍ତ ଅନ୍ତିମ ସମୟରେ ମୁଁ ବହୁବାର ସାକ୍ଷାତ ଓ ବାର୍ତ୍ତାଳାପ କରିଛି । ହାରି ଯିବାର ସାମାନ୍ୟ ଚିହ୍ନ ନଥିଲା ତାଙ୍କ ମୁଖମଣ୍ଡଳରେ । ଏ.ବି.ଭି.ପି. ନାଁ ଶୁଣି ହସପିଟାଲ୍ ଶଯ୍ୟାରୁ ମଧ୍ୟ ଉଠି ବସିପଡୁଥିଲେ । କି ଆବେଗ ଥିଲା ଆଦର୍ଶ ପ୍ରତି ସାର୍‌ଙ୍କର । ଏହିଭଳି ଅନନ୍ୟ ବିଭୂତି ସବୁବେଳେ ଜନ୍ମ ନିଅନ୍ତୁ ଓ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ବିଚାର ପଥରେ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରନ୍ତୁ । ଆଜି ଓଡ଼ିଶା ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ପରିବାର ପକ୍ଷରୁ ଆମର ପ୍ରଥମ ରାଜ୍ୟ ସଭାପତିଙ୍କୁ ଭକ୍ତିପୂର୍ବ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଜ୍ଞାପନ କରୁଛୁ ।



ଅଶ୍ରୁଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧନ ଯାତ୍ରା, ମୁବ ଛାତ୍ରାବାସ, ପୁରୀ-୨୯.୧୧.୨୦୧୨

# ଆଦର୍ଶ ପାଖରେ କେବେ ସୁଖ ନୁଆଁଅ ନାହିଁ

ଗୋବିନ୍ଦ ନାୟକ

କ୍ଷେତ୍ର ସଙ୍ଗଠନ ମନ୍ତ୍ରୀ, ଅ.ଭା.ବି.ପ.

୨୭ ତାରିଖ ସକାଳ ୧ଟାରେ ଯେତେବେଳେ ମାନନୀୟ ପ୍ରସନ୍ନଭାଇଙ୍କ ଫୋନ୍ ଆସିଲା ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଆଉ ନାହାନ୍ତି ସେତେବେଳେ କଥାଟା ବିଶ୍ୱାସ ଲାଗିଲା ନାହିଁ । ମୁଁ ସେଦିନ ସିଲିଗୁଡ଼ିରେ ଥିଲି । କିଛିଦିନ ପୂର୍ବେ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ଦିନକପାଇଁ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଆସିଥିଲି ପ୍ରଶାନ୍ତଭାଇ କହିଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଆପୋଲ ହସ୍ପିଟାଲରେ ଆଡମିଟ୍ ହୋଇଛନ୍ତି । ଆମେ ଯୋଜନା କରିଥିଲୁ ସଂଧ୍ୟାବେଳେ ହସ୍ପିଟାଲ ଯିବାପାଇଁ; କିନ୍ତୁ ଅନ୍ୟ ଏକ ଜରୁରୀ କାର୍ଯ୍ୟରେ ବାହାରକୁ ଚାଲି ଯାଇଥିଲି, ତା’ପର ଦିନ କଲିକତା ପ୍ରବାସ ତା ପରେ ସିଲିଗୁଡ଼ି । ପ୍ରସନ୍ନ ଭାଇଙ୍କ ଫୋନ୍ ପାଇବା ପରେ ଅବିସୋସ ରହିଗଲା କି ଶେଷ ସମୟ ପୂର୍ବରୁ ଥରେ ସାର୍‌ଙ୍କ ସହିତ ଦେଖା ହୋଇପାରିଲା ନାହିଁ ବୋଲି ।

୨୦୦୩ ମସିହାରେ ଦାୟିତ୍ୱ ପାଇ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଆସିବା ପରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର କିଛି ବି ବଡ଼ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହେଲେ ଘରକୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ପତ୍ର ଦେବାକୁ ଯାଇ ସାର୍‌ଙ୍କ ସହିତ ସାକ୍ଷାତ ହୁଏ । ସବୁବେଳେ ପାଖକୁ ଡାକି ଖଟରେ ବସାଇ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଯେଉଁମାନଙ୍କୁ ସେ ଜାଣନ୍ତି ତାଙ୍କ ବିଷୟରେ ଭଲମନ୍ଦ ପଚାରନ୍ତି । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ବର୍ତ୍ତମାନର କାର୍ଯ୍ୟ ବିଷୟରେ ଶୁଣି ଖୁସି ହୁଅନ୍ତି ଏବଂ କିଛି ପରାମର୍ଶ ମଧ୍ୟ ଦିଅନ୍ତି ।

ଓଡ଼ିଶାରେ ଶିକ୍ଷାର ମାନର ବିକାଶ ପାଇଁ ତାଙ୍କର ସବୁବେଳେ ଚିନ୍ତା । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଆନୁକୁଲ୍ୟରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ଏକ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ହେଉ ବୋଲି ସେ ସବୁବେଳେ କଥା କଥାକେ କହନ୍ତି । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ଅଧ୍ୟାପକ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନଙ୍କ ଏକ ସମ୍ମିଳନୀରେ ସେ ଯୋଗ ଦେଇଥାନ୍ତି । ସ୍ୱସ୍ତଭାବେ ସେ ନିଜ ଭାଷଣରେ କହିଲେ ଯେ — “କେବଳ ନିଜର ଦରମା, ପରିବାର କଥା ଚିନ୍ତା କରନି, ଓଡ଼ିଶାରେ ଶିକ୍ଷାର ମାନ ବୃଦ୍ଧି ତଥା ଛାତ୍ରବସ୍ତ୍ର ହେବାପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ କର ।”

ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଅଧିବେଶନରେ ହୋଇଥିବା ପୁରାତନ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନଙ୍କ ଏକତ୍ରୀକରଣରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ଭାଷଣରେ ସେହି ଶିକ୍ଷାର ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ ଥିଲା ।

ତାଙ୍କର ଏକାଦଶାହ ତିଥିରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ପ୍ରଦେଶ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ଏକ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ସଭା ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା । ସେଠାରେ ତାଙ୍କର ସ୍ମୃତିଚାରଣ କରି ସୁବାସ ଭାଇ କହିଲେ ଯେ ଯେତେବେଳେ କୌଣସି ଛୋଟିଆ କଲେଜର ଅଧ୍ୟାପକ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସଭାପତି ହେବାପାଇଁ ରାଜି ହେଉନଥିଲେ ସେତେବେଳେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟର ଅଧ୍ୟାପକ ଥାଇ ୧୯୬୮ ମସିହାରେ ପରିଷଦ ସଭାପତି ହେବାପାଇଁ ରାଜି ହୋଇଗଲେ । ସେତେବେଳର ଓଡ଼ିଶାର ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ରାଜେନ୍ଦ୍ର ନାରାୟଣ ସିଂଦେଓଙ୍କ ଚାପ ଆଗରେ ମଧ୍ୟ ସେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଁଇ ନଥିଲେ । ଏହା ଶୁଣି ମୋ ମୁଣ୍ଡ କିନ୍ତୁ ସାର୍‌ଙ୍କ ସ୍ମୃତିରେ ନଇଁ ଯାଇଥିଲା ।



ଶିଶିରଭାଜ କହିଥିଲେ ଯେ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ପରିଷଦର ପୂର୍ଣ୍ଣକାଳୀନ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଭାବେ ସାର୍ବଜ୍ଞ ପ୍ରଥମ ସାକ୍ଷାତ କରିଥିଲି ସେତେବେଳେ ସାର୍ ତିନୋଟି କଥା କହିଥିଲେ - ୧. ନିଜକୁ ଭଲପାଅ, ୨. କାମ କଲାବେଳେ ବାରମ୍ବାର ଝୁଣ୍ଟିବ ସେଥିପାଇଁ କେବେ ପଛଘୁଞ୍ଚା ଦେବନାହିଁ, ୩. ଆଦର୍ଶ ପାଖରେ କେବେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଁଇବ ନାହିଁ । ଏ କଥା ଶୁଣି ମୋତେ ଲାଗିଲା ଏ ତିନୋଟି କଥା ତ ଆଜି ମଧ୍ୟ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରଯୁଜ୍ୟ ।

ଏକାଦଶାହରେ ଯେତେବେଳେ ଗାଁକୁ ଯାଇଥିଲି ଜାଣିଲି ଯେ ସେ ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପି.ଏଚ୍.ଡି. ପାଇଁ ଦେଇଥିବା ନିବନ୍ଧ ଏତେ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଥିଲା ଯେ ତାଙ୍କୁ ତୁରନ୍ତ ଡି.ଲିଟ୍. ଉପାଧି ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା । ତାଙ୍କ ବିଷୟରେ ସୌମେନ୍ଦ୍ର ଭାଇ କହୁଥିଲେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟିକ ନଟବର ସାମନ୍ତରାୟଙ୍କ ଭଳି ସାର୍ ମଧ୍ୟ ଜଣେ ଉଚ୍ଚକୋଟିର ସାହିତ୍ୟିକ । ଥରେ ସୌମେନ୍ଦ୍ର ଭାଇ ଯାଇଥିଲେ ସାର୍ଙ୍କ ପାଖରେ ପି.ଏଚ୍.ଡି. କରିବାପାଇଁ । ସାର୍ କହିଲେ ଏହି ୫୦ ଖଣ୍ଡ ବହି ପଢ଼ ତା'ପରେ ମୋ ପ୍ରଶ୍ନର ଉତ୍ତର ଦେବ, ପରେ ମୁଁ ତମର ଗାଇଡ଼ ହେବି ।

ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ଉପରେ ମୁଁ କେବଳ ଜାଣିଥିଲି ସରସ୍ୱତୀ ବିଲୁପ୍ତ ନଦୀ ବୋଲି । ଯେତେବେଳେ ସାର୍ଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ରଚିତ “ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା” ଶୀର୍ଷକ ୩ଟି ମୋଟା ମୋଟା ଗ୍ରନ୍ଥ ଦେଖି ବିଶ୍ୱାସ କରିପାରିଲି ନାହିଁ ।

ଲେଖିଲେ ତ ବହୁତ ହେବ . . . ଶେଷରେ ଏହି ମହାନ ବିଭୂତିଙ୍କ ପ୍ରତି ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ଗଭୀର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।



# ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତିରେ ଓତପୋତ ଏକ ବିରଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ

## ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ

ରମେଶ ଚରଣ ତ୍ରିପାଠୀ

ଅବସର ପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ (ଓଡ଼ିଆ)

ମୋ: ୯୪୩୭୦୧୯୨୩୭

ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାର କୃଷି ପ୍ରଧାନ ଏକ ପଲ୍ଲୀର ବାସିନ୍ଦା । ଏକ କୃଷକ ପରିବାରରେ ତାଙ୍କ ଜନ୍ମ । ବାଲ୍ୟରୁ ଯୁବାବସ୍ଥା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତିନି ଭାଇ ଓ ବାପା ମିଶି ବିଲବାଡ଼ିରେ କାମ କରି କୃଷି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ଏକ ସଫଳ ବୃତ୍ତି ଭାବରେ ପ୍ରମାଣିତ କରିଥିଲେ । ତଥାପି ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ଅଧିକାଂଶ ଭାଗ କଟିଥିଲା । ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଥିବା କ୍ଷେତ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଅଧ୍ୟାପନା କରି ଓଡ଼ିଶା, ଆସାମ, ବଙ୍ଗପ୍ରଦେଶ ଓ ଆଷ୍ଟ୍ରାଲୀୟା ପଢ଼ିବାପାଇଁ ଆସିଥିବା ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରୁଥିଲେ । ତା' ପୂର୍ବରୁ କଟକର ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ମଧ୍ୟ କିଛି କାଳ ଅଧ୍ୟାପନା କରିଥିଲେ । ଡି.ଲିଟ୍, ଉପାଧ୍ୟାୟ ଓ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ସହ ସଂସ୍କୃତରେ କମ୍ ପ୍ରବେଶ ନଥିଲା, ବରଂ ଯଥେଷ୍ଟ ପାଣ୍ଡିତ୍ୟ ଥିଲା । ତେଣୁ ଅଧ୍ୟାପନାରେ ସମସ୍ତ ବିଷୟର ମୂଳକୁ ସ୍ପର୍ଶ କରୁଥିଲେ ଓ ପ୍ରତ୍ୟେକ ତଥ୍ୟ ଓ ତତ୍ତ୍ୱକୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ପ୍ରତିପାଦନ କରୁଥିଲେ ।

ଶିକ୍ଷା ଦାନକୁ ବୃତ୍ତି ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଡଃ. ପ୍ରଧାନଙ୍କର ମୁଖ୍ୟ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ଥିଲା ଶିକ୍ଷା ମାଧ୍ୟମରେ ରାଷ୍ଟ୍ର ଗଠନ । ଭାରତୀୟ ଯୁବଶକ୍ତିକୁ ଜଣେ ଜଣେ ସଫଳ ଭାରତୀୟ ଭାବରେ ନିର୍ମାଣ କରିବା ଥିଲା ତାଙ୍କର ମୁଖ୍ୟ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ । ଅତଏବ ବିଦେଶୀମାନଙ୍କର ଭାରତ ଆକ୍ରମଣ ଓ ଇଂରେଜମାନଙ୍କର ନୂତନ ରାଷ୍ଟ୍ରଗଠନ ନାମରେ ଷଡ଼ଯନ୍ତ୍ର ସେ ଠିକ୍ ଭାବରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରିଥିଲେ ଓ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ସେ ଦିଗରେ ସଚେତନ କରାଉଥିଲେ । ଦେଶରେ ଏକ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ଯୁବ ସମାଜ ଗଠନ କରିବା ଲକ୍ଷ୍ୟ ହାସଲ ପାଇଁ ସେ ବ୍ରତୀ ଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ସେ ମୂଳତଃ ପ୍ରେରଣା ଗ୍ରହଣ କରୁଥିଲେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘର ବିଚାର ଓ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମଗୁଡ଼ିକରୁ ।

ଅତ୍ୟୁଚ୍ଚ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କର ଏକ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସଙ୍ଗଠନ । ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନ ତା'ର ବିଚାର ଓ କାର୍ଯ୍ୟପଦ୍ଧତିକୁ ବୁଝି ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶରେ ତା'ର କାର୍ଯ୍ୟକୁ ବିସ୍ତାର କରିବାପାଇଁ ଆଗ୍ରହୀ ଥିଲେ ଓ ଚେଷ୍ଟା ମଧ୍ୟ କରିଥିଲେ । ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ଏ ଦିଗରେ ଆକୃଷ୍ଟ କରାଇ ସକ୍ରିୟ କରିବାପାଇଁ ଚେଷ୍ଟା କରୁଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶର ବିଭିନ୍ନ କୋଣାନୁକୋଣରେ ଥିବା କଲେଜମାନଙ୍କୁ ପ୍ରବାସରେ ଯାଇ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଆକୃଷ୍ଟ କରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଏହି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ବିଚାରରେ ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ କରିବାପାଇଁ ତାଙ୍କର ପ୍ରବଳ ଆଗ୍ରହ ଓ ପ୍ରୟାସ ମଧ୍ୟ ଥିଲା । ସେଥିପାଇଁ ଅତ୍ୟୁଚ୍ଚ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ରାଜ୍ୟ ସଭାପତି ପଦକୁ ସେ ଅଳଙ୍କୃତ କରିଥିଲେ ଓ ପୁରା ପ୍ରଦେଶ ସେଥିପାଇଁ ପ୍ରବାସ କରୁଥିଲେ । ୧୯୬୭ ମସିହାରେ

ପୁରୀ ମହାନଗରୀରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦର ପ୍ରଥମ ରାଜ୍ୟ ଅଧିବେଶନ ସଫଳତାର ସହ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା ତାଙ୍କରି ନେତୃତ୍ୱ ଓ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ ଫଳରେ ।

ଇଷ ଇଷ୍ଟିଆ କମ୍ପାନୀ ଭାରତରେ ପଦାର୍ପଣ କରିବା ପରେ ଇଂଲଣ୍ଡର ଶାସକମାନେ ଏଠାର ଶାସନ ବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ କରାଯତ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ୧୮୩୪ ମସିହାରେ ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଲର୍ଡ଼ ମେକଲେଙ୍କୁ ପରିସ୍ଥିତି ଅନୁଧ୍ୟାନ କରିବାପାଇଁ ଭାରତବର୍ଷକୁ ପଠାଇଥିଲେ । ଭାରତ ଭ୍ରମଣ ପରେ ଲର୍ଡ଼ ମେକଲେ କ୍ରିଟିଶ ପାର୍ଲ୍ୟାମେଣ୍ଟକୁ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ତାଙ୍କ ରିପୋର୍ଟରେ ସେ ଉଲ୍ଲେଖ କରିଥିଲେ ଯେ — “ମୁଁ ଭାରତବର୍ଷର ପୂର୍ବରୁ ପଶ୍ଚିମ ଓ ଉତ୍ତରରୁ ଦକ୍ଷିଣ ଭ୍ରମଣ କଲି; କିନ୍ତୁ ଗୋଟିଏ ହେଲେ ତୋର ଦେଖିନାହିଁ । ଏ ଦେଶକୁ ଶାସନ କରିବା ସହଜ ନୁହେଁ । ସେଥିପାଇଁ ମୁଁ ଏକ ଶିକ୍ଷାନୀତି ପ୍ରଣୟନ କରିଛି । ତାହା କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ହେଲେ ଏ ଦେଶର ଯୁବ ସମାଜ ଆମ ଆଡ଼କୁ ଆକୃଷ୍ଟ ହେବେ ଓ ଆମକୁ ସମର୍ଥନ କରିବେ ।” ଇଂରେଜମାନେ ଭାରତରେ ପଦାର୍ପଣ କରିବା ପରେ ସେହି ଶିକ୍ଷାନୀତିକୁ କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କଲେ ଓ ଶତାଧିକ ବର୍ଷ ଭାରତକୁ ଶାସନ କଲେ । ଦେଶ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା ପରେ ସେହି ଶିକ୍ଷାନୀତି ପରିବର୍ତ୍ତିତ ହୋଇ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷାନୀତି ପ୍ରଣୀତ ହୋଇ ପାରିଲା ନାହିଁ । ଅତଏବ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ ନାମକ ଏକ ଅସ୍ଥଳ ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷା ସଂସ୍ଥା ସାରା ଦେଶରେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ନାମକ ବିଦ୍ୟାଳୟ ସ୍ଥାପନ କରି ସ୍ୱାଧୀନଚେତା, ସମର୍ଥ ଯୁବଶକ୍ତି ନିର୍ମାଣରେ ପ୍ରୟାସୀ ହେଲେ । ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ସେହି ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନାକୁ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶରେ ପ୍ରଚଳିତ କରିବାପାଇଁ ପ୍ରୟାସ କରି କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କଲେ । ଫଳରେ ୧୯୭୭ ମସିହାରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ମହାନଗରୀରେ ଯୁନିଟ୍-୩ରେ ଗଢ଼ି ଉଠିଲା ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରଥମ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର । ଆଜି ଧୀରେ ଧୀରେ ପ୍ରସାରିତ ହୋଇ ୪ ଦଶକ ପରେ ଏକ ହଜାର ସଂଖ୍ୟା ଅତିକ୍ରମ କରିବାକୁ ବସିଲାଣି । ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଏଥିପାଇଁ କରିଥିବା ଶ୍ରମ ଓ ଚିନ୍ତନ ଅବଶ୍ୟ ସ୍ମରଣୀୟ ।

ଏହିଭଳି ଭାବରେ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜୀବନ ଓ କାର୍ଯ୍ୟାବଳୀ ବିଶ୍ଳେଷଣ କଲେ ଜଣାପଡ଼େ ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ମହାନ ଆତ୍ମା । ଦେଶ ଓ ଦଶ ପାଇଁ ସଦା ଚିନ୍ତିତ ଓ କାର୍ଯ୍ୟବ୍ୟସ୍ତ । ନିଜେ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତିରେ ଓତପ୍ରୋତ ହେବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶର ଯୁବ ମାନସ ଓ ଚିନ୍ତନ ଗୋଷ୍ଠୀ ମଧ୍ୟରେ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତି ଜାଗ୍ରତ କରିବା ଓ ବିଭିନ୍ନ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚିନ୍ତନରେ ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ ରହି ସଚେତନ ନାଗରିକ ନିର୍ମାଣ ପାଇଁ ସେ ସତତ ପ୍ରୟତ୍ନଶୀଳ ଥିଲେ । ଆଜି ତାଙ୍କର ଦେହାନ୍ତ ହୋଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରତ୍ୟେକ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତର ଅନ୍ତରରେ ସେ ଜୀବନ୍ତ ରୂପେ ବିଦ୍ୟମାନ । ତାଙ୍କର ପବିତ୍ର ଆତ୍ମାର ସଦ୍‌ଗତି ହେଉ, ଏହା ହିଁ କାମନା ।





# ସରଳ, ନିଷ୍ପପଟ ଓ ନିର୍ବିବାଦୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସାଧକ

ଡଃ. ଦିଲୀପ କୁମାର ମୁଦୁଲି

ପୁରୁରା

ମୋ: ୯୪୩୮ ୨୯୧୧୯୪

ବିଚିତ୍ର ଏ ଦୁନିଆ, ବିଚିତ୍ର ଏ ସୃଷ୍ଟି ଓ ସ୍ରଷ୍ଟା । ସବୁଠୁ ବିଚିତ୍ର ଏହାର ଅସ୍ତ, ତନ୍ତ୍ର ଏବଂ ମନ୍ତ୍ର ସମୟ । ସମୟ ସମ୍ପର୍କଯୋଡ଼େ, ସମ୍ପର୍କତୋଡ଼େ । ଜନ୍ମ, ମୃତ୍ୟୁ ଆଉ ଜୀବନର ହିସାବ ନିକାଶ କରେନି । ନିରନ୍ତର ଧାଇଁଥାଏ । ନା ପଛକୁ ଅନାଏ ନା ଆଗାମୀ କାଲି ପାଇଁ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖେ । ନା ତା' ଉପରେ ଆସ୍ଥା ରଖୁହେବ, ନା ତାକୁ ବିଶ୍ୱାସ କରିହେବ । ସ୍ନେହ-ମମତା, ମାନ-ଅଭିମାନ, ପର-ଆପଣା, ଲଜ୍ଜ-ଲୁହ ସବୁକୁ ଠେଲି ସେ ତା' ବାଟରେ ଧାଏଁ ।

ନିଷ୍ପପଟ ଓ ସରଳ ମଣିଷ ମୋ ମଉସା ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଯେ ଆଉ ଇହ ଜଗତରେ ନାହାନ୍ତି ତାହା ବିଶ୍ୱାସ କରି ହେଉନାହିଁ । ଲାଗୁଛି ଯେପରି ତାଙ୍କ ଖଟ ଉପରେ ଶୋଇକରି ଗବେଷଣାତ୍ମକ ଓ ଜନମାନସରେ ଆନ୍ଦୋଳିତ କରିବାଭଳି ଲେଖା ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାର ଓ ଗୌତମ ବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ଓଡ଼ିଶା ବୋଲି ଲେଖୁଛନ୍ତି; କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁକୁ ସ୍ୱାକାର କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ସେ ମୋ ପାଇଁ ଆଦର୍ଶ ଥିଲେ । ସେ କହୁଥିଲେ ତୁମେ ଏପରି କାମ କର ଯେପରି ଯଶ ଓ ଖ୍ୟାତି ତୁମ ପଛରେ ଗୋଡ଼ାଇବ । ସେ ସାଲିସ ବିହନ ସାହିତ୍ୟିକ ଓ ଗବେଷକ ଥିଲେ । କେବେ ପ୍ରଚାରଧର୍ମୀ ନଥିଲେ । ମୁଁ ଯେତେବେଳେ କୁହେ ଯେ ଆଜିର ସାହିତ୍ୟ ସଭାରେ ସେ ଲୋକ ପୁରସ୍କାର ପାଇଲେ ଆଉ ସବୁ ସ୍ଥାନରେ କେବଳ ସେହିମାନଙ୍କୁ ଡକାଯାଉଛି । ସେ କୁହନ୍ତି ଆମେ ଏଭଳି ଲେଖା ଛାଡ଼ି ଯାଇଥିବା ଯାହା ଦୀର୍ଘଦିନ ଧରି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଓ ଜନମାନସରେ ତା'ର ଛାପ ରହିଯାଇଥିବ ଆଉ କାହିଁକି ଅନ୍ଧଦିନ ପାଇଁ ପ୍ରଚାରଧର୍ମୀ ଦୌଡ଼ରେ ରହିବ । ସେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସମୟରେ ଅନେକ କୃତି ଛାଡ଼ିଦେଇ ଯାଇଛନ୍ତି ତାହା ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳର ଗବେଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଆଧାର ହେବ । ତାଙ୍କ ଅଧ୍ୟାନରେ ମୋର ପି.ଏଚ୍.ଡି. ପ୍ରାପ୍ତ ହେବା ମୋପାଇଁ ବରଦାନ ସଦୃଶ ଥିଲା ।

ସେ ସବୁଥିରେ ଜଣେ ସଫଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଥିଲେ । ଚାଷୀ, ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ, ଗବେଷକ, ସାହିତ୍ୟିକ, ମୁରବି, ସଙ୍ଗୀତ ହିସାବରେ ସୁନାମ ଆଣିଥିଲେ । ତାଙ୍କ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ଆମେ ଯେପରି ହତବାକ୍ୟ ହୋଇଯାଇଛୁ ଆଶା କରୁ ଉପରେ ଥାଇ ସେହିଭଳି ଆଶୀର୍ବାଦ କରୁଥାନ୍ତୁ ଓ ତାଙ୍କର ଆତ୍ମା ଶାନ୍ତି ପାଉ ।



# ଅନନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍

ଡ. ପ୍ରକାଶଚନ୍ଦ୍ର ପାଣିଗ୍ରାହୀ  
ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ତଥା ବିଭାଗ ମୁଖ୍ୟ  
ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଓ ସାହିତ୍ୟ ବିଭାଗ  
ରା.ର.ମ.ବି.ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, ଖଲ୍ଲିକୋଟ  
ଚଳଭାଷ : ୯୮୬୧୪୧୩୭୦୧

ବହୁ ଜନ୍ମର ତପସ୍ୟା ଫଳରେ ମନୁଷ୍ୟ ଜନ୍ମ ମିଳେ । ଦେବତାମାନେ ଯେତେବେଳେ ଅଭିଶପ୍ତ ହୁଅନ୍ତି ପ୍ରଥମେ ମନୁଷ୍ୟ ଜନ୍ମ ପାଇଁ ନିବେଦନ କରିଥାନ୍ତି । କାରଣ ସେଇ ମନୁଷ୍ୟ ସାମାଜିକ ବିକାଶ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନିଷ୍ପାଦର ଉଦ୍ୟମ କରି ଉତ୍ତର ପୁରୁଷଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ ହୋଇ ରହିଯାଏ । ସେଥିପାଇଁ ବୋଧହୁଏ କୁହାଯାଇଛି “ନରତ୍ୱଂ ଦୁର୍ଲ୍ଲଭଂ ଲୋକେ” ଏହି ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱଗୁଡ଼ିକ ସଭାସମିତି ମାଧ୍ୟମରେ ହେଉ କିମ୍ବା ଆଲୋଚନା କିମ୍ବା ସମାଜର ସାମାଜିକ ଚରିତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଆଦର୍ଶଭିମୁଖୀ କରିବାରେ ଯଥେଷ୍ଟ ଭୂମିକା ଗ୍ରହଣ କରିଥାନ୍ତି । ସେହିପରି ଏକ ସରଳ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନିଷ୍ପାଦର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ହେଉଛନ୍ତି ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାର ଅଖ୍ୟାତପଲ୍ଲୀ ଅବିଧୁ ଆନନ୍ଦପୁର ଗ୍ରାମରେ ଜନ୍ମିତ (୧୯୩୬) ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ।

ପାରିବାରିକ କୃଷି କର୍ମଣ ସର୍ବସ୍ୱ ତଥା ଦାରିଦ୍ର୍ୟର କଷାଘାତରେ ବାରମ୍ବାର ପରୀକ୍ଷିତ ହୋଇଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱଟି ନିକଟସ୍ଥ କାଦୁଆପଡ଼ା ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପ୍ରାଥମିକ ଓ ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ସମାପ୍ତି ପରେ ସମସ୍ତ ବାଧା ପ୍ରତିବନ୍ଧକକୁ ଏଡ଼ାଇ ଦେଇ କଟକସ୍ଥ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରୁ କୃତିତ୍ୱର ସହ ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିଥିଲେ । ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଜୟଦେବଙ୍କ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ଉପରେ ପୁସ୍ତକ ରଚନା କରିଥିଲେ ଓ ପୁନଶ୍ଚ ଗବେଷଣାର ପରିସରକୁ ପରିବୃଦ୍ଧି କରି ସଫଳତାର ସହିତ ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ଦ୍ୱାରା ସର୍ବୋଚ୍ଚ ସମ୍ମାନ ଡି.ଲିଟ୍ ପାଇବାରେ ସକ୍ଷମ ହୋଇଥିଲେ । କର୍ମମୟ ଜୀବନରେ ସେ ପ୍ରଥମେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ୧୯୬୨ ରୁ ୧୯୬୭ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅଧ୍ୟାପକ ଭାବେ ଅଧ୍ୟାପନା, ୧୯୬୭ ରୁ ୧୯୯୬ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ପ୍ରଥମ ଅଧ୍ୟାପକ, ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଓ ପରେ ଅବସର ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ । ତତ୍କାଳୀନ ସମୟରେ ‘ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାର କି ବଙ୍ଗଳାର’ ଯେଉଁ ବିବଦମାନ ବିଷୟ ଥିଲା, ସେ ନିଜ ଗବେଷଣା ବଳରେ ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାରେ ଜନ୍ମିତ ଓ ତାଙ୍କ ‘ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ’ ଓଡ଼ିଆ ଭାବାବେଗ ସହିତ କିପରି ସଂପୃକ୍ତ ନିଜ ବୌଦ୍ଧିକ ତର୍କମା ଓ ପ୍ରାମାଣିକ ତଥ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ପ୍ରଥମ କରି ପ୍ରତିପାଦନ କରିଥିଲେ । ଏଥିପାଇଁ ତାଙ୍କୁ ତତ୍କାଳୀନ ସମୟରେ ବହୁ ସମାଲୋଚନା ତଥା ବିତର୍କର ଶରବ୍ୟ ହେବାକୁ ପଡ଼ିଥିଲା । କେବଳ ସେତିକି ନୁହଁ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଓ ସାହିତ୍ୟ ପାଇଁ ଥିବା ପ୍ରଗାଢ଼ ସ୍ନେହ ତାଙ୍କ ଲେଖନୀ ମୁନକୁ ଅଧିକ ବଳିଷ୍ଠ କରିବାରେ ସକ୍ଷମ ହୋଇଥିଲା । ସେ କବି ସମ୍ରାଟ ଉପେନ୍ଦ୍ରଭଞ୍ଜ, ସକୁଳବି ଭୀମଭୋଇଙ୍କ ନିର୍ଗୁଣ ତତ୍ତ୍ୱ, ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ରଚନାବଳୀର ଉପଯୋଗିତା ପଲ୍ଲୀକବି ନନ୍ଦକିଶୋର ବଳଙ୍କ ପଲ୍ଲୀ କବିତାର ବୌଦ୍ଧିକ ତର୍କମା ତଥା ତତ୍ତ୍ୱ ଓ ତଥ୍ୟକୁ ଭିତ୍ତିକରି ଯେଉଁ ସମାଲୋଚନା ଗ୍ରନ୍ଥ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି, ସେଥିପାଇଁ ସେ ପାଠକ ମହଲରେ ଚିର ପରିଚିତ ହୋଇ ରହିବେ । କେବଳ ସେତିକିରେ ସେ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ନହୋଇ “ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ” ନାମରେ ତିନୋଟି ସନ୍ଦର୍ଭ, ବୌଦ୍ଧ ପୁରୁଷ ‘ଗୌତମ

ବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ସମ୍ବଳିତ ପ୍ରାମାଣିକ ଇଂରାଜୀ ପୁସ୍ତକ ରଚନା ଓଡ଼ିଆ ବାଣୀ ଭଣ୍ଡାର ପାଇଁ ଏକ ସାରସ୍ୱତ ସାଧନାର ପ୍ରତୀକ ହୋଇ ରହିବ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ । ସେ ଜଣେ ନିଷ୍ଠାପର କର୍ତ୍ତବ୍ୟନିଷ୍ଠ ବ୍ୟକ୍ତି ଭାବେ ସମାଜରେ ପରିଚିତ ହେବା ସହିତ ଶୈକ୍ଷିକ ବୃତ୍ତିପ୍ରତି ରହିଥିବା ଅଜ୍ଞାକାରବଦ୍ଧତା ଛାତ୍ରସମାଜ ପାଖରେ ପ୍ରିୟପାତ୍ର ହେବାରେ ସହାୟକ ହୋଇଥିଲା । ସେ ନିଜ ଜୀବନକାଳର ସାଧନା ମଧ୍ୟରେ ଆଜୀବନ ବୌଦ୍ଧିକ ତଥ୍ୟ ଓ ତତ୍ତ୍ୱର ଉପସ୍ଥାପନା ଓ ମଣିଷ ଗଢ଼ିବାର ସ୍ୱପ୍ନକୁ ସାକାର କରି ଏକ ନୀରବ ସାଧକର ପଦ୍ମାକୁ ବୋଧ ହୁଏ ବାଛି ନେଇଥିଲେ । ବିବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନିଜର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱକୁ ପରିବୃଦ୍ଧି କରାଇପାରିଥିଲେ ମଧ୍ୟ ନିଜକୁ ବିଜ୍ଞାପିତ କରିବା କିମ୍ବା ସୁନାମ ପାଇବାର ସୁଯୋଗକୁ ସେ ସଦାସର୍ବଦା ଏଡ଼ାଇବା ପାଇଁ ସତତ ଚେଷ୍ଟା କରୁଥିଲେ । ମଣିଷ ପାଖରେ ମଣିଷ ହୋଇ ହୃଦୟ ବିନିମୟରେ ହୃଦୟ ଦେଇ ସାଧାରଣ ଜୀବନକୁ କ୍ରିୟାଶୀଳ କରାଇବାରେ ଯେଉଁ ସନ୍ତୋଷ ଲାଭ କରୁଥିଲେ ତାହାର ପ୍ରମାଣ ତାଙ୍କ ସାଧନା ମଧ୍ୟରୁ ହିଁ ବାରି ହୋଇପଡ଼େ । ତାଙ୍କର ପ୍ରତ୍ୟେକ କ୍ଷେତ୍ରର ଲୋକପ୍ରିୟତା, ନିର୍ବିକାର ସେବା, ସାହସ, ଧୈର୍ଯ୍ୟ ଓ ଏକନିଷ୍ଠ ମନୋଭାବ ତାଙ୍କୁ ଏକ ଆଦର୍ଶ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଭାବେ ସର୍ବସାଧାରଣରେ ପରିଚିତ କରାଇବାରେ ସକ୍ଷମ ହୋଇଛି । ଜୀବନ କାଳର ପ୍ରତିଟି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ମଣିଷର ସେବା ଓ ଆହ୍ୱାନକୁ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଚିନ୍ତନ ଆଧାରରେ ତଉଲି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘ ତଥା ବିବିଧ ସାମାଜିକ ତଥା ସାହିତ୍ୟିକ କ୍ଷେତ୍ର ଯଥା ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ସମିତି ଆଦିର କାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଜକୁ ନିୟୋଜିତ କରିଥିଲେ । ଯୁବକ ସମୟରେ ମଣିଷ ପରି ମଣିଷଟିଏ ପାଇଁ ଯାଦୁକରର ଭୂମିକା ନେଇ, ହଜାର ହଜାର ମଣିଷ ଗଢ଼ିବାର ଯେଉଁ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖୁଛନ୍ତି ଯାହା ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ସ୍ୱାଭିମାନକୁ ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ରଖିବାରେ ସହାୟକ ହୋଇଛି । ଥରେ ମୁଁ ତାଙ୍କ ବାସଭବନକୁ ଯାଇଥାଏ (୨୦୧୨ ମସିହାରେ) । ସେ ଜଣେ ବ୍ୟସ୍ତ ବିବ୍ରତ ମଣିଷ ପରି କହିଲେ ପାଣିଗ୍ରାହୀ ବାବୁ ଆପଣ ଜଣେ ଅଧ୍ୟାପକ ଭାବେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ସାକ୍ଷରତାର ଆଦି ଉତ୍ସ ‘ଜଗନ୍ନାଥ ଦାସ’ଙ୍କ ଉପରେ ଏକ ପ୍ରବନ୍ଧ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରନ୍ତୁ । ଆମେ ଏହାକୁ ‘ଭାଗବତଙ୍କ’ ଜନ୍ମ ଦିବସରେ ପ୍ରକାଶ କରିବା, ତତ୍ ସହିତ ପରବର୍ତ୍ତୀ ଲେଖା ‘ଚର୍ଯ୍ୟାଗୀତି ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଏକ ନିବନ୍ଧ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବେ । ସେଥିରେ ତାର୍କିକ ଓ ପ୍ରାମାଣିକ ବିଷୟବସ୍ତୁକୁ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥାନ ଦେଇଥିବେ । ତାଙ୍କର ପ୍ରେରଣା ଓ ଉତ୍ସାହ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ବିବିଧ ପ୍ରବନ୍ଧ ରଚନା କରିବା ପାଇଁ ଆଗ୍ରହ ସୃଷ୍ଟି କରିଥିଲା । ବିଶେଷ କରି ସମାଲୋଚନା ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସେ ଥିଲେ ଏକ ଅନନ୍ୟ ପ୍ରତିଭା । ପ୍ରତ୍ନତତ୍ତ୍ୱ, ଭୂବିଜ୍ଞାନ, ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଜ୍ଞାନ, ଅଣୁ ବିଜ୍ଞାନ ସହ ବେଦ, ଉପନିଷଦ, କିମ୍ବଦନ୍ତୀ, ଲୋକକଥା, ଲୋକ ସଂସ୍କୃତି ଆଧାରରେ ଇତିହାସର ତୁଟି ଓ ପ୍ରଚଳିତ ମତବାଦକୁ ଅନୁଶୀଳନ ଓ ପ୍ରମାଣ ପୂର୍ବକ ଖଣ୍ଡନ କରି ସତ୍ୟ ଓ ପ୍ରାମାଣିକ ତଥାଗୁଡ଼ିକୁ ଉପସ୍ଥାପନ କରିବାରେ ପାରଦର୍ଶିତା ହାସଲ କରିଥିଲେ ।

ସୁତରାଂ ପରିଶେଷରେ ଏତିକି କୁହାଯାଇପାରିବ ଯେ, ସେ ଜଣେ ଜନଗଣ ନେତା ହୋଇନଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଜଣେ ସୃଜନଶୀଳ କର୍ତ୍ତା, ମହାରାଜା ନହୋଇ ଜଣେ ମହାୟାନ ସାଧକ, ସାଧାରଣ ମଣିଷ ନହୋଇ ଏକ ସ୍ୱୟଂ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଣିଷ, ସାଧାରଣ ସମାସକ ନହୋଇ କୁଶଳୀ ଗବେଷକ, ଦଳପତି ନହୋଇ ଜଣେ ଦଳର ସଙ୍ଗଠକ ରୂପେ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଚିନ୍ତାରେ ଉଦ୍‌ବୁଦ୍ଧ ହୋଇ ଯେଉଁ ସାରସ୍ୱତ ସାହିତ୍ୟର ସର୍ଜନା କରିଛନ୍ତି, ନିଶ୍ଚିତ ରୂପେ ଏ ଜାତି ତାକୁ ମନେ ରଖିବ, ଏଥିରେ ଡିଲେ ମାତ୍ର ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ ।



## ଅମ୍ଳାନ ସାରସତ ସାଧକ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ

ଡଃ ଅମ୍ଳୟରଘୁ ମହାନ୍ତି

ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗ, ଡି.କେ.ଏନ୍. କଲେଜ, ଏରସ୍ତି, କଟକ

ମୋ: ୮୮୯୫୪୦୪୪୧୨

ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଜଗତର ପ୍ରାଚୀନ ସ୍ମରଣୀୟ ଆଲୋଚକ, ଅଧ୍ୟାପକ, ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ବାସ୍ତବରେ ଜଣେ ଅବିସ୍ମରଣୀୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ । ତାଙ୍କର ବିଦ୍ବତ୍ତା, ଛାତ୍ରବହୁଳତା ପାଇଁ ସେ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଖରେ ଗ୍ରହଣୀୟ । ତାଙ୍କର ବିରୋଧୀମାନେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ବିଦ୍ବତ୍ତାର ପ୍ରଶଂସକ । ଏହି ମହାନ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ସହ ମୋର ପରିଚୟ ହୁଏ ୨୦୧୦ ମସିହାରେ । ସେତେବେଳେ ମୁଁ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ ଭାବେ ହିନ୍ଦୀ ବିଭାଗର ଛାତ୍ର । ମୋର ପିଏଚ୍.ଡି.ର ବିଷୟବସ୍ତୁ ଥାଏ କବୀର ଓ ଅରୁଣାଚରଣ ଶୂନ୍ୟବାଦ, ପିଣ୍ଡ ବ୍ରହ୍ମାଣ୍ଡତତ୍ତ୍ବକୁ ବୁଝିବାପାଇଁ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଛାତ୍ର ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ସତ୍ୟକାମ ମିଶ୍ରଙ୍କଠାରୁ ଠିକଣା ନେଇ ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କରିବାକୁ ଯାଇଥାଏ । ତାଙ୍କ ସହ ସାକ୍ଷାତ ହୁଏ । ମୋ ଗବେଷଣାର ଶୀର୍ଷକ ଶୁଣି ସେ ଖୁବ୍ ଖୁସି ହୁଅନ୍ତି, କାର୍ଯ୍ୟରେ ସଫଳ ହେବାପାଇଁ ଆଶୀର୍ବାଦ ଦିଅନ୍ତି ତ ତାଙ୍କ ରଚିତ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା” ପୁସ୍ତକକୁ ବ୍ୟବହାର ସଂଗ୍ରହ କରିନେବାକୁ କୁହନ୍ତି ।

ତାଙ୍କ ପାଖରୁ ମୁଁ ସିଧା ବ୍ୟବହାର କାର୍ଯ୍ୟାଳୟକୁ ଆସେ । ସେଠାରୁ ଏ ବହି ଖଣ୍ଡକୁ ସଂଗ୍ରହ କରେ । ତା’ପରେ ଘରକୁ ଆସି ତାକୁ ପଢ଼ିବା ଆରମ୍ଭ କରେ । ସତରେ ଏହାକୁ ପଢ଼ିବା ପରେ ମୋ ଗ୍ରନ୍ଥସବୁ ଖୋଲିଯାଏ । ଗବେଷଣା ପାଇଁ ମୋତେ ନୂଆ ଦୃଷ୍ଟି ମିଳେ । ଶୂନ୍ୟବାଦକୁ ନେଇ ମୋର ଅବଧାରଣା ଦୂରୀଭୂତ ହୁଏ । ଏଥିରୁ ମୁଁ ଜାଣିବାକୁ ପାଏ ହିନ୍ଦୀ ସାହିତ୍ୟରେ କବୀର ଆଦି ସନ୍ଥମାନଙ୍କ ରଚନାରେ ଯେଉଁ ଶୂନ୍ୟତତ୍ତ୍ବର କଥା କୁହାଯାଇଛି ତା’ର ଆଦିଭୂମି ହେଉଛି ଉତ୍କଳ । ଏହାର ପ୍ରବର୍ତ୍ତକା ହେଉଛନ୍ତି ଲକ୍ଷ୍ମୀଙ୍କରା ।

ପଞ୍ଚସଖା ସାହିତ୍ୟରେ ଥିବା ଶୂନ୍ୟବାଦ ଏହି ପୁସ୍ତକର ଖୁବ୍ ସୁନ୍ଦର ଭାବେ ବର୍ଣ୍ଣିତ । କେବଳ ଶୂନ୍ୟବାଦ ନୁହେଁ ବାମନାର୍ଚ୍ଚର ଉପାତ କିପରି ଓଡ଼ିଶାର ଜନଜୀବନକୁ ଅସ୍ତବ୍ୟସ୍ତ କରିପକାଇଥିଲା ଓ ସେଥିରୁ ପଞ୍ଚସଖାମାନେ କିପରି ଓଡ଼ିଆ ଜାତିକୁ ରକ୍ଷା କରିଥିଲେ ଏହାର ଉଲ୍ଲେଖ ପୁସ୍ତକର ମହତ୍ତ୍ବକୁ ଦିଗୁଣିତ କରେ । କହିବା ବାହୁଲ୍ୟ ଯୁଗେ ଯୁଗେ ବାମନାର୍ଚ୍ଚମାନେ ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀମାନଙ୍କର ଶତ୍ରୁ । ପଞ୍ଚସଖା ଯୁଗରେ ବି ସେଇ ଅବସ୍ଥା ଥିଲା ଓ ଆଜି ମଧ୍ୟ ତାହା ବଳବତ୍ତର ।

ସଂସ୍କୃତରେ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିଦ୍ବତ୍ତା ସତରେ ଚମତ୍କାର, ଏହା କେବଳ ତାଙ୍କ ପୁସ୍ତକକୁ ଅଧ୍ୟୟନ କଲେ ହିଁ ଜାଣିପାରିବେ । ତାଙ୍କର ଗବେଷଣାତ୍ମକ ଦୃଷ୍ଟି ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପୂର୍ବାଗ୍ରହମୁକ୍ତ ଠିକ୍ ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ ‘ଭାବାଭାବୋବିନିର୍ମୁକ୍ତ’ ଭଳି । କହିବାକୁ ଗଲେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ତାଙ୍କର ଅବର୍ତ୍ତମାନ ସବୁଦିନପାଇଁ ଅପୂରଣୀୟ । ସେ ସତରେ ଜଣେ ଅମାୟିକ ବ୍ୟକ୍ତି ନଚେତ୍ ସେ ଯେଉଁ ସଙ୍ଗଠନଗୁଡ଼ିକ ସହ ଜଡ଼ିତ ଥିଲେ ତାଙ୍କପକ୍ଷେ ପଦ୍ମ ପୁରସ୍କାର ଯୋଗାଡ଼ କରିଦେବା କିଛି ବଡ଼ କଥା ନଥିଲା । କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କର ଭାବଧାରା ଏତେ ସଂକୀର୍ଣ୍ଣ ନଥିଲା ସେଥିପାଇଁ ତ ସେ ନଗେନ୍ଦ୍ର - ଅଟଳ, ଅଟଳ, ଅବିଚଳିତ । ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କଠାରୁ ତାଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁଖବର ପାଇ ଆଜି ମୁଁ ଖୁବ୍ ମିୟମାଣ । ଜଗନ୍ନାଥ ମହାପ୍ରଭୁ ଅମର ଆତ୍ମାକୁ ପୁନଶ୍ଚ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ସେବା କରିବାପାଇଁ ଏହି ଉତ୍କଳ ଭୂଖଣ୍ଡକୁ ପ୍ରେରିତ କରନ୍ତୁ, ଏହା ହିଁ କାମନା ।

## ତାଙ୍କ ବିଷୟରେ ଯାହା ଶୁଣିଛି

ସୌମେନ୍ଦ୍ର ମନଜିର୍ ବିଶ୍ୱାଳ

ଛନ୍ଦାମୁଷ୍ଟ, ଯାଜପୁର

ମୋ: ୮୦୯୩୬୯୫୮୧୨

କାନ ପାଖରେ କେଇଟା ଶବ୍ଦ ସକାଳ ପ୍ରହରୁ ଦିନଯାକ ପିଟି ହେଉଥାଏ । ସଭିଙ୍କ ପାଟିରେ ସେଇ ଗୋଟିଏ କଥା । ଆଜିକାଲି ତ ଫେସ୍‌ବୁକ୍ ଓ ହ୍ୱାଟ୍‌ସପ୍ ଗ୍ରୁପ୍‌ରେ ବି ସେଇ ଲେଖା । ମୋ ଚିହ୍ନା ପରିଚୟ ଭାଇମାନେ ବି ସେଇ କଥା କହୁଥିଲେ । ଏତେଆଡୁ ଶୁଣିବା ପରେ ମନଟା କାହିଁକି କେଜାଣି ଚିରି ହେଇଗଲା । କ'ଣ ବର୍ଷା ପାଗରେ ଗଛ ପତ୍ରଝଡ଼ା ଦିଏ ? ଏତେ ସବୁ ପରେ ମୁଁ ବି ଫେସ୍‌ବୁକ୍‌ରେ ତ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆଉ ଦୁନିଆରେ ନାହାନ୍ତି ବୋଲି ଏକ ପୋଷ୍ଟ କରିଦେଲି । ମୋର ସାଙ୍ଗମାନେ ପଚାରୁଥାନ୍ତି ତୁ କ'ଣ ଯାଙ୍କୁ ଜାଣିଛୁ, ଚିହ୍ନିଛୁ ଏମିତି କିଛି ପ୍ରଶ୍ନ । ହେଲେ ମୁଁ ତ କେବଳ ଶୁଣିଛି । ସଂଗଠନ କାମ ଓ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ କାମ ଭିତରୁ ସମୟ କାଢ଼ି ବେଳେବେଳେ ଆମେ ଅନୌପଚାରିକ ଚର୍ଚ୍ଚାରେ ବସିପଡୁ । ଓଡ଼ିଶାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଭାବନା ଓ ବିଚାରକୁ କିଏ କିଏ ଆବାଳବୃଦ୍ଧବନିତାଙ୍କ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚାଇଛନ୍ତି । ଏମିତି କଥାହେଉ ହେଉ ନାଆଁ ଆସେ, ହରିହର ଦା, ଭୂପେନ୍ ବସୁ, ବାବୁରାଓଜୀ ପାଲ୍‌ୟକର, ବାବୁରାଓ ଦେଶପାଣ୍ଡେ ଓ ତ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ।

ରାଜଧାନୀ ନିଜର କାୟା ବଢ଼ାଇ ଚାଲିଛି । ସଂଗଠନର କାମ ମଧ୍ୟ ସେହି ଆଧାରରେ ବଢ଼ି ଚାଲିଛି । ଏତେ କାମ ଭିତରୁ ଆମେ ଫୁରୁସତ୍ ପାଇବା କଷ୍ଟକର । ପୁରୁଣା ସମୟର କାମ ଆଉ ଏବେ ନାହିଁ । ଅନେକ ଟେକ୍‌ନୋଲୋଜି ଓ ମିଡ଼ିଆକୁ ନେଇ କାମ ହେଲାଣି । ତଥାପି ସେମାନଙ୍କୁ ବେଳେବେଳେ ସେଟ୍ କରିବାକୁ ମନ କହେ । ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଗଠନର ବିସ୍ତାର ପାଇଁ ପ୍ରାରମ୍ଭ ଅବସ୍ଥାରେ କେତେ କେତେ ଝଡ଼ଝଞ୍ଜା ସହି ନଥିବେ ସେମାନେ !

ତ. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଜଣେ ଶିକ୍ଷକ ଭାବରେ ଶିକ୍ଷା ଜଗତର ବିକାଶ ତଥା ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଠିକ୍ ରାସ୍ତାରେ ନେବାପାଇଁ ପୂରାପୂରି ତଜ୍ଞ ଥିଲେ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତିକୁ ଓଡ଼ିଶାର ପୁରପଲ୍ଲୀରେ ପହଞ୍ଚାଇ ଆହ୍ୱାନମୂଳକ ଭାବରେ ସୁଦୃଢ଼ କରି ଆଜି ପାହାଡ଼ ପରି ଛିଡ଼ା କରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାର ଶିକ୍ଷା ଜଗତରେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କର କୃତିତ୍ୱ ପାଇଁ ତ. ପ୍ରଧାନଙ୍କ କୌଶଳ ହିଁ ଦାୟୀ । ଏ ତ ରହିଲା ବିଦ୍ୟାଳୟର କଥା । ମୁଁ ଯାହା ଶୁଣିଛି ତ. ପ୍ରଧାନ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ସ୍ତରରେ ମଧ୍ୟ କିଛି କମ୍ ଅବଦାନ ଦେଇ ନାହାନ୍ତି । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦକୁ କଟକ, ଭୁବନେଶ୍ୱର ଏବଂ ଆମ ରାଜ୍ୟର ପ୍ରମୁଖ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ସ୍ତରରେ ପହଞ୍ଚାଇ କିପରି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଖରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟତାର ବିଚାର ପହଞ୍ଚି ପାରିବ ସେଥିପାଇଁ ପ୍ରବଳ ପରିଶ୍ରମ କରିଥିଲେ । ଜଣେ ଶିକ୍ଷାଗୁରୁ ଭାବରେ ସେ ଅନେକ ପରୋକ୍ଷ ଏବଂ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଶିକ୍ଷ୍ୟ ନିର୍ମାଣ କରିଛନ୍ତି । ତ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରତି ଅହେତୁକ ଭଲ ପାଇବା ଥିଲା । ବ୍ୟକ୍ତିଗତ



ଭାବେ ସେ ଅନେକ ଲେଖା ମଧ୍ୟ ଲେଖିଛନ୍ତି । ସର୍ବଭାରତୀୟ ସ୍ତରର ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦକୁ ଓଡ଼ିଶାରେ ଠିଆ କରିବାପାଇଁ ନିଜେ ସଭାପତି ଦାୟିତ୍ବକୁ ବହନ କଲେ । ଏହାର ଫଳସ୍ବରୂପ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚେତନାର ସାହିତ୍ୟ ଏବେ ସବୁ ଜିଲ୍ଲା ଓ ବ୍ଲକ୍‌ରେ ଦୃଶ୍ୟମାନ । ବେଳେବେଳେ ଶୁଣିବାକୁ ମିଳେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଗଠନକୁ ଚିରଦିନପାଇଁ ବଞ୍ଚାଇ ରଖିବାକୁ ତ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅସରନ୍ତି ନଦୀସ୍ବରୂପ ବହିଚାଲିଥିଲେ । ଆଜି ସେ ନଦୀ ସମୁଦ୍ରରେ ମିଶି ଯାଇଛି ।

ବର୍ତ୍ତମାନର ଯୁବ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନେ ପୁରୁଣା ସମୟ ଭଳି କାର୍ଯ୍ୟ କରୁ ନାହାନ୍ତି ସତ ହେଲେ ପୁରୁଣା କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କଠାରୁ ନିଶ୍ଚିତ ପ୍ରେରଣା ନେବୁ ।

ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଭାବରେ ନ ଦେଖିଲେ ମଧ୍ୟ ଦୂରରୁ ଥାଇ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କଠାରୁ ଶୁଣି ଶୁଣି ଏକଲବ୍ୟ ଭଳି ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଆଦର୍ଶ ଓ ପ୍ରେରଣାକୁ ହୃଦୟରେ ସ୍ଥାନ ଦେଇ ଆଗକୁ ବଢ଼ିବାର ସଂକଳ୍ପ କରୁଛି ।



## ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅବିସ୍ମରଣୀୟ ସାଧକ-ସ୍ରଷ୍ଟା

ସତଳ ମଣିଷ ଜୀବନରୁ ଚକ୍ରର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ବିଦାୟ ନେବା ପ୍ରସଙ୍ଗ ବିଳମ୍ବରେ ଜାଣି ଯାଇଛି । ତାଙ୍କ ସହିତ ଏ ଲେଖକର ପରିଚୟ ୧୯୬୮ ରୁ । ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ଓଡ଼ିଶାର ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନ ପରିକ୍ରମା କରି ଓଡ଼ିଆଙ୍କ ଅତୀତ ଜ୍ଞାନ ସଞ୍ଚିତ ପୋଥି ଖୋଜୁଥାନ୍ତି, ପାଇଲେ ପଢ଼ୁଥାନ୍ତି, ଆବଶ୍ୟକ ସ୍ଥଳେ ସେ ସେନି ଲେଖାଲେଖି କରୁଥାନ୍ତି । ଏହି କାମରେ ସେ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲା, ରଘୁନାଥପୁର ଥାନା ଅଧୀନସ୍ଥ କପାଳେଶ୍ବର ଗାଆଁର ବୁଝୁଦିଆ ଗାଁ ଯାଆନ୍ତି । ଏ ସମୟକୁ ଲେଖକ ନବମ ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ର, ମହେଶ୍ବର ହାଇସ୍କୁଲ, ଗୁଆଳିପୁରରେ । କପାଳେଶ୍ବର ଓ ଗୁଆଳିପୁର ମଠରେ ବିଚିତ୍ରରେଖା ହଂସୁଆ ନଈ ଯାହା ହେଉ, ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ସେ କାଳରେ ବଢ଼ି ଛକରେ ଡିମ୍ବାଇ ଦେଉଥିଲେ ବଢ଼ି ହାଇସ୍କୁଲର ପ୍ରଧାନ ଶିକ୍ଷକ ସ୍ବର୍ଗତ ଗମନରତ୍ନ ସ୍ବାଇଁ ସେବେଠାକୁ ତାଙ୍କ ମର୍ତ୍ତ୍ୟ-ବିଦାୟ ଯାଏ, ଏ ଲେଖକ ତାଙ୍କର ଯାହା ଯାହା ସାରସ୍ବତ କୃତି ଏବଂ ସଂଗଠନିକ କୃତିକୁ, ସଫଳ ଶିକ୍ଷାଦାନରୀତି ଓ ସେବା ପରାୟଣତାକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରିଛି, ସେହି ଆଳରେ ଭାବିବାକୁ ହେଉଛି- ଓଡ଼ିଆଭାଷା, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ, ଓଡ଼ିଆ ଜାତି, ଓଡ଼ିଆ ସଂସ୍କୃତି, ଓଡ଼ିଶା ଏବଂ ଓଡ଼ିଶାର ଗାୟକ୍ତବ୍ୟଙ୍କ ସଂପର୍କରେ ଏଠି ଯେତେକାଳ ତର୍କ ଚଳୁଥିବ, ସତେତନତାର ଚିହ୍ନଟି ଜଳୁଥିବ, ସେବଦାଏ ଚକ୍ରର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅମରପୁରୁଷ ରୂପେ ଉଦ୍‌ଘୋଷିତ ହେଉଥିବେ । ନଗେନ୍ଦ୍ର ବାବୁ ଗୁରୁତିଆଗାଦିରୁ ଗୋଟିଏ ପୋଥିପ୍ରାପ୍ତ ହେଲେ, ଯହିଁରେ ଜୟଦେବଙ୍କ ଚିନ୍ତିଗୋଟି ଗୀତିକବିତା ଅପଭ୍ରଂଶ ଭାଷାରେ ଲେଖାଯାଇଥିବା ସେ ପାଠକଲେ । ତାଙ୍କ ଭିତରେ ପ୍ରତ୍ୟୟ ଆସିଲା- 'ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ' ରଚୟିତା ଦ୍ବୀପଶ ଶତାବ୍ଦୀର ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଆଦିକବି । ଏ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବିସ୍ତୃତ ତର୍କ କଲେ 'ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ' (୧୯୭୧) ପୁସ୍ତକରେ । ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ଦିଗ ଓ ବ୍ୟାସ ପୂର୍ଣ୍ଣତଃ ସଂସ୍କୃତି ଓ ଇତିହାସ ଆଧାରିତ ଥିଲା ଯାହା ଆଜିସୁଦ୍ଧା ଓଡ଼ିଆ ସମାଲୋଚନା ସାହିତ୍ୟ ଧାରାରେ ଅନବିକ୍ରମଣୀୟ ଯୋଗ ରହିଛି । ଓଡ଼ିଆ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ରଥିବା କାଳରେ ସେ ୧୯୫୮ ମସିହାବେଳକୁ ରଠିତ 'ଅଭ୍ୟୁଦୟ ସାହିତ୍ୟ ସମାଜ'ର ଯୁଗ୍ମ ସଂପାଦକ ଥିଲେ । ଏହି ଅନୁଷ୍ଠାନ ତରଫରୁ ପ୍ରକାଶ ପାଇଥିବା ପୁସ୍ତକାବଳୀ ମଧ୍ୟରେ 'ଓଡ଼ିଆ ଉପନ୍ୟାସ ସାହିତ୍ୟ ପରିଚୟ' (୧୯୬୯) ଏକ ଉପାଦେୟ ସମ୍ପାଦିତ କାର୍ଯ୍ୟ । ଔପନ୍ୟାସିକ ଗୋଦାବରୀଶ ମିଶ୍ରଙ୍କ ସଂପର୍କରେ

ଅବଶିଷ୍ଟାଂଶ-ପୃ-୧୦୨

## ପ୍ରେରଣାର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ

ପ୍ରାବନ୍ଧିକ ଶ୍ରୀ ଶିବ ପ୍ରସାଦ ପଟ୍ଟନାୟକ

ପ୍ରାନ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକାରିଣୀ ସଦସ୍ୟ

ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ହିନ୍ଦୋଳ, ମୋ: ୬୩୭୦୩୧୮୧୩୯

ସାହିତ୍ୟ ଜଗତପାଇଁ ଅନନ୍ତ ପ୍ରେରଣାର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଆଜି ସଭାହୀନ ପାଲଟି ଯାଇ ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ଜଗତକୁ ସ୍ତବ୍ଧ ରକିତ କରି ଦେଇଛନ୍ତି । ପ୍ରେରଣାର ସେହି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଥିଲେ — ଓଡ଼ିଶାରେ ବେସରକାରୀ ଭାବେ ଗଢ଼ି ଉଠିଥିବା ଶିକ୍ଷାନୁଷ୍ଠାନ “ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର” ଗୁଡ଼ିକର ଆଦ୍ୟସ୍ରଷ୍ଟା । ଜାତୀୟସ୍ତରରେ ଗଠିତ ବେସରକାରୀ ଶୈକ୍ଷିକ ଗୋଷ୍ଠୀର ଉପ ସଭାପତି । ଜୀବଦଶାରେ ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗର ବରିଷ୍ଠ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଓ ତତ୍କର୍ତ୍ତା ପାହ୍ୟାରେ ଥିଲାବେଳେ ତାଙ୍କ ଅଧୀନରେ ଅନେକ ଓଡ଼ିଆ ଅଧ୍ୟାପକ ପିଏଚ୍.ଡି., ଡିଲିଟ୍ କରି ସ୍ୱକାୟ ଶିକ୍ଷା ଦିଗକୁ ସ୍ପର୍ଷିତ କରି ପାରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାର କବି ଜୟଦେବ, ବେଦବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀର ଭାଗ-୧, ୨ ଓ ୩ ଏବଂ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା ନାମରେ ତଥ୍ୟ ସମ୍ବଳିତ, ବିଭିନ୍ନ ଶିଳାଲିପି, ବେଦ, ବେଦାନ୍ତ, ଉପନିଷଦର ଉଦାହରଣରେ ସମୃଦ୍ଧ ପୁସ୍ତକମାନ ରଚନା କରି ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ଜଗତକୁ କାଳଜୟୀ ସୃଷ୍ଟିସମ୍ଭାର ପ୍ରଦାନରେ ସକ୍ଷମ ହୋଇଛନ୍ତି । ସେହି ପ୍ରଚଣ୍ଡ ପ୍ରତିଭାଧର ସାରସ୍ୱତ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱକୁ ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା ଅନ୍ତିମ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସଭାପତି ଆସନରେ ଆସୀନ କରାଇ ସାହିତ୍ୟର ସମ୍ମାନବୋଧକୁ ନୂତନ ଦିଗକୁ ପ୍ରଦାନ କରିଅଛି । ସେହି ପ୍ରତିଭାଧର ହେଉଛନ୍ତି ତତ୍କୁର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ।

ଏ ଧରାଧାମରୁ ତାଙ୍କର ପାର୍ଥବ ଶରୀର ତିରୋହିତ ହେବା (ତା. ୨୬.୦୬.୨୦୧୮) ସାହିତ୍ୟ ଜଗତରୁ ଅନନ୍ତ ପ୍ରେରଣାର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଲୁପ୍ତ ହେବା ସହିତ ତୁଳନା ଯଥାର୍ଥ ଅଟେ । ତତ୍କୁର ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଏକ ନିବନ୍ଧ “ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ” ଶିରୋନାମାରେ ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା, ନୟାଗଡ଼ ଶାଖାଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ ପତ୍ରିକା-୧୯୧୭-୧୮ରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି । ସମ୍ଭବତଃ ତାହା ତତ୍କୁର ପ୍ରଧାନଙ୍କ କଲମ ମୁନ ନିଃସୃତ ଅନ୍ତିମ ସାହିତ୍ୟିକ ହୃଦାଭାଷ । ତହିଁର କିୟଦାଂଶ ପାଠକୀୟ ଆଦୃତି ନିମନ୍ତେ ଏଠାରେ ଉଲ୍ଲେଖ କରାଗଲା — “ମହାବାକ୍ୟ - ରସୋ ବୈ ସଃ, ଆହ୍ଲାଦ ଓ ତନ୍ମୟତାରେ ଉପଲବ୍ଧ ସେହି ରସ ହେଉଛି ନିତ୍ୟାନନ୍ଦମୟ ବା ସତ୍+ଚିତ୍+ଆନନ୍ଦମୟ ପରମ ଅଧାତ୍ମତତ୍ତ୍ୱ । . . . ଅମୃତମୟ ଅଧାତ୍ମତତ୍ତ୍ୱକୁ ମର ଜଗତର ନାନା କଳ୍ପନାରେ ଅକୃତ୍ରିମ ସନ୍ନିଶ୍ଚିତ କରି ନୈସର୍ଗିକ ଅମୃତୋପମ ରସରେ ସ୍ରଷ୍ଟା, ଶ୍ରୋତା, ବକ୍ତା ବା ପାଠକର ଚିତ୍ତ ହରଣ କରି ସୁମଧୁର ସୋମପାନର ଆସ୍ବାଦନ ଦିଏ ଓ ମୁଗ୍ଧ ବିମୋହିତ କରେ । ତେଣୁ ସାହିତ୍ୟର ସ୍ରଷ୍ଟା ଜଣେ ଜଣେ ସାଧକ, ବିଶ୍ୱ କଲ୍ୟାଣ ସେମାନଙ୍କର କାମନା । . . . ବିଶ୍ୱାତ୍ମତେଜନ, ପାରିବାରିକ ଆତ୍ମାୟତାର ସ୍ନେହ-ପ୍ରେମ-ମୈତ୍ରୀର ଅଛେଦ୍ୟ ବନ୍ଧନରେ ସମଗ୍ର ଜଗତକୁ ଏକାତ୍ମ କରିବା ଏ ଦେଶର ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟିର ଚରମ ଲକ୍ଷ୍ୟ । . . . କେବଳ ପ୍ରାଚ୍ୟ ସଭ୍ୟତାର ଜନନୀ ନୁହେଁ କେବଳ

ପ୍ରାଚ୍ୟ ସଭ୍ୟତାର ଜନନୀ ନୁହେଁ, ଭାରତବର୍ଷ ପରୋକ୍ଷରେ ବହୁ ଭାବରେ ସମଗ୍ର ବିଶ୍ୱର ମଧ୍ୟ ଜନନୀ । . .

ସତ୍ୟ-ଶିବ-ସୁନ୍ଦର ଚେତନା ବା ସତ୍+ଚିତ୍+ଆନନ୍ଦମୟ ଚିରନ୍ତନ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦାନ ହେଉଛି ଆମ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟିରେ ଆଧାର । ଏହା ହେଉଛି ଆମର ଶାସ୍ତ୍ରସମ୍ମତ ଆଦର୍ଶ ଓ ଏହା ମଧ୍ୟ ମନୁଷ୍ୟ ସମଗ୍ରର କଲ୍ୟାଣକାମୀ ଭାବାଦର୍ଶ ଓ ଆମ ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଦାର୍ଶନିକ ପୃଷ୍ଠଭୂମି ।”

ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱରର ସାହିତ୍ୟିକ ପ୍ରତିନିଧି ମଣ୍ଡଳରେ ଏ ଲେଖକ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହିତ ଏଠାକାର ସଙ୍ଗଠନ ମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ନାରାୟଣ ନାୟକଙ୍କ ବ୍ୟବସ୍ଥାରେ ନଅଜଣିଆ ଦଳ ୧୯୧୨ରେ ଭୋପାଳରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ତ୍ରିଦିବସୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମେଳନୀରେ ଅଂଶ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲା । ଏହି ସମ୍ମେଳନୀରେ ଭାରତର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାନ୍ତରୁ ପ୍ରାୟ ୨୦ କବି, ଲେଖକ ଯୋଗଦାନ କରିଥିଲେ । ଅସମିୟା, ତେଲଗୁ, ବଙ୍ଗଳା, ଓଡ଼ିଆ ଆଦି ବିଭିନ୍ନ ଭାଷାର ୧୩ ଗୋଟି ଭାଷାର ୧୩ଜଣ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକଙ୍କୁ ସାଲ, ମାନପତ୍ର ପ୍ରଦାନ ସହ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ କରାଯାଇଥିଲା । ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକମାନେ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ପରେ ପରେ ସ୍ୱକାୟ ମତ ରଖିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଥିଲେ । ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ସ୍ୱକାୟ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ମତରେ ସାହିତ୍ୟ ସ୍ଥିତିକୁ ଅତି ପ୍ରାଞ୍ଜଳଭାବେ ପରକ୍ଷିଥିଲେ, ଯାହା ଅତୀବ ଆନନ୍ଦଦାୟକ ଅନୁଭୂତି ଥିଲା । ପରବର୍ତ୍ତୀ ପର୍ଯ୍ୟାୟରେ ଝାନ୍ସୀଠାରେ ୧୯୧୪ରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ତ୍ରିଦିବସୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମେଳନରେ ଏକ ଲେଖକ ଏକଗିତ କବିମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଜଣେ ହୋଇ “ରାଷ୍ଟ୍ରଚିନ୍ତନ” ନାମରେ ସପ୍ତପଦ ବିଶିଷ୍ଟ ହିନ୍ଦୀ କବିତା ପାଠ କରିଥିଲା । ୧୯୧୬ରେ ଲକ୍ଷ୍ନୌଠାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ତ୍ରି-ଦିବସୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମେଳନରେ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରତିନିଧି ମଣ୍ଡଳରେ ମଧ୍ୟ ଏ ଲେଖକ ସ୍ଥାନ ପାଇଥିଲା । ଝାନ୍ସୀ ଏବଂ ଲକ୍ଷ୍ନୌ ସମ୍ମେଳନକୁ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟଗତ କାରଣରୁ ଯାଇ ନ ପାରିବାରୁ ତାଙ୍କ ଅନୁପସ୍ଥିତିକୁ ସମସ୍ତେ ଅନୁଭବ କରିଥିଲେ ।

ସର୍ବଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସଙ୍ଗୋଷ୍ଠୀ କଛ-ଗୁଜୁରାଟ ଯାହା ଭାରତ-ପାକିସ୍ତାନର ସୀମାନ୍ତ ଅଞ୍ଚଳ-ନଶାବେଡ଼କୁ ୨୭, ୨୮, ୨୯, ୩୦ ସେପ୍ଟେମ୍ବର ୨୦୧୨ରେ ଗସ୍ତ କରି ଯୁଦ୍ଧ ପ୍ରଭାବିତ ଅଞ୍ଚଳର ଗ୍ରାମବାସୀଙ୍କ ସହ ଦୁଃଖ-ସୁଖ ବାଣ୍ଟିଛନ୍ତି, ତତ୍ପୂର୍ବରୁ ଏହି ସଂଗୋଷ୍ଠୀ ୧୧, ୧୨, ୧୩ ଅଗଷ୍ଟ ୨୦୧୨ରେ ସୀମାନ୍ତ ଗ୍ରାମ ଲାହୋଲ ଗସ୍ତ କରି ଅନୁଭୂତି ଲାଭ କରିଛନ୍ତି, ୨୮, ୨୯, ୩୦ ନଭେମ୍ବର ୨୦୧୨ ଏବଂ ୦୧.୧୨.୨୦୧୨ରେ ଜଗନ୍ନାଥ ଧାମ, ପୁରୀ, ଓଡ଼ିଶାକୁ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସଙ୍ଗୋଷ୍ଠୀର ୯ଜଣିଆ ପ୍ରତିନିଧିମଣ୍ଡଳ ଶ୍ରୀଧର ପରାଡ଼କରଙ୍କ ନେତୃତ୍ୱରେ ଗସ୍ତ କଲାବେଳେ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ (ପ୍ରବେଶ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ଓଡ଼ିଶା), ଶ୍ରୀ ନାରାୟଣ ନାୟକ (ସଙ୍ଗଠନ ମନ୍ତ୍ରୀ, ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରାନ୍ତ), ଶ୍ରୀ ସନ୍ତୋଷ କୁମାର ପାତ୍ର (ଫୁଲବାଣୀ-କନ୍ଧମାଳ), ଶ୍ରୀ ଶିବ ପ୍ରସାଦ ପଟ୍ଟନାୟକ (ଡେକାନାଲ-ହିନ୍ଦୋଲ), ଶ୍ରୀ ଜ୍ୟୋତି ରଞ୍ଜନ ନନ୍ଦ (ଯାଜପୁର) ତାଙ୍କ ସହିତ ଗସ୍ତ କରିଥିଲେ । ପୁରୀର ନୋଲିଆ ବସ୍ତି, ଧଉଳଗିରି ପ୍ରଭୃତି ଗସ୍ତ ପରେ ଯୁଥ୍ ହଷ୍ଟେଲ, ପୁରୀଠାରେ ୦୧.୧୨.୨୦୧୨ରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ବୈଠକରେ ପ୍ରତିନିଧିମଣ୍ଡଳକୁ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଓଡ଼ିଶା, ଜଗନ୍ନାଥ ମହାପ୍ରଭୁ ତଥା ଏଠାକାର ସାହିତ୍ୟିକ କାର୍ଯ୍ୟକଳାପ, ଜନଜୀବନ ସମ୍ବନ୍ଧ

ଏକ ମାର୍ମିକ ଅଭିଭାଷଣ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ, ଯହିଁରେ ସର୍ବଭାରତୀୟ ପ୍ରତିନିଧି ମଣ୍ଡଳ ପୁରୀ ସମ୍ମେଳେ ଏକ ସ୍ପଷ୍ଟ ଚିତ୍ର ପାଇ ପ୍ରାତ ହୋଇଥିଲେ । ବୈଠକରେ ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କର ସାହିତ୍ୟିକ ଭାବାବେଗ ସର୍ବୋଚ୍ଛ୍ୱସ୍ତ ତଥା ମନୋମୁଗ୍ଧକର ଥିଲା ।

ସର୍ବଭାରତୀୟ ସଙ୍ଗୋଷ୍ଠୀର ଅନୁଭୂତି ଆଧାରରେ “ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନ ଯାତ୍ରା” ନାମରେ ଏକ ହିନ୍ଦୀ (ଯାତ୍ରା ବିଶେଷାଙ୍କ) ଅଞ୍ଚଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ନ୍ୟାସ ଦିଲ୍ଲୀଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଥିଲା ଯହିଁରେ ଏ ଲେଖକର ଏକ ହିନ୍ଦୀ କବିତା “ବସୁଧୈବ କୁରୁମ୍ୟକମ୍” ସ୍ଥାନୀତ ହୋଇଥିଲା । ତାକୁ ସଂଦର୍ଶନ କରି ଅଞ୍ଚଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା, ସମ୍ପାଦକ ଶ୍ରୀ ସତ୍ୟୋଷ କୁମାର ମହାପାତ୍ର ଏବଂ ପରିଷଦର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଏ କବିକୁ ସ୍ୱକୀୟ ସବୁଷ୍ଟ ବ୍ୟକ୍ତି ପୂର୍ବକ ଉତ୍ସାହ ଦେଇଥିଲେ ଯାହାକି ଏ ଲେଖକ ପାଇଁ ଏକ ଅପାସୋରୀ ଅନୁଭୂତି ହୋଇ ରହିଛି ।

ଏ ଲେଖକ ଓଡ଼ିଶା ବାହାରେ ହେଉଥିବା ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମେଳନକୁ ଯାତ୍ରା ଅବକାଶରେ ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଟ୍ରେନ୍‌ରେ ଦାୟିତ୍ୱର ସହ ନେବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଛି । ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଏକାନ୍ତଭାବେ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରିବାରୁ ଜାଣି ପାରିଛି ଯେ - ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନ ଜଣେ ସ୍ପଷ୍ଟବାଦୀ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚେତନାଯୁକ୍ତ, ମିଷ୍ଟବାଦୀ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ । ନାରୀ ପୁରୁଷ ଭେଦଭାବ ରହିତ ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ମିଷ୍ଟ ସମ୍ବାଷଣ, ଆତ୍ମୀୟତା ମନକୁ ମୁଗ୍ଧ କରି ତୋଳିଥାଏ । କେବଳ ଜଣେ ସାହିତ୍ୟିକ ନୁହଁନ୍ତି ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ଆନ୍ଦୋଳନେ ଜଣେ ସାମାଜିକ, ମିଷ୍ଟବାଦୀ, ଲବ୍ଧପ୍ରତିଷ୍ଠ ସଙ୍ଗଠକ, ସାରସ୍ୱତ ପ୍ରତିଭାଙ୍କ ତୀବ୍ର ଅଭାବ ଅନୁଭବ କରିବା ସ୍ୱାଭାବିକ ।

ଅଞ୍ଚଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଦାୟିତ୍ୱରେ ଥିଲେ ହେଁ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ରଚନାରେ ସର୍ବଭାରତୀୟ ଚେତନା ପ୍ରକାଶିତ ହେବାର ଲକ୍ଷ୍ୟ କରାଯାଏ । ସର୍ବୋପରି ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ସମଗ୍ର ସାହିତ୍ୟ ଜଗତର ଏକ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ପ୍ରତିଭା । ସାହିତ୍ୟ ଜଗତପାଇଁ ତାଙ୍କର ବିଯୋଗ ଅପୂରଣୀୟ ଏହା ସ୍ୱୀକାର୍ଯ୍ୟ । ଏଣୁ ତାଙ୍କ ତିରୋଧାନ ପାଇଁ କୁହାଯାଇ ପାରିବ ଯେ - “ଯାଇଛି ଅମର ଧାମେ, କୁହାଯିନା ମୃତ୍ୟୁ ନାମେ, ବାହୁଡ଼ା ବିଜୟ ତାର ନୁହଁଇ ମରଣ ।”

ପୁନଶ୍ଚ “ଅମର ମରଣ ଯାର, ନାହିଁ ନାହିଁ ମୃତ୍ୟୁ ତା’ର

ନ ଛୁଇଁବ କାଳ ତାକୁ ନ ଛୁଇଁବ ମସୀ ।”

ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦ୍‌ଗତି ନିମନ୍ତେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ କୃପାଭିକ୍ଷା କରୁଅଛୁ । ସାହିତ୍ୟ ଜଗତର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଜ୍ଞାପନ ପୂର୍ବକ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅପୂରଣୀୟ କ୍ଷତିକୁ ବିନମ୍ରତାର ସହ ଗ୍ରହଣ କରିବା ସହିତ ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନ ଓଡ଼ିଶା ମାଟିରେ ପୁନଃ ଜନ୍ମ ନେଇ ଓଡ଼ିଶାର ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟକୁ ପୁନଃ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦିଅନ୍ତୁ ।



## ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଆଉ ମୁଁ

ଏ. ସତ୍ୟୋଷ କୁମାର ପାତ୍ର

ପ୍ରାନ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକାରିଣୀ ସଦସ୍ୟ

ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ଫୁଲବାଣୀ, ମୋ: ୯୪୩୯୩୧୧୦୪୪

ଜଣେ ଆକାଶ ତ ଅନ୍ୟ ଜଣେ ଗୋଟିଏ ବାଲିକଣା ସହ ସମାନ । ପ୍ରଜ୍ଞାବିତ, ଜ୍ଞାନୀ, ଲେଖକ, ସାଧକ, ସତ କହିଲେ ସେ ବ୍ୟକ୍ତି ନ ଥିଲେ, ଥିଲେ ଏକ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଏକ ବିରଳ ପ୍ରତିଭା । ମୁଁ ସେହି ନମସ୍ୟ ସାରଙ୍କ ସାହିତ୍ୟକୃତି ଉପରେ କିଛି ଆଲୋଚନା କରିବି ନାହିଁ । କାରଣ ତାଙ୍କର ଲେଖା ବହି ଦେଖି କିଛି ପଢ଼ିବାକୁ ସାହସ କରିପାରି ନାହିଁ । କେବଳ ଛୋଟ ତୁଣ୍ଡରେ ବଡ଼ କଥାଟିଏ ଲେଖିବି ବୋଲି କଲମ ଧରି ବସିଛି । ବଖାଣିବାକୁ ବସିଛି ତାଙ୍କ ସହିତ ବିତେଇଥିବା କେତୋଟି ମୁହୂର୍ତ୍ତର କଥା । ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ସହ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଯାଇ ତାଙ୍କୁ ଭେଟିଥିଲି ଗତଥର ଭୁବନେଶ୍ୱର କାର୍ଯ୍ୟକାରିଣୀ ବୈଠକ ପରେ । ଦେଖାଇଥିଲି ମୋ ପାଣ୍ଡୁଲିପି “କ୍ରାନ୍ତିକାରୀଓଁ କୀ ଗୌରବ ଗାଥା”ର ଅନୁବାଦ । ଅଭିମତ କେଶୁବାକୁ କଥା ଦେଇଥିଲେ । ଭଲ ବହିଟିଏ ହେବ ବୋଲି ଆଶୀର୍ବାଦ ଦେଇଥିଲେ; କିନ୍ତୁ ମୋ ଭାଗ୍ୟରେ ନଥିଲା । ତେବେ ତାଙ୍କ ସହ ମୋର ପ୍ରଥମ ଭେଟ କେବେ ହୋଇଥିଲା ମନେ ନାହିଁ; କିନ୍ତୁ ଅନୁଗୋଳ ନାଲକୋ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ବଳରାମ ଦାସ ଜୟନ୍ତୀ ପାଳନ ଅବସରରେ ତାଙ୍କ ସହ ରାତିଟିଏ ବିତେଇଥିଲି । ରାତିସାରା କେତେ ଯେ କଥା କେତେ ଆଲୋଚନା କେତେ ତରୁଣତା କଥା ସବୁ ମୋ ମନ ହୃଦୟ ଭିତରେ ଅଲିଭା ଗାର ହୋଇ ରହିଗଲା । ପୁଣି ପୁରୀର ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧନ ଯାତ୍ରାରେ ଚାରିଦିନ ତାଙ୍କ ପାଖରେ କଟେଇଥିଲି । ଗଲା ଜନ୍ମର କୌଣସି ଏକ ପୁଣ୍ୟ କାରଣରୁ ଏହି ମହାନ ସନ୍ଥଙ୍କ ସାନ୍ନିଧ୍ୟ ପାଇପାରିଛି । ନନ୍ଦନକାନନର ବଣଭୋଜିରେ ମୋ କଥାରେ ସେ ହସି ଉଠିଥିଲେ । ମୋର ପୂର୍ବ ସ୍ୱକୃତରୁ ସେହି ଭଗୀରଥଙ୍କୁ ଫୁଲବାଣୀ ଆଣି ପାରିଥିଲି ୨୦୧୫ ସେପ୍ଟେମ୍ବରରେ । ତାଙ୍କର ସେବା କରିବାର ସୁଯୋଗ ମୋତେ ମିଳିଥିଲା । ତାଙ୍କରି ଆଶୀର୍ବାଦ ଓ ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ଆଗ୍ରହରୁ ମୁଁ ସାହିତ୍ୟିକରୁ ସଙ୍ଗଠକ ହୋଇପାରିଲି । ତାଙ୍କ ସହ ପୁଣି ମୋ ସହରରେ ତିନି ଦିନ ତାଙ୍କ ପାଖେ ପାଖେ ରହିଲି । ମୋ ପାଇଁ ତାଙ୍କର ଗର୍ବ ଜାଣି ମୋ ମନ ଭଲ୍ଲସିତ ହୋଇଥିଲା । ମୋ ବାପା ମାଆ କହିଥିଲେ — ହେଇଚି, ମୋ ପୁଅ ଆଜି ଫୁଲବାଣୀରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କରୁଛି । ମୁଁ ଆଜି ବହୁତ ଖୁସି । ଯେତେବେଳେ ଜଣେ ମଣିଷ ପଚାଶ ବର୍ଷ ବୟସରେ ନିଜକୁ ବୁଢ଼ା ମଣିଷ ବୋଲି ଭାବୁଛି ଆଉ ସେ ଅଣୀ ବର୍ଷ ବୟସରେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଦେଖିବାକୁ ପହଞ୍ଚିଥା ଅଞ୍ଚଳ ଫୁଲବାଣୀକୁ ଧାଇଁ ଆସିଥିଲେ । କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ବିଷୟରେ ଜାଣିବାକୁ ବାରମ୍ବାର ଫୋନ୍ କରୁଥିଲେ । ଆଉ ବା କ’ଣ ଲେଖିବି । ଲେଖିଲାବେଳକୁ ତ ମୁଁ ଶବ୍ଦ ପାଉ ନାହିଁ । କେବଳ ଏତିକି କହିବି ଯେ, ଏ ଜାତିର ଭଗୀରଥଙ୍କୁ ପୁଣି ଓଡ଼ିଶାର ମଙ୍ଗଳ ପାଇଁ ଫେରିଆସିବାକୁ । ଏହା ହିଁ ତାଙ୍କପ୍ରତି ମୋର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।





# ଜଗତ୍‌ସିଂହପୁରର ପ୍ରଜ୍ଞାସିଂହ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ

ଡ. ବଂଶୀଧର ଦାଶ

ଆଜ୍ଞାବନ ସଦସ୍ୟ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ବାଲେଶ୍ୱର, ଫୋ: ୯୪୩୫୪୬୦୪୯

ବିକ୍ରମ ସମ୍ବତ୍ ୧୯୯୩ କାର୍ତ୍ତିକ କୃଷ୍ଣ ଦ୍ୱାଦଶୀ ମଙ୍ଗଳବାର ଏକ ଶୁଭ ଲଗ୍ନରେ ଓଡ଼ିଶାରେ ଜନ୍ମିତ ଏକ ବ୍ୟକ୍ତି ଏବଂ ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଜାଣିବା, ବୁଝିବା, ବିଶ୍ୱାସ କରିବା ଓ ହୃଦୟଙ୍ଗମ କରିବାକୁ ହେଲେ ସର୍ବପ୍ରଥମେ ତାଙ୍କ ଜନ୍ମ ପୂର୍ବରୁ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଭୂଖଣ୍ଡ ବ୍ରିଟିଶ୍ ପାର୍ଲାମେଣ୍ଟରେ ଲର୍ଡ୍ ମେକେଲେଙ୍କ ଅଭିଭାଷଣକୁ ଅକ୍ଷରେ ଅକ୍ଷରେ ପଢ଼ିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଯେଉଁ ବକ୍ତବ୍ୟର ନିର୍ଯ୍ୟାସ ଥିଲା — I proposed that we (British Rule) Replace her (India) old and ancient education system and culture... They (Indians) will loose their esteem their native culture and they will be come what we want them a trully dominated nation.

ଜଗତ୍‌ସିଂହପୁରର ପ୍ରଜ୍ଞାସିଂହ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ତାଙ୍କ ଜୀବନକାଳର ଏକ ମାତ୍ର ଲକ୍ଷ୍ୟ ଥିଲା ମେକେଲେଙ୍କ ନିର୍ଦ୍ଦେଶରେ ବ୍ରିଟିସ୍ ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ୱାରା Replace କରାଯାଇଥିବା Education System and ancient cultureକୁ ପୁନଃ Replace କରିବା । ଅର୍ଥାତ୍ Replace to the Replace or place what it was. ବ୍ରିଟିଶ୍ ଅନୁଦାନରେ ଖ୍ରୀଷ୍ଟିୟ ବିଦ୍ୱାନମାନଙ୍କ ତଥ୍ୟ ଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତକୁ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ରତା ସମ୍ମାନ ବ୍ୟୟରେ ନିଜର ଶାଣିତ ଯୁକ୍ତି, ଉପଲବ୍ଧ ତଥ୍ୟ ଓ ପ୍ରଚଳିତ ପରମ୍ପରାକୁ ଉଦ୍ଧୃତ କରି ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଚିନ୍ତନକୁ ପ୍ରତିହତ କରିବାର ଅଦମ୍ୟ ପ୍ରଚେଷ୍ଟା ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଏକ ଦୁର୍ମୂଲ୍ୟ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଅବଦାନ ଅଟେ ।

ଭାରତକୁ ଶାସନ କରିବାପାଇଁ ତାର ବୌଦ୍ଧିକ ଶକ୍ତିକୁ ଉପାଟନ କରିବା ସକାଶେ ଯେଉଁ ପ୍ରଚଣ୍ଡ କୌଶଳ, କେତେକ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୱାନଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ଓ କପଟପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ମାନର ପ୍ରଲୋଭନଦ୍ୱାରା ଆଦୁଘାତୀ ଅସ୍ତ୍ର ପ୍ରୟୋଗ କରାଇ ଭାରତୀୟମାନଙ୍କୁ ଦୁର୍ବଳ, ବିଭୀଷିତ ତଥା ପରସ୍ପର ପ୍ରତି ସ୍ୱର୍ଗକାତରତା ଭାବର ବିଷ ମଞ୍ଜି ବୁଣି ଉଭୟ ଅର୍ଥଶକ୍ତି ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଓ ଶୌର୍ଯ୍ୟଶକ୍ତି ଦୁର୍ଗାକୁ ନିଜର ଅଧସ୍ତନ ସେବିକା କରାଇଥିଲେ । ସ୍ୱାଧୀନତା ଲାଭ ପରେ ମଧ୍ୟ ବୌଦ୍ଧିକ ଶକ୍ତି ସରସ୍ୱତୀ ସେମାନଙ୍କ କବଳରୁ ମୁକ୍ତ ହୋଇ ପାରିଲେ ନାହିଁ । ସେ ସମସ୍ତ ତଥ୍ୟକୁ ଲୋକଲୋଚନକୁ ଆଣିଛନ୍ତି ପ୍ରଫେସର ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ । ଏହାହିଁ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜୀବନର ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ ।

ବାଇବେଲକୁ ଗୌରବମଣ୍ଡିତ କରି ଓଲ୍ଟ ଟେସ୍ତାମେଣ୍ଟ ସମୟ ସହିତ ଭାରତୀୟ ବୈଦିକ ସଂସ୍କୃତିକୁ ସମକାଳୀନ କରିବାର ଏକ ହୀନ ପ୍ରଚେଷ୍ଟାର ପରଦା ଫାଟ୍ କରିଛନ୍ତି ଡଃ ପ୍ରଧାନ । ଆୟାଉଲ୍‌ଣ୍ଡର ଆର୍କବାସପଦ ରେଭେରେଣ୍ଡ ଉଷାର ବାଇବେଲ ଆଧାରରେ ବିଶ୍ୱ ସୃଷ୍ଟିର ସମୟ ଖ୍ରୀଷ୍ଟପୂର୍ବ ୪୦୦୪ ଅକ୍ଟୋବର ୨୩ ତାରିଖ ବୋଲି ଘୋଷଣା କରିଥିଲେ । ପୁନଶ୍ଚ ଏହାକୁ ଯେ ବିରୋଧ କରିବ ସେ ଶାସ୍ତି ପାଇବ ବୋଲି

ଯୋଷଣା କଲେ । ଯାହାର ପ୍ରଭାବରେ ସମସ୍ତ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ବେଦ ଗବେଷଣା ପ୍ରଭାବିତ ହେଲା । ଖ୍ରୀଷ୍ଟିୟ ବେଦ ଗବେଷକ ଉଇଲିୟମ୍‌ଗ୍ରୀପଥ, ମେକଡୋନାଲ୍ ଓ ହରମୋନଜାକୋବି ପ୍ରଭୃତି ଯେଉଁ ସବୁ ତଥ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ ତାହାକୁ ଡଃ ପ୍ରଧାନ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରି ସେମାନଙ୍କ ବିଚାର ଉପରେ ପ୍ରଶ୍ନବାଚୀ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି । ଇଂରାଜୀ ବିଦ୍ୱାନ ଉଇଲିୟମ୍ ଜୋନସ୍ ଓ କୋଲବୁକ୍ ଯଦିଓ ସ୍ୱବିଚାରରେ କିଛି ସ୍ୱାଧୀନ ମତ ଉପସ୍ଥାପନ କରିବାର ପ୍ରୟତ୍ନ କରୁଥିଲେ ତାହା ତତ୍କାଳୀନ ପ୍ରଶାସନ ମିଶନାରୀଙ୍କ ସହଯୋଗରେ ଭାରତରେ ଉପନିବେଶବାଦୀ ଶାସନ ନୀତି ପ୍ରଭାବିତ କରୁଥିଲା । ଛଦ୍ମବେଶୀ ଭାରତୀୟ ତତ୍ତ୍ୱବିତ୍‌ମାନଙ୍କର ମାନସିକତା ଓ ଅଭିମତ ଆଦୌ ମୁକ୍ତ ନ ହେବାର ପ୍ରମାଣ ନିଜେ ଡଃ ପ୍ରଧାନ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିଛନ୍ତି । ମେକ୍‌ସମୁଲାରଙ୍କ ବିଦ୍‌ବତ୍ତାରେ ଯୌବନର ଔଜ୍ଜ୍ୱଳ୍ୟ ଓ ପରିଣତ ବୟସରେ କୃତକର୍ମର ସ୍ୱାକାର ପ୍ରଭୃତି ପୁଙ୍ଖାନୁପୁଙ୍ଖ ବିଶ୍ଳେଷଣ କରି ମୃତ୍ୟୁର ଦ୍ୱାରଦେଶରେ ପ୍ରଦାନ କରିଥିବା ତାଜଙ୍ଗ୍ ଷ୍ଟେଟ୍‌ମେଣ୍ଟକୁ ଲୋକଲୋଚନକୁ ଆଣି ବାସ୍ତବ ସତ୍ୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିବାରେ ଡଃ ପ୍ରଧାନ ସମର୍ଥ ହୋଇଛନ୍ତି ।

ତାଙ୍କ ଜୀବନର ପରମ ଲକ୍ଷ୍ୟ ଥିଲା ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟା, ବିଜ୍ଞାନ, ବୈଦ୍ୟ, ଶୈର୍ଯ୍ୟ, ବୀର୍ଯ୍ୟ ଓ ଅସ୍ଥିତାର ପୁନଃ ପ୍ରତିଷ୍ଠା । ବେଦ ବହିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା ତାଙ୍କର ସ୍ୱଳାୟ ଶୋଧପ୍ରକଳ୍ପ, ଶୋଧଗ୍ରନ୍ଥ ୩ ଖଣ୍ଡରେ ପ୍ରକାଶିତ । ପ୍ରଥମ ଖଣ୍ଡ ୪୭୧ ପୃଷ୍ଠା ବିଶିଷ୍ଟ, ଦ୍ୱିତୀୟ ଖଣ୍ଡ ୭୭୧ ପୃଷ୍ଠା ଓ ତୃତୀୟ ଖଣ୍ଡ ୭୭୨ ପୃଷ୍ଠା ବିଶିଷ୍ଟ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଓଡ଼ିଶା ତାର ପ୍ରକାଶନର ଭାର ବହନ କରିଛନ୍ତି ।

ଓଡ଼ିଆ ଭକ୍ତି ସାହିତ୍ୟରେ ଗଭୀର ଅନୁରକ୍ତ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ଭକ୍ତ କବି ଦାନକୃଷ୍ଣ ଦାସଙ୍କ ଭକ୍ତି ସାହିତ୍ୟର ଗୁରୁତତ୍ତ୍ୱ ଓଡ଼ିଆ ପାଠକବର୍ଗଙ୍କୁ ଜଣାଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଉପାସନା ଧାରାର ସବିଶେଷ ବର୍ଣ୍ଣନା କରି ତତ୍ତ୍ୱଦର୍ଶୀମାନଙ୍କୁ ବିମୁଗ୍ଧ କରିଛନ୍ତି । ସ୍ୱଭାବ କବି ଗଙ୍ଗାଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ ଲୋକଲୋଚନକୁ ଆଣି ତାର ବିଶ୍ଳେଷଣାତ୍ମକ ସମୀକ୍ଷା କରିବା ତାଙ୍କର ଅନ୍ୟତମ ବଳିଷ୍ଠ ଅବଦାନ । ଏତଦ୍‌ବ୍ୟତୀତ ବିଭିନ୍ନ ପତ୍ର ପତ୍ରିକାରେ ମୌଳିକ ଚିନ୍ତନ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଅଧିକ ଲୋକପ୍ରିୟ କରିପାରିଛି ।

ଜଣେ ମିଷ୍ଟଭାଷୀ ଯୋଗୁଁ ତାଙ୍କର ସାଂଗଠନିକ ଦକ୍ଷତା ବହୁ ସଂଗଠନକୁ ମଜବୁତ କରିପାରିଛି । ବିଶ୍ୱ ହିନ୍ଦୁ ପରିଷଦର ପ୍ରଥମ ଆବାହକ ଭାବେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଗଠନ ଏବେ ବଳିଷ୍ଠ । ସେ ଥିଲେ ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଓଡ଼ିଶା ଓ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରଥମ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ସଭାପତି । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ଶୈକ୍ଷିକ ସଂଗଠନ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀୟ ୨୦୦୪-୨୦୦୫ର ଉପସଭାପତି, ଭାରତୀୟ ବିକାଶ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ସଭ୍ୟ । ସେ ମଧ୍ୟ ଥିଲେ ଓଡ଼ିଶାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷଣମଣ୍ଡଳ ଓ ଇତିହାସ ସଂକଳନର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ସଭ୍ୟ । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ପ୍ରଚେଷ୍ଟାରେ ଅଟଳ ବିହାରୀ ବାଜପେୟୀଙ୍କ ଜନ୍ମତିଥିରେ କବିତା ପାଠୋତ୍ସବ ଓ ଆଲୋଚନା ଚକ୍ର ୨୦୦୧ରୁ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାନ୍ତରେ କରାଯାଇ ଭାରତୀୟ ଚେତନାର ସାହିତ୍ୟ ଆଲୋଚିତ ହେଉଥିଲା । ଏହି ପ୍ରୟାସକୁ ସୁସଂଗଠିତ କରି ଏକ ଗବେଷଣା ସଂସ୍ଥା ସ୍ଥାପନ କରିବା ଥିଲା ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଉପଦେଶ । ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଜଙ୍ଗିତରେ ୨୦୧୪ରେ ରୂପ ନିଏ ଅଟଳ ବିହାରୀ ରସର୍ଟ ଇନ୍‌ଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ । ମଧ୍ୟପ୍ରଦେଶରେ ଏହି ନାମରେ ଏକ ସଂସ୍ଥା ଥିବାରୁ ନାମାନ୍ତରିତ ହୁଏ ଅଟଳ ବିହାରୀ ବାଜପେୟୀ ରିସର୍ଟ ଇନ୍‌ଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍, ଭୁବନେଶ୍ୱର ନାମରେ । ଏହାର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ସଭାପତି

ଥିଲେ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ପ୍ରାଚ୍ୟ ଚିନ୍ତାଧାରାର ଗବେଷକ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଚିନ୍ତନର ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କ ପାଇଁ ତଃ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ଏକ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ ଏବଂ ସର୍ବଭାରତୀୟ ମୂର୍ଦ୍ଧନ୍ୟ ପ୍ରାଚ୍ୟ ବିଦ୍ୱାନଙ୍କ ଶଙ୍ଖାବିମୋଚକ । କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ସ୍ତରର କୌଣସି ଦକ୍ଷିଣପଦ୍ମୀ ବିଦ୍ୱାନ ଓଡ଼ିଶା ଆସିଲେ ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସହ ସାକ୍ଷାତ ଥିଲା ଅନ୍ୟତମ ଲକ୍ଷ୍ୟ ।

ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘର ଜଣେ ଶୃଙ୍ଖଳିତ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଶାରେ ସେ ଥିଲେ ଏକ ନିର୍ବିବାଦୀୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ଅଧିକାରୀ । ଖ୍ୟାତି ଥିଲା ଓ ସଭିଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧାଭାଜନ ଥିଲେ । ଜୀବନର ଶେଷ ନିଃଶ୍ୱାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସେ ଥିଲେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ, ସାଂଗଠନିକ ପରାମର୍ଶକ, ବୈତାରିକ ଦିଗ୍‌ବର୍ଣ୍ଣକ ଓ ସ୍ନେହ ଶ୍ରଦ୍ଧାର କେନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ ।



## ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ସାହିତ୍ୟର ଏକନିଷ୍ଠ ସାରସତ ସାଧକ

**ବ**ର୍ତ୍ତମାନ ଜଗତବିଦମ୍ବର ବିଭାବେ ଅଧ୍ୟାତମତା ଅବଧାନର ପୂର୍ବରୁ ଏକ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ନୃସିଂହବର୍ଣ୍ଣବ ଚରିତ୍ର ପରିବାରରେ ୧୯୩୬ ମସିହାରେ ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ । ନିଜତତ୍ତ୍ୱ ବାବୁଅପତ୍ନୀ ଭବ ବିଦ୍ୟାବତୀଙ୍କର ପ୍ରାଥମିକ ଓ ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ଭେଲେନ୍ସୀ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷାପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥିଲେ କେବଳ ସାଧୁ ପ୍ରତିଭା ଆଉ ନିଷ୍ଠା ବଳରେ । ଅତି ଜଳ୍ପ ବୟସରେ ନିଜସ୍ୱ ଗବେଷଣାରେ ସଫଳ ହୋଇ ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ସର୍ବୋଚ୍ଚ ଉପାଧି ଡି.ଲିଟ୍‌ରେ ଲୁଣ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲେ ।

ଜୟଦେବଙ୍କ ବିଶ୍ୱଚର୍ଯିତ କାବ୍ୟ ଗୀତଗୋବିନ୍ଦ ଥିଲା ତାଙ୍କର ଗବେଷଣା କ୍ଷେତ୍ର ଏବଂ ତତ୍ତ୍ୱବେତ ଓଡ଼ିଶାର ବୋଲି ପ୍ରଥମ କରି ପ୍ରତିପାଦନ ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ସେ ସମାଲୋଚନା ଓ ବିତର୍କର ଶରଣ୍ୟ ହୋଇଥିଲେ । ବର୍ତ୍ତମାନର ଗବେଷକମାନେ ତାହା ସାକାର କରିବାରେ ଶତମୁଖ ହୋଇଉଠିଛନ୍ତି । ସବୁ କବି ଭାମଲୋଚନଙ୍କ ନିର୍ଣ୍ଣୟତତ୍ତ୍ୱ ଏବଂ ସରାତ କବି ଗଙ୍ଗାଧରଙ୍କ ଉତ୍ତମାବଦୀ ତାଙ୍କର ସାଧନା କ୍ଷେତ୍ର ପାଇଁଟି ସାଧନା । ସେ ଉପେନ୍ଦ୍ରଭଞ୍ଜ ଏବଂ ପଦ୍ମାବତୀ ନନ୍ଦ ବିଶୋର ବଳଦ ସାହିତ୍ୟ ନୂତି ପର୍ଯ୍ୟାଲୋଚନାପୂର୍ବକ ପ୍ରକାଶ କରାଇଥିଲେ । ତେତଦନ୍ତରା ସରସତୀ ନାମରେ ତିନୋଟି ସପର୍ଶ ଓ ନିଷର୍ପ ସନ୍ଦିଗ୍ଧବିତ ମହା ସ୍ତୁତ ଉତ୍ତମା ପରିଣତ ବୟସରେ ତାଙ୍କର ଉଦ୍‌ଗମ

### ତଃ ବିଲିପ କୁମାର ମୁକୁଳି

ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରେମ ଏବଂ ସରସତ ସାଧନାର ପ୍ରତୀକ । ଗୌତମବୃଦ୍ଧଙ୍କର କନ୍ଦୁସାନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାବ୍ୟାତ୍ମକ (ସମ୍ବନ୍ଧ) ତାଙ୍କ ଅବସ୍ଥାନରେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଚଣ୍ଡ କୋହିଳ ବିଚର୍ଚ୍ଚର ସ୍ୱତ୍ରପାତ୍ର କରିବ ନିଃସନ୍ଦେହ । ସମସ୍ତ ସାଂଗଠନିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ଶେଷିକ ରୁଚି ପ୍ରତି ଅଭିକାରବଦ୍ଧତା ହେତୁ ବିବିନ୍ଦୁ କ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ଛାତ୍ର ସମାଜ ଶୋକାଳୁତ । ଡ. ପ୍ରସନ୍ନ ପାଟ୍ଟସାହାଣୀ, ଡ. ସୁଭକ ବିଶୋର ଶତପଥୀ ଆଦି ବିଶାଧିକ ସାହିତ୍ୟ ଗବେଷକ ତାଙ୍କ ମାର୍ଗଦର୍ଶନରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହୋଇଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ କାବ୍ୟାତ୍ମା, ହିନ୍ଦୀ ଓ ବଙ୍ଗଳା ଭାଷାରେ ତାଙ୍କର ଜ୍ଞାନ ସମଗ୍ରକୁ ପ୍ରକାଶିତ କରିଛି । ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ସାଧାନରେତା ମାନସିକତାରେ ପରିପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାରତ ମାତାର ସେବକ ଭାବେ ଓଡ଼ିଶାରେ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ଫାସ ଏବଂ ବିଧିଧି କ୍ଷେତ୍ରୀୟ କାର୍ଯ୍ୟରେ କ୍ଷେପ ନିଃଶ୍ୱାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଚଢ଼ିତ ଥିଲେ । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାଥୀ ପରିଷଦର ପ୍ରଥମ ସଭାପତି ଭାବେ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରାନ୍ତରେ ଏହି ଫାସଠର କାଳାରୋପଣ କରିଥିଲେ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରଥମ ସଭାପତି ଭାବେ ସେ ସରସତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ଯେଉଁ ଅନୁର ଗୋପଣ କରିଥିଲେ ତାହା ଆଜି ମହାତ୍ମନର ରୂପ ନେଇଛି । ପ୍ରଚଳିତ ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ପ୍ରତି ଏହି ଦୁର୍ଗ ପରିବର୍ତ୍ତନର ସନ୍ଦେଶ ପ୍ରେରଣା କରୁଛି ।

ପ୍ରବଚନ ପ୍ରତିବନ୍ଧ ପରିସ୍ପର୍ଶରେ ସାଂଗଠନିକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସେହ୍ନାନ୍ତ ଭାବେ ଚଢ଼ିତ ରହିବାର ଦୂର୍ବାର ତିବାଧାରାରେ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ଉଚ୍ଚତର ପଦପଦବୀକୁ ସେ ଜଗାଜଡ଼ି ଦେଇ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ଅନୁଷ୍ଠାନରେ ନିଜ ଯୋଗ୍ୟତା ହୃଦନାରେ ନ୍ୟୁନ ପଦବୀରେ ରହି ରାଜ୍ୟ ସରକାରଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ଅଗ୍ରଭାବରେ ଚର୍ଚ୍ଚା କରିବାସିଥିଲେ ।

ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ସାହିତ୍ୟର ଗବେଷଣାରେ ନିମଗ୍ନ ରହୁଥିବାବେଳେ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଶୃଙ୍ଖଳା ନିମିତ୍ତ ନାମାତାତ୍ମ୍ୟ ବାୟାବାତାଙ୍କ ଠାରୁ ଗୁରୁଦାକ୍ଷୀ ଗୁହଣପୂର୍ବକ ସର୍ବଦା କାୟ ମନୋବାକ୍ୟରେ ପାଳନ କରୁଥିଲେ; ବିଶ୍ୱ ନିଜକୁ ସମସ୍ତ ପ୍ରକାର ନିଜସ୍ୱ ପ୍ରକାର ଓ ପ୍ରସାରକୁ ଦୂରେଇ ରଖୁଥିଲେ । ପରିଣତ ଚୟସ, ଶୁଭ୍ର ଶରୀର ଏବଂ ନୟନାଧ୍ୟାତ୍ମିକତାରେ ଏହି ସାହିତ୍ୟ ଆଉ ବ୍ୟାସାୟୋଗୀକ ପାର୍ଥ ପ୍ରତିତତ୍ତ୍ୱକ ସାଜି ପାରିନାହିଁ । ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଇତିହାସ ଫାଉଣ୍ଡେସନ ସମିତି ଆଦିର କାର୍ଯ୍ୟରେ ସହକର୍ତ୍ତା ହୋଇ ରହିଥିଲେ । ଏହି ସ୍ୱୟଂସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଣିଷ, ଯଦବା ଶିକ୍ଷକ, ଗବେଷକ, କୃତଦା ଫାଉଣ୍ଡେସନ, ରାଷ୍ଟ୍ରବାଦୀ ଚିନ୍ତାରେ ଉଦ୍‌ଗୁଣ ଏବଂ ସାହିତ୍ୟର ଏକନିଷ୍ଠ ସାରସତ ସାଧକଙ୍କ ପରିଷ୍ଠି ଆହାତ୍ମ ତାଙ୍କର କୋଟି କୋଟି ପ୍ରଣାମ ।

ପୂର୍ବତନ ଛାତ୍ରସଂସଦ ସରାପତି,

ଏସ.ସି.ଏମ ଜଗେନ୍ଦ୍ର ଚରଣବିହାରୀ,

ମୋ. ୯୪୩୮ ୨ ୯୧୧ ୯୪

## ଏମିତି ଥିଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ

ବିକ୍ରମ ପରିଜା

ମୋ: ୯୮ ୬୧୨୧୦୩୦୦

ସେଦିନ କଲେଜ ଶାଖାରେ ପଢ଼ୁଥିଲେ ଜିଲ୍ଲା କାର୍ଯ୍ୟବାହୁ ଚିତ୍ତଭାଇ (ଡା. ଚିତ୍ତରଞ୍ଜନ ମହାନ୍ତି) । ସୁତରାଂ ଦେଲେ, ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଘରେ ୨୪ ପ୍ରହର ନାମୟଣ ଅଛି । ଆମକୁ ସେଠାରେ କିଛି ସହଯୋଗ କରିବାର ଅଛି । ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ କିଏ ? ଏ ପ୍ରଶ୍ନର ଉତ୍ତରରେ ସେ ଯାହା କହିଥିବେ, ତାହା ଆମ ପରିବାରର କାହାରିକୁ ଅଛପା ନୁହେଁ । ରେଭେନ୍ସା ଛାତ୍ର ଆନ୍ଦୋଳନରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଏ.ବି.ଭି.ପି., ଶିଶୁମଝିର, ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଇତିହାସ ସଂକଳନ, ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଆଦି ଅନେକ କଥା... । ବାସ୍ ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ଦିନ ସକାଳ ୯ଟା-୧୦ଟା ବେଳକୁ ଜଗତସିଂହପୁର ନଗରର କେତେକ ସ୍ୱୟଂସେବକ ପଢ଼ୁଥିଲେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଘରେ । ଜଗତସିଂହପୁର ସହର ଉପକଣ୍ଠ ଓଡ଼ିଶାରେ । ଏହା ମଧ୍ୟରେ ଅଧିକାଂଶ ଥିଲେ ଆମ କଲେଜ ଶାଖାର, କଲେଜ ପଢୁଆ କିଛି ଛାତ୍ର ।

ଜିଲ୍ଲା ପ୍ରଚାରକ ଲକ୍ଷ୍ମଣଭାଇ ଓ ଚିତ୍ତଭାଇ ବୁଝାଇଦେଲେ ଏଠାରେ ଅନେକ ଲୋକଙ୍କ ପ୍ରସାଦ ସେବନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଅଛି । ଆମକୁ ପରିବେଷଣ, ସୁଛତା ତଥା ଜଳ ଦାୟିତ୍ୱ ବୁଝିବାକୁ ହେବ ମଧ୍ୟାହ୍ନରେ ଓ ସଂଧ୍ୟାରେ । ବାସ୍ ତା'ପରେ ଆମେ ଯେ ଯାହାର କାମରେ ଲାଗିଗଲୁ । ବ୍ୟକ୍ତିଗତଭାବେ ନାମ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ ମହୋତ୍ସବରେ ଭାଗ ନେବାର ସୁଯୋଗ, ପୁଣି ସାଥୀରେ ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଏକାଠି ମିଶି କାମ କରିବାର ସୁଯୋଗ ମିଳିଥିବାରୁ ଆନନ୍ଦ ଲାଗୁଥାଏ ।

ଆରମ୍ଭ ହେଲା ଖରାବେଳ ପଞ୍ଜତ । ଯେ ଯାହାର କାମ ସୁରୁଖୁରୁରେ କରୁଥାନ୍ତି । ବରିଷ୍ଠ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନେ ଦେଖାରଖା କରୁଥାନ୍ତି । ଦ୍ୱିପ୍ରହର ପଞ୍ଜତ ସମୟରେ ଲକ୍ଷ୍ୟ କଲି, ଦୁଇଜଣ ପ୍ରୌଢ଼ ପ୍ରୌଢ଼ା, ଠାକୁରଙ୍କ ଭୋଗ ଥାଳି ଧରି ଆସିଲେ ପଞ୍ଜତ ଖଳା ପାଖକୁ । ଥାଳିରେ ଥିବା ପ୍ରସାଦକୁ ଗୋଳେଇ ଗୁଣ୍ଡା କରି, ଆମକୁ ଖୁଆଇ ଦେବାଲାଗି ଉଦ୍ୟତ ହେବାରୁ ଆମେ କିଛି ଜଣ ମନାକଲୁ । କହିଲୁ ପରସ୍ପର... । ସେମାନେ କହିଲେ, “କ’ଣ ହେଲା ସେଇଠୁ ? ଛୋଟ ପିଲାଗୁଡ଼ାକ । ଖରାବେଳ ଡେଇଁଲାଣି । ଭୋକ ହେବଣି । ତା’ଛଡ଼ା ଏହା ତ ପ୍ରସାଦ । ମହୋତ୍ସବ ଖଳାରେ କ’ଣ ଅଇଁଠା ଥାଏ ?” ଏ ଯୁକ୍ତି ଆଗରେ ଆମର ସବୁ ପ୍ରତିରୋଧ ମଉଳିଗଲା । ଆପେ ଆପେ ମୁହଁ ଖୋଲିଗଲା । ଆଉ ସେ ପ୍ରସାଦରୁ ବାହାରି ଆସିଲା ଆମ ଘରେ ଗୁରୁବାର ଠାକୁରଙ୍କ ପାଖରେ ଲାଗି ହେଉଥିବା ପ୍ରସାଦକୁ ମୋ ବାପା କି ବୋଉ ଆମ ପାଟିରେ ଦେଲାବେଳର ବାସ୍ନା । ଭଲଭାବେ ଦେଉଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ମୁହଁକୁ ଚାହିଁଲା ବେଳକୁ ଦେଖୁଲୁ ପାନ ଚୋବାଉଥିବା ମୁହଁରେ ଏକ ଆତ୍ମୀୟତାର ହସ । ପଞ୍ଜତ ପରେ ଚିତ୍ତ ଭାଇଙ୍କଠାରୁ ବୁଝିଲି, ସେ ହିଁ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ । ବିଶ୍ୱାସ ହେଲାଣି । ଏତେ ବଡ଼ ଲୋକ । ଜମିଦାର ପରିବାରର ଦାୟାଦ... ପ୍ରଫେସର... । ପୁଣି ଏତେ ସବୁ ସଙ୍ଗଠନର ଆରମ୍ଭକାରୀ... । ଆମ ସଙ୍ଗଠନର ଜଣେ ଶୀର୍ଷସ୍ତରୀୟ ଅଧିକାରୀ... କିନ୍ତୁ ଆମମାନଙ୍କ ଭଳି ସାମାନ୍ୟ ସ୍ୱୟଂସେବକଙ୍କ ପାଇଁ ଏତେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ?

ଖରାବେଳ ପଙ୍ଗତ ସରୁ ସରୁ ତିନି-ସାଢ଼େ ତିନି । ପୁଣି ସାମାନ୍ୟ ବିଶ୍ରାମ ପରେ ସଂଧ୍ୟା ପାଇଁ ପ୍ରସ୍ତୁତି । ତା'ପରେ ୭.୩୦ରୁ ପୁଣି ପରିବେଷଣ ଆଦି । ସମସ୍ତେ ବେଶ୍ ଉତ୍ସାହର ସହ ଲାଗିଥାନ୍ତି । ପ୍ରତିଥର ସମାନ କଥା । ଦୁଇଜଣ ଭୋଗ ଥାଳି ସହ ଆସନ୍ତି, ଆଉ ଆମମାନଙ୍କ ପାଟିରେ ଭୋଗ ଖୁଆଇ ଦିଅନ୍ତି । ଏପରି ଚାଲିଲା ଦୁଇଦିନ । ଶେଷଦିନ ମହୋତ୍ସବ ପରେ ଆମେ ଯେତେବେଳେ ଶେଷ ପଙ୍ଗତରେ ବସିବାପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାଙ୍କ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ହେଲା, ସେତେବେଳେ ନିଜେ ହାତରୁ ଆମକୁ ପରସିଲେ ନଗେନବାବୁ ଓ ମାଆ । ସେତେବେଳେ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନେ ତାଙ୍କ ହାତରୁ ବାଲଟି ନେବା ଲାଗି ଆଗେଇ ଆସିବାରୁ ସେ କହିଲେ, “ଆରେ, ଏମାନେ ବା ନୁଆ ସ୍ୱୟଂସେବକ । ଆଗାମୀ ପିଢ଼ିର ରାଷ୍ଟ୍ରର ଆଧାର, ଏମାନେ ଏତେ କାମ କଲେ, ଆମେ ଟିକେ ଏମାନଙ୍କୁ ପ୍ରସାଦ ବାଡ଼ି ପାରିବୁନି । ଏମାନେ ହିଁ ନିତାଇ, ଏମାନେ ଗୌର... ।” ସମସ୍ତେ ଭୋଜନ ସରିବା ପରେ ଢେର ସମୟ ସେ ଆମମାନଙ୍କ ସହ ବସି ଆଳାପ ଆଲୋଚନା କଲେ । ସେତେବେଳେ ଆଦୌ ଲାଗୁନଥାଏ ଯେ, ଆମେ ଏତ ବଡ଼ ଜ୍ଞାନୀ, ଗୁଣୀଙ୍କ ସହ କଥା ହେଉଛୁ । ନିହାତି ସାଧାରଣ, ସହଜ ସରଳ ଭାବେ ହସମଜ୍ଜା କରୁଥାନ୍ତି । ସମସ୍ତଙ୍କ ସହ ମିଶୁଥାଆନ୍ତି । ଖାସ୍ କରି ସ୍ୱୟଂସେବକମାନଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କର ଅତୁଟ ଶ୍ରଦ୍ଧା । ନିଜ ଜ୍ଞାନ, ପଦପଦବୀର ସାମାନ୍ୟ ଅହଙ୍କାର ନାହିଁ, ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଭଲ ପାଇବା । ଆଉ ବୋଧହୁଏ, ଏହି ଭାବ ହିଁ ତାଙ୍କୁ କରିଥିଲା ଏତେ ବଡ଼ ଲୋକ । ଏହାହିଁ ତାଙ୍କ ସ୍ୱୟଂସେବକତ୍ୱର ସଫଳତା । ଏହା ହିଁ ପୂଜ୍ୟ ଗୁରୁଦେବ ବାବା ବାୟା, ତାଙ୍କୁ ଦେଇଥିବା ପ୍ରକୃତ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତାର ଶିକ୍ଷା ।



ନଗେହତାଥ ପ୍ରଧାନ ଅତିପୁରଣୀୟ ସାଧକ-ବ୍ରହ୍ମା

**ଏକାଦଶୀରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି** | ଆଲୋଚନା ଲେଖି, ସେ ସେକ୍ସନରେ ଗବେଷକ ଓ ଓଡ଼ିଆ ପ୍ରାବନ୍ଧିକମାନଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ଅନର୍ଥକ କରିପାରିଥିଲେ! ‘ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଦ୍ଦେଶଧାରୀ’ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ନିବନ୍ଧ ରଚନା କରି କଲେକ୍ଚରାଥ ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ଡି.ଲିଟ୍. ଡିଗ୍ରୀ ପାଇଥିଲେ। ଏହି ନିବନ୍ଧ ପୁସ୍ତକ ଆକାରରେ ୧୯୮୭ରେ ପ୍ରକାଶିତ। ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ସେ “ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ସାହିତ୍ୟର ଶୂନୀୟ ପଦ୍ଧତି-କାମଦେବ” ବହି ଲେଖିଥିଲେ, ପଞ୍ଚା ଉପାଦେୟ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ ବାସ୍ତବ ଚରମରୁ ପ୍ରକାଶିତ। ସେ ଶିଶୁ ଅନବଳ ‘ହେବେନର ଉପବନ୍ତ’ ଗ୍ରନ୍ଥ ସଂପାଦନା ଓ ପ୍ରକାଶନ (୧୯୭୭) କରାଇ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ସାହିତ୍ୟର ଏକ ଅଭାବ ପରିପୂରଣ କରିପାରିଛନ୍ତି। ‘ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଚାନ୍ଦିବୁଦ୍ଧ’ ଓ ‘ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଶୂନୀୟ’- ଏ ଦୁଇଟି ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ମନୋଧାର ଉତ୍କଳ ସ୍ୱାକ୍ଷର। ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ଉନ୍ନତ ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ପାଇଁ ‘ବେତବନ୍ଧିତ ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା’ ନାମରେ ଚିନ୍ତାଧାରା ବିଶିଷ୍ଟ ପୁସ୍ତକର ଗ୍ରନ୍ଥ ସଂରଚନା ଓ ପ୍ରକାଶନ କରିପାରିଛନ୍ତି ସେ। ଏହିଭଳି ଆଉ କେତେକ ଶେଷ ପ୍ରକାର ପାଠକ ବୋଲି ସେ ଏ ଲେଖକଙ୍କୁ ଚୂଡ଼ାୟଶାଞ୍ଚ ଉପହାର ଦେବା ବିନା (୮-୨-୨୦୧୭) କହିଥିଲେ। ସଂସ୍କୃତି ଅଧାରରେ ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା ଲେଖିବା, ଜାତି ଓ ବାସ୍ତବତାର ଉପ ଦର୍ଶନର ତାଙ୍କ ଲେଖାର ଶୈଳୀଷ୍ଟ୍ୟ। ବୋଧହୁଏ ଏଭଳି ଅବଦାନ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ତାଙ୍କ କୃତିଗୁଡ଼ିକ ଅତୁଳନୀୟ, ସେ ଅନନ୍ୟ। ସେ ଅନେକ ବର୍ଷ ପରି ଆଧୁନିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, କୃତନେଶ୍ୱରରେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା-ସାହିତ୍ୟ ବିଭାଗର ଅଧ୍ୟାପକ ଥିଲେ।

୧୦, ନଭେମ୍ବର, ୧୯୩୬ରେ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାର ଓଡ଼ିଶୋ ନିକଟବର୍ତ୍ତୀ ଅଭିଧାନବଦ୍ଧ ଗାଁରେ ଏକ କୃଷିଜାତୀ ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ପରିବାରରେ ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରିଥିବା କଲେକ୍ଚରାଥ (ପିତା-କୁଲେଇ ପ୍ରଧାନ, ମାତା-ନବଶା ଦେବୀ) ଛାତ୍ରାବସାୟ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂ ସେବକ ସଂଘର ସଭ୍ୟ ଥିଲେ, ୧୯୬୮ରେ ସଂସଦ ଭାବେ ଯୋଗଦେଇ ବିଧ୍ୟାୟୀ ପରିଷଦର ପ୍ରାଦେଶିକ ସଭାପତି, ଅନ୍ତର୍ଗତ ଭାରତୀୟ ବିଧ୍ୟାଭାରତୀର ଉପସଭାପତି, ୧୯୭୭ରେ ଶିକ୍ଷାବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଯୋଗଦେଇ ଓଡ଼ିଶା ଓ ପୂର୍ବଭାରତର ଉପସଭାପତିରେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟା ମହିନାଗୁଡ଼ିକ ଗଠନ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ତାଙ୍କର ଅନବଦ୍ୟ କୃତ୍ତିକା ସ୍ୱାଭାବୀ। ଏଭଳି ଜଣେ କର୍ମୀ, ସାରସ୍ୱତ ପୁରୁଷଙ୍କ ଜୀବନ- ମନ୍ତ୍ର ନିରବ-ନିଷ୍ପତି, କୋଳହଳମୟ ଶେଷଗାଡ଼ି ଅଥବା ଶୋକସାଗର ବାଧା ଉଦ୍ଧାରଣ ଅପେକ୍ଷା/ଅନୁପ୍ରାପ୍ତିତ ଚତୁର୍ଥ ତାଙ୍କ ପ୍ରିୟ ଉତ୍ତରପିଢ଼ିକୁ। ସେ ଛାଡ଼ିଯାଇଥିବା ଅବଦାନଗୁଡ଼ିକ ଦ୍ୱାରା ଯେତେ ମାତ୍ରାରେ ସେ ଲୋକ ପରିଚିତ ହେବେ, ଅନୁତ ଲୋକରେ ତେତେ ପରିମାଣରେ ହସି ହସି ରହିଥିବେ।

ଚକ୍ର ବାବାଜୀଚରଣ ପଲେୟକ  
 ବି/୪୯, ସେକ୍ଟର-୮, ପିଡି-୧, କଟକ-୭୫୩୦୧୪  
 ମୋ. : ୯୪୩୭୩୧୧୯୧୪



## ଶୁଭ ସକାଳରେ ଅଶୁଭ ବାର୍ତ୍ତା

ଲକ୍ଷ୍ମଣ ନାୟକ

ପ୍ରାନ୍ତ ଗ୍ରାମ ବିକାଶ ପ୍ରମୁଖ, ଓଡ଼ିଶା ପଶ୍ଚିମ

ମୋ: ୮୮ ୯୫୧୭୪୯୧୭

ମହା ଆନନ୍ଦରେ ଶାଖାରୁ ଫେରୁଥିଲି । ଖବରକାଗଜବାଲା କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚି ହାତକୁ ବଢ଼ାଇଲା ଖବରକାଗଜଟିକୁ । ଭିତରକୁ ଯାଇ ଦୃଷ୍ଟି ରଖିଦେଲି । ଖବରକାଗଜଟି ଖୋଲିଦେଲା ବେଳକୁ ଦେଖିଲି ଏ ଜୀବନ୍ତ ଫଗୋ ପରି ଦେଖାଯାଉଛି; କିନ୍ତୁ ଲେଖାଅଛି ମୃତ । ବାରମ୍ବାର ପଢ଼ିଛି । ଆଖିକୁ ବିଶ୍ୱାସ କରିପାରିଲି ନାହିଁ । ଆଖି ଛଳଛଳ ହୋଇଗଲା । ଅନ୍ତେବାସୀମାନେ ପଚାରିଲେ ଲକ୍ଷ୍ମଣ ଭାଇ, କାନ୍ଦୁଛନ୍ତି କାହିଁକି ? ମୁଁ କହିଲି, ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ଜିଲ୍ଲାରେ ମୁଁ ପ୍ରାୟ ୧୦ ବର୍ଷ ଜିଲ୍ଲା ପ୍ରଚାରକ ହୋଇ ରହିଥିଲି । ଭାରତସ୍ତରରେ ଜଣେ ସୁଜ୍ଞାନୀ ବ୍ୟକ୍ତି ପିତୃତୁଲ୍ୟ ମୋତେ ସାନଭାଇ ପରି ସମ୍ମାନ କରୁଥିଲେ । ବହୁଥର ଏକା ସାଥେ ରହିଛି, ସବୁବେଳେ ସକ୍ରିୟ ଥାଆନ୍ତି । ଅଧ୍ୟୟନ କଥା କହିଲେ ନସରେ । ଏଇ ୧୫ ତାରିଖ ଦିନ ରାତିରେ ତାଙ୍କୁ ପ୍ରଣାମ କରିଥିଲି ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ ବହି ଦେଖି । ଆଜି ସେ ଆମ ପାଖରୁ ଦୂରେଇ ଗଲେ । ପ୍ରାୟ ସେ ମୋ କଥା ମନ ଭିତରେ ଆଣିଥିବେ । ତେଣୁ ସବୁ ସଂଯୋଗ ହେଇଥିଲା ସେଦିନ । ଏତେ ବଡ଼ ବହି ମୋ ଦେଖିଲେ ଡର ଲାଗୁଛି । ସେ କେତେ କଷ୍ଟ କରି ଲେଖିଛନ୍ତି, ଧନ୍ୟ ଧନ୍ୟ ।

ତୁରନ୍ତ ଘର ଭିତରକୁ ଯାଇ ଫୋନ୍‌ଟି ଆଣିଲି, କାହାକୁ ଫୋନ୍ କରିବି ପ୍ରଥମେ । ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ କଥା ମନ ଭିତରକୁ ଆସିଲା । ସେ କାମ କରିବାପାଇଁ ପ୍ରେରଣା ଯୋଗାଇଥିଲେ ବୋଲି ବାରମ୍ବାର ଶୁଣିଥିଲି । ଫୋନ୍ ଲାଗିଲା ନାହିଁ । ଉଦୟ ଭାଇ ଓ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ଜଣାଇଲି । ୫/୬ ଥର ପଢ଼ିଲି ସେହି ଲେଖାକୁ । ଜଳପାନ କଥା ଭାଇମାନେ ପଚାରିଲେ । ମନ ଦୁଃଖରେ ଭାଙ୍ଗିପଡ଼ିଥିବାରୁ ତାଙ୍କୁ ମନା କରିଦେଲି । କାରଣ ୧୫ ତାରିଖରେ ଯାଇଥିଲି ତାଙ୍କୁ ଦେଖି ଆସିଥିଲେ ଭଲ ହୋଇଥାନ୍ତା । ମୁଁ ଦୁର୍ଭାଗା । ଚିନ୍ତା କରି ପାରିଲି ନାହିଁ । ପ୍ରେରଣା ମିଳିଯାଇଥାନ୍ତା ଏବଂ ଶେଷ ଦର୍ଶନ ହୋଇ ଯାଇଥାନ୍ତା, ବିଧିର ବିଧାନ କେ କରିବ ଆମ ।

ପ୍ରାୟ ୨୦୧୦ ମସିହା ହେବ । ମୋର ବ୍ରହ୍ମପୁର ମୁଖ୍ୟାଳୟ ଥିଲା । ହଠାତ୍ ନାରାୟଣ ଭାଇଙ୍କ ଫୋନ୍ ଆସିଗଲା । ଆମ ଦୁଇଜଣଙ୍କର ଭଲ ଯୋଡ଼ି । ମନ ଏକ ଜିଲ୍ଲା ଏକ । ଦୁଇଜଣଙ୍କର ଯୋଗ ଶାରୀରିକ ବିଷୟ ନାୟକ ଟାଇଟଲ୍ ଏକ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ଜଗତ୍‌ସିଂହପୁର । ସେ ପ୍ରଥମେ ସେଠାରେ ଥିଲେ ଠିକ୍ ପରେ ପରେ ମୁଁ ଯାଇ ପହଞ୍ଚିଲି । କିଛି କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା କହୁଥିଲେ ଭଦ୍ରକରେ ନାରାୟଣ ଭାଇ ଲକ୍ଷ୍ମଣ ଭାଇ ପରି । ନାରାୟଣ ଭାଇ ନିଜର ଭାଇ ଭଳି ବିଶ୍ୱାସର ସହ ଗୋଟିଏ ଦାୟିତ୍ୱ ଦେଇ କହିଲେ ଆମର ଗୋଟେ ବୈଠକ ହେବ ଆସିକା ପାଖ ବାଲିପଦରର ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ । ମୁଁ ଆଗରୁ ଯାଇଥିବି, ତୁମେ ଓଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ରେଳଷ୍ଟେସନରୁ ନେଇ କାମ ସାରି ଜଳପାନ କରାଇ ଆଉ ଦୁଇଜଣଙ୍କୁ ନେଇ

ପହଞ୍ଚାଇଦେବ । ତାହା ହେଲା । ବାଟରେ ଯିବାବେଳେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଗଦ୍‌ଗଦ ହୋଇ ମୋର ସବୁ ଖବର ପଚାରି ବୁଝିନେଲେ, ଖାଇବା, ରହିବା କଥା ଆଗେ ପଚାରିଲେ । ସବୁବେଳେ ସକାରାତ୍ମକ । କହିଲେ ଲକ୍ଷ୍ମଣଭାଇ, ଏଠି ସବୁ ତ ହେଲା ଚଟଣୀ, ସମ୍ବର, ଇଟିଲି, ପୁରୀ, ତରକାରୀ ମେଞ୍ଚେ ମେଞ୍ଚେ ତ ଦେବେ, ପେଟ ଭରିଯିବ ଖାଲି ଟିକେ ରାଗ । ଖାଲି ଆରେଇଗଲେ ହେଲା । ହଉ ଭଲ ହେଲା । ଭଲରେ ରହି କାମ କରି ପେଟେ ଖାଇଦେବ, ଜମା ଲାଜ କରିବନି ।

ଯିବାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଲା କଥା ରେଳରେ ବସି ଫେରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ । ଖାଲି ସେହି ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ଉପରେ କେଉଁ କେଉଁ ବହି ପଢ଼ିବାକୁ ପଡ଼ୁଛି, ସେ ଲେଖକର ଭଲ ମନ୍ଦ ଚିନ୍ତାଧାରା କଥା ମୋତେ କହୁଥିଲେ । ମୁଁ ସେଦିନ ଅନୁଭବ କରୁଥିଲି ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କର ମନରେ ଶୟନରେ ସପନରେ ସେହି ଗୋଟିଏ କଥା ଗୁଞ୍ଜରଣ ହେଉଛି । ଏ ରାଷ୍ଟ୍ର, ସଂଘ, ଶାଖା, ସଂସ୍କୃତି, ପରମ୍ପରା, ସମାଜ, ବିଚାରଧାରା କିପରି ସୁଦୃଢ଼ ହେବ । ଭାରତର ପରିଚୟ ଭାରତ ନିଜେ ବିଶ୍ୱ ଦରବାରରେ ଦେଇ ପାରିବ . . .

### ପ୍ରଥମ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ଗ୍ରାମ ଦେବତାଙ୍କୁ

ପରମ ଆଦରଣୀୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଜଗତସିଂହପୁରର ଓଡ଼ିଶୋରେ ଜନ୍ମ ନେଇ ଆଗେ ଓଡ଼ିଶା ଓ ପରେ ଭାରତର ଜଣେ ଜ୍ଞାନୀ, ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଭାବେ ନିଜର ଅଧ୍ୟବସାୟ ବଳରେ ପରିଚିତ ହୋଇପାରିଥିଲେ ।

ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ପରମ ପୂଜନୀୟ ଡକ୍ଟରଜୀଙ୍କ ପରି ଜଣେ ବ୍ୟକ୍ତି ଥିଲେ ଯେ କି ଶୟନେ, ସପନେ, ଜାଗରଣେ ରାଷ୍ଟ୍ରକଥା ବିଚାର କରୁଥିଲେ । ସେ ଯେତେବେଳେ ଜଗତସିଂହପୁର ଯାଉଥିଲେ ତକାଇ ପଠାଉଥିଲେ ଗାଁରେ କି କି କାମ ହେଲେ ପ୍ରଥମେ ଖବର ସଂଘ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟକୁ ଦେବାକୁ କହୁଥିଲେ ।

ଥରେ ଜଗତସିଂହପୁର ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ଏକ ବଡ଼ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଥିଲା । ସେ ସେଠାକୁ ଯାଇଥିଲେ । ପ୍ରଧାନ ଆଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କୁ ଗାଥର ମୋ ପାଖକୁ ପଠାଇଥିଲେ । ମୁଁ ପ୍ରବାସରେ ଥିଲି । ୨ୟ ଦିନ ପରେ ପ୍ରବାସରୁ ଫେରି ଖବର ପାଇ ଆସି ଦେଖାକଲି । ଗଦ୍‌ଗଦ ହୋଇଗଲେ । ଅନ୍ୟ ଗୁରୁଜୀ ଗୁରୁମାମାନେ ଆସିବାବେଳେ ନମସ୍କାର କରୁଥିଲେ, ମୋତେ ପାଖରେ ବସାଇ ସବୁ ପଚାରି ବୁଝିଲେ । ପ୍ରଧାନ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ଓ ଗୁରୁଜୀ ଗୁରୁମାମାନଙ୍କୁ ମୋର ପରିଚୟ ପଚାରିବାରୁ ପ୍ରାୟ ସବୁ ଜାଣନ୍ତି ବୋଲି ଶୁଣି ବହୁ ଆନନ୍ଦିତ ହେଲେ । ସେମାନଙ୍କୁ ଶାଖା, ସେବିକାବର୍ଗ ଯିବାକୁ କହିଲେ । ମୋତେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବାକୁ ମଧ୍ୟ କହିଲେ । ସବୁଠାରୁ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କଥା କହିଲେ ଯେ ଲକ୍ଷ୍ମଣଭାଇ ଆମ ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲାପାଇଁ ଗ୍ରାମ ଦେବତା ସଦୃଶ । ଘରେ ଅନୁଷ୍ଠାନରେ, ପ୍ରଥମ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ଗ୍ରାମ ଦେବତାଙ୍କୁ ଦିଆଯାଏ । ଏ ଆମ ହିନ୍ଦୁ ସଂସ୍କୃତିରେ ଅଛି । ସମସ୍ତେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଇଁଦେଲେ, କହିଲେ ସଂଘ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କର ମା' । ତା'ର କଥା ପ୍ରଥମେ ବୁଝିବା । ପାଖରେ ବସାଇ ଖାଇ ସାରିବା ପରେ ପୁଣି ଚାଲିଲା କଥା । କିପରି ସଂଘରେ ମିଶି ଦାୟିତ୍ୱ ନେଲେ ସଂଘଚାଳକ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପଦବୀ ପାଇଲେ, ବିବିଧକ୍ଷେତ୍ର, ଗାଁରୁ ଯାଇ ଯାଇ ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସ୍ତରରେ ପହଞ୍ଚିଲେ ସବୁକଥା ନି ଅଟକି, ନ ଥକି କହିଚାଲୁଥିଲେ । ନଦୀ ବହି ଚାଲିଲା ପରି ସେ ସମସ୍ତଙ୍କ ସହ ମିଶି ପାରୁଥିଲେ । ଯିଏ ଯେପରି ଥାଏ ସେ ସେପରି ହୋଇଯାଆନ୍ତି । ପିଲା ସହ ପିଲା, ବୁଢ଼ା ସହ ବୁଢ଼ା, ଯୁବା ସହ

ଯୁବା ପରି କଥା ହୁଅନ୍ତି । ଭଗବାନ ଆମକୁ ତାଙ୍କପରି ବିଚାର, ବୁଦ୍ଧି, ବ୍ୟବହାର ଦିଅନ୍ତୁ । ତାଙ୍କର ଆତ୍ମା  
ଉପରୁ ଆମକୁ ନେଇ ଆନନ୍ଦ ଅନୁଭବ କରୁ, ଏହା ସେହି ପରମାତ୍ମାଙ୍କ ପାଖରେ ମୋର ବିନମ୍ର ପ୍ରାର୍ଥନା ।  
ପୁତ ସପୁତ ଓହି କହଲାତା ଜୋ ରାଷ୍ଟ୍ରକା ମାନ ବଢ଼ାତା —

ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ପିତା ମାତା ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ଗ୍ରାମ  
ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ଗୁରୁ ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ନାମ ।  
ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ପରିବାର ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ଜିଲ୍ଲା  
ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ସହୋଦର ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ପିଲା ।  
ଧନ୍ୟ ତାଙ୍କ ଇହଲୋକ ଧନ୍ୟ ପରଲୋକ  
ଧନ୍ୟ ଆମେ ଭାଇ ବନ୍ଧୁ କରିବାନି ଶୋକ ।  
ହସି ହସି ସଦାବେଳେ ବାଣ୍ଟିଲେ ଆନନ୍ଦ  
କେବେ ହେଲେ କାହାପାଇଁ ନ ଚାହାନ୍ତି ମନ୍ଦ ।  
ଭାରତର ଦୁଃଖ ଦେଖୁ ଦୁଃଖ ପ୍ରକାଶନ୍ତି  
ସମାଚାର ମାଧ୍ୟମରେ ଲେଖାକୁ ପଠାନ୍ତି ।  
ଶୟନେ ସପନେ ତାଙ୍କ ରାଷ୍ଟ୍ର ହିତ ଚିନ୍ତା  
ଆଉ କିଛି ଦିନଥିଲେ ଭଲ ହୋଇଥାନ୍ତା ।  
ପଲ୍ଲୀରେ ଜନମ ନେଇ ପହଞ୍ଚିଲେ ଦିଲ୍ଲୀ  
ଫୁଲ ମଧ୍ୟରେ ଯେପରି ଫୁଟିଥିବା ମଲ୍ଲୀ ।  
ସୁଗନ୍ଧରେ ଭରିଦିଏ ରହିଥିବା ସ୍ଥାନେ  
ଜ୍ଞାନ ତୁମ ବିତରିଲ ରହିଥିବ ମନେ ।  
ଓଡ଼ିଶାରେ ଜନମିଲ ବ୍ୟାପିଲ ଓଡ଼ିଶା  
ସଂଘକୁ ଆଜି ମଧ୍ୟ ଦେଇଗଲ ଦିଶା ।  
ସଂଘ ବିଚାରକୁ ନିଜେ ଆପଣେଇଥିଲେ  
ବିବିଧ ସଙ୍ଗଠନର ଦାୟିତ୍ବ ବି ନେଲେ ।



## ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କ ସ୍ମୃତି

ଭୁବନାନନ୍ଦ ତ୍ରିପାଠୀ

ଆଜୀବନ ସଦସ୍ୟ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ: ୮୮୯୫୫୫୨୩୫୬୧

ତାଙ୍କର ପୁରା ନାମ ହେଉଛି ଡ. ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ, ମାତ୍ର ଆମ ଭିତରେ ତାଙ୍କୁ ସମୋଧନ କରାଯାଏ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ । ଭାରି ସ୍ନେହଶୀଳ ମଣିଷ ପୃଷ୍ଠତଳ ପ୍ରତିଭା ଆଜି ଆମ ଗହଣରେ ନାହାନ୍ତି । କର୍ମମୟ ଜୀବନର ଦୀର୍ଘ ୮୧ ବର୍ଷ ପାର କରି ପୁଅ-ଝିଅ, ନାତି-ନାତୁଣୀ ଭରା ପରିବାରକୁ ଛାଡ଼ିଦେଇ ଆରପୁରକୁ ଚାଲିଯାଇଛନ୍ତି ।

୨୭ ତାରିଖ ଦିନ ସକାଳୁ ମେସେଜ୍ ମିଳିଲା ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ଚାଲିଗଲେ । ତାଙ୍କ ଘରେ ଯାଇ ପହଞ୍ଚିଲାବେଳକୁ ଶୁଣିଲି ଯେ ତାଙ୍କର ମର ଶରୀରକୁ ନେଇ ପରିବାର ଲୋକ ଗାଁକୁ ଚାଲିଗଲେଣି । ଶେଷ ଦର୍ଶନ କରିପାରିଲିନି ମନରେ ଟିକିଏ ଦୁଃଖ ରହିଗଲା ।

ପ୍ରାୟ ୩ ମାସ ତଳେ ମନକୁ ଆସିଲା ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁଙ୍କୁ ଅନେକ ଦିନରୁ ଭେଟ କରିନି, ଯାଇ ଦେଖିଆସେ । ସକାଳୁ ସକାଳୁ ଯାଇ ତାଙ୍କ ଆଚାର୍ଯ୍ୟବିହାର ବାସଭବନରେ ଭେଟକଲି । ଖୁସି ହେଲେ । କହିଲେ ଭୋବନି, ଏବେ ଦେହ ଭଲ ରହୁନି । ଶ୍ୱାସ ଧରିଛି, ଆଖୁଗଣ୍ଠି ପାଡ଼ା । ତାଙ୍କ ଲିଖିତ ସରସ୍ୱତୀ ବହିଟିଏ ଦେଲେ ଓ କହିଲେ ଏହାକୁ ନେଇ ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କୁ ଦେଇଦେବ । ତାଙ୍କ କଥା ଅନୁସାରେ ମୁଁ ବହିଟି ନେଇ କେନ୍ଦ୍ରମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କୁ ଦେଇ ଆସିଲି ।

ପ୍ରାୟ ବର୍ଷେ ତଳେ ସେ ମୋତେ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଡାକିଥିଲେ । ମୋ ସହିତ ଥିଲେ ଡ. ବସନ୍ତ ପଣ୍ଡା, ନାରାୟଣ ନାୟକ ଏବଂ ସୁଦର୍ଶନ ନାୟକ । ଶିକ୍ଷା ବିକାଶ ସମିତି, ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଇତିହାସ ପୁନର୍ଲିଖନ ଆଦି ଅନେକ ପ୍ରସଙ୍ଗରେ କଥାବାର୍ତ୍ତା ହେଲୁ । ମୋତେ ମନେହେଲା ତାଙ୍କ ମୁଣ୍ଡରେ ଥିବା ବିଭିନ୍ନ କ୍ଷେତ୍ରର ଦାୟିତ୍ୱ ସେ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ହସ୍ତାନ୍ତର କରିବାପାଇଁ ଏକ ପ୍ରକାର ଇଚ୍ଛା ପ୍ରକାଶ କରୁଥିଲେ ।

ସେହିପରି ଦୁଇବର୍ଷ ତଳେ ତାଙ୍କ ସହିତ ମିଶି ଫୁଲବାଣୀ ଯାଇଥିଲି ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଫୁଲବାଣୀ ଶାଖାର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ । ଆମ ସହିତ ଥିଲେ ଆସାମରୁ ଆସିଥିବା ଜଣେ ସାହିତ୍ୟିକ । ବାଟସାରା ଗପସପ କରି ଯିବାବେଳେ ନଗେନ୍ଦ୍ରବାବୁ ତାଙ୍କ ବାଲ୍ୟକାଳ, ଗ୍ରାମ୍ୟ ଜୀବନର ଅନୁଭୂତି, ପାଠପଢ଼ା ପାଇଁ ସାମ୍ନା କରିଥିବା ବାଧାବିଘ୍ନ ସହିତ ଚାକିରି ଜୀବନ, ସଂଘ କାମରେ ପ୍ରବେଶ ତଥା ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର କାମର ବିସ୍ତାର ସମ୍ପର୍କୀୟ ବିଭିନ୍ନ ଅନୁଭୂତି ଶୁଣାଇଥିଲେ । ସେଥର ତାଙ୍କ ସହିତ ଏକାଠି ରହିବାର, ଏକ ସୁନ୍ଦର ସୁଯୋଗ ମିଳିଥିଲା ।

ପ୍ରାୟ ୨୦ ବର୍ଷ ତଳେ ତାଙ୍କ ସହିତ ଥରେ ନୟାଗଡ଼ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବରେ ଯୋଗ ଦେବାପାଇଁ ଯାଇଥିଲି । ସେହି ସମୟରେ ଜନଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ଲେଖା ପ୍ରତିଯୋଗିତାରେ ତାଙ୍କୁ ବିଚାରକ ଭାବେ ଦାୟିତ୍ୱ ଦେଇଥିଲି । ସେହି ସମୟରେ ଇତିହାସ ପୁନର୍ଲିଖନ ସମିତିର ବୈଠକରେ ତାଙ୍କ ଉପସ୍ଥିତିରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଏକ



ସଭାରେ ଭାଗ ନେବାର ସୁଯୋଗ ମିଳିଥିଲା ।

ନଗେନବାବୁଙ୍କ ସହିତ ମୋର ପ୍ରଥମ ପରିଚୟ ହୋଇଥିଲା ୧୯୭୫ ମସିହାରେ । ଯେତେବେଳେ ସେ ଯୁନିଟ୍-୯ କ୍ୱାଟରରେ ରହୁଥିଲେ ଏବଂ ମୋର ବାସସ୍ଥାନ ମଧ୍ୟ ସେହି ଅଞ୍ଚଳରେ ଥିଲା । ଦେଶରେ ଏମରଜେନ୍ସି ଆଇନ ଲାଗୁ ହୋଇଥାଏ । ଚାରିଆଡ଼େ ଭୟର ବାତାବରଣ । ତାରି ଭିତରେ ସଂଘର ଗୁପ୍ତ ବୈଠକମାନ ହେଉଥାଏ, ପତ୍ରକମାନ ବଞ୍ଚାଯାଉଥାଏ । ଏହି କାମରେ ରାତ୍ରାର ଅନ୍ଧାର ଭିତରେ ଲୋକମାନଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ଆଡୁଆଳରେ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଅନେକବାର ଯାଇଛି, ସେହିଦିନୁ ସେ ମୋତେ ଶ୍ରଦ୍ଧାରେ ଡାକନ୍ତି ଭୋବନ୍ତି ।

ପରେ ପରେ ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ପ୍ରଥମେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଅନୁଷ୍ଠାନ ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ନଗେନବାବୁ ହେଲେ ସଭାପତି, ସମ୍ପାଦକ ହେଲେ ଜଗଦୀଶ ପଟ୍ଟନାୟକ । ତାଙ୍କ ଭିତରେ ମୁଁ ଥିଲି ଜଣେ କନିଷ୍ଠ କର୍ମୀ । ସେଦିନର କ୍ଷୁଦ୍ର ଚାରାଟି ଗଛ ହୋଇ ଓଡ଼ିଶା ପ୍ରଦେଶରେ ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସର୍ବତ୍ର ସୁନାମ ଅର୍ଜନ କରି ଠିଆହୋଇଛି ।

ସଂଯୋଗକୁ ନଗେନବାବୁଙ୍କ ଜୋର୍ ଏବଂ ମୁଁ ରାଉରକେଲା ଷ୍ଟିଲ୍ ପ୍ଲାଣ୍ଟରେ ଚାକିରି କରୁଥିଲୁ । ସେ ରାଉରକେଲା ଆସିଲେ ଆମ ଘରକୁ ବି ଆସନ୍ତି ।

ତାଙ୍କ ସହିତ ଦୀର୍ଘ ଦିନର ସମ୍ପର୍କ, ଅନେକ ଅନେକ ସ୍ମୃତି ଏସବୁ ଭୁଲି ହେବ ନାହିଁ । ଯେତେଦିନ ଯାଏ ଆମେ ସବୁ ତାଙ୍କ ଉତ୍ତର ପିଢ଼ି ରହିଥିବୁ ସେତେଦିନଯାଏ ତାଙ୍କ କଥା, ତାଙ୍କ ଆଦର୍ଶ, କାର୍ଯ୍ୟଶୈଳୀ ଏବଂ ଆଶୀର୍ବାଦ ଆମପାଇଁ ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ହୋଇ ରହିଥିବ ।



## ସାହିତ୍ୟିକ ଡା. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଦେହାନ୍ତ

କରତ ସିଂହପୁର, ୨୭.୬ (ଆପ୍) : ଜଗତସିଂହପୁର ମଣ୍ଡଳ ବିଶିଷ୍ଟ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ, ବିଦ୍ୟାଭିଳାଷୀ ପୂର୍ବତନ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ, ଶିକ୍ଷାବିଜ୍ଞାନ ସମିତିର ପୂର୍ବତନ ସଭାପତି ଡା. ସାହିତ୍ୟିକ ଡା. ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଗତକାଲି ପରଲୋକ ଘଟିଛି । ନିଜ କର୍ମାୟତ୍ତ ଜୀବନ ଭିତରେ ସେ ଅନେକ ସୁନାମ ସାଜିନିବା ସହ ବିଭିନ୍ନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଦକ୍ଷତାର ସହ କାର୍ଯ୍ୟକରି ଉତ୍ତମ କିରା ଓ ରାଜ୍ୟ ପାଇଁ ଗୌରବ ଆଣିଛନ୍ତି । ଜଗତସିଂହପୁର ବ୍ଲକ ଅନ୍ତର୍ଗତ ଓଡ଼ିଶା ଅଭିଧାନକ୍ରମରେ ୧୯୩୭ ମସିହା ନଭେମ୍ବର ୧୦ ତାରିଖରେ ଡା. ପ୍ରଧାନ ଜନ୍ମ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲେ । ପ୍ରଥମରୁ ସେ ବ୍ୟୋ ମୋଧାବା ଥିଲେ । ନିଜ ଜୀବନ କାଳରେ ସେ ଅଞ୍ଜଳି ଗରତାୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସଭାପତି ରହି ଦୀର୍ଘଦୂର ସହ କାର୍ଯ୍ୟ ଦୁଇାଇଥିଲେ । ଏସିସହ ବିଭିନ୍ନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଦକ୍ଷତା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରି ଅନେକ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଦ୍ୱାରା ସମର୍ଜିତ



ହୋଇଥିଲେ । ଯେତେବେଳେ କଲେଜରେ ଅଧ୍ୟାପକ ହେବା ସହ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଚିକିତ୍ସନାଳୟ କଲେଜ ଅଫ୍ ଏଜୁକେସନ୍‌ରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଓ ଚିତ୍ରର ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିଥିଲେ । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ଉପରେ ତାଙ୍କର ଅତ୍ୟନ୍ତ ଦକ୍ଷତା ଥିଲା । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଉପରେ ତାଙ୍କର ଗବେଷଣା ତାଙ୍କୁ ବେଶ୍ ଖ୍ୟାତି ଦେଇଥିଲା । ହିନ୍ଦି, ବଙ୍ଗଳା ଭାଷାରେ ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଜ୍ଞାନ ଥିଲା । ଜୀବନ କାଳରେ ସେ ଅନେକ ପୁସ୍ତିକା ରଚନା କରିବା ସହ ଏସବୁ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଥିଲା ।

ଭୁବନେଶ୍ୱରର ଆର୍ଯ୍ୟବିହାରୀ ପୁତ୍ର ଘରେ ତାଙ୍କର ଦେହାନ୍ତ ହେବା ପରେ ଆଜି ମରଣୋତ୍ତର ଜଗତସିଂହପୁର ସରକାରଙ୍କଦ୍ୱାରା ପ୍ରାଣେ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟାଳୟର ପକ୍ଷରୁ ସ୍ମରଣ ଡା. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ମରଣୋତ୍ତରରେ ଅଶ୍ରୁନ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଅର୍ପଣ କରାଯାଇଥିଲା । ପୌରଧ୍ୟାନ୍ତ ନିପୁଣ ଭୌତ୍ୱା, ଅଧ୍ୟାପକ ଭବବନ ଦାଶ, ରଶ୍ମୀକାନ୍ତ ସାହୁ, ମନ୍ଦୟ ଲେଙ୍କା, ପୂର୍ବ ସମାଜସେବୀ ଅମରେନ୍ଦ୍ର ଦାସ ସମେତ ସମାଜସେବୀ ବିନାୟକ ପଟ୍ଟନାୟକ ପ୍ରମୁଖ ଡା. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଶେଷ ଦର୍ଶନ କରି ମୁଖମାଲ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ । ସେହିପରି ଡା. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବିରୋଗରେ ଜିଲ୍ଲାର ବିଭିନ୍ନ ମହଲରୁ ଯୋଜା ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି । ପରେ ଓଡ଼ିଶା ପାଣିପତ୍ର ୦ରେ ଡା. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଶେଷକୃତ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରାଯାଇଥିଲା । ଡା. ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଏକମାତ୍ର ପୁତ୍ର ଜୀ ବିରଞ୍ଚି ନାରାୟଣ ପ୍ରଧାନ ମୁଖାନ୍ତ ହୋଇଥିଲେ ।

୨୮.୬.୧୮-ସମାଜ



## ଭକ୍ତିପୂତ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି

ଭ୍ରମରବର ସାହୁ

ସମ୍ପାଦକ, ଅ.ଭା.ସା.ପ., ଓଡ଼ିଶା

ମୋ: ୭୫୦୪୦୭୩୫୭୦

ମୁଁ ତାଙ୍କୁ କେବେ ଦେଖି ନଥିଲି । ଅଶ୍ୱଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା, ଭୁବନେଶ୍ୱର ସଭାରେ ସେ ସଭାପତି ଆସନରେ ବସିଥିବାରୁ ଦେଖିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇଲି । ଦେଖୁନଥିଲେ ବି ତାଙ୍କର ପ୍ରତିଭା ବିଷୟରେ ଆଗରୁ ଜାଣିଥିଲି । ତାଙ୍କ ଲିଖିତ ରସ କଲ୍ଲୋଳର ସାରଗର୍ଭକ ତତ୍ତ୍ୱ ଦୀନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟ ସମାକ୍ଷା, ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀର ଉପକ୍ରମଣିକା ଆଦି ପାଠ କରିଥିଲି ।

ଶିକ୍ଷା, ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଂଘ ପରିବାରପାଇଁ ତାଙ୍କର ଦାନ ଅତୁଳନୀୟ । ରେଭେନ୍ସା ଓ ଆଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଅଧ୍ୟାପନା ସହିତ ଜଣେ ବିଶିଷ୍ଟ ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ଓ ଗବେଷକ ଭାବରେ ବେଶ୍ ଖ୍ୟାତି ଅର୍ଜନ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କ ଅଧୀନରେ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପ୍ରସନ୍ନ ପାଢ଼ଶାଣୀଙ୍କ ଭଳି ୧୬ ଜଣ ସମ୍ମାନନୀୟ ବ୍ୟକ୍ତି ଓ ସାହିତ୍ୟିକ ଡକ୍ଟରେଟ୍ ଲାଭ କରିଛନ୍ତି । ଓଡ଼ିଶାରେ ପ୍ରଥମେ ଭୁବନେଶ୍ୱରର ଯୁନିଟ୍ ୩ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା । ସେଠାର ସେ ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ସଭ୍ୟ ଓ ସଭାପତି ଭାବରେ ୧୯୭୭ରୁ ୧୯୯୨ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସୁଚାରୁରୂପେ କାର୍ଯ୍ୟ ନିର୍ବାହ କରିଥିଲେ । ଶିକ୍ଷାର ବିକାଶପାଇଁ ତାଙ୍କର ଦାନ ଅତୁଳନୀୟ । ସେ ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର ଉପସଭାପତି ହିସାବରେ ୧୯୯୪ରୁ ୨୦୦୪ ମସିହା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦାୟିତ୍ୱ ନିର୍ବାହ କରିଥିଲେ । ସଂଘ ପରିବାର ଦାୟିତ୍ୱ ନେଇ ଭୁବନେଶ୍ୱର ମହାନଗର ସଂଘଟାଳକ ଭାବରେ ୧୯୭୭ରୁ ୧୯୯୩ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନ କରିଥିଲେ । ଏତଦ୍ବ୍ୟତୀତ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡ଼େମୀ ଓ ବହୁ ଅନୁଷ୍ଠାନରୁ ବହୁ ପ୍ରତିଭାର ଅଧିକାରୀ ହୋଇ ବହୁବାର ମାନପତ୍ର ପାଇ ଓଡ଼ିଶାର ଗୌରବ ବଢ଼ାଇଥିଲେ ।

ବାଲିପଦର ସମ୍ମିଳନୀରେ ଦେଇଥିବା ତାଙ୍କର ଉଦ୍‌ବୋଧନ ଏବେବି ଆମମାନଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ । “ହେ ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ସାହିତ୍ୟିକ ବନ୍ଧୁଗଣ, ହେ ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ଭାବଗ୍ରାହୀ, ଗୁଣଗ୍ରାହୀ ସଜ୍ଜନଗଣ, “କ୍ଷମା କରିବେ, ମୁଁ ମୋ ନିଜ କଥା କହି ଦେଉଛି ଆଜି ପରିଣତ ବୟସର ଶେଷ ଅପରାହ୍ଣରେ ଆପଣମାନଙ୍କ ଗହଣରେ ଉପସ୍ଥିତ । ଏ ଅଧମର ଏବେ ଆଉ ବୟସ ବା ପରମାୟୁ ନାହିଁ, ବଳ ନାହିଁ କି ଶକ୍ତି ନାହିଁ, ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶାରେ ଆପଣମାନଙ୍କ ସହ ବୁଲି ଏ ସଂଗଠନକୁ ନିର୍ମାଣ କରି ଦୃଢ଼ୀଭୂତ କରିବାପାଇଁ । ଅନ୍ତତଃ ମୁଁ ଓଡ଼ିଶାର ଇଷ୍ଟଦେବ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ପ୍ରାର୍ଥନା କରିବି, ଆପଣମାନଙ୍କ ଭଳି ଉତ୍ସାହୀ ଓ ସମର୍ଥ କର୍ତ୍ତୃଧାରଗଣ ଥିବାବେଳେ ଏହି ମଞ୍ଚ ଦୃଢ଼ୀଭୂତ ହେବା ବିଷୟରେ ଦୃଢ଼ ନିଶ୍ଚିତ । ଆପଣମାନେ କଟାବଦ୍ଧ ଉଦ୍ୟମ କରି ଏହାର ବାର୍ତ୍ତା ପ୍ରସାରିତ କରନ୍ତୁ, ବିସ୍ତାରିତ କରନ୍ତୁ ଏବଂ ପ୍ରତି ସାହିତ୍ୟ ସ୍ରଷ୍ଟାଙ୍କ ଭିତରେ ଆତ୍ମପ୍ରକାଶ କରିବାର ଅଭୀଷ୍ଟା ଓ ସର୍ଜନଶୀଳ ପ୍ରବୃତ୍ତିକୁ ଅଭିନନ୍ଦିତ କରନ୍ତୁ । ନୂତନ, ନିଜସ୍ୱ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିବାର ଯେଉଁ ଚିନ୍ତନ ତାକୁ ଉଦ୍‌ବୁଦ୍ଧି କରାନ୍ତୁ । ନିଜେ ମଧ୍ୟ ଏପରି କରି ଆତ୍ମ ପ୍ରସାଦ ଲାଭ କରନ୍ତୁ । ଆମେ ଯଦି ପରସ୍ପର ଏକତ୍ର ନ ହେବା ଅଥବା ପରସ୍ପର

ଭାବ ବିନିମୟ ନ କରିବା ତେବେ ଆପଣଙ୍କ ଭିତରେ ରହିଥିବା ସୃଷ୍ଟି ସାମର୍ଥ୍ୟର ଯେଉଁ ଅସରନ୍ତି ଶକ୍ତିଭସ୍ତ୍ର ଓ ପ୍ରେରଣାର ଭଣ୍ଡାର ଅଛି ତାହା ସ୍ଥାଣୁ ହୋଇଯିବ, ସୁପ୍ତ ହୋଇଯିବ, ମୃତ ହୋଇ ବିନଷ୍ଟ ହୋଇଯିବ ଓ ଦିବ୍ୟ ସଂସ୍କୃତିର ଚିରନ୍ତନୀ ଧାରା ଶୁଷ୍କ ଓ ବିଲୀନ ହୋଇଯିବ ।”

ଗତ ମାର୍ଚ୍ଚ ମାସରେ ଆମର ସଂଗଠନ ସମ୍ପାଦକ ନାରାୟଣଭାଇଙ୍କ ସହ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଯାଇଥିବାରୁ ଆଉ ଥରେ ତାଙ୍କର ସାକ୍ଷାତ ମିଳିଥିଲା । ଅସୁସ୍ଥ ଥିବାରୁ ଆମେ ତାଙ୍କ ଶୋଇବା ଘର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯାଇ ସେଠାରେ ସାକ୍ଷାତ କଲୁ । ଦେହ ଅସୁସ୍ଥ ଥିବା ସତ୍ତ୍ୱେ ନାରାୟଣଭାଇଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଓ ସଂଘ ପରିବାର ବିଷୟରେ ଆଲୋଚନା କରିଥିଲେ । ନାରାୟଣଭାଇ ମୋ ଲିଖିତ “ଶ୍ରୀମଦ୍ ଗୀତା ସଂକୀର୍ତ୍ତନ” ବହିଟି ତାଙ୍କ ଆଡ଼କୁ ବଢ଼ାଇ ଦେଲେ । ବହିଟିକୁ ଦେଖି ସେ ପ୍ରଥମେ ନମସ୍କାର କଲେ ଓ ପ୍ରାୟ ପାଞ୍ଚ ମିନିଟ୍ ମୂଳରୁ ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆଡ଼େଇ ନେଇଗଲେ । ମନ୍ତବ୍ୟ ଦେଲେ “ଭଗବତ୍ ଗୀତାର ପ୍ରଚାର ଓ ପ୍ରସାର ପାଇଁ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ ମାଧ୍ୟମରେ ଏହା ଏକ ଅଲଗା ଚିନ୍ତାଧାରା ଓ ସୃଜନଶକ୍ତି । ଆମ ରହଣୀ ଅଳ୍ପ ସମୟ ହେଲେବି ତାଙ୍କ ସହିତ ବାର୍ତ୍ତାଳାପ ଓ ପରିବାରର ଆତିଥେୟତା ଅତୀବ ମଧୁର ଓ ଭାବମୟ ଥିଲା ।

ଗତ ଜୁନ୍ ୧୨ ତାରିଖରେ ତାଙ୍କର ଦେହ ଅସୁସ୍ଥ ଖବର ପାଇ ଆପୋଲୋ ହସ୍ପିଟାଲ୍, ଭୁବନେଶ୍ୱର ଯାଇଥିଲି । ତାଙ୍କଠାରେ ବିଭିନ୍ନ ଡାକ୍ତରୀ ଉପକରଣ ଲାଗିଥିବାରୁ ଓ ସାକ୍ଷାତ ସମୟ ଶେଷ ହୋଇଯାଇଥିବାରୁ କଥାବାର୍ତ୍ତା ହୋଇପାରି ନଥିଲି । କେବଳ ଦର୍ଶନ କରି ଫେରି ଆସିଲି । ତାଙ୍କର ଦେହ ଅସୁସ୍ଥ ଥିଲେ ବି ତାଙ୍କ ମୁଖମଣ୍ଡଳରେ ବିଚଳିତ ହେବାର ଚିହ୍ନ କି ଆଭାସ୍ ନଥିଲା ।

ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ପ୍ରାର୍ଥନା ଓଡ଼ିଶା ମାଆକୁ ତାଙ୍କଭଳି ଜ୍ଞାନୀ, ଶ୍ରଦ୍ଧାବାନ୍ ଓ ଗବେଷକ ସର୍ବଦା ମିଳୁ ଓ ତାଙ୍କର ଅବଦାନ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣାକ୍ଷରରେ ଲିପିବଦ୍ଧ ରହୁ । ସେହି ମହାନ ଓ ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦ୍‌ଗତି ନିମିତ୍ତ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଖରେ ବିନମ୍ର ପ୍ରାର୍ଥନା ଓ ଭକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।



## ପ୍ରଜ୍ଞା ପୁରୁଷ ଡଃ ନରେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସ୍ମରଣେ

ବିଶିଷ୍ଟ ଐତିହାସିକ, ଶିକ୍ଷାବିତ୍, ସାହିତ୍ୟିକ, ଗବେଷକ, ସମାଲୋଚକ ଓ ସଂସ୍କୃତିପ୍ରାଣୀ ଡଃ ନରେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ଓଡ଼ିଆ ବାଣୀଭଣ୍ଡାରର ଜଣେ ନିରଳସ୍ୱ ସାଧକ । ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଓ ସାହିତ୍ୟରେ ପ୍ରଥମ ଶ୍ରେଣୀରେ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ଶିକ୍ଷା ଶେଷ କରି ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ୧୯୬୨-୬୬ ମସିହା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଅଧ୍ୟାପନା କରିବା ପରେ ୧୯୬୬ରୁ ୧୯୯୬ ମସିହା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଅଞ୍ଚଳିକ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ପ୍ରଥମ ଅଧ୍ୟାପକ ଓ ପରେ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଭାବେ ଅବସର ନେଇଥିଲେ । ମେହେର ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଜୟଦେବ, ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଦାନକୃଷ୍ଣ, ପ୍ରାଚୀନ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଧାରା, ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟର ଭୂମିକା ଭଳି ବହୁ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ସମାଲୋଚନାମୂଳକ ପୁସ୍ତକ ରଚନା ସହ ‘ମଥୁରା ମଙ୍ଗଳ’ ଓ ‘ହେତୁ ଉଦୟ ଭାଗବତ’ର ସେ ସଂପାଦନା କରିଥିଲେ ।

ଅବଶିଷ୍ଟ-୨-୧୧୨

## ସାରଙ୍କ ଭବିଷ୍ୟବାଣୀ

ବିଶ୍ୱନାଥ ଶତପଥୀ

ଯାଜପୁର ଟାଉନ

ମୋ: ୭୯୭୮୬୪୮୧୮୯

“ଆରେ ସେ ବହି ସବୁ ଛପେଇବାରେ କ’ଣ ଅଛି କହିଲୁ, ଗଣ୍ଡା ଗଣ୍ଡା ଲୋକ କୁଡ଼ କୁଡ଼ ବହି ଛପେଇକି ରାସ୍ତାରେ ଗଦଉଛନ୍ତି, କିଏ ପଢୁଛି ତାକୁ, ଯୋଉଦିନ ତୁମ କବିତା ପ୍ରଭାବରେ ତୁମକୁ ଖୋଜି ଖୋଜି ସମ୍ମାନ ଦିଆଯିବ ସେଦିନ ତୁମେ କବିତ୍ୱର ସାର୍ଥକତା ହାସଲ କଲ ବୋଲି ବୁଝିବା ।” ଏଇ କଥା ନଗେନ ସାରଙ୍କର ମୋ ପ୍ରତି ଶେଷ କଥା । ଠିକ୍ ବର୍ଷେ ତଳର କଥା । ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର କୌଣସି ଏକ ଆଲୋଚନାକୁ ନେଇ ମୁଁ ଏବଂ ନାରାୟଣଭାଇ ନଗେନ୍ ସାରଙ୍କ ଘରକୁ ଯାଇଥାଉ । ଦିନ ପ୍ରାୟ ଦୁଇ ପ୍ରହର । ବାହାରେ ମୁଷଳ ଧାରରେ ବର୍ଷା । ଘର ଭିତରେ ବି କୋଉ ବର୍ଷାଠୁ କମ୍ ଅନୁଭବ ନଥିଲା । ବାହାରେ ଇନ୍ଦ୍ର ଦେବତାର ଜଳଧାରାର ବର୍ଷା ଭିତରେ ନଗେନ୍ ସାରଙ୍କ ଜ୍ଞାନଧାରାର ବର୍ଷା । ସେଦିନ ପ୍ରଥମଥର ପାଇଁ ବର୍ଷା ଆଉ ଜ୍ଞାନର ଯୁଗଳବନ୍ଦୀର ଅନୁଭବ କରି ପାରିଥିଲି । ହଠାତ୍ ନାରାୟଣଭାଇ ମତେ ଦେଖୁ କହିପକେଇଲେ- ମଧୁ, ତୁ ଗୋଟେ କବିତା ସାରଙ୍କୁ ଶୁଣା । ମୋ ମନରେ ଯେଉଁ କବିତା ଆସୁଥିଲା ସେଇ ବନ୍ଦୀ କେଶବ କବିତାଟି ଗାଇବା ଆରମ୍ଭ କଲି । ସେ କବିତାଟି ମହାଭାରତର ଏକ ଘଟଣା ଉପରେ ଆଧାରିତ । କବିତାଟି ଶୁଣିଲା ପରେ ସାର୍ କହିଲେ — “ସୁନ୍ଦର ହେଇଛି” । ମୁଁ କହିଲି — “ମୁଁ ଗୋଟେ ସଙ୍କଳନଟେ କରିବାକୁ ଚାହୁଁଛି ।” ସାର୍ କହିଲେ, “ଆରେ, ସେ ବହି ସବୁ ଛପେଇବାରେ କ’ଣ ଅଛି କହିଲୁ । ଗଣ୍ଡା ଗଣ୍ଡା ଲୋକ କୁଡ଼ କୁଡ଼ ବହି ଛପେଇକି ରାସ୍ତାରେ ଗଦଉଛନ୍ତି, କିଏ ପଢୁଛି ତାକୁ । ଯୋଉଦିନ ତୁମ କବିତା ପ୍ରଭାବରେ ତୁମକୁ ଖୋଜି ଖୋଜି ସମ୍ମାନ ଦିଆଯିବ ସେଦିନ ତୁମେ କବିତ୍ୱର ସାର୍ଥକତା ହାସଲ କଲ ବୋଲି ବୁଝିବା ।”

ସେଦିନ ମନଟା ଟିକେ ଉଣା ଅଧୁରା ଖଟା ହୋଇଗଲା । ସାର୍ ଏମିତି କାହିଁକି କହିଲେ ଯେ, ଅବଶ୍ୟ ଆଉ କେହି ହୋଇଥିଲେ ହତୋତ୍ସାହିତ ହେଇ ପଡ଼ି ଥାନ୍ତା, ହେଲେ ମତେ ସାରଙ୍କ କଥାରେ ଏକ ବିଶାଳ ଗୁଡ଼ ରହସ୍ୟର ସମ୍ଭାବନା ଥିଲାଭଳି ମନେହେଲା । ସେ କଥା ବହୁତ ଦିନ ଧରି ମୁଁ ଭାବିଛି । ତା’ ପରେ ସାରଙ୍କ ସହ ଆଉ କେବେ ଦେଖା ହେଇନି ।

ଏଇ ଘଟଣାକୁ ପ୍ରାୟ ୮ ମାସ ବିତିଗଲାଣି, ସେଦିନ ଥାଏ ଜାନୁୟାରୀ ୨୭ ତାରିଖ ରବିବାର ଦିନ ୧୨ଟା ପାଖାପାଖି । ମୁଁ ବଂଶୀ ଶିଖିବାକୁ ଗୁରୁ ଶ୍ରୀ ମୋହିନୀ ମୋହନ ପଟ୍ଟନାୟକଙ୍କ ପାଖରେ ଥାଏ । ଶିକ୍ଷା ସାରିବା ପରେ ମୋବାଇଲ୍ ଫୋନ୍ ଦେଖେ ୬ଟା ମିସ୍କଲ ଗୋଟେ ଅଜଣା ନମ୍ବରରୁ । ଫୋନ୍ କରିବା ପରେ ସେପଟୁ ଜଣେ ଭଦ୍ରବ୍ୟକ୍ତି ଉତ୍ତର ଦିଅନ୍ତି — “ବିଶ୍ୱନାଥବାବୁ କହୁଛନ୍ତି ?” ମୁଁ କହିଲି, “ହଁ, ମୁଁ ବିଶ୍ୱନାଥ, ଆପଣ ?” ଆଜ୍ଞା ନମସ୍କାର, କେମିତି ଅଛନ୍ତି ? ଆପଣଙ୍କ ସହ କଥା ହେଇ ମତେ

ବହୁତ ଖୁସି ଲାଗୁଛି, କେମିତି ଅଛନ୍ତି ? ଏବେ ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ନା ଯାଜପୁରରେ ? ଆପଣଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ କରିବୁ ବୋଲି ଖୋଜି ଖୋଜି ଆମେ ପାଗଳ ହୋଇଗଲୁଣି । ଏବେ ଆପଣଙ୍କ ସହ ଦେଖା ହୋଇ ପାରିବ କି ? ଆପଣଙ୍କୁ ଦେଖିବାକୁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଚାହୁଁଛୁ, ଏବେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଖାଲି ସମୟ ଅଛି ତ ? ଅବିଶ୍ରାନ୍ତ ଭାବେ ଏତେ କଥା ମୋର ହଜମ ହୋଇପାରିଲାଣି । ମୋର ସ୍ଥିର ମସ୍ତିଷ୍କ ବିଚଳିତ ହୋଇଗଲା, ଏ ଲୋକ କିଏ ? କ’ଣ ଚାହୁଁଛି ? ମୋ ପାଇଁ ଏତେ ବ୍ୟାକୁଳ କାହିଁକି ? ମତେ କାହିଁକି ଏତେ ଖୋଜୁଛି ? କିଛିକ୍ଷଣ ଭିତରେ ଏମିତି ସବୁ ପ୍ରଶ୍ନ ମନକୁ ଆସିଗଲା । ମୁଁ ପଚାରିଲି, ଆଜ୍ଞା, ଆପଣଙ୍କୁ ଜାଣିପାରିଲିନି ? ଆପଣ କିଏ ? କାହିଁକି ଫୋନ୍ କରିଥିଲେ କହିବେ କି ? ସେ ଭଦ୍ରବ୍ୟକ୍ତି କହିଲେ — ମୁଁ ନେତାଜୀ ହାଇ ସ୍କୁଲର ରିଟାୟାର୍ଡ ହେଡ଼ମାଷ୍ଟର । ଆପଣଙ୍କ ନମ୍ବର ବହୁତ କଷ୍ଟରେ ପାଇଲି । ଆପଣ ଆମ ବିଦ୍ୟାଳୟର ଜଣେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହ କଥା ହୁଅନ୍ତୁ । ସେ ଶିକ୍ଷକ କହିଲେ, “ଆପଣ ମକର ସଂକ୍ରାନ୍ତିରେ ବରୁଣେଶ୍ୱର ମେଳାରେ କବିତାଟିଏ ପଢୁଥିଲେ ତ ?” ମୁଁ କହିଲି, ହଁ ଆଜ୍ଞା । ଆପଣ ମହାଭାରତ ଉପରେ କବିତା ଲେଖନ୍ତି କି ? “ହଁ ଆଜ୍ଞା ।” ଆପଣଙ୍କ ନା ବିଶ୍ୱନାଥ ଶତପଥୀ ତ ? “ହଁ ଆଜ୍ଞା ।” ଆପଣଙ୍କ ଘର ଯାଜପୁର ତ ? “ଆରେ ଭାଇ ହଁ । ଆପଣ ମକର ମେଳାରେ ବରୁଣେଶ୍ୱରରେ ମହାଭାରତର ଏକ କବିତା ଗାଉଥିଲେ ? ହଁ ଭାଇ, ଆପଣ କେମିତି ଏସବୁ ଜାଣିଲେ ? ମତେ କାହିଁକି ପଚାରୁଛନ୍ତି, ମୁଁ କିଛି ବୁଝିପାରୁନି । ତା’ପରେ ସେ ଭଦ୍ରବ୍ୟକ୍ତି କହିଲେ — “ମୁଁ ତୁମ ଭିଡ଼ିଓ ସ୍ୱାଚ୍ଛସ୍ୟପରେ ଦେଖିଲି । ଜଣେ ଶିକ୍ଷକ ତୁମ ଭିଡ଼ିଓ କରି ମୋ ପାଖକୁ ପଠେଇଥିଲେ ।

ସେ ଦିନ ରାତିରେ ବି ଏ କଥା ଭାବି ଠିକ୍ରେ ଶୋଇ ପାରିନି । ହେଲେ ଏମିତି ଅକସ୍ମାତ୍ ପୁରସ୍କାର ପାଇବା ଖବରରେ ମୋ ମନରେ ସାମାନ୍ୟତମ ଆନନ୍ଦର ଆଭାସ୍ ବି ନଥିଲା । ତଥାପି ମୁଁ ପରଦିନ ସକାଳେ ସେମାନଙ୍କୁ ଫୋନ୍ କରି ନିଜର ସ୍ୱାକୃତି ଜଣେଇଲି । ସେମାନେ ବହୁତ ଖୁସି ହୋଇ ମୋର ନାମ, ଠିକଣା, ପିତା-ମାତାଙ୍କ ନାମ, ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିବରଣୀ ଦେବାପାଇଁ କହିଲେ । ମୁଁ ମଧ୍ୟ ଇ-ମେଲ୍ ମାଧ୍ୟମରେ ଦେଇଦେଲି । ସେଇ ଦିନଠାରୁ ମୁଁ ଏକ ଅଦ୍ଭୁତ ଭାବନାରେ ବୁଡ଼ି ରହିଲି ।

ଚାହୁଁ ଚାହୁଁ ସେଇ ଦିନ ଆସି ପହଞ୍ଚିଲା । ମତେ ୨୫ ତାରିଖ ପୁଣି ଫୋନ୍ ଆସିଲା । ସେପଟୁ ଶୁଣାଗଲା, “ଆପଣ ଆସୁଛନ୍ତି ତ ?” ହଁ ଆଜ୍ଞା ନିଶ୍ଚୟ ।

ପରଦିନ ଭୁବନେଶ୍ୱର ତମଣା ସଙ୍ଘ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ୨୬ ଜାନୁୟାରୀ ସାଧାରଣତନ୍ତ୍ର ଦିବସ ପାଳନ ପରେ ଯାଜପୁର ଅଭିମୁଖେ ଯାତ୍ରା କଲି । ଘରେ ପହଞ୍ଚି ସବୁକଥା ମୋ ବାବା, ବୋଉଙ୍କୁ କହିଲି । ସେମାନେ ଯେତିକି ଖୁସି ହେଲେ ସେତିକି ଗର୍ବ ଅନୁଭବ କଲେ । ଦିନ ୨ଟା ବେଳେ ମୁଁ ବାବାଙ୍କ ସହ ମଟରସାଇକେଲରେ ପ୍ରୀତିପୁର ନେତାଜୀ ବିଦ୍ୟାଳୟ ଅଭିମୁଖେ ଯାତ୍ରା କଲି । ବାଟସାରା ଖାଲି ଫୋନ୍ ଆସୁଥାଏ, “ଆପଣ କୋଉଠି ପହଞ୍ଚିଲେ, କେତେବେଳେ ପହଞ୍ଚିବେ, ଆପଣଙ୍କୁ ଦେଖିବାପାଇଁ ସମସ୍ତେ ଅପେକ୍ଷା କରିଛନ୍ତି. . . ଏମିତି ଅନେକ କଥା ।”

ପ୍ରୀତିପୁର ଛକରେ ପହଞ୍ଚିବା ପରେ ବିଶାଳ ତୋରଣ ନିର୍ମାଣ ହୋଇଥିଲା । ଦୁଇଜଣ ବ୍ୟକ୍ତି ମଟରସାଇକେଲ ଧରି ତୋରଣ ପାଖରେ ଠିଆ ହୋଇଥିଲେ । ମତେ ଦେଖୁ ଅଟକାଇ ପଡ଼ାରିଲେ, ଆପଣ ବିଶ୍ୱନାଥ ବାବୁ । ମୁଁ କହିଲି ଆଜ୍ଞା । ତା'ପରେ ଭବ୍ୟ ସ୍ୱାଗତ କରି ମତେ ବିଦ୍ୟାଳୟ ମୁଖ୍ୟ ପାଟକଯାଏ ପାଛୋଟି ନେଲେ । ମୁଖ୍ୟ ପାଟକରେ ମଧ୍ୟ ଅତି ଉଚ୍ଚକୋଟିର ସ୍ୱାଗତ ବ୍ୟବସ୍ଥା । ତା' ପରେ ସଭାସ୍ଥଳରେ ପହଞ୍ଚି ଦେଖେ, ସଭା କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ହୋଇସାରିଥାଏ । ହଠାତ୍ ମଞ୍ଚ ଉପରୁ ମୋ ନାମ ଉଚ୍ଚାରଣ କରି ଡକାହେଲା । ମତେ ଏକ ମାନପତ୍ର, ପୁଷ୍ପମାଳ୍ୟ, ଶ୍ରୀଫଳ, ଚନ୍ଦର ଦେଇ ସମ୍ମାନିତ କରାଗଲା ।

ସେପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୋ ମନରେ ଥାଏ, ଏସବୁ କେମିତିକା ମାୟା । ଗୋଟେ କବି, ଯାହାର ଖଣ୍ଡେ ସଙ୍କଳନ ନାହିଁ, କୌଣସି ପତ୍ରିକାରେ ଲେଖାଟେ ବାହାରୁନି, ସେଭଳି ତୁଚ୍ଛ କବିକୁ ଏମିତି ସମ୍ମାନ କାହିଁକି ? ମଞ୍ଚ ଉପରେ ଥାଇ ହଠାତ୍ ଏମିତି କଥା ଭାବୁ ଭାବୁ ନଗେନ୍ ସାରଙ୍କ କଥା ମନେ ପଡ଼ିଗଲା । ସାର୍ କହିଥିଲେ, “ଯେବେ ଖୋଜି ଖୋଜି ତୁମକୁ ସମ୍ମାନ ଦେବେ ସେଇଦିନ ତୁମ କବିତାକୁ ସାର୍ଥକତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।” ସେଦିନ ସଭାରେ ସମସ୍ତେ ମତେ ସମ୍ମାନୀତ କରିବାରେ ବ୍ୟସ୍ତ । ଅତିଥିମାନେ ମତେ ଫୁଲମାଳ ପିନ୍ଧାଇ ସମ୍ମାନିତ କରୁଥାନ୍ତି । ଦର୍ଶକମାନେ କରତାଳି ଧ୍ବନିରେ ସଭାସ୍ଥଳକୁ ପ୍ରକମ୍ପିତ କରୁଥାଆନ୍ତି ଆନନ୍ଦରେ । ଜଣେ ବକ୍ତା ମୋର ପ୍ରଶଂସାରେ ବିମୋହିତ । ସମ୍ପାଦକମାନେ ଫଟୋ ଉଠେଇବାରେ ବ୍ୟସ୍ତ । ପ୍ରଥମଥର ପାଇଁ ମୋ ସମ୍ମାନରେ ମୋ ବାବାଙ୍କ ମୁଖରେ ପ୍ରସନ୍ନତାର ଛବି ଦିଶୁଥାଏ । ହେଲେ ମୋ ମନ ନଗେନ୍ ସାରଙ୍କ ପାଖରେ ଥାଏ । ତାଙ୍କ ସେଇ କଥା “ଖୋଜିକି ପ୍ରଶଂସା ଦେବା” କଥା ମୋ କାନରେ ବାରମ୍ବାର ପ୍ରତିଧ୍ବନିତ ହେଉଥାଏ । ମୋ ମନରେ ତିଳେମାତ୍ର ଆନନ୍ଦର ଭାବ ନଥାଏ । ମୁଁ କେବଳ ସାରଙ୍କ ଭବିଷ୍ୟତବାଣୀ ବିଷୟରେ ଭାବୁଥାଏ । କେହି ଜଣେ କହିଥିଲେ କେବଳ ଦିବ୍ୟ ପୁରୁଷମାନେ ହିଁ ଭବିଷ୍ୟତବାଣୀ କରିଥାନ୍ତି ।



### ପ୍ରଜ୍ଞା ପୁରୁଷ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସ୍ମରଣେ

ଜୀବନର ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟାୟରେ ବାର୍ଦ୍ଧକ୍ୟଜନିତ ଅସୁସ୍ଥତା ଓ ମାନସିକ ତାପ ସତ୍ତ୍ୱେ ଏକ ଜାତୀୟ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ରୂପେ ‘ବେଦ-ବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା’ (ପ୍ରଥମ ଖଣ୍ଡ, ଦ୍ୱିତୀୟ ଖଣ୍ଡ ଓ ତୃତୀୟ ଖଣ୍ଡ) ପ୍ରାୟ ଦୁଇ ହଜାର ପୃଷ୍ଠାର ଗବେଷଣା ଆଧାରିତ ସମାଲୋଚନା ପୁସ୍ତକ ପ୍ରଣୟନ କରିଥିଲେ । ଏହାଛଡ଼ା ଏକାଧିକ ପ୍ରବନ୍ଧ ରଚନା କରି ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଅନେକ ଅନାଲୋଚିତ ଦିଗକୁ ଲୋକଲୋଚନକୁ ଆଣିପାରିଥିଲେ । ପ୍ରାଚୀନ ପୋଥି ସଂଗ୍ରହ, ତାହାର ପଠୋଦ୍ଧାର ଓ ସଂପାଦନା ଥିଲା ତାଙ୍କର ବ୍ରତ । ଓଡ଼ିଆ ନିର୍ଗୁଣ ସାହିତ୍ୟରେ ଗବେଷଣା ଲାଗି ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ତାଙ୍କ ମିଳିଥିଲା ଡିଜିଟାଲ୍ ଉପାଧି । ସମାଲୋଚନା ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସେ ଥିଲେ ଏକ ଭିନ୍ନପଥର ଯାତ୍ରୀ । ପ୍ରତ୍ନତତ୍ତ୍ୱ, ଭୂ-ବିଜ୍ଞାନ, ଜ୍ୟୋତିର୍ବିଜ୍ଞାନ, ଅଣୁବିଜ୍ଞାନ ସହ ବେଦ, ଉପନିଷଦ, କିମ୍ବଦନ୍ତୀ, ଲୋକକଥା ଓ ସଂସ୍କୃତି ଆଧାରରେ ଇତିହାସର ବହୁ ଭ୍ରାନ୍ତି ଓ ପ୍ରଚଳିତ ମତବାଦକୁ ସେ ଅନୁଶୀଳନ ପୂର୍ବକ ଖଣ୍ଡନ କରି ଯାହା ସତ୍ୟ ଓ ପ୍ରାମାଣିକ ତାହା ଜନମାନସକୁ ଆଣିବାରେ ସକ୍ଷମ ହୋଇଥିଲେ ।

— ଅବଶିଷ୍ଟାଂଶ-ପୃ-୧୧୪ —



## ଜଣେ ଥିଲେ ସାର୍

ଚିନ୍ମୟ ବୋଡ଼େ

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମୋ: ୯୪୩୭୦୮ ୬୬୬୪

ଆଜି ସ୍ନାନ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ଜୁନ୍ ୨୮ ତାରିଖ, ୨୦୧୮ । ଗତକାଲି ସକାଳେ ଖବର ପହଞ୍ଚିଲା ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ଚାଲିଗଲେ । ବର୍ଷା ଚାଲିଥାଏ ଅନବରତ ରାହା ନ ଦେଇ । ବର୍ଷା ବନ୍ଦ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । କେମିତି ଯିବି ଏ କଥା ଭାବି ଅନ୍ୟ ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କୁ ଖବର ଦେଲି । ଯୋଜନା ମୁତାବକ ଘରୁ ଯୁନିଟ୍-୩ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରକୁ ମୁତ ଦେହ ଆସିବ ଓ ତତ୍ପରେ ଅଷ୍ଟଳ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ହୋଇ ତାଙ୍କ ଗାଁ ଜଗତସିଂହପୁରରେ ଶେଷକୃତ୍ୟ ସମାପନ ହେବ । ବର୍ଷା ସତ୍ତ୍ୱେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହେଲି । ଇତିମଧ୍ୟରେ ପୁଣି ଖବର ଆସିଲା ସାର୍ଙ୍କ ମୃତ ଦେହ ଗାଁକୁ ଗଲାଣି । ଏଣୁ ଶେଷ ଦର୍ଶନ ଆଉ ସମ୍ଭବ ହେଲା ନାହିଁ ।

ସାର୍ଙ୍କ ସହ ପ୍ରଥମ ଦେଖା ହୋଇଥିଲା ୧୯୯୬ ମସିହାରେ ତାଙ୍କ ରିଜିଷ୍ଟ୍ରେସନ୍ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ପରିସରରେ । ମୁଁ ଜଣେ ଯୁବ କବି ଭାବେ ଆୟୋଜିତ କର୍ମଶାଳାକୁ ଚୟନ ହୋଇ ଆସିଥାଏ । କର୍ମଶାଳାଟି ଭାରତ ସରକାରଙ୍କ ସହାୟତାରେ ରିଜିଷ୍ଟ୍ରେସନ୍ ଇନଷ୍ଟିଚ୍ୟୁଟ୍ ଆୟୋଜନ କରିଥିଲେ । ଆରମ୍ଭ ଦିନର ମଧ୍ୟାହ୍ନ ବିରତି ପୂର୍ବରୁ ଟିକିଏ ହୋ-ହାଲୁ ଶୁଣାଗଲା । ତା’ପରେ ବୁଝାପଡ଼ିଲା ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆସିଛନ୍ତି ଏଣୁ ସମସ୍ତେ ତାଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବାରେ ବ୍ୟସ୍ତ । ମୁଁ ତାଙ୍କ ନାଁ ପୂର୍ବରୁ ଶୁଣିଥିଲି; କିନ୍ତୁ କେବେ ଦେଖିନଥିଲି । ସଂଘ ସମ୍ପର୍କିତ ବ୍ୟକ୍ତି ଭାବରେ ସେ ଥିଲେ ଜଣାଶୁଣା । କର୍ମଶାଳାକୁ ଆସିଥିବା ସମସ୍ତ ସମସାମୟିକ ଯୁବ ବନ୍ଧୁ ତାଙ୍କର ପାଦ ଛୁଇଁ ପ୍ରଣାମ କଲେ । ସେ ସମୟରେ ସେ ଦୁଇ ପଦ କଥା ହୋଇ ଖାତାରେ ଧାଡ଼ିଏ ଦି’ଧାଡ଼ି ଲେଖି ଓ ସତ୍ତକ ଦେଉଥାନ୍ତି । ସିନେମା ଷ୍ଟାର୍ ଓ ଦାମୀ ଖେଳାଳିଙ୍କୁ ଯେପରି ସତ୍ତକ ସଂଗ୍ରହ ହୁଏ ସେହିପରି ସତ୍ତକ ଦେଉଥାନ୍ତି । ମୋ ପାଲି ଯେତେବେଳେ ପଡ଼ିଲା, ମୁଁ କହିଲି, ସାର୍, ମୁଁ ସଂଘର ଦ୍ୱିତୀୟ ବର୍ଷ ଓ.ଟି.ସି. କରିଛି । ମୁଁ ତାଙ୍କ ପାଦ ଛୁଇଁବି କ’ଣ ତତ୍ତ୍ୱଶାତ୍ର ମୋତେ କୁଣ୍ଡେଇ ପକାଇ କହିଲେ, “ଏଇଟା ମୋ ସଂଘ ଭାଇରେ ।” ମୋର ଓଜନ ସେତେବେଳେ ଅକସ୍ମାତ୍ ବଢ଼ିଗଲା । ମୁଁ ଯେପରି ଦୂରରୁ ଦୁମଟିଏ ହୋଇଗଲି । ମଧ୍ୟାହ୍ନ ଭୋଜନ ସମୟରେ ଆମେ ସବୁ ବନ୍ଧୁ ନିଜର ଖାତାରେ ସାର୍ ଲେଖୁଥିବା ଧାଡ଼ିଟି ପଢ଼ି ଦେଖୁଲୁ ଯେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ସାର୍ ସମସ୍ତଙ୍କପାଇଁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଉପଦେଶ ମାନ ଲେଖୁଛନ୍ତି । ସୁନ୍ଦର ଅକ୍ଷର, ମାର୍ଜିତ ଭାଷା, ସମସ୍ତଙ୍କପାଇଁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଲେଖା, ସାର୍ ଏତେ ଶୀଘ୍ର ଲେଖୁଛନ୍ତି କିପରି ? ଏ ଥିଲା ସେ ସମୟରେ ଆମପାଇଁ (ମୋ) ଏକ କୁହେଳିକା । କର୍ମଶାଳାରେ ଉପସ୍ଥିତ ଅନ୍ୟ ବିଚାରକ ଓ ବରିଷ୍ଠ କବି, ଲେଖକ, ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ସମସ୍ତେ ନଗେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପ୍ରଶଂସାକୁ ଥିଲେ ଶତମୁଖ । ବାର୍ତ୍ତାଳାପରୁ ଜାଣିଲୁ ସାର୍ ସେହିବର୍ଷ ସେ କଲେଜରୁ ଅବସର ନେଇଛନ୍ତି । ଠିଆହେବା ଅବସ୍ଥାରେ ବି ସାର୍ ଅନର୍ଗଲ ବକ୍ତୃତା ଦେଉଥାନ୍ତି । କି ବାକ୍ୟ ସେ । କେବଳ ନିର୍ଭୁଲ ନୁହେଁ ମାର୍ଜିତ ଓ ଉଚ୍ଚ ସ୍ୱର ଶବ୍ଦ ମାଧ୍ୟମରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଓଡ଼ିଆ ବାକ୍ୟଟି ମୋତେ ସଂସ୍କୃତ ପରି ଲାଗେ ।

ତତ୍ପରେ ଅନେକ ଦିନ ପରେ ସାରଳ ସହ ଦେଖାହୁଏ ଯୁନିଟ୍-୩ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରରେ ସାହିତ୍ୟ ସଭାରେ । କେବଳ ସାହିତ୍ୟ ନୁହେଁ, ସାହିତ୍ୟ ଭିତରେ ସଂସ୍କୃତି, ଐତିହ୍ୟ ଓ ଭୌଗୋଳିକ ପ୍ରମାଣ ସହ ଉପସ୍ଥାପିତ ବକ୍ତବ୍ୟ ଶ୍ରେଣୀ ମାନରେ ଏକ ବିଭାଜନ ରେଖାଟିଏ ଟାଣିଥାଏ । ଇଂରେଜ ଶାସକଙ୍କର ଲର୍ଡ଼ ମେକଲେଠୁ ଆରମ୍ଭ କରି ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ସତ୍ୟତାର ଜୟଗାନ କୌଣସି ଗୋଟିଏ ବି ତାଙ୍କ ବକ୍ତବ୍ୟରୁ ବାଦ୍ ଯାଏନି । ତଥ୍ୟଯୁକ୍ତ, ମାର୍ଜିତ ସୃଜନାତ୍ମକ ପରିବେଷଣ ଏତେ ଉଚ୍ଚକୋଟୀର ଯେ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ର ନାଥଙ୍କୁ ଆଉ କାହା ସହ ତୁଳନା କରାଯାଇ ନ ପାରେ । ‘ବେଦ ବନ୍ଦିତା ନଦୀ ସରସ୍ୱତୀ’ ସଂସ୍କରଣର ତିନିଗୋଟି ସଂରଚନାକୁ ବୁଝିବା, ଆମ ସମୟପାଇଁ ଏକ ଆହ୍ୱାନ । ଡ. ପ୍ରଧାନ ବ୍ୟକ୍ତିଟିଏ ନୁହେଁ ବରଂ ଏକ ଶୃଙ୍ଖଳିତ ସାମାଜିକ ସଂରଚନାର ପୁରୋଧା । କ୍ରମେ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ତାଙ୍କର ଅନେକ ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା ଓ ଗବେଷଣାକୁ ନେଇ ବହୁ ଚର୍ଚ୍ଚିତ ଓ ପ୍ରଶଂସିତ । ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାର, ବଙ୍ଗଳାର ନୁହଁ ଏ ପ୍ରକାର ତଥ୍ୟ ତଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା । ଜଣେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ବିଶାରଦ ହେଲେ ହେଁ ଐତିହାସିକ ଘଟଣାବଳୀ ଆଧାରରେ ତାଙ୍କର ସାହିତ୍ୟ ଚର୍ଚ୍ଚା ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ଭିନ୍ନ ଓ ଅନନ୍ୟ । ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ପରମ୍ପରା, ଜୟଦେବ ଓଡ଼ିଶାର ଦାନକୃଷ୍ଣ ସାହିତ୍ୟର ଆଲୋଚନା ପରି ଅନେକ ଗବେଷଣା ଓ ଶେଷରେ ‘ବେଦ ବନ୍ଦିତା ସରସ୍ୱତୀ’ ପରି ସୁବିସ୍ତୃତ ସଙ୍କଳନର ପ୍ରସ୍ତୁତି କୌଣସି ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡ଼େମୀ ପୁରସ୍କାର ମିଳିନାହିଁ । ଆଉ ପ୍ରଶଂସାରୁ ଦୂରରେ ରହି ଅମାୟିକ ଓ ନିରଳସ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ଏହାହିଁ ଶେଷକଥା । ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ପକ୍ଷରୁ ଏକ ଗ୍ରନ୍ଥାଗାର ପାଇଁ ଯୋଜନା ହୋଇଥିଲା, ତାହା ହୋଇପାରିଲେ ସେ ଅମରାତ୍ମା ପାଇଁ ହେବ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।



### ପ୍ରଜ୍ଞା ପୁରୁଷ ତଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥଙ୍କ ସ୍ମରଣେ

ଭାରତୀୟ ସଂସ୍କୃତି ଓ ଚିରନ୍ତନ ମୂଲ୍ୟବୋଧ ଭିତ୍ତିରେ ଆମ ପ୍ରଚଳିତ ଶିକ୍ଷାବ୍ୟବସ୍ଥାକୁ ଶୃଙ୍ଖଳିତ ତଥା ବ୍ୟବସ୍ଥିତ କରିବା ଲାଗି ସରସ୍ୱତୀ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରର ପରିକଳ୍ପନା ଓ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିଥିଲେ । ସେ ଥିଲେ ଏହି ପାଠ୍ୟଶାସତ୍ରୀ, ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖର ପ୍ରଥମ ଓ ପ୍ରଧାନ ସ୍ଥପତି । ରାଜନୈତିକ ମତବାଦର ସଂଘର୍ଷ, ଧର୍ମଗତ ବିଦ୍ୱେଷରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱକୁ ଉଠି ଭାବୀ ବଂଶଧରମାନଙ୍କୁ ସୁନାଗରିକ, ସଂସ୍କୃତି ସଚେତନ କରିବା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଶିକ୍ଷାବିକାଶ ସମିତିର ସଭାପତି ଭାବେ ସେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିଥିଲେ । ଏପରି ଜଣେ ନିରଳସ ଗବେଷକ ଓ ପ୍ରଜ୍ଞାପୁରୁଷଙ୍କ ଅବତରମାନରେ ଯେଉଁ ଶୂନ୍ୟତା ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଛି ତାହା ଅପୂରଣୀୟ । ତାଙ୍କର ଦ୍ୱାଦଶାବ୍ଦରେ ଅସଂଖ୍ୟ ଅନୁଗାମୀଙ୍କ ସହ ଲେଖକ ଜଣାଉଛି ଉକ୍ତିପୁର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ।

ତଃ ଭାଗବତ ଶୁଭ, ସିତିଏ, କଟକ

# “କ’ଣ, ଶେଷକୁ ଥିଲା ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ!”

ନାରାୟଣ ନାୟକ

ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ

କ୍ଷେତ୍ର ସଙ୍ଗଠନ ସମ୍ପାଦକ

ମୋ: ୮୨୮୦୩୧୨୬୫୨

୨୦୦୮ ମସିହା ଡିସେମ୍ବର ମାସ । ଦିନ ଠିକ୍ ମନେ ପଡୁନାହିଁ । କୌଣସି ଏକ ଅସ୍ପତିତ ଅପରାହ୍ନର ଗୋଧୂଳି ଲଗ୍ନରେ ମୁଁ ସାମାଜିକ (ସାମାଜିକ ଖଟୁଆ)ଙ୍କୁ ନେଇ ପ୍ରଥମକରି ସାକ୍ଷାତ କରିଥିଲି ପୂଜ୍ୟ ପ୍ରଫେସର ନଗେନବାବୁଙ୍କୁ ତାଙ୍କ ଆଚାର୍ଯ୍ୟବିହାର ବାସଭବନରେ । ମନେହେଉଥିଲା ସେ ଏକ ଶୁଭ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ଥିଲା । ବହୁ ବିଚାରବିମର୍ଶ ପରେ ତାଙ୍କର ନାମଟି ସ୍ଥିର ହୋଇଥିଲା ଆମ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଦାୟିତ୍ବ ନିର୍ବାହ କରିବାପାଇଁ । ସାମାଜିକ ତାଙ୍କ ସହିତ ମୋର ପରିଚୟ କରାଇଦେଇ ଆମ ଯିବାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ତାଙ୍କ ପାଖରେ ବ୍ୟକ୍ତ କଲେ । ମୁଁ ଚିନ୍ତିତ ଥିଲି ହଁ କହିବେ କି ନା କହିବେ । ତାଙ୍କ ଉତ୍ତରକୁ ଅପେକ୍ଷା କରୁଥିଲି; ସେ କହିଲେ — “କ’ଣ, ଶେଷକୁ ଥିଲା ଏହି ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ!” ହଉ. . . ମୋର କ’ଣ ଆଉ ବଳ ବୟସ ଅଛି ସାରା ଓଡ଼ିଶା ବୁଲିବାକୁ ? ମୁଁ କହିଲି, ଆମେ ସବୁ ବୁଲିବୁ; ଆପଣ ଆମକୁ ବାଟ ବତାଇବେ । ସେ କହିଲେ — ଯାହା ଈଶ୍ବରଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ଥିବ ତାହା ଅବଶ୍ୟ ହେବ । ଫେରିବାବେଳକୁ ଭାବୁଥିଲି ମୋତେ ଯଦି କେହି ଆଉ ୫ ବର୍ଷ ପୂର୍ବରୁ ଏ ମହାତ୍ମାଙ୍କ ସହିତ ପରିଚୟ କରିଦେଇ ଥାଆନ୍ତେ . . . ।

ସେହି ୨୦୦୮ ଡିସେମ୍ବରରୁ ୨୦୧୮ ଜୀବନର ଶେଷ ନିଃଶ୍ବାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସେ ପରିଷଦର ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଦାୟିତ୍ବରେ ରହିଲେ । ତାଙ୍କ ନେତୃତ୍ବରେ ୨୦୦୯ ଜାନୁଆରୀରେ ଭୁବନେଶ୍ବରର ଯୁନିଟ୍-୮ରେ ଥିବା ଆଇ.ସି.ଏ.ଆଇ. ଭବନରେ ହୋଇଥିଲା ପ୍ରଥମ ରାଜ୍ୟସ୍ତରୀୟ ଲେଖକ ସମ୍ମିଳନୀ, ୨୦୧୦ରେ ବାଲିପଦରରେ ରାଜ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ, ୨୦୧୧ ବ୍ରହ୍ମପୁରରେ ରାଜ୍ୟ ସମ୍ମିଳନୀ । ୨୦୧୨ ଅକ୍ଟୋବରରେ ଭୋପାଳରେ ସର୍ବଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମାନ ସମାରୋହରେ ସେ ଭାଗ ନେଇଥିଲେ । ୨୦୧୨ ନଭେମ୍ବରରେ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନ ଯାତ୍ରାରେ ପୁରୀର ଯୁବ ଛାତ୍ରାବାସ (ୟୁଥ୍ ହଷ୍ଟେଲ୍)ରେ ୨ ଦିନ ରହି ଚିଲିକା ଭ୍ରମଣ ଓ ପୁରୀର ବିଭିନ୍ନ ସାହିତ୍ୟ ସଭାରେ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ । ୨୦୧୩ରେ ନନ୍ଦନକାନନ ବନବିହାର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ହେଉ ବା କଟକର ଖପୁରିଆସ୍ଥିତ ସତ୍ୟ ଭବନରେ ଅତିବଡ଼ୀ ଜୟନ୍ତୀ ହେଉ ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଉପସ୍ଥିତ ରହି ସାହିତ୍ୟିକମାନଙ୍କୁ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କରିଥିଲେ । ୨୦୧୪ରେ ନାଲକୋ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ଅନୁଗୁଳରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିବା ବଳରାମ ଦାସ ଜୟନ୍ତୀରେ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ । ୨୦୧୫ ସେପ୍ଟେମ୍ବରରେ ଫୁଲବାଣୀ ଯାଇଥିଲେ ଅତିବଡ଼ୀ ଜୟନ୍ତୀ ପାଳନପାଇଁ । ସେହିବର୍ଷ ଅକ୍ଟୋବରରେ ରାଉରକେଲାରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିବା ଏକ ସାହିତ୍ୟ ସଭାରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା କରିଥିଲେ । ୨୦୧୬ ଜୁନରେ ଭୁବନେଶ୍ବରରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିବା ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସୁବର୍ଷ ଜୟନ୍ତୀ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତା କରିଥିଲେ । ୨୦୧୭ ମାର୍ଚ୍ଚ ମାସରେ ନାଲକୋ ଅତିଥିଭବନରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ

ହୋଇଥିବା ପୁସ୍ତକ ଉନ୍ମୋଚନ ସମାରୋହରେ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ । ୨୦୦୮ରୁ ୨୦୧୮ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗୋଟିଏ ଦଶନ୍ଧି ଅର୍ଥାତ୍ ଜୀବନର ଶେଷ ୧୦ବର୍ଷ ସମୟ ଦେଇ ସେ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦକୁ ମଜଭୁତ୍ କରି ଗଢ଼ି ଦେଇଗଲେ । ଭାଷା ଓ ସାହିତ୍ୟର ଅବମୂଲ୍ୟାୟନ ତାଙ୍କପାଇଁ ଅସହ୍ୟ ଥିଲା । ବର୍ଷବୋଧ ବିବାଦ ହେଉ ବା ବିଦେଶୀ ଭାଷା ମାଧ୍ୟମରେ ଆଦର୍ଶ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ହେଉ ସେ ତ୍ୱରିତ ସ୍ୱର ଉତ୍ତୋଳନ କରି ପ୍ରତିବାଦ କରୁଥିଲେ ।

ସେ ଜଣେ ଶୁଷ୍କ ଲେଖକ ନ ଥିଲେ । ଯାହା ଲେଖୁଛନ୍ତି ତାକୁ ସେ ଜୀବନ୍ଦଶାରେ ଅକ୍ଷରେ ଅକ୍ଷରେ ପାଳନ କରିଯାଇଛନ୍ତି । ଏ କଥା ମୋତେ ସେତେବେଳେ ଅନୁଭବ ହେଲା, ଯେତେବେଳେ ମୁଁ “ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଘ” ବହିର ପ୍ରସ୍ତୁତି ପାଇଁ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟକୁ ଯାଇ ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପର ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ପୃଷ୍ଠାଗୁଡ଼ିକୁ ଓଲଟାଉଥିଲି, ସେତେବେଳେ ଦେଖୁଲି ସେ ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ବିଷୟରେ ଅନେକ ସ୍ତମ୍ଭ ଲେଖୁଛନ୍ତି । ତାଙ୍କ ଜୀବନକୁ ଅନୁଧ୍ୟାନ କଲେ ଆମେ ଦେଖିବା ସେହି ଲେଖାଗୁଡ଼ିକୁ ସେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଯୋଜନାରେ ସଫଳ ରୂପାୟନ କରିଛନ୍ତି, ଯାହାର ପରିଣାମସ୍ୱରୂପ ସରକାରୀ ବିଦ୍ୟାଳୟ ତୁଳନାରେ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ବହୁ ଉତ୍ତ୍ରେ । ଅନେକ ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀ ତାଙ୍କ ଘରକୁ ଯାଇ ଏହାର କାରଣ କ’ଣ ବୋଲି ତାଙ୍କୁ ପଚାରିଛନ୍ତି ।

ସେ ମେଧାବୀ ଛାତ୍ର ହୋଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ରେଭେନ୍ସାରେ ବିଜ୍ଞାନ ପଢ଼ୁଥିବାବେଳେ ତାଙ୍କର, ଇଞ୍ଜିନିୟର ହେବା ଲାଗି ଆଗ୍ରହ ପ୍ରକାଶ କରି ନ ଥିଲେ । କାରଣ ତାଙ୍କ ପରିବାରର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଭଲ ନ ଥିଲା । ତାଙ୍କୁ ଟେଲିଫୋନ୍ ଏକ୍ସଚେଞ୍ଜରେ ଚାକିରି ମିଳିଗଲା । ଚାକିରି କରିବା ସହିତ ସେ ଖ୍ରୀଷ୍ଟ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ କଳା ବିଭାଗରେ ଇଂରାଜୀ ସମ୍ମାନରେ ନାମ ଲେଖାଇଥିଲେ । ସେହି ସମୟରେ ଶିକ୍ଷକ ଥିଲେ ପ୍ରଫେସର ମନୋଜ ଦାସ । ଏକ ଶିକ୍ଷକ ଏକ ଛାତ୍ର ଏହିପରି ପଢ଼ା ମାସେ ଚାଲିଲା । ଏକୁଟିଆ ତାଙ୍କୁ ଭଲ ଲାଗିଲା ନାହିଁ, ଏଣୁ ଓଡ଼ିଆ ସମ୍ମାନକୁ ବଦଳାଇଦେଲେ । ପ୍ରଫେସର ପଠାଣୀ ପଟ୍ଟନାୟକ ତାଙ୍କର ଓଡ଼ିଆ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଥିଲେ । ସ୍ନାତକ ପରୀକ୍ଷା ଫଳ ବାହାରିଲା । ସେତେବେଳକୁ ସେ ଚାକିରିରେ ବ୍ୟସ୍ତ । ତାଙ୍କ ଉପର ଅଧିକାରୀ ସେଦିନ ତାଙ୍କୁ ଡକାଇ ପଠାଇଲେ ନିଜ କକ୍ଷକୁ । ଯିଏ ଡାକିଲେ ସେ କହିଲେ, ତୁମ ପରୀକ୍ଷା ଫଳ ବାହାରିଛି, ତେଣୁ ସେ ବିଷୟରେ କଥା ହେବାପାଇଁ ବାବୁ ଡାକିଛନ୍ତି । ନଗେନବାବୁ କହୁଛନ୍ତି – ମୁଁ ଏତିକି ଜାଣିବା ପରେ ଭାବିଲି ମୋର ଚାକିରିଟି ନିଷ୍ପନ୍ନ ଗଲା । କାରଣ ତାଙ୍କୁ ନ ଜଣାଇ ମୁଁ ସ୍ନାତକରେ ନାମ ଲେଖାଇଥିଲି । ଅଗତ୍ୟା ଶଙ୍କାଗ୍ରସ୍ତ ହୋଇ ତାଙ୍କ ସମ୍ମୁଖକୁ ଯିବାକୁ ପଡ଼ିଲା । ସେ ମୋତେ ଦେଖିଲା ପରେ ଗାଳି ଦେବେ କ’ଣ ପ୍ରଶଂସାରେ ପୋତି ପକାଇଲେ । ଖବରକାଗଜ ମୋତେ ଦେଖାଇଲେ । ମୋ ନାମ ପ୍ରଥମରେ ଥିଲା । ମୁଁ କହିଲି – ସାର, ଆପଣ ଅନୁଗ୍ରହ କଲେ ରେଭେନ୍ସାରେ ସ୍ନାତକୋତ୍ତର ଓଡ଼ିଆ ପଢ଼ିପାରନ୍ତି । ସେ ସହମତି ପ୍ରକାଶ କରିବାରୁ ମୋର ନାମ ଲେଖା ହୋଇଗଲା । ମୋତେ ବୃତ୍ତି ମିଳିଲା; କିନ୍ତୁ ମୁଁ ବୃତ୍ତି ଗ୍ରହଣ କଲିନାହିଁ । କାରଣ ଏକସଙ୍ଗରେ ଦୁଇଟି ସ୍ଥାନରୁ ସରକାରୀ ପଇସା ଗ୍ରହଣ କରିବା ଅପରାଧ । ପରୀକ୍ଷା ଫଳ ବାହାରିଲା, ଯାହାର ପାଠ ହୁଏ ନାହିଁ ସେ ହେଲା ପ୍ରଥମ; କିନ୍ତୁ ମୋର ସ୍ଥାନ ଦ୍ୱିତୀୟରେ ଥିଲା । ମନ ବହୁତ ଦୁଃଖ ହେଲା । ତା’ପରେ ରେଭେନ୍ସାରେ ମୋତେ ଅଧ୍ୟାପକ ଚାକିରି ମିଳିଗଲା ।

ଏହି ସମୟରେ ସେ ସଂଘ ସମ୍ପର୍କରେ ଆସିଲେ । ତତ୍କାଳୀନ ସରସଂଘତାଳକ ପରମ ପୂଜନୀୟ ଶ୍ରୀଗୁରୁଜୀ (ମାଧବ ସଦାଶିବ ଗୋଲଘ୍ନାଳକର)ଙ୍କ ସହ ଭେଟ ହୋଇ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରଶ୍ନର ସମାଧାନ କରିବା ପରେ ସେ ନିଜର ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମୟ ଏହି ସଂଘ ବିଚାରକୁ ବଳିଷ୍ଠ କରିବାରେ ଲଗାଇଲେ । ଅଧ୍ୟାପନା ସହ ଚାଲିଲା ସଙ୍ଗଠନ, ପୁସ୍ତକ ଲିଖନ, ଅଧ୍ୟୟନ ଓ ଗବେଷଣା । ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ବିଷୟକୁ କେହି ଗୁରୁ ମିଳିଲେ ନାହିଁ । ସେ ନିଜେ ନିଜର ବିଷୟ ପ୍ରସ୍ତୁତ କଲେ । ଶେଷରେ ଜଣେ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକଙ୍କୁ ନିଜ ଘରେ ଦୁଇ ଦିନ ରଖାଇ ତାଙ୍କ ଗବେଷଣା ସନ୍ଦର୍ଭଟିକୁ ପୂରା ପଢ଼ାଇଲେ । ସେ ପଢ଼ିସାରି ଅନୁକୁଳ ମନ୍ତବ୍ୟ ଦେଇ କହିଲେ ଶୀଘ୍ର ଏହାକୁ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଦାଖଲ କରିଦିଅ ତୁମେ ଡି.ଲିଟ୍ ପାଇବ । ସେଇଆ ହେଲା । ଔପଚାରିକତା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ତାଙ୍କ ମୌଖିକ ପରୀକ୍ଷା କଲିକତାରେ ହେଲା । ସେ ପିଏଚ୍.ଡି. ବଦଳରେ ଡି.ଲିଟ୍ ପାଇଲେ ।

ଏହିପରି ମେଧାବୀ ବିଦ୍ୱାନ ଯଦି ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମୟ ସାହିତ୍ୟ ସାଧନାରେ ଲଗାଇ ଦେଇଥାଆନ୍ତେ ତେବେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଅନେକ ବିଦ୍ୱାନ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କର ପ୍ରକାଶ ହୋଇ ପାରିଥାଆନ୍ତା, ତତ୍ସହିତ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଅନେକ ଅନାଲୋଚିତ ଅଧ୍ୟାୟ ଉନ୍ନୋଚିତ ହୋଇପାରି ଥାଆନ୍ତା; କିନ୍ତୁ ସେ ଚାହୁଁଥିଲେ ନିଜପରି ଅସଂଖ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ନିର୍ମାଣ କରିବାପାଇଁ । ଯେଉଁଥିପାଇଁ ସେ ତାଙ୍କ ଜୀବନର ସବୁକିଛିକୁ ଆହୁତି ଦେଇଦେଲେ । ଭାରତୀୟ ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ଯୋଜନାରେ ଭାରତୀୟ ଐତିହାସିକମାନଙ୍କ ସହ ସେ ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀର ଉତ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ ଓ ବିଭିନ୍ନ ମାର୍ଗ ଦେଇ ସରସ୍ୱତୀଙ୍କ ଗତିପଥ ବୁଲି ଦେଖୁଥିବାବେଳେ ତାଙ୍କ ମନରେ ଏହି ସରସ୍ୱତୀ ନଦୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା ସମ୍ବନ୍ଧରେ ବିସ୍ମୃତଭାବେ ଲେଖିବାର ବିଚାର ଆସିଥିଲା । ଯାହାର ପରିଣାମ ସ୍ୱରୂପ ପ୍ରକାଶ ପାଇଲା “ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ୱତୀ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା” ନାମରେ ତିନିଗୋଟି ଅମୂଲ୍ୟ ଗ୍ରନ୍ଥ ।

ଶେଷ ଜୀବନରେ ଏହି ୨୦୧୬-୧୭ରେ ସେ ଲେଖିଲେ ଗୌତମବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଜୀବନୀ । ଯାହା ଦିଲ୍ଲୀରେ ପ୍ରକାଶ ପାଇଁ ଯନ୍ତ୍ରସ୍ଥ ଅଛି । ସେଥିରେ ସେ ପ୍ରମାଣିତ କରିଛନ୍ତି ଗୌତମବୁଦ୍ଧଙ୍କର ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ଭୁବନେଶ୍ୱରର କପିଳେଶ୍ୱର । ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସେ ଥିଲେ ପ୍ରାଣସ୍ୱରୂପ । କୌଣସି ଗୋଟିଏ ସ୍ଥାନରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସ୍ଥିର ହୋଇଗଲେ କେଉଁବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ସହଯୋଗରେ ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳ ହୋଇପାରିବ ସେ ସେହି ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ଚିହ୍ନଟ କରି ତାଙ୍କ ସହିତ ଫୋନ୍‌ରେ ନିଜେ କଥା ହୋଇଯାଉଥିଲେ । ୨୦୦୮ରୁ ୨୦୧୬ ସୁରକ୍ଷିତତା କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଅସୁସ୍ଥ ଥିବା ଦେଖିନାହିଁ, ତଥାପି ବାହାରକୁ ଯିବାବେଳେ ମା’ଙ୍କ ଆଦେଶ ରହୁଥିଲା ତୁମେ ନିଜେ ବାବୁଙ୍କ କଥା ବୁଝିବ । ୨୦୧୭ ମାର୍ଚ୍ଚ ୨୬ରେ ନାଲକୋ ଅତିଥିଭବନରେ “ପ୍ରାକ୍ ସ୍ୱାଧୀନତାକାଳୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ରାଷ୍ଟ୍ରଚେତନା” ପୁସ୍ତକ ଉନ୍ନୋଚନ ସମୟରେ ସେ ପୂରା ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇ ପଡ଼ିଥିଲେ । ଶରୀରରେ ପ୍ରବଳ ଜ୍ୱର ଥିଲା, ତା ଭିତରେ ସେ ଆସିଲେ । କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ପୂର୍ବରୁ ୫ ମିନିଟ୍ ଶୋଇଗଲେ; କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସମୟରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମୟ ଉପସ୍ଥିତ ରହି ରାଷ୍ଟ୍ର ଚେତନା ଉପରେ ଏକ ସାରଗର୍ଭକ ଭାଷଣ ଦେଇଥିଲେ ଓ ଆଗ୍ରହ କରିଥିଲେ ଏହିପରି ବହି କ୍ରମଶଃ ତିଆରି କରିତାଲ । ଦେଖନ୍ତୁ, ଏଥିରୁ ତାଙ୍କର କର୍ମନିଷ୍ଠାର ସ୍ୱର କେତେ ବଳବାନ ଥିଲା ।



ପରକୁ ଆପଣାର କରିନେବାର ସମ୍ମୋହନ ଶକ୍ତି ତାଙ୍କରି ପାଖରେ ଭରପୂର ଥିଲା । ସେ ଥିଲେ ମମତାର ମନ୍ଦାକିନୀ । ଆତ୍ମୀୟତାର ନିଦର୍ଶନରେ ଏକ କଥା ମୋ ମନକୁ ଆସେ । ଦିନେ କଥା ପ୍ରସଙ୍ଗରେ ମୋହିନୀ ଭାଇଙ୍କ କଥା ପଡ଼ିଲା । ସେ କହିଲେ, ବହୁତ ଦିନ ହେଲା ତାକୁ ଦେଖୁନାହିଁ, ଟିକେ ଫୋନ୍ ଲଗାଇଲ . . . । ମୁଁ ଫୋନ୍ ଲଗାଇବା ପରେ . . . ଆୟୁଷ୍ମାନ ଭବ . . . କେମିତି ଅଛି . . . ମୁଁ ତୁମକୁ ଝୁରୁଛି ଟିକେ ଦେଖିବାପାଇଁ . . . । ଏହି ପ୍ରଗାଢ଼ ଆତ୍ମୀୟତା ଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିହିଁ ତାଙ୍କ ବାଲିପଦର ବକ୍ତବ୍ୟରେ ଦୃଢ଼ କଣ୍ଠରେ କହିପାରନ୍ତି, “ତୁମ ଚରମ ଶତୁର ପରମ ମଙ୍ଗଳ କାମନା କର, ମଣିଷରୁ ଦେବତା ହୋଇଯାଅ ।”

ଭାରତୀୟ ବିଚାର ବିରୋଧୀ ଲେଖା ବା ସଙ୍ଗଠନ ବିରୋଧୀ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଦେଖିଲେ ସେ ତୁରନ୍ତ ପ୍ରତିବାଦ କରୁଥିଲେ ଓ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ପ୍ରତିବାଦ କରିବାପାଇଁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରିବାକୁ ପଛାଉ ନଥିଲେ । ଆମ ସଙ୍ଗଠନ ସମ୍ବନ୍ଧରେ କେହି ମିଥ୍ୟା ଖବରଦ୍ୱାରା ଭୁଲ୍ ଧାରଣା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କରାଇବାକୁ ଗଲେ ସେ କୌଣସି ବାଟରେ ତାକୁ ପ୍ରଶ୍ନ ଦେଉ ନଥିଲେ । ଏ ଥିଲା ସ୍ୱାଭିମାନୀ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କର ଗୁଣ । ସେ ଚାହୁଁଥିଲେ ତାଙ୍କଭଳି ମନୋଭାବନା ନେଇ କିଛି ବ୍ୟକ୍ତି ତିଆରି ହୁଅନ୍ତୁ । ଆଜିର ଏ ଯନ୍ତ୍ର ଯୁଗରେ ଅନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନଙ୍କଠାରେ ଏଭଳି କୌଣସି ଭାବନାର ଉନ୍ନେଷ ନ ଦେଖି ସେ କ୍ଷୋଭ ପ୍ରକାଶ କରୁଥିଲେ । ସତରେ କ’ଣ ଆମମାନଙ୍କର କିଛି କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନଥିଲା ତାଙ୍କ ସହ ଅଧିକା ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ ହୋଇ ତାଙ୍କ ବେଦନାକୁ ବାଣି ନେବାପାଇଁ ? ଶରୀରର ପାଡ଼ାଠାରୁ ଏହି ପାଡ଼ା ତାଙ୍କୁ ବହୁତ କଷ୍ଟ ଦେଉଥିଲା । ବେଳେବେଳେ କିଛି କାମ ଆଉ ବା ନ ଆଉ ମୁଁ କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଇ ଆଳାପ ଆଲୋଚନା କରି ଫେରୁଥିଲି । ମୁଁ ଅନୁଭବ କରୁଥିଲି ଆମ ସଙ୍ଗଠନରୁ କେହିନା କେହି ଆସି ତାଙ୍କ ସହିତ କିଛି ସମୟ କଥା ହୁଅନ୍ତେ କି ? ଭାଉଜ (ଗୁରୁର ମା’) କହୁଥିଲେ ଆପଣଙ୍କୁ ଯେବେ ସମୟ ମିଳିବ ବାବୁଙ୍କ ପାଖକୁ ଆସୁଥିବେ । କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ସହିତ ଘଣ୍ଟେ-ଦୁଇଘଣ୍ଟା କଥା ହେବାପରେ ସେ ଦିନେ ଦୁଇଦିନ ତାଙ୍କ ଅସୁସ୍ଥତା ଭୁଲିଯାଉଛନ୍ତି । ଗତ ଜାନୁୟାରୀ ମାସରେ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଇଥିଲି । ୫-୧୦ ମିନିଟ୍ କଥା ହେବା ପରେ ସେ ଭାଉଜଙ୍କୁ ଡାକି କହିଲେ — ସେ ସାଲଟା ଆଣି ନାରାୟଣଭାଇଙ୍କୁ ଦିଅ । ମୋର ସାଲପାଇଁ କୌଣସି ଅପେକ୍ଷା ନଥିଲା କିମ୍ବା ଆବଶ୍ୟକତା ନଥିବାରୁ ମୁଁ ମନାକଲି । ଭାଉଜ କହିଲେ ବାବୁ ଶ୍ରୀକାରେ ଦେଉଛନ୍ତି ରଖି ଦିଅନ୍ତୁ । ପ୍ରକୃତରେ ମୁଁ ବର୍ତ୍ତମାନ ଅନୁଭବ କରୁଛି ସେ ସାଲ ଦେବାଟା କେଉଁ ବଡ଼ ସଭାରେ ମିଳୁଥିବା ସମ୍ମାନଠାରୁ କିଛି କମ୍ ନଥିଲା । ଏହାର କିଛିଦିନ ପରେ ତାଙ୍କ ଶରୀର ଦିନକୁ ଦିନ ଦୁର୍ବଳ ହେବାକୁ ଲାଗିଲା । ତେଣୁ ସେହି ମାସରେ ହେଉଥିବା ଆମ ସାଧାରଣ ସଭା ବୈଠକକୁ ଆସିପାରିଲେ ନାହିଁ । ପରବର୍ତ୍ତୀ ବୈଠକ ଏପ୍ରିଲ ୭ରେ ଅନୁଗୁଳଠାରେ ହେବାକୁ ଥିଲା । ଏହି ବୈଠକକୁ ମୁଁ ଅଖିଳ ଭାରତୀୟ ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକଙ୍କୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ କରିଥିଲି । ସେ ମୁମ୍ବାଇରୁ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଆସି ଅନୁଗୁଳ ଯିବା କଥା । ବିମାନ ପହଞ୍ଚିବାର ଥିଲା ମଧ୍ୟାହ୍ନରେ । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଦେଖା କରି ଏସବୁ କଥା ଜଣାଇ କହିଲି ଯେ ମଧ୍ୟାହ୍ନ ଭୋଜନ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ହେଲେ ଭଲ ହୁଅନ୍ତା । ସେ ସାଙ୍ଗେ ସାଙ୍ଗେ ଭାଉଜଙ୍କୁ ଡାକି ଦିନ, ବାର ଓ ଖାଦ୍ୟ ମନେ ରଖିବାପାଇଁ କହିଲେ । ବୈଠକପାଇଁ ମୁଁ ଆଗରୁ ଅନୁଗୁଳ ଚାଲିଗଲି । ଅନୁଗୁଳର ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସୁରୁଖୁରୁରେ ସମାପନ ହୋଇଗଲା । ତା’ପରେ

ଆଉ ତାଙ୍କ ସହିତ ସାକ୍ଷାତ ହୋଇପାରିଲା ନାହିଁ । ୧୦ ଜୁନରେ ତାଙ୍କ ନାତି (ଗୁରୁ) ଖବର ଦେଲା ଜେଜେଙ୍କ ଅବସ୍ଥା ଅତି ଖରାପ । ସେ ଆପୋଳ ହସ୍ପିଟାଲରେ ଆଇ.ସି.ୟୁ.ରେ ଅଛନ୍ତି । ସେତେବେଳକୁ ମୁଁ ଉତ୍ତରବଙ୍ଗର ଉତ୍ତର ଦିନାଜପୁର ଜିଲ୍ଲାରେ ଥାଏ । ମୋତେ କିଛି ଭଲ ଲାଗିଲାନାହିଁ । ମନରେ ବିଭିନ୍ନ ଶଙ୍କା ଜାତ ହେଲା ଯେ, କ'ଣ ଏତେ ଶୀଘ୍ର ଏଭଳି ଜଣେ ଦିବ୍ୟ ପୁରୁଷ ଆମକୁ ଛାଡ଼ି ଚାଲିଯିବେ କି ! ଏହି ଚିନ୍ତା ମୋତେ ବ୍ୟତିବ୍ୟସ୍ତ କରୁଥିଲା । ମୁଁ ଆମର ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ଅଧିକାରୀ ଓ ଅନ୍ୟ ପ୍ରମୁଖ ଅଧିକାରୀମାନଙ୍କୁ ଏ ସମ୍ବାଦ ଜଣାଇଲି । ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ କେତେକ ଯାଇ ହସ୍ପିଟାଲରେ ତାଙ୍କୁ ଦେଖା କରିଥିଲେ । ମୁଁ ମଧ୍ୟ ଶେଷରେ ଆସି ପହଞ୍ଚିଲି । ଅବସ୍ଥା ଭଲ ନଥିଲା । ଦୁତ ଗତିରେ ଶରୀରର ସବୁ ଅଙ୍ଗ ଅଚଳ ହେବାରେ ଲାଗିଥିଲା । ଆଉ କୌଣସି ଆଶା ନଥିଲା ଭଲ ହେବାର । ପୁନଶ୍ଚ ମୋତେ ଆଉଥରେ ଜରୁରୀ ବୈଠକପାଇଁ କଲିକତାରୁ ହୁଗୁଳି ଯିବାକୁ ପଡ଼ିଲା । ସେଠାରୁ ଯିବାକଥା ଶାନ୍ତିନିକେତନ; କିନ୍ତୁ ମୋର ମନ ଆଉ ଆଗକୁ ଯିବାକୁ କହିଲା ନାହିଁ । ସୁଦୀପଦା (ବଙ୍ଗ ପ୍ରାନ୍ତର ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକ)ଙ୍କୁ କହି ୨୬ ତାରିଖର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ସ୍ଥଗିତ କରି । ଫେରି ଆସି ମନସ୍ଥ କରିଥିଲି ୨୭ ସକାଳୁ ଉଠି ତାଙ୍କ କଥା ବୁଝିବାକୁ ଯିବି; କିନ୍ତୁ ଦୁର୍ଭାଗ୍ୟ । ବିଛଣାରୁ ଉଠି ମୋବାଇଲ୍ ଖୋଲିଲା ବେଳକୁ ପ୍ରଥମ ଖବର ଥିଲା ନଗେନବାବୁ ଆଉ ନାହାନ୍ତି । ମୁଁ ହତୋତ୍ତର ହୋଇଗଲା ଭଳି ଅନୁଭବ କରି । ମୋତେ ସବୁ ଶୂନ୍ୟ ଶୂନ୍ୟ ଲାଗୁଥାଏ । ଗୁରୁ (ତାଙ୍କ ନାତି)କୁ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଫୋନ୍ କରି । ସେ କହିଲା ରାତିସାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଫୋନ୍ ଲଗାଉଛୁ; କିନ୍ତୁ ଫୋନ୍ ଲାଗୁ ନଥିଲା । ଏବେ ଜେଜେଙ୍କୁ ନେଇ ଆମେ ୩୦, ଖାରବେଳନଗର, ରସୁଲଗଡ଼ ଓ କଟକର କେଶବଧାମ ହୋଇ ଗାଁକୁ ବାହାରୁଛୁ । ମୁଁ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ସନ୍ତୋଷ ଭାଇଙ୍କୁ ଖବର ଦେଲି ତୁରନ୍ତ କାର୍ ଧରି ଚଣ୍ଡୀଖୋଲରୁ କଟକ ଆସିବାପାଇଁ । କାରଣ ପ୍ରବଳ ବର୍ଷା ହେଉଥିବାରୁ ସେ ଆସିଥିଲେ ସାଙ୍ଗହୋଇ କେଶବଧାମ ଯାଇଥାଆନ୍ତୁ । ଏହା ଭିତରେ ଗୁରୁ ଫୋନ୍ କଲା ଆମେ କଟକ ଅତିକ୍ରମ କରୁଛୁ । ମୋ ପାଖରେ ଆଉ କିଛି ଉପାୟ ନଥିଲା ସେଭଳି ମହାତ୍ମାଙ୍କୁ ଶେଷ ଦର୍ଶନ କରିବାପାଇଁ । ତଥାପି ରେନିକୋର୍ ପିକ୍ସି ମହାଦେବ ଭାଇଙ୍କୁ କହିବାରୁ ସେ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇଗଲେ । ବର୍ଷାର ବେଗ ବଢ଼ି ଚାଲିଥାଏ । ସେହି ପ୍ରବଳ ବର୍ଷାରେ ଆମେ ଦୁହେଁ ବାଇକ୍ରେ ଯାଇ ପହଞ୍ଚିଗଲୁ କେଶବଧାମ । ଗୁରୁ ଆମେ ଯାଉଥିବାର ଜାଣି କେଶବଧାମରେ ଗାଡ଼ି ଅଟକାଇ ରଖିଥାଏ । ଆମେ ପହଞ୍ଚି ତାଙ୍କୁ ଅନ୍ତିମ ଦର୍ଶନ କରି ଶବାଧାରରେ ପୁଷ୍ପମାଲ୍ୟ ଅର୍ପଣ କରିବା ପରେ ତାଙ୍କ ଗାଡ଼ି ଗାଁ ଅଭିମୁଖେ ଯାତ୍ରା କଲା । ସେହି ଝଡ଼ି ବର୍ଷାରେ ଆମେ ଦୁହେଁ ସଂସ୍କୃତିଭବନକୁ ଫେରୁଥିଲୁ । ମୋତେ ଲାଗୁଥିଲା ମୁଁ ଫେରିଯାଉଛି ୨୦୦୮ ମସିହାରେ ଏହି ମହାନ ଆତ୍ମାଙ୍କ ପରିଚୟ ପାଇବାର ପୂର୍ବ ସ୍ଥିତିକୁ । ମୁଁ ଅଧିକ ଚିନ୍ତିତ ହୋଇ ପଡୁଥିଲି ଏବେ ଏ ରାଷ୍ଟ୍ରଗଠନର ସ୍ୱଜନଶାଳ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ କିଏ କରିବ । ପୁଣି ଆମ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦକୁ ଆଗକୁ ନେବାପାଇଁ ସେହି ଅମୃତମୟ ମହାନ ଆତ୍ମାଙ୍କ ଭଳି ଆଉ ଜଣେ ନଗେନବାବୁ କ'ଣ ସତରେ ମିଳିବେ...!



# ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ : ଏକ ସମନ୍ୱିତ, ସଫଳ ଓ ବିରଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ

କୃଷ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ନାୟକ

ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ

ଦିବାକର ପଟ୍ଟନାୟକ ଉଚ୍ଚତର ଶିକ୍ଷା ଗବେଷଣା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ

ବ୍ରହ୍ମପୁର, ମୋ: ୯୮୭୧୫୯୨୧୮୭

ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଜଣେ ସାଧାରଣ ଶିକ୍ଷକ ବା ଅଧ୍ୟାପକ ନଥିଲେ, ସେ ଥିଲେ ଆମର ମାର୍ଗଦର୍ଶକ ଗୁରୁ, ଆଚରଣରେ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ । ଆମେ ଥିଲୁ ତାଙ୍କ ସାନ୍ନିଧ୍ୟରେ ବିଦ୍ୟା ଗ୍ରହଣ କରୁଥିବା ଅନ୍ତେବାସୀ । ବିଦ୍ୟାଳୟରୁ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ଅବସ୍ଥାରୁ ଗାନ୍ଧୀବାଦ, ସାମ୍ୟବାଦ, ନେହେରୁବାଦ, ସେକୁଲାରବାଦ (ମୌଳିକ ଅର୍ଥରେ ଯାହା ଧର୍ମଛଡ଼ା ବା ଅପବିତ୍ର) ପ୍ରଭୃତି ବାଦ-ବିସମ୍ବାଦରେ ଦିଗ୍‌ଭ୍ରମିତ ମୁଁ ଏବଂ ସହପାଠୀମାନେ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପରିଚାଳିତ ଭୁବନେଶ୍ୱରସ୍ଥ କ୍ଷେତ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ (ଏବେ ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ)ରେ ଅଧ୍ୟୟନ କାଳରେ କଟିପୟ ଅଧ୍ୟାପକଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସନାତନ ହିନ୍ଦୁରାଷ୍ଟ୍ରର ଚିରନ୍ତନ, ଉଦ୍ଧାର ମୂଲ୍ୟବୋଧ ଏବଂ ଦେଶାଭିମାନରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହୋଇଥିଲୁ । ଆମ ପ୍ରଦେଶର ଠିକ୍ ପୂର୍ବରୁ ଡଃ ଶଙ୍କର ଶରଣ ଶ୍ରୀବାସ୍ତବ (ଗୋରଖପୁର ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିରର ପ୍ରଥମ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ, ଏଠାରେ ଅଧ୍ୟାପକ) ଏଠାରୁ ବଦଳି ହୋଇ ଦିଲ୍ଲୀ ଚାଲିଗଲେ । ପୂର୍ବତନ ସଂଘ ପ୍ରଚାରକ ଡଃ ବକ୍ସିପ୍ରସାଦ ଗୁପ୍ତା ଏବଂ ଡଃ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆମର ଘନିଷ୍ଠ ଅଧ୍ୟାପକ ଥିଲେ । ପୂର୍ବ-ଭାରତର କେତେକ ରାଜ୍ୟର ଛାତ୍ରଙ୍କ ସହ ଓଡ଼ିଶାର ଆମେ ବହୁ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ଏମାନଙ୍କ ପ୍ରେରଣା ଓ ଉପସ୍ଥିତିରେ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ସଂଳଗ୍ନ ଶବ୍ଦରପଲ୍ଲୀର ମୁକ୍ତ ପ୍ରାନ୍ତରେ ଦୈନିକ ସାୟଂ ସଂଘ ଶାଖା ଆରମ୍ଭ କରିଥିଲୁ । ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆବାସିକ ଥିଲା । ଛାତ୍ରବାସଗୁଡ଼ିକରେ ସଂଘ ବିଚାରର ପ୍ରଭାବ ଥିଲା ଏବଂ ତତ୍କାଳୀନ ବିଭାଗ ପ୍ରଚାରକ ଶ୍ରୀ ସୁଦେଶ ପାଲ୍ ଗୁପ୍ତା ଓ ଜିଲ୍ଲା ପ୍ରଚାରକ ଇଂ. ଭରତ ଚରଣ ସ୍ୱାଇଁ ଆମକୁ ନିୟମିତ ସାକ୍ଷାତ କରୁଥିଲେ ।

ସରଳ, ନିରାଡ଼ମ୍ବର, ନିରତ୍ନମାନୀ, ବିଦ୍ୟାନୁରାଗୀ, ସମାଜ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରପାଇଁ ସଦା ସମ୍ବେଦନଶୀଳ, ଗଭୀର ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟଯୁକ୍ତ ଓ ଈଶ୍ୱର ବିଶ୍ୱାସୀ ଶୁଦ୍ଧ ଶାକାହାରୀ, ପରମ ବୈଷ୍ଣବ, ରକ୍ଷିପ୍ରତିମ ଓ ଛାତ୍ରବସ୍ତ୍ର ଡଃ ପ୍ରଧାନ ଥିଲେ ଆମର ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ, ଯାହା ଆମର ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ଏବଂ ଭବିଷ୍ୟତ ଜୀବନକୁ ନୂତନ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇଥିଲା । ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ, ପାରିବାରିକ, ସାମାଜିକ ଜୀବନ ଥିଲା ଆମପାଇଁ ବହୁ ଅଧ୍ୟୟନ ବିଶିଷ୍ଟ ପଠନୀୟ ଏକ ଖୋଲା ପୁସ୍ତକ । ସଂସାରରେ ଥାଇ ସେ ସତତ ନିର୍ବିକାର ଥିଲେ ।

ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଭାବରେ ମୁଁ ଥିଲି ତାଙ୍କର ବୃହତ୍ ଏକାନ୍ତବର୍ତ୍ତୀ ପରିବାରର ପୁତ୍ରବତ୍ ଏବଂ ଅଭିନ୍ନ ସଦସ୍ୟ । କଲେଜ ଶାଖାର ମୁଁ ଥିଲି ମୁଖ୍ୟ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପରେ କାର୍ଯ୍ୟବାହ । ଶ୍ରୀଗୁରୁଜୀଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ବର୍ଗରେ ଭାଷଣର ସଂକଳନ “ବଞ୍ଚ ଅଫ୍ ଅର୍ବସ” ଭଲ ରୂପେ ପଢ଼ିବାପାଇଁ ଏବଂ ଦେଶର ସାମ୍ପ୍ରତିକ ସମସ୍ୟାକୁ ଠିକ୍ ଜାଣିବାପାଇଁ ସାପ୍ତାହିକ ଅରଗାନାଇଜର୍ ନିୟମିତ ପଢ଼ିବାପାଇଁ ସାର୍ ମୋତେ ପରାମର୍ଶ ଦେଇଥିଲେ । ୧୯୭୦ ମସିହାରୁ

ଏପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ (ଜରୁରୀକାଳୀନ ସମୟ ବ୍ୟତୀତ) ମୁଁ ଅରଗାନାଈଜର ନିୟମିତ ଗ୍ରାହକ ଓ ପାଠକ । ସାର୍ବଜନିକ କହିବା କଥା — ସାତଦିନର ଦୈନିକ ଖବରକାଗଜ ଜନିତ ବିଭ୍ରାନ୍ତିକର ଧାରଣା ଅରଗାନାଈଜର ପଢ଼ିଲେ ଠିକ୍ ହୋଇଯାଏ । ଏହା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଠିକ୍ । କଲେଜ ପଢ଼ା ପରେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଅଧ୍ୟାପନା କରି ଏବଂ ନିରନ୍ତର ସଂଘ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ ରହିଲି । ଦୀର୍ଘ ପଚାଶ ବର୍ଷ ଶିକ୍ଷାଶାସ୍ତ୍ରର ଅଧ୍ୟାପକ ରୂପେ ମୋର ଅଭିଜ୍ଞତାର ନିଷ୍ପତ୍ତି ଏହି — ଡଃ କେଶବ ବଳିରାମ ହେଡ଼ଗେଡ଼୍ଫାର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶିକ୍ଷାବିତ; ବଞ୍ଚୁ ଅଫ୍ ଥର୍ସ୍ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶିକ୍ଷା ଶାସ୍ତ୍ରର ପୁସ୍ତକ । ଏହା ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶିକ୍ଷକ/ଅଧ୍ୟାପକଙ୍କ ଅବଶ୍ୟ ପଠନୀୟ ଏବଂ ନିତ୍ୟ ସଂଘଶାଖା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶିକ୍ଷାକେନ୍ଦ୍ର — ଭାରତ ତଥା ବିଶ୍ୱକୁ ନୂତନ ରୂପ ଦେବାପାଇଁ ଏହା ଏକମେବ ସାଧନ — ଏହି ଧାରଣା ଏବଂ ଦୃଢ଼ ବିଶ୍ୱାସ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ପ୍ରେରଣାର ଫଳ ।

ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ସମଗ୍ର ଜୀବନ ଆମପାଇଁ ଆଦର୍ଶ । ଲେଖିଲେ ଗ୍ରନ୍ଥ ହେବ । ତାଙ୍କ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଜୀବନ, ଗୁରୁଭକ୍ତି ତ ଅପରିମିତ — ଆମ ବର୍ତ୍ତମାନ ବାହାରେ । ତଥାପି ସମୟର ସ୍ୱଚ୍ଛତା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ମୋର ଦୃଷ୍ଟିରେ ଥିବା ତାଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର କେତେକ ଦିଗ ବିଷୟରେ ସଂକ୍ଷିପ୍ତ ସୂଚନା ଅବଶ୍ୟ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ।

### (କ) ଆଦର୍ଶ ଗୃହସ୍ଥ :

ସାର୍ବଜନିକ ପୈତୃକ ଗାଁ ଓଡ଼ିଶୋ (ଜଗତସିଂହପୁର ଜିଲ୍ଲା କାଦୁଆପଡ଼ା ନିକଟ) । ସାର୍ବ ଷାଠିଏ ବର୍ଷ ତଳେ ଗାଁର କେନାଲ ବନ୍ଧ ଅପର ପାର୍ଶ୍ୱରେ ଘର କଲେ; ନୂଆ ବସତିଟିଏ ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ସାର୍ବ ତା' ନାଁ ଦେଲେ ଅବିଧୁ ଆନନ୍ଦପୁର, ଅର୍ଥାତ୍ ଅବିଧୁ (ବିଧୁର ଉତ୍ତରରେ, ନିର୍ଗୁଣ)ରେ ଆନନ୍ଦ ଅଛି ଏ ଗାଁରେ । ଘରେ ପିଲାଙ୍କର ବି ଅନାମ : ନିଜର ବଡ଼ ଝିଅ ନାଣ୍ଡି (ପ୍ରଭାତୀ), ଓଷି (ଚାରୁ), ପୁଅ ଗେଡ଼/ବାଞ୍ଛା (ବିରଞ୍ଚୁ), ପୁତୁରା ଗଲ୍ଲୁ, ଝିଆରୀ ଛୋଟି । ୧୯୭୦-୭୪ ତାଙ୍କ ଗାଁକୁ ବହୁବାର ଯାଇଛି । ଚକଡ଼ା ଘର (ଚାରିପଟେ ପୁରୁଣା ମାଟି ଚାଳଘର, ମଝିରେ ଅଗଣା), ପାଖରେ ବଡ଼ ପୋଖରୀ, ଧାଡ଼ି ଧାଡ଼ି ନଡ଼ିଆ ଗଛ, ପାଖକୁ ଲାଗି ଧାନଜମି । ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ପରିବାର । ସାର୍ବଙ୍କ ପିତା ଶ୍ରୀ ବୁଲେଇ ପ୍ରଧାନ- ବସୁବନ୍ଧ, କର୍ମଠ, ସଦାଚାରୀ ଅଭିଜ୍ଞ ଚାଷୀ । ସାର୍ବଙ୍କର ଦୁଇଭାଇ — ସାର୍ବ ତଳଭାଇ ସରକାରୀ କର୍ମଚାରୀ, ସାନଭାଇ ସ୍ଥାନୀୟ ବ୍ୟବସାୟୀ । ମାତ୍ର ଗାଁରେ ସମସ୍ତେ ଗାଈଁଲା, ବିଲବାଡ଼ି କାମରେ ଧୁରନ୍ଧର । ବାପପୁଅ ୪ଜଣ ଭୋର ଝଟାରୁ ବିଲକୁ ଯିବେ, ବିଲ କାମ ସାରି ସକାଳ ୯ଟାରେ ଘରକୁ ଫେରିବେ । ସେତେବେଳେ ଅନ୍ୟମାନେ ଘରୁ ବାହାରୁଥିବେ । ସାର୍ବଙ୍କ ଉଦ୍ୟମରେ ଚାଷବାସ, ବାଡ଼ିବଗିଚା, ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବ ସମ୍ପର୍କ ବ୍ୟବସ୍ଥିତ । ପ୍ରତିବର୍ଷ ଅବିଧୁ ଆନନ୍ଦପୁରରେ ଅଷ୍ଟପ୍ରହରୀ ନାମ ସଂକୀର୍ତ୍ତନ, ସାରା ଗାଁ, ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କ ମେଳି, ପ୍ରସାଦ ସେବନ । ଏବେ ମାଟିଘର ଜାଗାରେ ଅଜାଳିକା, ପାଖରେ କାଳୀ ମନ୍ଦିର, ପ୍ରତିବର୍ଷ କାଳୀପୂଜା ଅବସରରେ ଅଷ୍ଟପ୍ରହରୀ ନାମଯଜ୍ଞ । ସାର୍ବଙ୍କ ପିଲାଙ୍କୁ ବାଲ୍ୟକାଳରେ ପାଠ ପଢ଼ାଉଥିବା ଗୃହ ଶିକ୍ଷକ ଶରତ ସାର୍ବ ଗତ ୪୦ ବର୍ଷ ଧରି ଗାଁର ଚାଷବାସର ବିଧିବଦ୍ଧ ତତ୍ତ୍ୱାବଧାରକ । ସାର୍ବ ଗାଁ ମାଟିର ମମତା କେବେ ଭୁଲି ନଥିଲେ । ଟିକିଏ ଛୁଟି ମିଳିଲେ ମା'ଙ୍କ ସହ ବିରଞ୍ଚୁ ଏବଂ ତାଙ୍କ ପିଲାଙ୍କୁ ଧରି ଗାଁକୁ ଯାଉଥିଲେ ।

ଗାଁରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସାର୍ବ ସ୍ନେହ ପାଖରେ ବାନ୍ଧି ରଖୁଥିଲେ । ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ବି । ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାର ଛକରେ ଘର । ଉଭୟତ୍ର ତାଙ୍କ ଆଶ୍ରମ, ଗୃହସ୍ଥାଶ୍ରମ । ପ୍ରତି ଆଗନ୍ତୁକଙ୍କୁ ଆତିଥ୍ୟ ଦେବାରେ ତାଙ୍କର ଆନନ୍ଦ । ଯିଏ ସମସ୍ୟା ନେଇ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଇଛି ସିଏ ସମାଧାନ ନେଇ ଫେରିଛି । ରାଜ୍ୟ ରାଜଧାନୀରେ ସେ ସବୁଠାରୁ ବୟୋଜ୍ୟେଷ୍ଠ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା, ଆଚାର୍ଯ୍ୟ, ଗୁରୁ ପରାମର୍ଶ ପାଇଁ ସମସ୍ତେ ତାଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଆନ୍ତି ।

ସାରଙ୍କ ଧର୍ମପତ୍ନୀ - ମା', ଦେବୀ ସ୍ବରୂପା । ସାରଙ୍କ ସାରସ୍ବତ ସାଧନାର ଚିରନ୍ତନୀ ଶକ୍ତି । ବଡ଼ ପରିବାରର ବଡ଼ ବୋହୂ । ଧୈର୍ଯ୍ୟରେ ପଥର ପରି ଶକ୍ତ, ସ୍ନେହରେ ଲବଣୀତୁଲ୍ୟ କୋମଳ । ଆଗନ୍ତୁକକୁ ଆତିଥ୍ୟ ନ ଦେଇ, ସକାର ନ କରି ଛାଡ଼ନ୍ତି ନାହିଁ - ଗାଁ, ସହର ଉଭୟତ୍ର ସମାନ ଭାବନା - ନାରୀକୁଳର ରତ୍ନ । ସାରଙ୍କର ତିନିଟି ସନ୍ତାନ, ସମସ୍ତେ ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷିତ, ସୁସଂସ୍କୃତ । ବଡ଼ ଝିଅ ପ୍ରଭାତୀ ରାଉରକେଲାରେ ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପ୍ରଧାନ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ । ପ୍ରଭାତୀଙ୍କ ସ୍ବାମୀ ଇଂ. ବିଜୟ କୁମାର ରାୟ, ରାଉରକେଲା ଷ୍ଟିଲ୍‌ପ୍ଲାଣ୍ଟର ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ ଅଧିକାରୀ । ଦ୍ବିତୀୟ ସନ୍ତାନ ଚାରୁ - ୨ ବର୍ଷ ତଳେ କୁଏତ୍‌ରେ ଅକାଳରେ ଚାଲିଗଲେ । ତାଙ୍କ ସ୍ବାମୀ ଇଂ ଅଶୋକ କୁମାର ଲେଙ୍କା କୁଏତ୍‌ରେ କାର୍ଯ୍ୟରତ । ଏକମାତ୍ର ପୁତ୍ର (ସବା ସାନ ସନ୍ତାନ) ଇଂ ବିରଞ୍ଚି ଭୁବନେଶ୍ବରରେ ଅବସ୍ଥାପିତ । ତାଙ୍କ ପତ୍ନୀ ବର୍ଷା ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷିତା, ଆଦର୍ଶ ଗୃହିଣୀ । ନାତି ଗୁରୁ, ନାତୁଣୀ ମାମା (ବିରଞ୍ଚିର ପୁଅ-ଝିଅ) । ସାରଙ୍କର କୁଟୁମ୍ବ ବଡ଼, ଏକ ଭରପୁର ସଂସାର । ନିକଟରେ ତାଙ୍କର ଦେହାବସାନରେ ସମସ୍ତେ ମର୍ମାହତ ।

### (ଖ) ବିଦ୍ୟାବୁରାଗୀ ଛାତ୍ରବସ୍ଥଳ ଅଧ୍ୟାପକ :

ଭୁବନେଶ୍ବରସ୍ଥ “କ୍ଷେତ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନ” ଭାରତ ସରକାରଙ୍କ “ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶୈକ୍ଷିକ ଗବେଷଣା ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ” ଦ୍ବାରା ପରିଚାଳିତ । ଏହି ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ କେନ୍ଦ୍ରରେ ୧୯୬୪ ମସିହାରୁ ବଙ୍ଗଳା, ଆସାମ, ଆଣ୍ଡାମାନ ସମେତ ପୂର୍ବଭାରତର ସବୁ ରାଜ୍ୟର ମେଧାବୀ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନେ ଏକବର୍ଷିଆ, ଦୁଇବର୍ଷିଆ, ଚାରିବର୍ଷିଆ ବି.ଇ.ଡି., ଏମ୍.ଇଡି. ପାଠ୍ୟକ୍ରମରେ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ନେଇ ଆସୁଛନ୍ତି । ଏଠାରେ ଓଡ଼ିଆ, ବଙ୍ଗଳା, ଅହମିଆ ଓ ହିନ୍ଦୀ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଅଛନ୍ତି । ତତ୍କୁର ପ୍ରଧାନ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ଓ ସାହିତ୍ୟ ଶିକ୍ଷାଦାନ କରି ଆସିଛନ୍ତି । ଏଠାର ଅଧିକାଂଶ ପ୍ରଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ଓଡ଼ିଶାର, ଅଧ୍ୟାପକ/ଅଧ୍ୟାପିକା ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର । ଡଃ ପ୍ରଧାନ ପୂର୍ବୋକ୍ତ ସମସ୍ତ ଭାଷା ତଥା ସଂସ୍କୃତରେ ପ୍ରବୀଣ । ସେ ସମୟର ଡି.ଲିଟ୍. ଡିଗ୍ରୀଧାରୀ, ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ସର୍ବୋଚ୍ଚ ଡିଗ୍ରୀଧାରୀ, ଏଥିପାଇଁ ଏବଂ ନିଜ ଗୁଣ ଯୋଗୁ ପ୍ରଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ଏବଂ ଅଧ୍ୟାପକ ବର୍ଗର ଆଦର ଓ ସମ୍ମାନର ପାତ୍ର । ସଂଘ ବିଚାରର ହୋଇଥିବା କାରଣରୁ ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟର ସମବିଚାରର ଛାତ୍ର ଓ ଅଧ୍ୟାପକମାନେ ତାଙ୍କୁ ସମ୍ମାନ ଦେଉଥିଲେ । ଦୀର୍ଘ ଅବଧିରେ ହଜାର ହଜାର ଶିକ୍ଷକ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ତାଙ୍କ ଆଦର୍ଶରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ।

ତାଙ୍କର ଶିକ୍ଷାଦାନ ଶୈଳୀ ଅନୁପମ । ପାଠ୍ୟ ବିଷୟକୁ ସମ୍ପର୍କ କରୁଥିବା ବିଭିନ୍ନ ଗ୍ରନ୍ଥ ଏବଂ ଗ୍ରନ୍ଥକାରମାନଙ୍କର ବିବରଣୀ ତାଙ୍କଠାରୁ ମିଳୁଥିଲା ଯଦ୍ବାରା ଅଧିକ ପଢ଼ିବାପାଇଁ ଆମେ ଉତ୍ସାହିତ ହେଉଥିଲୁ । ବିଶେଷତଃ ଆମକୁ ସେ ଯେତେବେଳେ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା, ଲିପି, ସାହିତ୍ୟର ବିବର୍ତ୍ତନ ଓ ଇତିହାସ ପଢ଼ାଉଥିଲେ ସେତେବେଳେ ସଂସ୍କୃତ, ପାଳି, ପ୍ରାକୃତ ଆମ ଭାଷାର ଗୌରବମୟ ଅତୀତ ସମ୍ପର୍କରେ ଆମେ ଉତ୍ତୁଲିତ ହେଉଥିଲୁ ଏବଂ ଯେତେବେଳେ ସଂସ୍କୃତ ଅଳଙ୍କାର ଶାସ୍ତ୍ର (ସାହିତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା)ର ବିଭବ, ଲକ୍ଷଣ ଓ ଇତିହାସ ପଢ଼ାଉଥିଲେ ସେତେବେଳେ ଆମେ ତାଙ୍କୁ ଇଂରେଜୀ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ସମାଲୋଚନା ଶାସ୍ତ୍ର ସହ ତୁଳନା କରି (ଆମେ ଇଂରେଜୀ ସମ୍ମାନ ଶ୍ରେଣୀର ଛାତ୍ର ଥିଲୁ) ଅଭିନବ ଗୁପ୍ତ, ବିଶ୍ବନାଥ କବିରାଜଙ୍କ ପରି ମୂର୍ଦ୍ଧନ୍ୟ ଆଳଙ୍କାରିକମାନଙ୍କ ପ୍ରତିଭା ଆଗରେ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଆଳଙ୍କାରିକମାନେ କେତେ ନଗଣ୍ୟ ତାହା ଉପଲବ୍ଧ କରି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଉଥିଲୁ ।



ତାଙ୍କ ଅଧ୍ୟାପନା କାର୍ଯ୍ୟ କେବଳ ଶ୍ରେଣୀ କକ୍ଷରେ ସୀମିତ ନଥିଲା । ସଂଘ, ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ବିଦ୍ୟାଭାରତୀ, ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦ ଏବଂ ଇତିହାସ ସଙ୍କଳନ ସମିତି ମାଧ୍ୟମରେ ତାଙ୍କ ଅଧ୍ୟାପନା ଓ ମାର୍ଗଦର୍ଶନ ଓଡ଼ିଶା ବ୍ୟାପୀଥିଲା । ଓଡ଼ିଶାର ହଜାର ହଜାର ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ, ପ୍ରବୁଦ୍ଧ ସଜ୍ଜନ ବିଦ୍ୱତ୍ ଗୋଷ୍ଠୀ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଐତିହାସିକ ଏବଂ ଶିକ୍ଷାନୁରାଗୀ ଅଭିଭାବକମଣ୍ଡଳୀ ତାଙ୍କୁ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଓ ଭକ୍ତିରେ ପ୍ରଣାମ କରନ୍ତି ।

### (ଗ) ଅନନ୍ୟ ମୌଳିକ ଗବେଷକ :

ତଃ ପ୍ରଧାନ ମୂଳତଃ ବିଜ୍ଞାନର ଛାତ୍ର ଥିଲେ । ମାଟ୍ରିକ୍ ପରେ ଦୁଇବର୍ଷ ବିଜ୍ଞାନ ପଢ଼ି କଟକ ସାନ୍ଧ୍ୟ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟ ସହ କଳା ସ୍ନାତକ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ସମାପ୍ତ କରି ଘରୋଇ ଭାବେ ଏମ୍.ଏ. (ଓଡ଼ିଆ) ପରୀକ୍ଷାରେ ପ୍ରଥମ ଶ୍ରେଣୀରେ ଉତ୍ତୀର୍ଣ୍ଣ ହେଲେ । ରେଭେନ୍ସା କଲେଜ ଏବଂ ପରେ କ୍ଷେତ୍ରୀୟ ଶିକ୍ଷା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଅଧ୍ୟାପନା କଲେ । କବି ଦାନକୃଷ୍ଣ, ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ଓ କବି ଜୟଦେବଙ୍କ ବିଷୟରେ ସେ ମୌଳିକ ଗ୍ରନ୍ଥର ରଚୟିତା । ସ୍ୱାଧୀନ ଭାବରେ ଗବେଷଣା କରି “ପ୍ରାଚୀନ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଦର୍ଶନର ଧାରା” ଶୀର୍ଷକ ବୃହତ ନିବନ୍ଧ ରଚନା କରି ସେ ସର୍ବାଙ୍ଗ ଡିଗ୍ରୀ ଡି.ଲିଟ୍. ହାସଲ କରିଥିଲେ । ବୈଦିକ ନଦୀ ସରସ୍ୱତୀ ଏବଂ ଭାରତର ସାରସ୍ୱତ ସଭ୍ୟତା ସମ୍ପର୍କରେ ଗ୍ରନ୍ଥମାନ ଲେଖି ଆମ ପିଲାମାନେ ପଢୁଥିବା ପାଠ୍ୟାତ୍ମ୍ୟ ଐତିହାସିକମାନଙ୍କ ଲିଖିତ ପୂର୍ବାନୁଗ୍ରହଯୁକ୍ତ ଭ୍ରାତ ଭାରତର ଇତିହାସ ମୂଳରେ କୁଠାରାଘାତ କରିଥିଲେ । ଏତଦ୍‌ବ୍ୟତୀତ ଇତିହାସ, ସାହିତ୍ୟ ଓ ଶିକ୍ଷା ବିଷୟକ ଶହଶହ ପ୍ରବନ୍ଧ ସାପ୍ତାହିକ “ରାଷ୍ଟ୍ରଦୀପ” ପତ୍ରିକାରେ ଗତ ତିନି ଦଶନ୍ଧି ଧରି ପ୍ରକାଶିତ । ସର୍ବୋପରି ପଚାଶରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ବିଦ୍ୱାନ୍ ତାଙ୍କ ମାର୍ଗଦର୍ଶନରେ ପିଏଚ୍.ଡି. ଏବଂ ଡି.ଲିଟ୍. ଉପାଧି ହାସଲ କରିଛନ୍ତି ।

ତାଙ୍କର ସମଗ୍ର ଗବେଷଣା ବିଜ୍ଞାନ ସମ୍ମତ ଏବଂ ବସ୍ତୁନିଷ୍ଠ । ବିନା ଅନୁସନ୍ଧାନରେ ସେ ଲେଖୁନଥିଲେ । ଅନୁସନ୍ଧାନରେ ସେ ଥିଲେ ଅମଡ଼ା ବାଟର ପଥକ । ବୈଦିକ, ବୌଦ୍ଧ, ଜୈନ, ଆଗମ, ନାଥ ଏବଂ ମହିମା ସାହିତ୍ୟରେ ତାଙ୍କର ଗଭୀର ପ୍ରବେଶ ଥିଲା । ସଂସ୍କୃତ, ପ୍ରାକୃତ, ପାଲି, ଅପଭ୍ରଂଶ, ଓଡ଼ିଆ, ବଙ୍ଗଳା, ହିନ୍ଦୀ, ଅହମିଆ ସାହିତ୍ୟ ଅଧ୍ୟୟନରେ ସେ ଧୂରୀଣ ଥିଲେ । ଆମର ପୁରାଣ ଏବଂ ଐତିହାସିକ ପରମ୍ପରା ଏବଂ ତତ୍‌ସମ୍ପର୍କିତ ଇଂରାଜୀ ଓ ଅନ୍ୟ ଭାଷାରେ ଲିଖିତ ସମସ୍ତ ପ୍ରାଚୀନ ଓ ଅର୍ବାଚୀନ, ଦେଶୀ ଏବଂ ବିଦେଶୀ ଗ୍ରନ୍ଥ ଏବଂ ଗ୍ରନ୍ଥକାରଙ୍କ ସହ ତାଙ୍କର ଘନିଷ୍ଠ ପରିଚୟ ଥିଲା । ମଧ୍ୟଯୁଗୀୟ, ପଞ୍ଚସଖା ଏବଂ ଅଲେଖ ମହିମା ସମ୍ପ୍ରଦାୟର ସମସ୍ତ ମଠ, ପୀଠ, ସେମାନଙ୍କର ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ ଓ ପରମ୍ପରା ଜାଣିବାପାଇଁ ସେ ସବୁ ସ୍ଥାନ ବାରମ୍ବାର ପରିଦର୍ଶନ କରିଥିଲେ । ପୁରାତନ ତାଳପତ୍ର ପୋଥି, ତାମ୍ରଶାସନ ଏବଂ ଶିଳାଲେଖମାନଙ୍କ ବିଷୟରେ ତାଙ୍କର ସ୍ୱାଭାବିକ ଏବଂ ସମ୍ୟକ୍ ଜ୍ଞାନ ଥିଲା ।

ସେ ଥିଲେ ସରସ୍ୱତୀଙ୍କ ବରପୁତ୍ର । ଅସାମାନ୍ୟ ସ୍ମୃତି ଶକ୍ତିର ଅଧିକାରୀ । ଯାହା ଥରେ ଦେଖୁଥିଲେ, ପଢୁଥିଲେ, ମନେ ରହୁଥିଲା । ଲେଖିବା ସମୟରେ ବାରମ୍ବାର ମୂଳଗ୍ରନ୍ଥ ଖୋଜୁ ନଥିଲେ । ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର କାର୍ଯ୍ୟରେ ଗଲାବେଳେ ସେ ଥରେ ଭୀଷଣ ଦୁର୍ଘଟଣାରେ ଆହତ ହୋଇ ଶଯ୍ୟାଶାୟୀ ହୋଇଥିଲେ । ଏବେ ଦୁଇବର୍ଷ ତଳେ କନିଷ୍ଠା କନ୍ୟାର ଆକସ୍ମିକ ବିଯୋଗ ତାଙ୍କୁ ଗଭୀର ଆଘାତ ଦେଇଥିଲା । ଗତ ଦୁଇବର୍ଷ ଧରି ବାର୍ଦ୍ଧକ୍ୟଜନିତ ଯନ୍ତ୍ରଣାରେ ସେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଅସୁସ୍ଥ ଥିଲେ । ଏ ସମସ୍ତ ଦୁଃଖ ଯନ୍ତ୍ରଣାକୁ ଆକ୍ରମ୍ଭ କରି

ସେ ନିଜର ସ୍ବାଭାବିକ ସାରସ୍ବତ ସାଧନାରେ ନିମଗ୍ନ ଥିଲେ । ପ୍ରଖର ସ୍ମୃତିଶକ୍ତି ଅସ୍ପଷ୍ଟ ଥିଲା । ଲେଖନୀ ଅବୀରତ ଗତିରେ ଚାଲୁଥିଲା ।

ହିନ୍ଦୁ ସମାଜର ଏକ ଅପରିହାର୍ଯ୍ୟ ଆବଶ୍ୟକତା ହେଲା ସାମାଜିକ ସମରସତା (ସାମାଜିକ ମୈତ୍ରୀ ବା ଭ୍ରାତୃତ୍ବ) ଯାହାକୁ ହିନ୍ଦୁମାନଙ୍କର ପ୍ରମୁଖ ସଂଗଠନ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ବୟଂସେବକ ସଂଘ ତା'ର ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଓ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଗୁରୁତ୍ବ ଦେଇ ଆସିଛି । ଓଡ଼ିଶାର ବଡ଼ଠାକୁର ମୈତ୍ରୀଦେବ ଜଗନ୍ନାଥ । ତାଙ୍କ ମନ୍ଦିର ଉପରେ ଉଡୁଛି ପତିତପାବନ ବାନା । ଓଡ଼ିଶା ଭିନ୍ନ ଭାରତର ଅନ୍ୟ ସମସ୍ତ ରାଜ୍ୟରେ ଜାତିବାଦୀ, ରାଜନୀତି ଓ ଜାତିଭେଦର ତୀବ୍ରତା ଅଛି, ମାତ୍ର ତାହା ଓଡ଼ିଶାରେ ନାହିଁ । କାରଣ ବୈଦିକ କାଳରୁ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ସଂସ୍କୃତି (ଉତ୍କଳୀୟ ସଂସ୍କୃତିର ଅନ୍ୟ ନାମ)ରେ ସାମାଜିକ ସମରସତା ଜାତି, ବର୍ଣ୍ଣ, ଭାଷା, ବାଦ-ବିବାଦ, ରୀତିନୀତି ଓ ସଗୁଣ ଉପାସନାର ବାହ୍ୟାତ୍ମକ ପ୍ରଚ୍ଛଦପଟରେ ନିର୍ଗୁଣ ବ୍ରହ୍ମ ଚେତନା ରୂପେ ଅଭ୍ୟସିନୀ ଫଲଗୁପରି ନିତ୍ୟ ପ୍ରବହମାନ । ଏହି ଚେତନା ଓଡ଼ିଆ ନାଥସାହିତ୍ୟ, ମଧ୍ୟଯୁଗୀୟ ପଞ୍ଚସଖା ସାହିତ୍ୟ, ଭୀମଭୋଇଙ୍କ ମହିମା ସାହିତ୍ୟରେ ତଥା ଆମର ସମଗ୍ର ସବୁ ସାହିତ୍ୟରେ ପ୍ରତିଭାତ । ସମାଜ ସଂସ୍କାରୀ ଏହି ସାହିତ୍ୟର ଗୁଣ, ଧର୍ମ ଓ ପ୍ରଭାବକୁ ଅତି ନିପୁଣତାର ସହ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଧାନ ତାଙ୍କର ନିବନ୍ଧ “ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ନିର୍ଗୁଣ ଦର୍ଶନର ଧାରା”ରେ ଦର୍ଶାଇଛନ୍ତି ।

ଶ୍ରୀମଦ୍ ଭଗବତ୍ ଗୀତାରେ କୁହାଯାଇଛି — “ସ୍ମୃତିଭ୍ରଂଶାତ୍ ବୁଦ୍ଧିନାଶୋ, ବୁଦ୍ଧିନାଶାତ୍ ପ୍ରଣଶ୍ୟତି” ଅର୍ଥାତ୍ ସ୍ମୃତି ନଷ୍ଟ ହେଲେ ବିଚାରବୁଦ୍ଧି ନଷ୍ଟ ହୁଏ ଏବଂ ବିଚାରବୁଦ୍ଧି ନଷ୍ଟ ହେଲେ ମୃତ୍ୟୁ ହୁଏ । ଇତିହାସ ଗୋଟିଏ ଜାତିର ସ୍ମୃତି । ଏହାକୁ ନଷ୍ଟ କଲେ ଗୋଟିଏ ଜାତି ବା ରାଷ୍ଟ୍ରର ମୃତ୍ୟୁ ହେବ । ଆମର ଶ୍ରେଣୀଗୃହମାନଙ୍କରେ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀମାନଙ୍କୁ ନକଲି ଇତିହାସ ପଢ଼ାଯାଉଛି, ଯଦ୍ବାରା ସମାଜର ବିଚାରବୁଦ୍ଧି ନଷ୍ଟ ହେଉଛି ଏବଂ ଆମର ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଅସ୍ଥିତା ଧ୍ବଂସ ହେଲେ ଏହା ବିଦେଶୀମାନଙ୍କ ପଦାନତ ହେବ । ଆମ ସଂସ୍କୃତି ଓ ସଭ୍ୟତାର ଜନ୍ମଦାତ୍ରୀ ସରସ୍ବତୀ ଯାହା କୁଳରେ ବେଦ ରଚନା ହୋଇଥିଲା, ଏହି ନଦୀ ବହୁ ପ୍ରାଚୀନ । ଆମ ସଭ୍ୟତା ହଜାର ହଜାର ବର୍ଷ ନୁହେଁ କିଛି କିଛି । ଶ୍ରୀରାମ ଜନ୍ମଭୂମି ଉପରେ ଦଣ୍ଡାୟମାନ ପରାଧୀନତାର ପ୍ରତୀକ ନକଲି ତାହାକୁ କରସେବକମାନେ ୧୯୯୨ ମସିହାରେ ଧରାଶାୟୀ କରିଥିଲେ । ସନାତନ ହିନ୍ଦୁ ରାଷ୍ଟ୍ରର ଅସଲି ଇତିହାସ ବା ମାନସଭୂମି ଉପରେ ଭାରତ ବିରୋଧୀ ଅରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ଶକ୍ତିମାନେ ଯେଉଁ ନକଲି ଇତିହାସର ତାହା ଠିଆ କରାଇଛନ୍ତି “ବେଦବନ୍ଧିତା ସରସ୍ବତୀ ଓ ସାରସ୍ବତ ସଭ୍ୟତା” ଗ୍ରନ୍ଥରେ ଏଇ ନକଲି ତାହା ଉପରେ ପ୍ରବଳ ଆକ୍ରମଣ ହୋଇଛି, ଏହା ନିଶ୍ଚିନ୍ତ ହେବ ଏବଂ ଅସଲି ଇତିହାସ ଆମ ମାନସପଟରେ ଉଦ୍‌ଭାସିତ ଓ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବ । ଡକ୍ଟର ପ୍ରଧାନଙ୍କର ଏହା ବୌଦ୍ଧିକ କରସେବା ।

ନିନ୍ଦା ପ୍ରଶଂସାକୁ ଭୂଷେପ ନ କରି ସ୍ବାଭାବିକ ନିଷ୍ପାମ ଚିତ୍ତରେ ଗବେଷଣା କରିଥିବା ଡକ୍ଟର କୁଞ୍ଜ ବିହାରୀ ତ୍ରିପାଠୀ ଏବଂ ଡକ୍ଟର ନଟବର ସାମନ୍ତରାୟଙ୍କ ପରେ ଯେଉଁ କେତେଜଣ ଅନନ୍ୟ ଓ ମୌଳିକ ଗବେଷକ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟରେ ଅଛନ୍ତି ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଡକ୍ଟର ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଅନ୍ୟତମ । ଅଧିକନ୍ତୁ, ଶିକ୍ଷାକୁ ସାମାଜିକ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ କ୍ରାନ୍ତି ପାଇଁ ଅସ୍ତ୍ର ରୂପେ ବ୍ୟବହାର କରିବା ଏବଂ ସେଥିରେ ନିଜକୁ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷରୂପେ ନିର୍ଭୀକଭାବରେ ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ କରିବା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବର ଏହା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଆୟାମ ଯାହା କୃତିତ୍ ଅଧ୍ୟାପକଙ୍କଠାରେ ଦେଖାଯାଏ ।

## (ଘ) ଅବିଚଳିତ, ନିଷ୍ଠାପର ସାମାଜିକ ଓ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା :

୧୯୬୪ ମସିହାରେ ରେଭେନ୍ସା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଅଧ୍ୟାପକ ଥିବାବେଳେ ଡଃ ପ୍ରଧାନ ମା. ଭୂପେନ୍ଦ୍ରବୀର, ମା. ପାଲ୍ଲବ୍ କରଜୀ, ମା. ହରିହରଦା ଏବଂ ପରେ ପରେ ପରମ ପୂଜନୀୟ ଶ୍ରୀଗୁରୁଜୀଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ଆସି ସଂଘର ବିଭିନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଯୋଗ ଦେଲେ । ସେ ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ବିଦ୍ୟାର୍ଥୀ ପରିଷଦ, ଓଡ଼ିଶା ଶାଖାର ପ୍ରଥମ ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ସଭାପତି ଥିଲେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଉଦ୍ୟମରେ ପ୍ରଦେଶର ପ୍ରଥମ ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ସମ୍ମିଳନୀ ପୁରୀଠାରେ ୧୯୬୭ରେ ହୋଇଥିଲା, ଯେଉଁଠି ତତ୍କାଳୀନ ପରିଷଦର ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ପ୍ରଫେସର ଦତ୍ତାତ୍ତା ତିଡୋଲକର ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଥିଲେ । ସେତେବେଳେ ଡଃ ପ୍ରଧାନଙ୍କ ବ୍ୟାପକ ଏବଂ ଘନଘନ ପ୍ରବାସ ଯୋଗୁ ସାରା ଓଡ଼ିଶାରେ ପରିଷଦ ସ୍ୱଳ୍ପ ସମୟ ମଧ୍ୟରେ ସବୁଠାରୁ ପ୍ରଭାବୀ ଛାତ୍ର ସଂଗଠନ ରୂପେ ଠିଆହେଲା, ଯାହା ବିଷୟରେ ଓଡ଼ିଶା ବିଧାନସଭାରେ ବାରମ୍ବାର ଆଲୋଚନା ହେଉଥିଲା । ସେତେବେଳର ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତାମାନେ ଏବେ ସମାଜର ଉଚ୍ଚ ପଦପଦବୀରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରୁଛନ୍ତି । ପରିଷଦର ସଭାପତି ଥିବାବେଳେ ଡଃ ପ୍ରଧାନ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗରେ କାମ କରୁଥିଲେ । ସଂଘ ଓ ତା'ର ସହଯୋଗୀ କ୍ଷେତ୍ରମାନଙ୍କ ଉପରେ ସେତେବେଳେ ଥିଲା କେନ୍ଦ୍ର ସରକାରଙ୍କ କୁର ଦୃଷ୍ଟି । ତା' ସତ୍ତ୍ୱେ ପରିଷଦର କାର୍ଯ୍ୟ ଅତି ସକ୍ରିୟତାର ସହ କରିବା ତାଙ୍କ ନିର୍ଭୀକତା ଓ ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସର ପରିଚୟ ଦିଏ ।

ସେ ଭୁବନେଶ୍ୱରର ଜିଲ୍ଲା ସଂଘଟାଳକ ଦାୟିତ୍ୱରେ ଥିଲେ । ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ବୁଲିଲାବେଳେ ସାଇକେଲ ଥିଲା ତାଙ୍କର ସାଥୀ । ସେ ନଅ ନମ୍ବର (ପରେ ପରେ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାର)ରେ ରହୁଥିଲେ । ବାଣୀବିହାର ହେଉ ବା କୃଷି ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ପୁରୁଣା ଭୁବନେଶ୍ୱର ବା ଖଣ୍ଡଗିରି ହେଉ ସେ ସାଇକେଲରେ ଯାଉଥିଲେ । କଳ୍ପନା ଛକ ଅଗ୍ନିଶମ କେନ୍ଦ୍ର ପଛ ପଡ଼ିଆରେ ଗୁରୁ ଦକ୍ଷିଣା ଉତ୍ସବ ହେଉଥାଏ, ଦେଖିଲି ସାର୍ ଠିକ୍ ସମୟରେ ସାଇକେଲରେ ହାଜର୍ ।

ସେ ମୂଳତଃ ଶିକ୍ଷକ ଥିଲେ । ସଂଘ ମୂଳତଃ ଶୈକ୍ଷିକ, ସାଂସ୍କୃତିକ ସଂଗଠନ । ଶିକ୍ଷକ ରୂପେ ଶିକ୍ଷା, ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ, ଶିକ୍ଷାୟତନ ଓ ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷାର ମୌଳିକ ସାଂସ୍କୃତି ଆଧାର ଇତିହାସ ଓ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ପର୍କିତ ସଂଗଠନରେ ତାଙ୍କର ସ୍ୱାଭାବିକ ରୁଚି ଥିଲା । ତିନି ନମ୍ବର ଭୁବନେଶ୍ୱରରେ ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରଥମ ସରସ୍ୱତୀ ଶିଶୁ ମନ୍ଦିର ଆରମ୍ଭ ହେଲା ଏବଂ ଏବେ ବିଧିବଦ୍ଧ ରାଜବ୍ୟାପୀ ପ୍ରାୟ ୧୦୦୦ ଅନୁଷ୍ଠାନ । ଏ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସେ ଆରମ୍ଭରୁ ସଂଶ୍ଳିଷ୍ଟ ଓ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସକ୍ରିୟ । ବିଦ୍ୟାଭାରତୀର ଉତ୍କଳ ପ୍ରାନ୍ତର ସଭାପତି ଏବଂ ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ଉପାଧ୍ୟକ୍ଷ ରୂପେ ସେ ଦାୟିତ୍ୱ ନିର୍ବାହ କରିଛନ୍ତି । ଅତ୍ୟୁତ ଭାରତୀୟ ସାହିତ୍ୟ ପରିଷଦର ସେ ପ୍ରାନ୍ତୀୟ ସଭାପତି ଥିଲେ, ଇତିହାସ ସଂକଳନ ସମିତି ଏବଂ ଭାରତୀୟ ଶିକ୍ଷଣମଣ୍ଡଳ କାର୍ଯ୍ୟରେ ତାଙ୍କର ସକ୍ରିୟ ଯୋଗଦାନ ଥିଲା ।

ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଘର ବିକାଶ ଯାତ୍ରାର ସେ ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଅନୁଭବୀ । ତାଙ୍କ ନିବାସ ରାଜ୍ୟ ରାଜଧାନୀର କେନ୍ଦ୍ରସ୍ଥଳ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ବିହାରରେ । ରାଜ୍ୟର ଅନେକ ରାଜନେତା, ପ୍ରଶାସକ, ସାଧୁସନ୍ଥ, ସାହିତ୍ୟିକ, ଗବେଷକ, ସମାଜ ସଂଗଠକ, ମାର୍ଗଦର୍ଶନ ଓ ପରାମର୍ଶ ପାଇଁ ତାଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କରୁଥିଲେ । ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରାଣକେନ୍ଦ୍ର କଟକ-ଭୁବନେଶ୍ୱରରୁ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରି ନିରନ୍ତର ପ୍ରବାସ ଦ୍ୱାରା ତାଙ୍କ ଉପରେ ନ୍ୟସ୍ତ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ରାଜ୍ୟର

କୋଣ ଅନୁକୋଣରେ ପହଞ୍ଚାଇଥିଲେ । ଓଡ଼ିଶାରେ ସଂଘକାର୍ଯ୍ୟ ବିଭିନ୍ନ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇଛି । ସମସ୍ତ ପ୍ରତିକୂଳ ପରିସ୍ଥିତି ସତ୍ତ୍ୱେ ଅବିଚଳିତ ଭାବରେ ନିଜର ପାରିବାରିକ, ଅଧ୍ୟାପକ, ଗବେଷଣା କାର୍ଯ୍ୟ ସହ ତାଳ ଦେଇ ପ୍ରାରମ୍ଭରୁ ଜୀବନର ଶେଷ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରାଷ୍ଟ୍ର କାର୍ଯ୍ୟ କିପରି କରିବାକୁ ହୁଏ ଏହା ତାଙ୍କ ଜୀବନଯାତ୍ରାରୁ ଶିକ୍ଷଣୀୟ । ମୃତ୍ୟୁଶୟ୍ୟାରେ ବି ତାଙ୍କର ଏକମାତ୍ର ବ୍ୟାକୁଳତା ଥିଲା - ଆମ ଲୋକଙ୍କ ସମକ୍ଷରେ ଆମର ଅସଲି ଇତିହାସର ଉପସ୍ଥାପନ ।

(ଡ) ତାଙ୍କ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ :

ଏହି ସମନ୍ୱିତ, ସଫଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ପ୍ରେରଣା ସ୍ରୋତ ଥିଲା ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ସ୍ୱୟଂସେବକ ସଂଘ, ଯାହାପାଇଁ ତାଙ୍କର ସମଗ୍ର ଜୀବନକାଳ ସମର୍ପିତ । ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ଆମ ସମ୍ମୁଖରେ । ମାତ୍ର ଅନ୍ୟ ଏକ ଅଲୌକିକ ଉତ୍ସ ଯାହା ଆମ ଦୃଷ୍ଟିର ଅନ୍ତରାଳରେ ତାହା ତାଙ୍କର ଗଭୀର ଗୁରୁଭକ୍ତି ଏବଂ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଚେତନା । ସେ ନାମାଚାର୍ଯ୍ୟା ବାୟାବାବାଙ୍କ ଠାରୁ ଦୀକ୍ଷା ନେଇଥିଲେ ଏବଂ “ନାମ” ଉପରେ ତାଙ୍କର ଅଖଣ୍ଡ ବିଶ୍ୱାସ ଥିଲା । ଏହି ବିଶ୍ୱାସ ତାଙ୍କର ସାମାଜିକ, ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସଫଳ କରିଥିଲା । ଗୁରୁଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣାଙ୍ଗ ଜୀବନୀ ଲେଖିବାପାଇଁ ସେ ଯୋଜନା କରିଥିଲେ, ତାହା କେବେ ହେବ !

ଆଜି ଦେହୀ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ନଗେନ୍ଦ୍ରନାଥ ପ୍ରଧାନ ଆମ ସହ ନାହାନ୍ତି । ମାତ୍ର ବିଦେହୀ ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଧାନ ଆମ ସହ ସତତ ବିଦ୍ୟମାନ ।



**Bipin Nanda**

It is hard to believe that Dr Nagendra Pradhan is no more with us. A man with versatile personality, a thinker, educationist, social activist and a friend of everybody as he was, his absence will be felt for ever. My sorrowful condolences to the bereaved family and pray Lord Jagannath to bless the immortal soul. Om Shanti.

## नगेन्द्रनाथ प्रधान

भारतीय शिक्षक का आदर्श रूप देखना है तो प्रो. प्रधान को देखें । केवल पहनावे, खान-पान में ही नहीं आचरण में भी यह स्पष्ट था ।

मेरी एक शिष्या कबीर पर शोध कार्य कर रही थी । ओड़िशा में निर्गुण धारा पर प्रो. प्रधान ने विस्तृत काम किया । हिंदी में वाराणसी के प्रो. श्यामसुन्दर शुक्ल ने गहन अध्ययन किया । दोनों को मिलाया तो लगा एक गंगोत्री-दूसरी यमनोत्री एक ही हिमालय से उद्गम । इस समता पर उनकी समान जीवन शैली का भी प्रभाव मिल जाता है । एक श्रीजगन्नाथ भक्त और दूसरा विश्वनाथ भक्त । श्रद्धा अटूट ! दोनों भारतीयता की जीवंत मूर्ति थे । भारतीय परंपरा की खोज में जीवन भर लगे रहे । वे जितना गहरे गए, उतना ही सत्य का अन्वेषण और विश्लेषण करते रहे । तभी आज हम गौरव के साथ ओड़िया साहित्य के निर्माण धारा के समय के अतीत को भारत की किसी निर्गुणधारा के साथ तुलना कर देख सकते हैं ।

प्रो. प्रधान व्यवहार में मिष्टभाषी थे । छात्रवत्सलता में तुलना नहीं । उस बार हिंदी शिक्षक चयन करना था । झारसुगड़ा में इंटरव्यू रखी गई । एक दिन में इतनी बड़ी संख्या ! प्रो. प्रधान निरपेक्ष दृष्टि में कोई अन्याय नहीं हो सका । मैं इतना कनिष्ठ हो कर भी उनका स्नेह एवं श्रद्धा भाजन हुआ । मेरे लिए गौरव की बात थी ।

कई बार साझा किया । पर कभी अपनी वरिष्ठता, वरीयता का परिचय नहीं दिया । हमेशा 'शंकरलाल बाबू' कह कर आदर देते रहे । बीमार हालत में भी कई बार गया । उनका होना ही समाधान सूचक था । अतिथिपरायणता की भारतीय परंपरा उनसे सीखने को मिली । जो मेरे साथ जाते, उनके ज्ञान और व्यक्तित्व के कायल होकर लौटते ।

आज उनके नित्यवर्तमान स्वरूप को स्मरण कर नतमस्तक हूँ ।

शंकरलाल पुरोहित  
105 श्रीधर, बालाजी कंप्लेक्स  
झारपड़ा, भुवनेश्वर -6  
मो. - 9437635198



## Nagendranath - An ~~imm~~ immortal soul

He was a great source of inspiration and courage. Together we have worked for many many years. In fact he was mediator of my marriage. He told my father-in-law many good things about me and encouraged him to go for my marriage with his only daughter. I will never forget him.

He was a very pleasing man - down to the earth. His smiling face shall always be remembered. His cheek always bulged into a pail. He <sup>was</sup> ~~was~~ loving and very caring. His face always glimmered with a smile. His affectionate words and his advice I always remembered. I pay my homage to the departing soul. May his soul rest in peace.

Prof. (Dr.) Gyana Chandra Kar  
Former Economics Prof.  
Utkal University.



ବାମରେ ପ୍ରଫେସର ବସନ୍ତ କୁମାର ପଣ୍ଡା ଓ ଡାହାଣରେ ଅ.ଭା.ସା.ପ. ଉତ୍ତରପ୍ରଦେଶର ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକ ପବନପୁତ୍ର ବାଦଲଙ୍କ ସହ







ଭୋପାଳ ଠାରେ ପ.ପୁ. ସରଂଘରାଜଙ୍କଠାରୁ ସର୍ବଭାଷା ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମାନ ଗ୍ରହଣ ଅବସରରେ